मक्सिम गोर्की

वे तीन

मक्सिम गोर्की लिखित

वे तीन

यह उपन्यास परिकल्पना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है व प्रगतिशील साहित्य के वितरक जनचेतना द्वारा कम से कम दामों में जनता तक पहुँचाया जा रहा है। अगर आप पीडीएफ की बजाय प्रिण्ट कॉपी से पढ़ना चाहते हैं तो जनचेतना से सम्पर्क कर सकते हैं या फिर अमेजन से खरीद सकते हैं।

अमेजन लिंक : https://www.amazon.in/dp/8187425857

जनचेतना सम्पर्क : D-68, Niralanagar, Lucknow-226020
0522-4108495; 09721481546
janchetna.books@gmail.com
Website - http://janchetnabooks.org

इस पीडीएफ फाइल के अंत में जनचेतना द्वारा वितरित किये जा रहे प्रगतिशील, मानवतावादी व क्रान्तिकारी साहित्य की सूची भी दी गयी है।

हर दिन प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य पाने के लिए

- देश-दुनिया की हर महत्वपूर्ण घटना पर मजदूर वर्गीय दृष्टिकोण से लेख
- सुबह-सुबह प्रगतिशील कविता, कहानियां, उपन्यास, गीत-संगीत, हर रविवार पुस्तकों की पीडीएफ
- देश के महान क्रान्तिकारियों भगतसिंह, राहुल, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि का साहित्य पीडीएफ व यूनिकोड फॉर्मेट में

वे तीन

(उपन्यास)

वे तीन

(उपन्यास)

मक्सिम गोर्की

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ
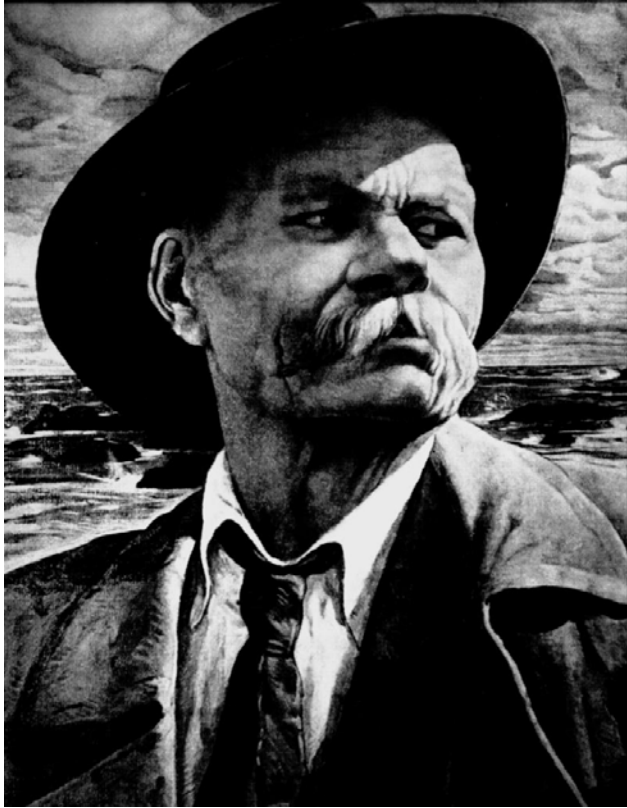
मक्सिम गोर्की

प्रकाशकीय

मक्सिम गोर्की (मूल नाम अलेक्सेई मक्सिमोविच पेश्कोव) की पहली साहित्यिक कृतियों का प्रकाशन 1892 में हुआ था। उस समय उनकी उम्र 24 वर्ष थी। लेकिन तब तक वह इतना कुछ अनुभव कर चुके थे और इतना कुछ झेल चुके थे, उनके पास जीवन के अनुभवों का इतना समृद्ध भण्डार जमा हो चुका था कि इस मामले में उनके पूर्वगामी और समकालीन लेखकों में से शायद ही किसी से उनकी तुलना की जा सकती थी। तब से लेकर 1936 में अपने निध ान तक उन्होंने विपुल साहित्य की रचना की जो विश्व साहित्य की अमर धरोहर है।

उनके विराट रचना संसार के एक बहुत बड़े हिस्से से दुनिया के पाठक अभी भी अपरिचित हैं। उनके कई महान उपन्यास, उत्कृष्ट कहानियाँ और विचारोत्तेजक निबन्ध अंग्रेज़ी और अन्य यूरोपीय भाषा में भी उपलब्ध नहीं हैं। इस मायने में भारतीय भाषाओं, ख़ासकर हिन्दी के पाठक अपने को और भी वंचित स्थिति में पाते रहे हैं।

'माँ', 'वे तीन', 'टूटती कड़ियाँ' ('अर्तामानोव्स' का अनुवाद), 'मेरा बचपन', 'जीवन की राहों पर', 'मेरे विश्वविद्यालय', 'फ़ोमा गोर्देयेव', 'अभागा' और 'बेकरी का मालिक' गोर्की के ये कुल नौ उपन्यास ही हिन्दी में प्रकाशित हुए हैं। इसके अतिरिक्त तीन नाटक, चार-पाँच निबन्ध और 'इटली की कहानियाँ' के अतिरिक्त पच्चीस-छब्बीस कहानियाँ ही हिन्दी में आयी हैं। इनमें से भी अधिकांश पुस्तकें हाल के वर्षों में अनुपलब्ध होती गयी हैं। इसलिए हमें यह बहुत ज़रूरी और उपयोगी लगा कि जनता के इस महान लेखक के अधिकतम सम्भव साहित्य को हिन्दी पाठकों के लिए उपलब्ध करायें। इस सिलसिले में हम अब तक गोर्की के सात उपन्यास, तीन नाटक, कहानियों के तीन संकलन तथा साहित्यिक लेखों व संस्मरण की दो पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। 'परिकल्पना' से प्रकाशित यह उनका आठवाँ उपन्यास

है। जल्दी ही गोर्की की कुछ और कृतियाँ भी हम प्रकाशित करने वाले हैं जिनमें से कुछ हिन्दी में पहली बार आयेंगी।

'वे तीन' फ़ोमा गोर्देयेव के बाद गोर्की का दूसरा उपन्यास है जो 1900 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में गोर्की ने क्रान्ति से पहले के रूस का, जीवन के अन्यायों के विरुद्ध निष्क्रिय प्रतिरोध की निरर्थकता का चित्रण किया है। इस उपन्यास के तीनों नायक अलग-अलग तरीक़ों से अपने आपको जीवन के क्रूर बन्धनों से छुड़ाना चाहते हैं। उनमें से एक, इल्या लुन्योव, इस प्रश्न का उत्तर खोजते हुए कि "जीवन कैसे बिताना चाहिए", अपराध करता है। दूसरा, नेक और भीरु याकोव फ़िलिमोनोव, जीवन से डरता है। केवल तीसरा, पावेल ग्राचोव, जो स्वतन्त्र स्वभाव का है और अपने सामने कोई उद्देश्य रखता है, अन्त में जीवन का सही मार्ग खोजने में सफल होता है।

गोर्की-साहित्य के प्रकाशन की हमारी इस योजना के बारे में पाठकों की राय और उनके सुझावों का हम तहेदिल से स्वागत करेंगे।

केर्जेनेत्स नदी के कछार के जंगलों में न जाने कितनी सूनी एकाकी क़ब्रें चारों ओर बिखरी हुई हैं; इन कब्रों में बूढ़े संन्यासियों या पुराणपन्थियों की हड्डियाँ सड़ रही हैं, और अन्तीपा नामक ऐसे ही एक संन्यासी के बारे में केर्जेनेत्स नदी के कछार के गाँव वाले यह क़िस्सा सुनाते हैं।

कठोर स्वभाव का धनी किसान अन्तीपा लुन्योव पचास वर्ष की आयु तक इस संसार के पापमय जीवन का आनन्द लेने के बाद अचानक चिन्ता में डूब गया, उदासीन हो गया और अपने परिवार को छोड़कर जंगल में जाकर रम गया। वहाँ एक गहरे खड्ड के किनारे उसने पेड़ काटकर लकड़ी के लट्ठों से एक कुटिया बनायी जिसमें वह सर्दी-गर्मी आठ साल तक रहा, वह किसी को उस कुटिया में घुसने नहीं देता था, न मित्रों को और न अपने सगे-सम्बन्धियों को। कभी-कभी लोग जंगल में रास्ता भटककर अन्तीपा की कुटिया के पास आ निकलते और उसे दरवाज़े के सामने घुटने टेककर प्रार्थना करता हुआ पाते। उसे देखकर डर लगता था : उपवास रखते-रखते और प्रार्थना करते-करते वह सूखकर बिल्कुल काँटा हो गया था और जानवरों की तरह उसका सारा शरीर बालों से ढँक गया था। किसी भी मनुष्य को देखते ही वह उठ खड़ा होता और चुपचाप ज़मीन तक झुककर उसका अभिवादन करता। अगर उससे जंगल से बाहर निकलने का रास्ता पूछा जाता तो वह एक शब्द भी कहे बिना पगडण्डी की ओर इशारा कर देता, एक बार फिर ज़मीन तक झुकता और अपनी कुटिया में वापस जाकर दरवाज़ा बन्द कर लेता। उन आठ वर्षों के दौरान देखा तो उसे कितने ही लोगों ने था, लेकिन उसकी आवाज़ किसी ने भी नहीं सुनी थी। उसके बीवी-बच्चे उससे मिलने आते थे; जो खाना और कपड़े-लत्ते वे लाते थे उन्हें वह स्वीकार कर लेता था और दूसरे सभी लोगों की तरह ही उनके सामने भी ज़मीन तक झुकता था, लेकिन सभी लोगों की तरह उनसे भी एक शब्द नहीं बोलता था।

जिस साल सारे आश्रम नष्ट कर दिये गये थे उसी साल उसका देहान्त हुआ था, और उसकी मृत्यु इस ढंग से हुई थी।

पुलिस का एक अफ़सर और उसके सिपाही जंगल में आये, और वहाँ उन्होंने अन्तीपा को अपनी कुटिया में घुटने टेककर चुपचाप प्रार्थना करते हुए पाया।

“ऐ, सुनता है!” पुलिस अफ़सर ने चिल्लाकर कहा। “बाहर निकल! हम तेरा

यह अड्डा गिराने जा रहे हैं!...” लेकिन अन्तीपा ने उसकी बात अनसुनी कर दी।

पुलिस का अफ़सर लाख चीख़ा-चिल्लाया, लेकिन संन्यासी ने जवाब में एक शब्द भी नहीं कहा। पुलिस अफ़सर ने अपने सिपाहियों को अन्तीपा को बाहर घसीट लाने का हुक्म दिया, लेकिन जब उसके सिपाहियों ने उस संन्यासी को उनकी उपस्थिति की ओर कोई ध्यान दिये बिना बड़ी तन्मयता से निरन्तर प्रार्थना में लीन देखा तो उसकी आस्था की दृढ़ता से वे चकित रह गये और उन्होंने पुलिस अफ़सर की आज्ञा का पालन करने से इनकार कर दिया। इसके बाद पुलिस अफ़सर ने कुटिया गिरा देने का आदेश दिया। बड़ी सावधानी से कि उस बूढ़े को कोई हानि न पहुँचने पाये, वे कुटिया की छत उतारने लगे।

बूढ़े के सिर के ऊपर कुल्हाड़े चल रहे थे, तख़्ते ज़मीन पर गिरकर फटते जा रहे थे, उन आघातों की गूँज चारों ओर जंगल में फैल रही थी; इस शोर से भयभीत चिड़ियाँ कुटिया के ऊपर मंडराने लगीं और पेड़ों पर पत्तियाँ काँपने लगीं। संन्यासी प्रार्थना में लीन रहा, मानो उसने न कुछ सुना हो और न कुछ देखा हो... काम करने वाले दीवारों के लट्ठे उखाड़ने लगे, फिर भी संन्यासी घुटनों के बल अपनी जगह निश्चल बैठा रहा। जब आख़िरी लट्ठा उखाड़ दिया गया और ख़ुद पुलिस अफ़सर ने संन्यासी के पास आकर उसे बालों से पकड़ा तब अन्तीपा ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर भगवान से धीमे स्वर में कहा :

“हे परमपिता, दयानिधान, इन्हें क्षमा कर देना!”

और फिर पीठ के बल गिरकर उसने अपने प्राण त्याग दिये। जब यह घटना हुई उस समय अन्तीपा का बड़ा बेटा याकोव तेईस साल का था, और छोटा बेटा तेरेन्ती अठारह साल का। किशोरावस्था में ही याकोव का नाम, जो एक हट्टा-कट्टा और ख़ूबसूरत लड़का था, लोगों ने उसकी हरकतों की वजह से ‘बवण्डर’ रख दिया था और अपने बाप के मरने के वक़्त तक वह उस इलाके का अव्वल नम्बर का पियक्कड़ और उपद्रवी नौजवान मशहूर हो चुका था। सभी उसकी शिकायत करते थे उसकी माँ, उसके पड़ोसी, गाँव का मुखिया; उसे जेल में बन्द कर दिया गया, सरे-बाज़ार लाठियों से उसकी मरम्मत की गयी, उस पर किसी तरह का मुक़दमा चलाये बिना भी यों ही उसे मारा-पीटा गया, लेकिन इनमें से कोई भी उपाय उसके उद्दण्ड स्वभाव पर अंकुश लगाने में सफल नहीं हुआ और उसके लिए गाँव में रहना दिन-ब-दिन ज़्यादा मुश्किल होता गया, पुराणपन्थियों के बीच, उन लोगों के बीच जो बैल की तरह मेहनत करते थे, हर नयी चीज़ से दूर भागते थे, और पुराणपन्थी विश्वासों का कट्टरता से पालन करते थे। याकोव तम्बाकू पीता था, वोद्का पीता था, और विदेशी काट के कपड़े पहनता था। वह प्रार्थना करने के लिए गिरजाघर में नहीं जाता था, और जब गाँव के बड़े-बूढ़े उसे

बुरा-भला कहते थे और उसके बाप का हवाला देते थे, तो वह हँसकर जवाब देता :

"धीरज रखो, भलेमानसो, हर बात का एक वक़्त आता है। जब मैं जी भरकर पाप कर लूँगा, तब मैं भी प्रायश्चित करूँगा! लेकिन वह वक़्त अभी नहीं आया है। मेरे सामने मेरे बाप का हवाला मत दो पचास साल तक उन्होंने पाप का जीवन बिताया और प्रायश्चित तो बस आठ ही साल किया!... मेरे पाप तो अभी चिड़िया के बच्चे के कोमल परों की तरह हैं; जब वे चिड़िया के परों की तरह बढ़ जायेंगे तब इस सूरमा के भी प्रायश्चित करने का वक़्त आयेगा।"

"विधर्मी!" गाँव वाले याकोव लुन्योव के बारे में कहते और उससे डरते तथा नफ़रत करते। अन्तीपा के मरने के कोई दो साल बाद याकोव की शादी हो गयी। उसके बाप ने तीस साल की कठिन मेहनत से जो ज़मीन-जायदाद बनायी थी उसे उसने भोग-विलास में उड़ा दिया था और गाँव में कोई उसे अपनी बेटी देने को तैयार नहीं था। वह दूर के किसी गाँव की एक सुन्दर अनाथ लड़की को ब्याह लाया और शादी की धूमधाम का खर्च पूरा करने के लिए उसने अपने बाप के शहद की मक्खियों के छत्ते बेच दिये। उसका भाई तेरेन्ती विनम्र, चुप्पा, लम्बे हाथों वाला कुबड़ा था; उसने याकोव के ज़िन्दगी के ढर्रे के ख़िलाफ़ उंगली तक नहीं उठायी। उसकी बीमार माँ अपना अधिकांश समय चूल्हे के पास वाले चबूतरे पर लेटे-लेटे काट देती थी, जहाँ से वह अपनी भर्रायी हुई धमकी-भरी आवाज़ में उससे कहती रहती थी :

"अरे कमबख़्त!... कम से कम अपनी आत्मा पर तो कुछ रहम कर!... कभी तो सोच कि तू क्या कर रहा है!..."

"तुम परेशान न हो, माँ," याकोव जवाब देता। "बापू भगवान के सामने मेरी पैरवी कर लेंगे।"

लगभग पूरे एक साल याकोव अपनी पत्नी के साथ सुख-चैन से रहा। यहाँ तक कि उसने काम भी करना शुरू कर दिया, लेकिन उसके बाद वह फिर रंगरलियाँ मनाने लगा, शराब पीने लगा और कई-कई महीने घर से ग़ायब रहने लगा और जब वह अपनी पत्नी के पास लौटकर आता तो चीथड़े लगाये हुए और बुरी तरह चोट खाया हुआ और भूखा... याकोव की माँ मर गयी; उसके क्रिया-कर्म के बाद भोज के अवसर पर शराब के नशे में चूर याकोव ने अपने पुराने दुश्मन गाँव के मुखिया की ख़ूब धुनायी की, और इस अपराध में उसे जेल भेज दिया गया। सज़ा काटकर वह फिर गाँव लौटा बहुत चिड़चिड़ा और बदला लेने की भावना से भरा हुआ, सिर घुटा हुआ। गाँव वाले दिन-ब-दिन उससे ज़्यादा नफ़रत करने लगे थे और उनकी इस नफ़रत ने बढ़ते-बढ़ते उसके परिवार वालों को भी अपने लपेट में ले लिया था, ख़ास तौर पर अनपकारी कुबड़े तेरेन्ती को, जिसका गाँव के लड़के-लड़कियाँ उसके बचपन से ही मज़ाक़ उड़ाते आये

थे। गाँव वाले याकोव को डाकू और जेल का पंछी कहते थे और तेरेन्ती को दानव और जादूगर। तेरेन्ती उनके मज़ाक़ और उनके गाली-कोसने को चुपचाप सह लेता; इसके विपरीत याकोव जवाब में उन्हें धमकियाँ देता :

"अच्छा, ठहर जाओ!... मैं तुम लोगों को मजा चखाऊँगा!"

जब गाँव में भयानक आग लगी थी तब वह चालीस साल का था। उस पर आग लगाने का आरोप लगाया गया और साइबेरिया भेज दिया गया।

याकोव की पत्नी और उसके बेटे इल्या की देखभाल करने की जिम्मेदारी तेरेन्ती पर आ पड़ी। याकोव की पत्नी उस अग्निकाण्ड के दौरान पागल हो गयी थी; इल्या उस समय दस साल का संजीदा, हृष्ट-पुष्ट, काली आँखों वाला लड़का था। जब भी इल्या घर से बाहर निकलता गाँव के छोकरे उसका पीछा करते और उस पर पत्थर फेंकते और बड़ी उम्र के लोग जब उसे देखते तो कहते :

"अरे, शैतान के बच्चे! क़ैदी की औलाद!... तेरा मुर्दा निकले!..."

आग लगने से पहले, तेरेन्ती तारकोल, सुई-धागा और इसी तरह की दूसरी छोटी-मोटी चीज़ें बेचा करता था; हाथ-पाँव का कोई काम तो उसके बस का था नहीं। लेकिन उस आग में, जिसमें आधा गाँव जलकर राख हो गया था, लुन्योव परिवार का घर और उसके साथ ही तेरेन्ती का सारा सामान भी जल गया था; इसलिए जब आग बुझी तो लुन्योव-परिवार के पास इस दुनिया में एक घोड़े और तैन्तालीस रूबल के अलावा कुछ भी नहीं बचा था। तेरेन्ती समझ गया कि अब गाँव में रहने का कोई डौल नहीं था, कि वह अब वहाँ रोज़ी नहीं कमा पायेगा; इसलिए उसने अपनी भाभी की देखभाल करने की जिम्मेदारी पचास कोपेक महीने पर एक ऐसी औरत को सौंप दी जो अकेली रहती थी; अपने लिए उसने एक पुरानी गाड़ी ख़रीदी और उस पर अपने भतीजे को बिठाकर पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव नामक दूर के एक रिश्तेदार से मदद माँगने, जो शहर में एक शराबख़ाने में आबदार का काम करता था, वहाँ जाने का फ़ैसला किया। रात को चोरों की तरह चुपके से तेरेन्ती अपने बाप का घर छोड़कर गाड़ी लेकर निकल पड़ा। गाड़ी हाँकते-हाँकते वह अपनी बड़ी-बड़ी बछड़ों जैसी काली आँखों से बीच-बीच में पीछे मुड़कर देखता जाता था। घोड़ा धीरे-धीरे चल रहा था, लीक में गाड़ी झटके खाती हुई आगे बढ़ रही थी, और थोड़ी ही देर में इल्या पयाल में घुसकर बच्चों की गहरी नींद सो गया...

रात गये भेड़िये के हौंकने जैसी रोंगटे खड़े कर देने वाली आवाज़ सुनकर उसकी आँख खुल गयी। चारों ओर चाँदनी छिटकी हुई थी, गाड़ी जंगल के छोर पर खड़ी थी और घोड़ा ओस में भीगी घास खाते-खाते बीच-बीच में फुफकार उठता था। दूर खेत

में चीड़ का एक बड़ा-सा अकेला पेड़ इस तरह खड़ा था मानो उसे जंगल से खदेड़ दिया गया हो। इल्या की तेज़ आँखें अपने चाचा की खोज में परेशान होकर इधर-उधर घूम रही थीं; बीच-बीच में उसे घोड़े के ज़मीन पर टाप मारने की धीमी आवाज़ सुनायी दे रही थी जिसकी स्पष्टता रात की निस्तब्धता के कारण और भी बढ़ जाती थी। उसके फुफकारने की आवाज़ गहरी आहों जैसी सुनायी देती थी; बच्चे के कानों में विचित्र काँपती हुई उदास आवाज़ गूँज रही थी, जिसे सुनकर उसके रोम-रोम में डर समाया जा रहा था।

"चाचा," उसने धीरे से पुकारा।

"एह?" तेरेन्ती ने जवाब दिया, और हौंकने की आवाज़ अचानक बन्द हो गयी।

"तुम कहाँ हो?"

"यहाँ हूँ... सो जाओ..."

इल्या ने अपने चाचा को जंगल के छोर पर एक छोटी-सी टीकरी के ऊपर बैठा हुआ देखा, एक काली छाया की तरह जो किसी उखड़े हुए पेड़ का ठुंठ भी हो सकती थी।

"मुझे डर लग रहा है," लड़के ने कहा।

"डर काहे का?... यहाँ हमारे अलावा कोई भी तो नहीं है..."

"कोई हौंक रहा था..."

"तुमने सपना देखा होगा..."

"नहीं, सच्ची..."

"कोई भेड़िया होगा... कहीं दूर... सो जाओ..."

लेकिन इल्या को नींद नहीं आयी। भयानक निस्तब्धता थी और हौंकने की आवाज़ उसके कानों में गूँज रही थी। उसने आँखें गड़ाकर चारों ओर नज़र दौड़ाई और देखा कि उसका चाचा दूर जंगल के बीच एक पहाड़ी पर बने पाँच गुम्बदों वाले एक सफ़ेद गिरजाघर की ओर देख रहा है, जिसके ऊपर बड़ा-सा गोल चाँद अपनी पूरी आभा से चमक रहा था। लड़के ने रोमोदानोव्स्की गिरजाघर को पहचाना; उससे दो किलोमीटर की दूरी पर उसका अपना गाँव कितेज्नाया जंगल के बीच एक खड्ड के सिरे पर बसा हुआ था।

"हम अभी बहुत दूर नहीं आये हैं," उसने चिन्तामग्न होकर कहा।

"क्या बात है?" चाचा ने पूछा।

"मैं कह रहा था कि हमें चलना चाहिए... कहीं वहाँ से कोई आ न जाये..."

इल्या ने शत्रुता के भाव से सिर हिलाकर गाँव की ओर संकेत किया।

"ठहरो, अभी चलते हैं," चाचा ने कहा।

फिर चारों ओर निस्तब्धता छा गयी। इल्या गाड़ी के सामने वाले पटरे पर टिककर उसी ओर आँखें गड़ाकर देखने लगा जिधर उसका चाचा देख रहा था। जंगल की गहरी काली परछाइयों में गाँव साफ़ दिखायी नहीं दे रहा था, लेकिन इल्या को अपनी कल्पना में ऐसा लगा कि गाँव उसे दिखायी दे रहा है, उसके सारे घर और लोग और सड़क के बीच में कुएँ के पास वाला वह पुराना बेद का पेड़। बेद के पेड़ के नीचे उसका बाप फटी हुई क़मीज़ पहने लेटा हुआ था, उसके हाथ-पाँव रस्सियों से बँधे हुए थे। उसके हाथ पीठ के पीछे ऐंठकर बाँध दिये गये थे, उसका नंगा सीना आगे की ओर तना हुआ था और उसका सिर मानो बेद के पेड़ के तने से चिपका हुआ था। वह निश्चल पड़ा था जैसे मार डाला गया हो; वह भयभीत ओखें से किसानों को देख रहा था। उसके चारों ओर बहुत-से लोग इकट्ठा थे और वे सभी चिल्ला रहे थे और उसे गालियाँ दे रहे थे। इस बात को याद करके बच्चा उदास हो गया और कोई चीज़ जैसे उसके गले में आकर अटक गयी। उसे ऐसा लगा कि वह अभी रो देगा, लेकिन इस डर से कि कहीं उसके चाचा के विचारों में विघ्न न पड़े वह अपने सारे शरीर को कड़ा करके आँसू रोकने की कोशिश कर रहा था...

अचानक हौंकने की धीमी-धीमी आवाज़ फिर आने लगी। पहले तो एक बहुत लम्बी आह सुनायी दी, फिर ऐसा लगा कि कोई सुबक-सुबककर रो रहा है और फिर यह आवाज़ निश्चित रूप से एक दर्द-भरी हुंकार में बदल गयी :

“ऊ-ऊ-ऊ-ऊ!”

बच्चा डर के मारे सिहर उठा और उसका दम घुटने लगा। आवाज़ काँपती रही और तेज़ होती गयी।

“चाचा! क्या तुम हुंकार रहे हो?...” इल्या ने चिल्लाकर पूछा।

तेरेन्ती ने कोई जवाब नहीं दिया, वह हिला तक नहीं। लड़का कूदकर गाड़ी से नीचे उतरा, भागकर उसके पास पहुँचा और उसके पाँवों पर गिरकर उनको पकड़कर रोने लगा। अपनी सिसकियों के बीच उसने चाचा को कहते सुना :

“उन्होंने हमें घर से बेघर कर दिया। हे भगवान! अब हम कहाँ जायें?..”

“तुम घबराओ नहीं... मैं बड़ा हो जाऊँगा... उन सबको मज़ा चखा दूँगा!...” लड़का अपने आँसू पीते हुए बोल रहा था।

जी भरकर रो लेने के बाद वह ऊँघने लगा। चाचा ने उसे गोद में उठाकर गाड़ी में लिटा दिया और फिर अपनी जगह वापस जाकर फूट-फूटकर रोने लगा   एक लम्बी, दर्द-भरी हौंकने की आवाज़, मानो कोई कुत्ते का बच्चा रो रहा हो।

...इल्या को शहर में अपना पहुँचना अच्छी तरह याद था। बहुत सवेरे जब उसकी आँख

खुली थी तो उसे एक चौड़ी-सी गन्दले पानी की नदी दिखायी दी थी, जिसके उस पार एक ऊँची पहाड़ी थी जिस पर जहाँ-तहाँ फलों के घने बाग़ीचों से घिरे हुए लाल और हरी छतों वाले मकान थे। एक-दूसरे के साथ सुन्दर ढंग से सटे हुए ये मकान पहाड़ी की ढलान पर बढ़ते गये थे और चोटी के पास पहुँचकर पाँत बाँधकर बड़े गर्व से नदी के ऊपर दृष्टि जमाये तक रहे थे। छतों के ऊपर गिरजाघरों के सुनहरे गुम्बद तथा उनकी सलीबें दिखायी पड़ रही थीं जो दूर तक आकाश को बेधती चली गयी थीं। सूरज अभी निकल ही रहा था; उसकी तिरछी किरणें घरों की खिड़कियों में प्रतिबिम्बित हो रही थीं, और सारा शहर रंग-बिरंगी लपटों में खोकर सोने की तरह चमक रहा था।

"अरे वाह!" लड़के ने उल्लास-भरे स्वर में कहा और मूक भावातिरेक से इस भव्य दृश्य को एकटक देखने लगा। लेकिन शीघ्र ही उसके मन में एक विचलित कर देने वाला विचार उठा : वे यहाँ रहेंगे कहाँ   जीन के पतलून पहने झबरे बालों वाला वह छोटा-सा लड़का और उसका भोंड़ा-सा कुबड़ा चाचा? क्या वे लोग उन्हें उस समृद्ध, साफ़-सुथरे, सोने की तरह दमकते हुए लम्बे-चौड़े शहर में घुसने देंगे? उसके मन में यह विचार आया कि उनकी गाड़ी यहाँ नदी के किनारे शायद इसीलिए खड़ी हुई थी कि वे ग़रीब लोगों को शहर में नहीं घुसने देते। शायद उसका चाचा इजाज़त लेने ही गया होगा।

डूबते हुए दिल से इल्या ने अपने चाचा की खोज में इधर-उधर नज़र दौड़ायी। वह चारों ओर दूसरी गाड़ियों से घिरा हुआ था; कुछ गाड़ियों पर दूध के बर्तन लदे थे, कुछ पर मुर्गियों-बत्तखों के टापे, खीरे, प्याज़ और आलू के बोरे और रसीली बेरियों से भरे टोकरे। किसान औरतें और मर्द गाड़ियों पर या उनके पास बैठे या खड़े थे।

जैसे लोगों को इल्या अब तक देखता आया था, ये लोग वैसे नहीं थे : ये लोग ऊँचे स्वर में बोलते थे और हर शब्द का उच्चारण बहुत साफ़-साफ़ करते थे, और नीले रंग की जीन के बजाय वे रंग-बिरंगे सूती कपड़े या लाल तूल के कपड़े पहने हुए थे। उनमें से लगभग सभी के पाँवों में बूट थे, और कमर पर तलवार बाँधे हुए जो आदमी उनके बीच घूम रहा था उससे डरना तो दूर रहा वे झुककर उसे सलाम तक नहीं करते थे। इल्या को यह बात बहुत अच्छी लगी। गाड़ी पर बैठे-बैठे धूप में चमकते हुए इस उल्लासमय दृश्य को देखकर वह उस समय के स्वप्न देखने लगा जब वह भी बूट और लाल तूल की क़मीज़ पहनेगा।

दूर किसानों के बीच उसकी नज़र तेरेन्ती चाचा पर पड़ी। क़दम जमाकर डग भरते हुए वह रेत की मोटी तह पर चल रहा था; उसका सिर पीछे की ओर तना हुआ था और उसके चेहरे पर हर्ष का भाव था। काफ़ी दूर से ही वह मुस्कराने लगा और इल्या को कुछ दिखाते हुए उसकी ओर उसने अपने हाथ बढ़ाये।

"भगवान हमारे साथ है, इल्या!" उसने कहा। "तनिक भी कठिनाई के बिना मैंने चाचा को खोज निकाला है। लो, तब तक यह खाओ!..."

और उसने इल्या की ओर एक बिस्कुट बढ़ा दिया।

लड़के ने लगभग श्रद्धा के भाव से बिस्कुट लेकर अपनी क़मीज़ के अन्दर डाल लिया।

"क्या शहर में जाने नहीं दे रहे हैं?" उसने घबराकर पूछा।

"अभी थोड़ी देर में जाने देंगे... बस नाव आ जाये तो आगे चलें।"

"हम भी?"

"ज़रूर, हम भी!"

"अच्छा, मैं तो समझा था कि हमें जाने ही नहीं देंगे... हम लोग वहाँ रहेंगे कहाँ?"

"मालूम नहीं..."

"अगर उस बड़े-से लाल घर में रहने को मिलता तो कितना अच्छा होता..."

"वह तो फ़ौजी बैरक है... उसमें सिपाही रहते हैं..."

"अच्छा! तो फिर उसमें दिखायी दिया? वह, वहाँ।"

"वाह, क्या कहने! वह तो हमारे लिए बहुत ऊँचाई पर है।"

"कोई बात नहीं है!" इल्या ने विश्वास के साथ कहा, "हम वहाँ तक चढ़ जायेंगे!"

जवाब में तेरेन्ती ने सिर्फ़ आह भरी और फिर किसी ओर चल दिया।

उन्हें शहर के छोर पर बाज़ार के चौक के पास एक बड़े-से स्लेटी रंग के घर में रहना पड़ा। उसकी चारों दीवारों से लगे हुए कितने ही सायबान बने थे उनमें से कुछ उस घर की तुलना में नये थे और कुछ उस घर की तरह ही मैले स्लेटी रंग के थे। उस घर की सारी खिड़कियाँ और दरवाज़े ऐंठे हुए थे और सारे तख़्ते चरचराते थे। सायबान, चारदीवारी और फाटक सब झुककर एक-दूसरे के सहारे टिके हुए थे, और उन सबके मिलने से सड़ी हुई लकड़ी का एक बड़ा-सा ढेर बन गया था। खिड़कियों के काँच पुराने होकर धुँधले पड़ गये थे; मकान के सामने की कुछ कड़ियाँ बाहर की ओर उभर आयी थीं जिनकी वजह से वह घर बहुत-कुछ अपने मालिक जैसा ही लगने लगा था, जो वहाँ शराबख़ाना चलाता था। वह भी बूढ़ा और बदरंग था; ढीली-ढाली खाल वाले चेहरे पर उसकी आँखें भी उतनी ही धुँधली थीं जितने कि खिड़कियों के काँच; चलते वक़्त उसे एक मोटी-सी छड़ी का सहारा लेना पड़ता था शायद अपने बाहर निकले हुए पेट को साथ लेकर चलना उसे दूभर था।

जब इल्या शुरू-शुरू में इस घर में रहने आया तो उसने हर जगह चढ़कर हर चीज़ को अच्छी तरह देखा-भाला। उस घर की आश्चर्यजनक समाई देखकर वह दंग

रह गया; उसमें इतने बहुत-से लोग घुस-पिलकर रहते थे कि इल्या को पूरा यक़ीन था कि उसमें जितने लोग थे उतने तो पूरे कितेज्नाया गाँव में भी नहीं थे। घर की दोनों मंजिलों पर शराबख़ाना था, जिसमें हमेशा जमघट रहता था। ऊपर अटारी पर कुछ शराबी औरतें रहती थीं। उनमें से एक काले बालों और भारी आवाज़ वाली लम्बे-चौड़े डील-डौल की भीमकाय औरत थी जिसका पुकारने का नाम मुटल्ली था; जब भी इल्या की आँखें उसकी ग़ुस्सैली काली आँखों से चार होतीं तो उसकी रूह तक काँप जाती। तहख़ाने में रहते थे : अपनी अपाहिज बीवी और सात साल की बेटी के साथ पेर्फ़ीश्का मोची; दादा येरेमेई कबाड़ी; दुबली-पतली बहुत ऊँची आवाज़ में बोलने वाली एक बूढ़ी भिखारिन जिसे लोग पोपली कहते थे; दबा-सहमा और बहुत कम बोलने वाला एक अधेड़ उम्र का गाड़ीवान जिसका नाम मकार स्तेपानिच था। आँगन के एक कोने में लोहार की दुकान थी जिसमें सवेरे से रात तक भट्ठी सुलगती रहती थी, गाड़ियों के पहियों पर हाल चढ़ाये जाते थे, घोड़ों की नालबन्दी की जाती थी, हथौड़ा चलने की आवाज़ आती रहती थी, लम्बा-तगड़ा लोहार सावेल गला खोलकर गीत गाता रहता था लेकिन उसकी आवाज़ में कोई उल्लास नहीं होता था। कभी-कभी उसकी बीवी, जो सुनहरे बालों और नीली आँखों वाली भरे बदन की छोटे क़द की औरत थी, लोहारख़ाने में आती थी। वह हमेशा अपने सिर पर एक सफ़ेद शाल ओढ़े रहती थी, और उस कालिख-भरे कोने की पृष्ठभूमि पर उसका वह सफ़ेद सिर देखने में कुछ अजीब-सा लगता था। उसकी हँसी में चाँदी की खनक थी; और उसकी हँसी के जवाब में सावेल भी घन की चोटों की तरह ठहाका मारकर हँस पड़ता था। लेकिन ज़्यादातर वह जवाब में गरज पड़ता था।

इस पुराने मकान के हर कोने में कोई न कोई इन्सान ज़रूर दिखायी देता था, और बहुत सवेरे से रात देर गये तक वहाँ ऐसा शोर और चीख़-पुकार मची रहती थी कि सारा घर काँप उठता था, जैसे किसी पुराने जंग-लगे बर्तन में कोई चीज़ खौल रही हो, उबल रही हो। दिन ढले सब लोग अपने-अपने बिलों से रेंगकर बाहर निकल आते और आँगन में या फाटक के पास पड़ी हुई बेंच पर बैठ जाते; पेर्फ़ीश्का मोची अकार्डियन बजाता, सावेल कोई गीत गुनगुनाता और मुटल्ली अगर नशे में होती तो कोई ख़ास उदास धुन छेड़ देती जिसके बोल किसी की समझ में न आते, और वह सारी देर फूट-फूटकर रोती रहती।

आँगन के किसी एक कोने में सारे बच्चे दादा येरेमेई के चारों ओर घेरा बनाकर बैठ जाते।

"दादा, कोई कहानी सुनाओ!" वे उसकी मिन्नत करते। "हमारे अच्छे दा-दा!"

बूढ़ा क्षण-भर उन लड़कों को अपनी सूजी हुई लाल आँखों से देखता, जिनमें से

गन्दले आँसू उसके मुँह की झुर्रियों पर बहते रहते थे, फिर उड़े हुए रंग वाली अपनी पुरानी हैट सिर पर मढ़कर वह बहुत ऊँची काँपती हुई आवाज़ में लहक-लहककर शुरू करता :

"किसी राज्य में, किसी देश में, एक विधर्मी लड़का पैदा हुआ, जिसके माँ-बाप को उनके पापों की सज़ा सब कुछ जानने वाले ईश्वर ने इस तरह दी थी..."

दादा येरेमेई जब अपना काला पोपला मुँह खोलते थे तो उनकी लम्बी सफ़ेद दाढ़ी हिलने लगती थी, और साथ ही उनका सिर भी हिलता था, और आँसू एक-एक करके उनके गालों पर लुढ़कते रहते थे।

"यह विधर्मी बेटा बहुत ही ढीठ आदमी निकला," दादा कहानी सुनाते रहते। "वह हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास नहीं रखता था, न ही उसे पवित्र कुमारी मरियम से कोई लगाव था; गिरजाघर के सामने से निकलता तो सिर तक नहीं झुकाता था और वह अपने माँ-बाप का कहना कभी नहीं मानता था..."

बच्चे पूरा ध्यान लगाकर बूढ़े की महीन आवाज़ सुनते रहते और एक भी शब्द कहे बिना बैठे उसके चेहरे को घूरते रहते।

लेकिन जितने ध्यान से पेत्रूख़ा आबदार का बेटा याकोव सुनता था उतने ध्यान से कोई नहीं सुनता था। वह एक दुबला-पतला लड़का था, जिसकी नाक नुकीली थी और जिसकी पतली-सी गर्दन पर एक बड़ा-सा सिर टिका हुआ था। जब वह दौड़ता था तो उसका सिर एक ओर से दूसरी ओर इस तरह हिलता था जैसे अभी अपनी डंठल से टूटकर गिर पड़ेगा। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी और उद्विग्न थीं। वे हर चीज़ पर से इस तरह जल्दी से गुज़र जाती थीं मानो उन पर जम जाने से डरती हों, और अगर कभी वे जम भी जाती थीं तो ऐसे अजीब ढंग से बाहर की ओर निकल आती थीं कि उसके चेहरे का भाव बिल्कुल भेड़ों जैसा लगने लगता था। अपने कोमल पीले चेहरे और साफ़-सुथरे कपड़ों की वजह से वह दूसरे लड़कों से बिल्कुल अलग लगता था। इल्या ने फ़ौरन उससे दोस्ती कर ली।

"क्या तुम्हारे गाँव में बहुत-से जादूगर हैं?" याकोव ने अपनी जान-पहचान के पहले ही दिन उससे पूछा।

"काफ़ी हैं," इल्या ने जवाब दिया। "हमारा पड़ोसी ही जादूगर था।"

"लाल बालों वाला?" याकोव ने दबी ज़बान से पूछा।

"नहीं, उसके बाल सफ़ेद थे... वे सफ़ेद बालों वाले होते हैं।"

"सफ़ेद बालों वाले इतने बुरे नहीं होते। उनके दिल में दया होती है। लेकिन लाल बालों वाले बाप रे बाप! वे तो ख़ून चूस लेते हैं।"

वे दोनों आँगन की सबसे अच्छी और सबसे शान्त जगह पर कूड़े के ढेर के पास

एल्डर की झाड़ी के तले बैठे थे; पास ही लाइम का एक बड़ा-सा पुराना पेड़ था। सायबान और मकान के बीच की संकरी-सी जगह में से दब-सिकुड़कर ही वहाँ तक पहुँचा जा सकता था; यहाँ बाहर की कोई आवाज़ नहीं आती थी; इस कोने से ऊपर आसमान और घर की उस दीवार के अलावा कुछ भी दिखायी नहीं देता था, जिसकी तीन खिड़कियों में से दो तख़्ते जड़कर बन्द कर दी गयी थीं। लाइम की डालों पर गौरैयाएँ चहकती रहती थीं और दोनों लड़के नीचे पेड़ की जड़ों के पास बैठकर चुपके-चुपके तरह-तरह की बातें करते रहते थे।

दिन भर कोई बड़ी-बड़ी और रंग-बिरंगी चीज़ों का झुण्ड इल्या के मुँह के सामने चीख़ मारकर और शोर मचाकर मंडराता रहता था और उसे अन्धा और बहरा बना देता था। पहले तो वह भौचक्का रहने लगा था और ऐसा लगता था कि उसके होश-हवास गुम हो गये हैं। शराबख़ाने में उस मेज़ के पास खड़े-खड़े जिस पर उसका चाचा तेरेन्ती पसीने में नहाया हुआ बर्तन धोता रहता था, इल्या लोगों को आते-जाते, खाना खाते, गाते, चिल्लाते, एक-दूसरे को चूमते, एक-दूसरे से लड़ते, और शराबख़ाने के धुएं-भरे वातावरण में पागलों की तरह धका-पेल करते देखता रहता था।

“अरे! बेटा!” उसका चाचा अपना कूबड़ झटककर और गिलासों को लगातार ज़ोर से खनकाकर कहता। “यहाँ क्या कर रहा है तू? चला जा यहाँ से आँगन में, नहीं तो मालिक तुझे देख लेगा गालियाँ देगा!”

“अरे वाह!” इल्या मन ही मन अपना प्रिय नारा देता और वहाँ से बाहर चला आता। उसका सिर शराबख़ाने के कोलाहल से चकराता रहता था। आँगन के एक कोने में सावेल हथौड़ा चलाता रहता था और अपने यहाँ काम सीखने वाले लड़के को झिड़कता रहता था, तहख़ाने की एक खिड़की में से पेर्फ़ीश्का मोची के लहकदार गीत की धुन हवा पर तैरती हुई आती रहती थी, अटारी पर से शराबी औरतों के चीख़ने-पुकारने और डाँटने-फटकारने की आवाज़ें आती रहती थीं। लोहार का बेटा पावेल एक लाठी को घोड़ा बनाकर उस पर सवारी करता रहता था और गुस्से से चिल्लाता रहता था :

“रुक जा, शैतान!”

उसके गोल शरारती चेहरे पर जहाँ-तहाँ कालिख के निशान लगे रहते थे, माथे पर गूमड़ पड़ा रहता था, और उसकी क़मीज़ फटी रहती थी, जिसके अनगिनत छेदों में से उसके छोटे-से हृष्ट-पुष्ट शरीर की झलक दिखायी देती रहती थी। पावेल उस घर में सबसे शरारती लड़का था। वह दो बार भोंड़े इल्या की पिटाई कर चुका था; और जब इल्या रोता हुआ अपने चाचा के पास गया था तो चाचा ने केवल अपने दोनों हाथ फैलाकर कहा था :

“क्या करें? सह लेना है।”

“मैं उसे बताऊँगा!” इल्या ने आँसू बहाते हुए प्रण किया था।

“ख़बरदार!” उसके चाचा ने सख़्ती से उससे कहा था। “कभी ऐसा करने की सोचना भी नहीं!”

“तो फिर वह क्यों करता है?”

“वह? वह तो यहीं का है... तुम परदेसी हो...”

इल्या पावेल से बदला चुकाने की धमकी देता रहा और इस पर चाचा को इतना ग़ुस्सा आया था कि अपनी आदत के ख़िलाफ़ वह इल्या पर ज़ोर से चिल्लाया था। तभी इल्या के मन में धुँधला-सा विचार उठा कि वह अपने आपको “यहीं के” लड़कों के बराबर नहीं समझ सकता और इसलिए पावेल के प्रति अपनी शत्रुता की भावना को छिपाकर उसने याकोव से अपनी दोस्ती पहले से भी ज़्यादा बढ़ा ली थी।

याकोव बहुत गम्भीर लड़का था। वह कभी किसी से लड़ता नहीं था और ऊँचे स्वर में भी शायद ही कभी बोलता था। वह खेल-कूद में भी कभी-कभार ही हिस्सा लेता था, हालाँकि उसे उन खेलों को बयान करने का बड़ा चाव था जो अमीरों के बच्चे अपने बाग़ीचों में या शहर के पार्क में खेलते थे। याकोव ने अगर किसी और से दोस्ती की तो वह थी पेर्फ़ीश्का मोची की सात साल की बेटी माशा। वह दुबली-पतली, मैली-कुचैली लड़की थी जिसका काले घुँघराले बालों वाला छोटा-सा सिर सुबह से रात तक आँगन में फुदकता दिखायी देता था। उसकी माँ भी हमेशा वहाँ तहख़ाने के दरवाज़े पर बैठी रहती थी। वह लम्बे क़द की औरत थी जिसका पीठ पर एक मोटी-सी चोटी लटकती रहती थी, और वह हर वक़्त सिर झुकाये कुछ न कुछ सीती-पिरोती रहती थी। जब कभी वह अपनी छोटी बच्ची को देखने के लिए कि वह कहाँ है अपना सिर उठाती थी तभी इल्या को उसकी सूरत दिखायी देती थी। वह रूई की तरह फूला हुआ ठस नीला चेहरा था, मानो किसी लाश का चेहरा हो, और इस अप्रिय चेहरे पर काली-काली कोमल आँखें भी निश्चल थीं। वह कभी किसी से बोलती नहीं थी। वह अपनी नन्ही बच्ची को भी इशारे से ही बुलाती थी, बस कभी-कभार वह कर्कश, दबे स्वर में चिल्लाकर पुकारती थी :

“माशा!”

शुरू में तो वह इल्या को अच्छी लगी थी लेकिन जब उसने सुना कि दो बरस से वह चल-फिर नहीं पाती थी और जल्दी ही मर जायेगी, तो उसे उससे डर लगने लगा था।

एक दिन जब वह उसके पास से होकर गुजर रहा था तो उसने इल्या की क़मीज़ पकड़कर सहमे हुए लड़के को अपनी ओर घसीट लिया था।

"मैं तुझसे विनती करती हूँ, माशा को कोई नुक़सान न पहुँचाना," उसने कहा था।

उसकी साँस इतनी रुक-रुककर आती थी कि उसे बोलने में बहुत कठिनाई होती थी।

"उसको कोई नुक़सान न पहुँचाना, मेरे अच्छे बच्चे!..."

और इतना कहने के बाद उसके चेहरे पर दयनीय दृष्टि डालकर उसने उसे छोड़ दिया था। इल्या उस दिन से याकोव की तरह ही मोची की उस छोटी-सी बच्ची का पूरी तरह ख़्याल रखने लगा था और वह पूरी कोशिश करता था कि उस पर कोई आँच न आने पाये। इल्या इस बात से बहुत प्रभावित हुआ था कि बड़ी उम्र के आदमी ने उससे कोई उपकार करने को कहा था, क्योंकि बड़ी उम्र के ज़्यादातर लोग छोटे लड़कों को मारने-पीटने और उन पर हुक्म चलाने के अलावा कुछ नहीं करते थे। जब गाड़ीवान मकार अपना छकड़ा धोता होता था, उस वक़्त अगर कोई बच्चा उसके पास चला जाता था तो वह उसे ठोकर मारता था या उनके मुँह पर गीला कपड़ा मारता था। अगर कोई उत्सुकतावश सावेल के लोहारख़ाने में चला जाता था तो उसे बहुत ग़ुस्सा आता था और वह बच्चों पर कोयले के बोरे गिरा देता था। अगर कोई पेर्फ़ीश्का की खिड़की के सामने खड़े होकर उसकी रोशनी रोकता था तो जो भी चीज़ उसके हाथ में आ जाती थी वह फेंककर मारता था... कभी-कभी बड़ी उम्र के लोग बच्चों को सिर्फ़ इसलिए मार बैठते थे कि उनके पास और कुछ करने को नहीं होता था या वे उनके साथ खेलना चाहते थे। लेकिन दादा येरेमेई उन पर कभी हाथ नहीं उठाता था।

जल्दी ही इल्या यह सोचने लगा कि गाँव का जीवन शहर के जीवन से अच्छा था। गाँव में तो वह जहाँ जी चाहे घूमने-फिरने जा सकता था, लेकिन यहाँ चाचा ने उसे आँगन से बाहर निकलने को भी मना कर दिया था। गाँव में ज़्यादा शान्ति थी, वहाँ ज़्यादा जगह थी, और सभी लोग एक ही जैसा काम करने में लगे रहते थे जो सभी की समझ में आता था। यहाँ तो जिसके जी में जो आता था वही वह करता था, यहाँ सभी लोग ग़रीब थे, अपना पेट भरने के लिए सभी किसी दूसरे के आसरे रहते थे, हमेशा उन्हें आधा पेट ही खाने को मिल पाता था।

एक दिन तेरेन्ती ने दोपहर का खाना खाते समय बहुत गहरी आह भरकर अपने भतीजे से कहा :

"पतझड़ के दिन आ रहे हैं, इल्या, शिकंजा पहले से भी ज़्यादा कस जायेगा... हे भगवान!..."

और वह अपने बन्दगोभी के शोरबे के प्याले में उदासी के साथ घूरते हुए विचारों में खो गया। लड़का भी सोच में पड़ गया। दोनों उसी मेज़ पर खा रहे थे जिस पर

कुबड़ा बर्तन धोता था।

"पेत्रूख़ा कह रहा था कि याकोव के साथ तुम्हें भी स्कूल जाना चाहिए। मैं भी समझता हूँ कि जाना चाहिए... यहाँ तो पढ़ाई के बिना आदमी का काम ही नहीं चल सकता, उसी तरह जैसे उसके आँखें न हों। लेकिन स्कूल जाने के लिए जूते और कपड़े भी तो होने चाहिए। हे भगवान, हमारा एक ही तो सहारा है!..."

अपने चाचा की आहें सुनकर और उसकी आँखों में उदासी देखकर इल्या के दिल में एक टीस-सी उठी।

"चलो, यहाँ से चलें!..." उसने धीरे-से सुझाव रखा।

"कहाँ?" कुबड़े ने सपाट स्वर में पूछा।

"हम चले जायेंगे जंगल में!" इल्या ने कहा और उसमें अचानक फुर्ती आ गयी। "याद है तुमने मुझे बताया था कि दादा जंगल में न जाने कितने बरस अकेले रहे थे! और हम तो दो हैं! हम पेड़ों की छाल उतारेंगे!... लोमड़ियाँ और गिलहरियाँ मारेंगे!... तुम्हारे पास बन्दूक़ होगी और मेरे पास जाल होंगे!... मैं चिड़ियाँ पकड़ूँगा सच्ची, मैं पकड़ूँगा! वहाँ बेरी होगी, कुकुरमुत्ते होंगे... चलो चलें, चलेंगे न?"

चाचा ने उसे बड़े स्नेह से देखा।

"और भेड़ियों और भालुओं का क्या होगा?" उसने मुस्कराकर कहा।

"हमारे पास बन्दूक़ जो होगी," इल्या ने उत्साह से कहा। "जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो जंगली जानवरों से नहीं डरा करूँगा!... मैं उन्हें निहत्था ही मार डालूँगा!... मुझे अब भी किसी से डर नहीं लगता है! यह कोई ज़िन्दगी नहीं है मैं छोटा हूँ, लेकिन इतना तो मैं भी समझ सकता हूँ! यहाँ ज़्यादा ज़ोर से पिटाई होती है। जब लोहार सिर पर मारता है तो दिन भर खोपड़ी झन्नाती है।"

"आह! बेचारा अनाथ बच्चा!" तेरेन्ती ने कहा, अपना चमचा फेंक दिया और जल्दी से उठकर वहाँ से चला गया।

उस दिन शाम को, जब इल्या आँगन में मँड़राते-मँड़राते थक गया तो शराबख़ाने में आकर अपने चाचा की मेज़ के पास फर्श पर बैठ गया। आँख लगते-लगते उसने तेरेन्ती को दादा येरेमेई से बातें करते सुना, जो वहाँ चाय पीने आया था। उस कबाड़ी की कुबड़े से दोस्ती हो गयी थी और वह हमेशा उसकी मेज़ के पास ही आकर बैठता था।

"तुम चिन्ता न करो," इल्या ने येरेमेई को अपनी चिचियाती आवाज़ में कहते सुना, "असल चीज़ तो बस एक है और वह है भगवान। हम सब भगवान के चाकर हैं, जैसा कि धर्मग्रन्थ में लिखा है। भगवान तुम्हारे सारे दुख देखता है। तुम्हारा भी सुख का दिन आयेगा जब वह अपने फ़रिश्ते को बुलाकर कहेगा, 'पृथ्वी पर जाओ,

देवदूत, और मेरे तुच्छ सेवक तेरेन्ती के सारे दुख हर लो'।"

"भगवान पर ही तो भरोसा करता हूँ, दादा। और मैं कर भी क्या सकता हूँ?" तेरेन्ती ने धीरे से कहा।

"मैं इल्या को स्कूल भेजने भर का पैसा जुटा लूँगा," येरेमेई ने ऐसी आवाज़ में कहा जिस आवाज़ में आबदार पेत्रूख़ा उस समय बोलता था जब उसे ग़ुस्सा आता था। "मैं तुम्हें पैसा कर्ज दे दूँगा। जब तुम्हारे पास पैसा हो आये तो वापस कर देना..."

"ओह, दादा!" तेरेन्ती ने दबी ज़बान से कहा।

"बस, तुम कुछ कहो नहीं। अभी तो तुम अपने लड़के को मुझे दे दो उसका यहाँ कोई काम नहीं है!... और वह मेरी थोड़ी-बहुत मदद कर देगा मेरे पैसे के सूद के बदले... कभी कोई चीथड़ा ज़मीन से उठाकर दे देगा, कभी कोई हड्डी मैं, बूढ़ा, अपनी कमर तोड़ने से बच जाऊँगा।"

"अरे, भगवान तुम्हारा भला करे!" कुबड़े ने गूँजती हुई आवाज़ में ज़ोर से कहा।

"भगवान मेरा भला करेगा और मैं तुम्हारा भला करूँगा और तुम उस लड़के का भला करोगे और लड़का भगवान का भला करेगा और यह चक्कर इसी तरह चलता रहेगा... और किसी पर किसी का कोई कर्ज नहीं होगा... अरे भाई, मैंने न जाने कितने वर्ष ज़िन्दगी काटी है और न जाने कितनी चीज़ें देखी हैं, लेकिन भगवान को छोड़कर कुछ भी नहीं देखा है। सब कुछ उसी का दिया है और सब कुछ उसी के पास चला जायेगा उसी का है, लौटकर उसी को मिल जायेगा।"

इल्या उसकी बातों की हल्की-हल्की गूँज सुनते-सुनते सो गया। अगले दिन बहुत सवेरे दादा येरेमेई ने उसे जगाया और ख़ुश होकर उससे कहा :

"चल, मेरे साथ बाहर चल, इल्या! जल्दी से उठ जा, बच्चे!"

येरेमेई कबाड़ी की प्यार भरी देखभाल में इल्या का सुखी जीवन शुरू हुआ। रोज़ बूढ़ा उसे बहुत सव`रे जगा देता और दोनों देर शाम तक चीथड़े, हड्डियाँ, फटा हुआ काग़ज़, पुराने लोहे के टुकड़े और चमड़े के छोट चस्पी की असंख्य चीज़ें थीं। इसलिए पहले कुछ दिन तक तो इल्या बूढ़े की ठीक से मदद नहीं कर पाया, वह लोगों और घरों को ध्यान से देखता रहा, हर चीज़ पर आश्चर्य करता रहा और उसके बारे में सोचता रहा और बूढ़े से उनके बारे में ढेरों सवाल करता रहा... येरेमेई हर वक़्त बातें करने को तैयार रहता था। वह सिर झुकाये हुए ज़मीन पर नज़रें जमाये अपनी छड़ी की साम से रास्तेभर ठक-ठक करता हुआ घर-घर जाता और अपनी फटी क़मीज़ के आस्तीन से या मैले बोरे के छोर से अपनी बहती हुई आँखें पोंछता जाता, इसके साथ ही वह लगातार अपनी एक ही सुर पर चलने वाली लयदार आवाज़ में अपने छोटे-से सहायक को समझाता

जाता :

"यह घर सेठ प्चेलिन का है, साव्वा पेत्रोविच का। बहुत अमीर आदमी है यह साव्वा पेत्रोविच!"

"दादा," इल्या पूछता, "लोग अमीर कैसे बन जाते हैं?"

"अपना ख़ून-पसीना एक करके, मतलब है, काम करके। वे सारा दिन काम करते हैं, सारी रात काम करते हैं और अपना पैसा बचाते हैं, और जब ढेर-सा पैसा जुड़ जाता है तो वे घर बनवा लेते हैं और घोड़े ख़रीदते हैं, अच्छे-अच्छे बर्तन और तरह-तरह की चीज़ें ख़रीदते हैं। हर चीज़ नयी। फिर कारिन्दों को और चौकीदारों को और तरह-तरह के लोगों को काम करने के लिए नौकर रख लेते हैं और ख़ुद आराम करते हैं चैन से रहते हैं। इसे कहते हैं गाढ़े पसीने की कमाई का सुख भोगना... हुँ! लेकिन कुछ दूसरे लोग भी होते हैं जो पाप के सहारे अमीर बनते हैं। प्चेलिन के बारे में लोग कहते हैं कि जब यह सेठ प्चेलिन नौजवान था तब इसने एक आदमी का ख़ून कर दिया था। हो सकता है कि लोग जलन के मारे ऐसा कहते हों। और हो सकता है यह सच भी हो। बड़ा दुष्ट आदमी है यह प्चेलिन, और उसकी आँखों में भय झलकता है... उसकी आँखें बेचैन रहती हैं और वह हमेशा दूसरों से आँखें चुराता रहता है... हो सकता है प्चेलिन के बारे में जो कुछ कहा जाता है सब झूठ हो... ऐसा भी हो सकता है कि आदमी अचानक अमीर बन जाये... उसकी क़िस्मत खुल जाये... सच्चाई क्या है यह तो भगवान ही जानता है... हम कुछ भी नहीं जानते!... हम तो बस इन्सान हैं! इन्सान तो भगवान के बीज होते हैं... बीज हैं बेटा, हम सभी इन्सान! भगवान ने हमें धरती पर बिखेर दिया था और कहा था, 'फूलो-फलो, देखूँ तो कि तुम आगे चलकर क्या निकलते हो।' यही बात है। और यह घर सबनेयेव का है, मित्री पाव्लोविच सबनेयेव का... वह तो प्चेलिन से भी ज़्यादा अमीर है। वह तो सचमुच दुष्ट आदमी है, इतना मुझे अच्छी तरह मालूम है... मैं इसका फ़ैसला नहीं कर सकता हूँ, इसका फ़ैसला तो भगवान ही कर सकता है। लेकिन इतना मुझे मालूम है अच्छी तरह... वह हमारे गाँव का मुखिया था और ऐसा चोर था वह कि बस! सब कुछ हमारा चुरा ले गया वह। भगवान मित्री पाव्लोविच की हर बात बड़े धीरज से सहता रहा, लेकिन आख़िरकार उसका धीरज भी टूट गया और उसने पलटा लेना शुरू किया। पहले तो वह बहरा हो गया, यही मित्री पाव्लोविच, फिर उसके बेटे को घोड़ों ने मार डाला... और अभी कुछ दिन हुए उसकी बेटी घर से भाग गयी..."

इल्या उस बूढ़े का एक-एक शब्द घूँट-घूँट करके पीता रहता, विशाल घरों को देखता रहता और बीच-बीच में कहता :

"काश मैं इस घर को अन्दर से बस एक बार झाँककर देख पाता!..."

“देखोगे! जी लगाकर पढ़ो, जब तुम बड़े हो जाओगे तो हर चीज़ देखोगे! हो सकता है कि तुम ख़ुद अमीर बन जाओ... तुम्हारा एक ही काम है, जीना... आह-आह! अब मुझी को ले लो मैं इतने दिन जिया हूँ और इतनी चीज़ें देखी हैं कि मेरी आँखें थककर चूर हो गयी हैं... देखते हो, मैं इन आँसुओं का बहना नहीं रोक सकता और इसीलिए मैं इतना दुबला और कमज़ोर हूँ... इन आँसुओं के साथ मेरा सारा सत्त बह जाता है।”

जब बूढ़ा भगवान के बारे में बातें करता था तो इल्या को बहुत मज़ा आता था, वह इतने प्यार से और इतनी गहरी आस्था से ये बातें करता था। उसके कोमल शब्द बच्चे के मन में इस पक्की आशा की ज्योति जगा देते थे कि आगे चलकर बेहतर दिन आने वाले हैं। वह अधिक उल्लसित हो उठा और शहर में रहने के पहले दिनों के मुक़ाबले में अब वह अपने आप को ज़्यादा बच्चा महसूस करने लगा।

वह बड़ी उत्सुकता से बूढ़े को कूड़े के ढेरों को कुरेदने में मदद देता। कचरे को उलट-पुलटकर उसमें से चीज़ें ढूँढ़ निकालने में एक अजीब ही आकर्षण था, और जब भी कोई ख़ास मूल्यवान चीज़ हाथ लग जाती तो बूढ़े के चेहरे पर ख़ुशी देखकर उसे बहुत आनन्द मिलता था। एक दिन इल्या को बड़ा-सा चाँदी का चम्मच मिल गया। इसके बदले में बूढ़े ने उसे आधा पौण्ड पिपरमिण्ट केक ख़रीद दिया। दूसरी बार उसने एक फफूँदी लगा हुआ बटुआ खोद निकाला जिसमें एक रूबल से ज़्यादा की रक़म निकली। कभी उन्हें छुरी-काँटे, ढिबरी-पेंच, पीतल की टूटी हुई चीज़ें मिल जातीं, और एक बार तो इल्या ने एक खड्ड में से, जहाँ शहर के लोग कूड़ा डालते थे, एक भारी-सा पीतल का शमादान खोद निकाला। जब भी इल्या कोई मूल्यवान चीज़ ढूँढ़ लेता था तो बूढ़ा उसे कोई मिठाई उपहार में ख़रीद देता था।

“देखो, दादा!” इसी तरह की कोई चीज़ ढूँढ़कर इल्या ख़ुशी से चिल्ला पड़ता। “यह देखा? अरे वाह!”

“चिल्लाओ नहीं! चिल्लाओ नहीं! हे भगवान!” बूढ़ा घबराकर अपने चारों ओर नज़र डालता और उससे गिड़गिड़ाकर कहता।

जब भी कोई असाधारण चीज़ मिल जाती तो वह हमेशा डर जाता, और जल्दी से उसे बच्चे के हाथों से झपटकर अपने बड़े-से बोरे में डाल लेता।

“अपना मुँह बन्द रखना सीखो,” वह बड़ी नरमी से कहता और उसकी सूजी हुई आँखों से आँसू बहते रहते।

उसने इल्या को एक छोटा बोरा और साम लगी हुई छड़ी दे दी थी। लड़के को इस साज-सामान पर बड़ा गर्व था। वह अपने बोरे में तरह-तरह के डिब्बे, टूटे हुए खिलौने, चीनी के टूटे हुए बर्तनों के टुकड़े जमा करता रहता था; जब वह अपनी पीठ

पर उनका बोझ महसूस करता और चलते वक़्त उसकी खड़खड़ाहट सुनता तो उसे बहुत अच्छा लगता। दादा येरेमेई ने उसे सिखा दिया था कि कौन-कौन-सी चीज़ें चुनी जायें।

"ये-ये चीज़ें चुनकर घर लाया करो और उन्हें बच्चों को दे दिया करो। वे बहुत ख़ुश होंगे इन चीज़ों से। दूसरों को ख़ुश रखना बड़ी अच्छी बात है। भगवान हमसे यही चाहता है... ख़ुशी की ज़रूरत सभी लोगों को है पर इस दुनिया में इस चीज़ की कितनी कमी है! इतनी कमी है कि कुछ लोग तो जिये चले जाते हैं और उन्हें उम्र भर इसका स्वाद नसीब नहीं होता! एक बार भी नहीं ज़रा सोचो!"

इल्या को आँगन-आँगन जाने के बजाय शहर के घूरे को कुरेदना ज़्यादा पसन्द था। यहाँ येरेमेई जैसे दो-तीन और कबाड़ियों के अलावा कभी कोई नहीं होता था, इसलिए चोरों की तरह चौकन्ने रहने की कोई ज़रूरत नहीं होती थी कि हाथ में झाड़ू लेकर अहाते का चौकीदार कहीं न आ जाये और गालियाँ देकर भगा न दे।

रोज़ लगभग दो घण्टे तक घूरे को कुरदने के बाद येरेमेई का यह कहना एक नियम-सा था :

"बस, बहुत हो गया, इल्या! अब चलकर थोड़ा सुस्ता लें और कुछ खा-पी लें!"

और यह कहकर वह अपनी क़मीज़ के अन्दर से एक रोटी निकालता और अपने सीने पर सलीब का निशान बनाकर रोटी के दो टुकड़े कर लेता। रोटी खा लेने के बाद वे दोनों खड्ड के किनारे लेटकर कोई आधा घण्टा आराम करते। यह खड्ड नदी के किनारे तक जाता था और उन्हें वहाँ से लेटे-लेटे यह नदी दिखाई देती थी। वह चौड़ी-सी रूपहले नीले रंग की नदी लहरें मारती हुई खड्ड के साथ-साथ धीरे-धीरे बहती जाती थी, और जब इल्या नज़र जमाये उसे देखता रहता था तो उसका जी नदी के पानी पर तैरने को चाहता था। नदी के पार दूर तक घास के मैदान फैले हुए थे जिनमें ऊँचे-ऊँचे भूसे के ढेर भूरी-भूरी मीनारों की तरह खड़े थे, और बहुत दूर, धरती के बिल्कुल छोर पर, जंगल की काली, कटी-फटी दीवार जाकर नीले आकाश में लीन हो गयी थी। घास के मैदान में शान्ति रहती थी और यह आभास होता था कि वहाँ की हवा स्वच्छ और शुद्ध और सुगन्धित होगी... यहाँ तो सड़ते हुए कचरे की दम घोंट देने वाली बदबू थी; वह इल्या के सीने पर एक बोझ बनी रहती थी, उससे उसकी नाक में चरपराहट होती थी और दादा येरेमेई की तरह उसकी आँखों से भी पानी बहने लगता था। पीठ के बल लेटे-लेटे वह आसमान के नीले गुम्बद को टकटकी बाँधे देखता रहता था और उसके शिखर को खोजने का व्यर्थ प्रयास करता रहता था। उस पर उदासी और नींद छाने लगती थी और उसके दिमाग़ के पर्दे पर धुँधली-धुँधली तस्वीरें गुज़रने लगती थीं। उसे लगता था कि कोई पारदर्शी विशाल नरम काया, जिसके आयाम दृष्टि की पकड़ में

नहीं आते थे और जिससे हल्की-हल्की सुखद आँच-सी निकलती थी, जिसमें से एक झीनी-झीनी आभा प्रसारित होती थी, वहाँ दूर नीलिमा में तैर रही थी, एक ऐसी काया जो कठोर भी थी और दयालु भी; और ऐसा लगता था कि वह और दादा येरेमेई और सारा संसार इसी काया की ओर बहते चले जा रहे हैं, निरन्तर ऊपर की ओर सीमा से मुक्त व्योम में, उस नीलवर्ण झिलमिलाहट में, शुचिता तथा ज्योति के उस अनन्त विस्तार में... और उसके मन पर एक मधुर शान्त उल्लास छा जाता था।

शाम को घर लौटकर जब वह आँगन में पाँव रखता तो एक ऐसे आदमी के गर्वाभास के साथ जो दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद आराम करने घर लौटा हो और जिसके पास उस तरह के बेकार के कामों में नष्ट करने के लिए कोई समय न हो जिनमें दूसरे बच्चे अपना समय गँवाते थे। उसकी गम्भीर मुद्रा और उसकी पीठ पर लदे हुए बोरे को देखकर, जिसमें हमेशा तरह-तरह की दिलचस्प चीज़ें होती थीं, दूसरे बच्चों के मन में उसके प्रति सम्मान की भावना जागृत होती थी।

दादा येरेमेई बच्चों को देखकर मुस्कराता और हमेशा इस तरह की कोई मज़ाक़िया बात कहता, जैसे :

"लो, आ गया ऊँटों का क़ाफ़िला अपनी पीठ पर गट्ठर और ठसा-ठस भरे हुए बोरे लादे... इल्या! जाकर अपना थोबड़ा धो ले और आकर मेरे साथ शराबख़ाने में चाय पी ले!..."

इल्या लापरवाही से इतराता हुआ तहख़ाने में अपने यहाँ चला जाता और लड़कों का झुण्ड झिझकते हुए उसके बोरे को टटोलता हुआ उसके पीछे-पीछे आता। सिर्फ़ पावेल हमेशा आकर उसके रास्ते में खड़ा हो जाता था।

"अच्छा, कबाड़ी, हमें दिखा तो क्या लाया है तू!" वह चिढ़ाते हुए चिल्लाकर कहता।

"सबर करो!" इल्या उसकी बात बीच में ही काटकर गम्भीरता से कहता। "चाय पी लूँ तो दिखाऊँगा..."

शराबख़ाने में उसका चाचा बड़ी स्नेह-भरी मुस्कराहट से उसका स्वागत करता।

"तो कमाऊ पूत घर आ गया? कैसा बेचारा बच्चा है मेरा! थक गया?"

जब उसका चाचा उसे कमाऊ पूत कहता तो इल्या को बहुत अच्छा लगता, लेकिन अकेले उसका चाचा ही उसे यह नहीं कहता था। एक दिन पावेल ने हमेशा की तरह कोई शरारत की तो सावेल ने उसे पकड़कर उसका सिर अपने दोनों घुटनों के बीच दबोच लिया और रस्सी से उसकी धुनाई करने लगा।

"अब कभी शरारत न करना, कुत्ते का पिल्ला, हद हो गयी शरारत की," उसने चिल्लाकर कहा। "यह ले... और ले... और ले! तेरी उमर के दूसरे लड़के

अपनी रोजी कमाते हैं और तू बस अपना पेट भर लेता है और कपड़े फाड़ता रहता है!"

पावेल पाँव पटक-पटककर तड़पता रहा और गला फाड़कर चिल्लाता रहा, लेकिन रस्सी बड़ी बेरहमी से उसकी पीठ पर पड़ती रही। इल्या को अपने दुश्मन की दर्दनाक और क्रोध-भरी चीख़-पुकार सुनकर अजीब-सा सन्तोष हुआ, लेकिन लोहार के शब्दों से उसके मन में अपनी श्रेष्ठता का आभास पैदा हुआ और तभी उसे लड़के पर तरस आया।

"बस करो, चाचा सावेल!" वह अचानक पुकार उठा। लोहार एक आख़िरी कोड़ा रसीद करके इल्या की ओर मुड़ा और चिढ़कर बोला :

"तू बीच में न पड़! बड़ा आया वकील बनकर! तू भी मेरे हाथ की एकाध खाना चाहता है?" इतना कहकर उसने पावेल को एक ओर धकेल दिया और लोहारख़ाने में चला गया। पावेल उठा और अन्धों की तरह लड़खड़ाता हुआ आँगन के एक अन्धेरे कोने में चला गया। इल्या उसके पीछे-पीछे गया, उसके मन में दया उमड़ी पड़ रही थी। पावेल कोने में जाकर घुटनों के बल बैठ गया और अपना सिर बाड़ से टिकाकर दोनों हाथ कूल्हों पर रखकर पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से रोने लगा। इल्या अपने पराजित शत्रु से कोई स्नेहपूर्ण बात कहना चाहता था, लेकिन उसके मुँह से केवल ये शब्द निकल सके :

"बहुत दर्द होता है?"

"चल हट यहाँ से!" पावेल चिल्लाया।

इस तरह झिड़क दिये जाने पर उसे बहुत बुरा लगा। और उपदेश देने के भाव से उसने अपनी बात शुरू की :

"तू हमेशा दूसरों को मारता-पीटता रहता है अब तुझे भी..."

लेकिन वह अपनी बात अभी पूरी भी नहीं कर पाया था कि पावेल उस पर झपटा और उसे ज़मीन पर पटक दिया। इल्या को भी ताव आ गया और दोनों गुत्थमगुत्था होकर गेंद की तरह ज़मीन पर लुढ़कने लगे। पावेल ने उसे काटा और खरोंचा; इल्या उसके बाल पकड़कर उसका सिर बार-बार ज़मीन से इतनी बुरी तरह टकराता रहा कि आख़िरकार पावेल चिल्ला उठा :

"बस, अब जाने दे!"

"देखा?" इल्या ने उठते हुए विजय गर्व से कहा। "मैं तुझसे तगड़ा हूँ। ख़बरदार, जो अब कभी मुझे हाथ लगाया!"

आस्तीन से अपने चेहरे का ख़ून पोंछते हुए वह वहाँ से चल दिया। अपनी त्योरियाँ चढ़ाये वह मनहूस लोहार आँगन के बीच में खड़ा था। उसे देखकर इल्या डर

से काँपते हुए रुक गया; उसे यक़ीन था कि सावेल अब उसकी पिटाई करेगा कि उसने उसके बेटे पर हाथ क्यों उठाया। लेकिन लोहार केवल अपने कन्धे बिचकाकर बोला :

“ऐंठ क्या रहा है? पहले कभी मुझे देखा नहीं है क्या? अपने रास्ते लग!”

उस दिन शाम को सावेल ने इल्या को फाटक के बाहर पकड़ लिया और उसके सिर पर उंगली से हल्का-सा टहोका मारा।

“धन्धा कैसा चल रहा है, कबाड़ी?” उसने उदासी-भरी मुस्कराहट के साथ पूछा।

इल्या बेहद ख़ुश होकर हँस पड़ा : यह सच्चा सुख था। वह भयानक लोहार, जो आहाते भर में सबसे तगड़ा आदमी था, जिससे सभी डरते थे और जिसकी सभी इज़्ज़त करते थे, उसके साथ हँसी-मज़ाक़ कर रहा था! सावेल ने अपनी फ़ौलादी उँगलियों से इल्या का कन्धा पकड़ लिया और उसके मुँह से ये शब्द सुनकर इल्या की ख़ुशी और बढ़ गयी :

“ओह हो! तू भी अच्छा ख़ासा दमदार लौण्डा है! आसानी से घिसने-टूटने वाला नहीं है तू। जब तू बड़ा हो जायेगा तो मैं तुझे अपने लोहारख़ाने में काम पर लगा लूँगा।”

इल्या ने लोहार की भारी-भरकम टाँग पकड़ ली और कसकर उससे चिपट गया। सावेल ने उस छोटे-से लड़के के दिल का हर्षातिरेक से धड़कना ज़रूर महसूस किया होगा क्योंकि उसने अपना भारी हाथ उसके सिर पर रख दिया और क्षण-भर चुप रहकर फिर भारी आवाज़ में कहा :

“बेचारा, अनाथ बच्चा!... चल, बस अब छोड़ दे!...”

उस दिन शाम को जब इल्या अपना रोज़ का काम करने लगा दिन-भर की बटोरी हुई दिलचस्प चीज़ें बाँटने का काम तो वह ख़ुशी से फूला नहीं समा रहा था। बच्चे मैले बोरे पर ललचाई हुई नज़रें जमाकर बैठ गये। एक-एक करके इल्या ने बोरे में से सूती कपड़े के टुकड़े, लकड़ी का एक सिपाही जिसका रंग मुसीबतें झेलते-झेलते फीका पड़ गया था, जूते की पालिश की एक खाली डिबिया, बालों के तेल का खाली डिब्बा और चाय की एक चिटखी हुई प्याली निकाली जिसका हैंडिल टूट गया था।

“यह मेरा है!” “नहीं मेरा!” उत्कंठित स्वर चिल्ला उठे, और छोटे-छोटे मैले हाथ उन बहुमूल्य चीज़ों की तरफ़ लपके।

“ठहरो! छीना-झपटी मत करो!” इल्या ने आदेश दिया। “अगर सारी चीज़ों पर एकसाथ झपट्टा मारोगे तो खेल ही क्या होगा? देखो, दुकान खुली है! कपड़े का यह टुकड़ा किसे चाहिए? बेहतरीन छींटदार कपड़ा! पचास कोपेक! ख़रीद ले, माशा!...”

“ख़रीद लिया!” माशा की ओर से याकोव ने जवाब दिया और जेब से चीनी के बर्तन का वह टूटा हुआ टुकड़ा निकाला जो उसने इसी मौक़े के लिए रख छोड़ा था

और उसे व्यापारी के हाथ में बढ़ा दिया।

"यह तो कोई बात न हुई," इल्या ने वह टुकड़ा वापस करते हुए कहा। "तुझे मुझसे सौदा करना पड़ेगा, शैतान। तू कभी सौदा नहीं करता!... ऐसे कौन माल ख़रीदता है?"

"मैं भूल गया था," याकोव ने माफ़ी माँगते हुए कहा।

और फिर ज़ोरदार सौदेबाजी शुरू हुई। इधर गाहक और व्यापारी अपने काम में खोये हुए थे और उधर पावेल को जो भी चीज़ अच्छी लगी उसे वह चुराकर भाग गया और उछलते और नाचते हुए चिढ़ाने के अन्दाज़ में बोला :

"यह देखो, यह मैंने चुरा लिया! देखो, मेरे पास क्या है! और किसी ने मुझे चुराते देखा तक नहीं! मूरख! शैतान!"

उसके इस हथकण्डे पर वे आगबबूला हो गये। छोटे बच्चे तो रोने-चिल्लाने लगे और इल्या और याकोव ने चोर को आँगन में चारों ओर दौड़ाना शुरू किया। लेकिन शायद ही वे कभी उसे पकड़ पाते थे। धीरे-धीरे वे उसके इन हथकण्डों के आदी हो गये थे और उन्हें उससे किसी अच्छी बात की उम्मीद ही नहीं रह गयी थी। वे सभी उससे सख़्त नफ़रत करने लगे थे और कोई उसके साथ खेलता नहीं था। पावेल सबसे अलग-थलग रहता था, लेकिन वह हमेशा किसी न किसी को कोई नुक़सान पहुँचाने की घात में रहता था। बड़े सिर वाला याकोव मोची की घुँघराले बालों वाली छोटी-सी बेटी का उसी तरह ध्यान रखता था जैसे कोई धाय बच्चे का रखती है। वह लड़की उसकी सेवाओं को अपना हक़ समझकर स्वीकार करती थी और भले ही वह कभी-कभी उसके साथ प्यार का बर्ताव करती हो लेकिन अक्सर उसे थप्पड़ भी मार देती थी और खरोंच भी लेती थी। इल्या के साथ याकोव की दोस्ती पहले से भी ज़्यादा गहरी हो गयी थी और वह इल्या को अपना कोई न कोई विचित्र सपना सुनाता रहता था :

"...समझ लो मेरे पास ढेरों पैसा हो, सारे रूबल ही रूबल बड़ा-सा बोरा भरके! और मैं उसे लादकर जंगल के पार ले जा रहा हूँ। अचानक डाकू! चाकू लिए हुए! भला मुझे डर नहीं लगेगा, क्या? मैं भागने लगता हूँ, और अचानक मुझे ऐसा लगता है कि बोरे के अन्दर कोई चीज़ हिल-डुल रही है... मैं बोरा फेंक देता हूँ और उसमें से निकलता क्या है, ढेर सारी चिड़ियाँ फुर्र, फुर्र! इतनी कि गिने न गिनी जायें! वे मुझे झपटकर उठा लेती हैं और लेकर उड़ जाती हैं दूर, बहुत दूर आसमान में!..."

वह अचानक रुक गया, उसकी आँखें बाहर उभर आयीं और वह भीगी बिल्ली जैसी सूरत बनाये बैठा घूरता रहा।

"फिर?" इल्या ने उसे बढ़ावा दिया; वह क़िस्से का अन्त सुनने को बेचैन था।

"मैं उड़ गया, हमेशा के लिए..." याकोव ने सपने में खोए-खोये अपनी बात पूरी

कर दी।

"कहाँ?"

"हमेशा के लिए..."

"छिः!" इल्या ने तिरस्कार भरी निराशा के साथ कहा। "तुम्हें कुछ नहीं याद है!..."

बूढ़ा येरेमेई शराबख़ाने में से निकलता और हाथ उठाकर आँखों पर उसका छज्जा बनाये चारों ओर देखने लगता।

"इल्या! तू कहाँ है? सोने का वक़्त हो गया!" वह पुकारकर कहता।

इल्या आज्ञाकारी भाव से बूढ़े के पीछे चल देता और भूसे के बोरे पर लेट जाता, जो उसके बिस्तर का काम देता था। उस बोरे पर लेटकर वह सुनहरे सपने देखता था और उस कबाड़ी के साथ उसका जीवन सुख से बीत रहा था। लेकिन यह हालत बहुत दिन नहीं रही।

दादा येरेमेई ने ईल्या को बूट जूते, एक लम्बा भारी कोट और एक टोपी ख़रीद दी और उसे स्कूल भेज दिया गया। वह भय और कौतुहल के साथ स्कूल के लिए रवाना हुआ और लौटकर आया तो उदास था, उसका दिल दुखा हुआ था और आँखों में आँसू डबडबा रहे थे। लड़कों ने उसे फ़ौरन दादा येरेमेई का हाथ बँटाने वाले के रूप में पहचान लिया था और उसे चिढ़ाते हुए वे एक साथ कहते थे :

"कबाड़ी! गन्दा भंगी कहीं का!"

कुछ ने उसके चुटकियाँ काटी थीं, कुछ ने जीभ निकालकर उसे चिढ़ाया था, और एक लड़के ने तो पास आकर उसे सूँघा तक था और मुँह बनाकर पीठ फेर ली थी।

"उफ़, कितनी बदबू आती है!" उसने चिल्लाकर कहा था।

"वे आख़िर मुझे चिढ़ाते क्यों हैं?" इल्या ने अपने चाचा से पूछा। "क्या फटे-पुराने कपड़े जमा करने में कोई शर्म की बात है?"

"कोई नहीं, बेटा," तेरेन्ती ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा और अपना चेहरा भतीजे की कुछ खोजती हुई सवालिया नज़रों से छिपा लिया। "बस उनकी शरारत है... धीरज रखो!.... कुछ दिन में आदत पड़ जायेगी..."

"और वे लोग मेरे जूतों और मेरे कोट का भी मज़ाक़ उड़ाते हैं!.... कहते हैं कि वे मेरे नहीं हैं, घूरे में से निकालकर लाये गये हैं!...."

दादा येरेमेई ने आँख मारकर उसे दिलासा दिया।

"धीरज रखो, बेटा," उसने कहा, "भगवान तुम्हारा पूरा करेगा! उसके अलावा किसी की कोई हैसियत नहीं है!"

भगवान की बातें करके बूढ़े को ऐसा अपार हर्ष होता था और उसके न्याय में

उसे इतना विश्वास था मानो उसे मालूम हो कि भगवान क्या सोचता है और उसके क्या-क्या इरादे हैं। उसकी बातें सुनकर बच्चे के चोट खाये हुए मन को उस समय तो शान्ति मिल जाती, लेकिन दूसरे दिन यह भावना और भी ज़ोर से उभर आती। इल्या अपने आपको काम करने वाला आदमी, एक महत्त्वपूर्ण आदमी समझने का आदी हो चुका था; सावेल लोहार तक उसके साथ भलमनसाहत से बातें करता था और ये स्कूली लड़के उसका मज़ाक़ उड़ाते थे, उसे चिढ़ाते थे। यह बात उसकी बर्दाश्त के बाहर थी। उसके मन पर स्कूल की जो पहली छाप पड़ी थी उसकी कटुता बढ़ती ही गयी, और दिन-ब-दिन वह उसके दिल में और गहरी पैठती गयी। स्कूल जाना उसके लिए एक कष्टदायक कर्त्तव्य बन गया। अध्यापक ने फ़ौरन पहचान लिया कि वह तेज़ लड़का है और वह दूसरों के सामने उसे आदर्श के रूप में रखने लगा। इसकी वजह से दूसरे बच्चे उसे और भी नापसन्द करने लगे। आगे की बेंच पर बैठकर वह महसूस करता था कि पीछे दुश्मन हैं जो हमेशा उसे अपनी आँखों के सामने पाकर उसकी हँसी उड़ाने के लिए कोई न कोई सूक्ष्म और सटीक बात निकालते थे और उसकी हँसी उड़ाते थे।

याकोव भी उसी स्कूल में जाता था और उसे भी लड़के उतना ही नापसन्द करते थे; वे उसे दुम्बा कहते थे। उसे लगातार सज़ा मिलती रहती थी, क्योंकि वह फिसड्डी लड़का था और उसका ध्यान कहीं और रहता था, लेकिन उसे सज़ा मिलने की कोई परवाह नहीं थी। सच तो यह है कि उसके चारों ओर जो कुछ होता रहता था वह उसकी ओर कोई ध्यान ही नहीं देता था। घर पर और स्कूल में दोनों ही जगह वह सबसे अलग-थलग रहकर अपनी ज़िन्दगी बिताता था, और शायद ही कोई दिन ऐसा होता था जब वह इल्या से कोई बेढब सवाल पूछकर उसे आश्चर्य में न डाल देता हो।

“इल्या!” वह कहता, “लोग इतनी छोटी-छोटी आँखों से सब कुछ देख कैसे लेते हैं? पूरा शहर देख लेते हैं। या इस सड़क को ही ले लो   यह पूरी की पूरी हमारी आँखों में कैसे समा जाती है?”

शुरू-शुरू में तो इल्या इन सवालों की ओर भरपूर ध्यान देता था लेकिन धीरे-धीरे उसे इन सवालों से उलझन होने लगी थी क्योंकि उसकी वजह से उसका ध्यान उन बातों से भटकने लगा था जो उसके लिए महत्त्वहीन नहीं थीं। इस तरह की बहुत-सी बातें थीं, और लड़के ने जल्दी ही और सूक्ष्मतया उन्हें देखना सीख लिया था।

एक दिन स्कूल से लौटकर उसने येरेमेई से व्यंग्य-भरी मुस्कराहट के साथ कहा :

“मास्टर साहब? हुँह! अपने हित की बात ख़ूब पहचानते हैं वह... कल दुकानदार मलाफ़ेयेव के बेटे ने खिड़की का काँच तोड़ दिया था तो उन्होंने उसे बस हल्की-सी डाँट बताकर छोड़ दिया, और आज उन्होंने अपने पैसों से काँच लगवा दिया...”

"देखो, कितने दयालु हैं वह!" येरेमेई ने सराहना करते हुए कहा।

"दयालु," इल्या ने तिरस्कार से कहा। "जब वान्का क्लुचर्योव ने काँच तोड़ दिया था तो उन्होंने उसे खाने को नहीं दिया था और उसके बाप को बुलवाकर कहा था : 'काँच के लिए चालीस कोपेक देना!' और वान्का के बाप ने उसे मारा भी था।"

"ऐसी बातों को अनदेखा कर दिया करो, इल्या," बूढ़े ने बेचैनी से आँखें झपकाते हुए उसे सलाह दी थी। "अपने मन को समझा लिया करो कि इनसे तुम्हें कोई सरोकार नहीं है। क्या उचित है और क्या अनुचित, यह फ़ैसला करना भगवान का काम है, हमारा नहीं! हम तो इस काम को कर नहीं सकते। उसके पास सच्ची कसौटी है!... कितने बरस मैंने इस दुनिया में बिताये हैं, और कितना अन्याय मैंने देखा है! अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता रत्ती-भर भी न्याय नहीं है!.... फिर भी मुझे देखो, अस्सी बरस का होने को आया; ज़रूर इतने लम्बे अर्से में कहीं न कहीं तो न्याय से मेरा भी पाला पड़ा होगा। लेकिन मैंने कभी देखा नहीं, कभी यह जाना नहीं कि उसका मज़ा कैसा होता है।"

"इसमें जानने की क्या बात है?" विश्वास न करते हुए इल्या बोला। "अगर इससे चालीस कोपेक लिये हैं तो उससे भी लो। न्याय तो यह है!"

लेकिन बूढ़ा उससे सहमत नहीं हुआ। वह बड़ी देर तक यही बातें करता रहा कि इन्सान तो अन्धे होते हैं और वे एक-दूसरे के बारे में कोई फ़ैसला नहीं कर सकते। न्याय तो भगवान ही कर सकता है। इल्या बड़े ध्यान से सुनता रहा, लेकिन उसके चेहरे पर उदासी और गहरी होती गयी और उसकी आँखें और निस्तेज होती गयीं।

"भगवान फ़ैसला कब करेगा?" उसने अचानक बूढ़े से पूछा।

"यह तो कोई नहीं जानता। जब वह घड़ी आयेगी तो वह आसमान से उतरकर नीचे आयेगा और ज़िन्दा-मुर्दा सभी का फ़ैसला करेगा... लेकिन कब यह कोई नहीं जानता... तुम कभी मेरे साथ सन्ध्या की प्रार्थना में चलना, बेटा।"

अगले शनिवार को येरेमेई के साथ इल्या भी गिरजाघर गया। वे दो दरवाज़ों के बीच ड्योढ़ी में भिखारियों के साथ खड़े थे। जब भी सड़क की तरफ़ वाला दरवाज़ा खुलता था तो इल्या ठण्डी हवा के थपेड़े की चपेट में आ जाता था। उसके पाँव जम जाते थे और गर्म रखने के लिए वह उन्हें पत्थर के फ़र्श पर पटकता था। काँच के दरवाज़े के पार उसे ज्योतिर्मय आकृतियाँ बनाती हुईं मोमबत्तियों की झिलमिलाती हुई, काँप-काँपकर जलती हुई सुनहरी लवें दिखायी दे रही थी, जिनकी रोशनी पादरी के चोंगे की कसीदाकारी पर, लोगों के काले सिरों पर, देव-प्रतिमाओं पर और देव-प्रतिमाओं की दीवार की ख़ूबसूरत नक़्क़ाशी पर पड़कर उन्हें आलोकित कर रही थी।

बाहर की अपेक्षा यहाँ गिरजाघर में लोग अधिक कृपालु और भीरु लग रहे थे।

उनकी शान्त मौन आकृतियों को स्पर्श करती हुई सुनहरी जगमगाहट में वे अधिक आकर्षक भी लग रहे थे। जब भी गिरजाघर के अन्दर जाने का दरवाज़ा खुलता गीत की एक उष्ण सुगन्धित स्वर-लहरी तैरती हुई बाहर उसके पास तक आती। वह लहर लड़के को मानो बड़ी नरमी से अपनी लपेट में लेती जा रही थी और वह ख़ुश होकर उसे पी रहा था। उसे यहाँ दादा येरेमेई के पास खड़े होकर उसे प्रार्थना के शब्द बुदबुदाते हुए सुनना अच्छा लग रहा था। गिरजाघर के आर-पार सुमधुर स्वर तैर रहे थे और इल्या बड़ी अधीरता से दरवाज़ा खुलने की प्रतीक्षा कर रहा था ताकि उन स्वरों की उष्ण सुगन्ध की लहरें बहती हुई उसके पास तक फिर पहुँचें। वह जानता था कि गाने वालों की टोली में, जो बाक़ी लोगों से ऊँचाई पर खड़ी थी, सबका मज़ाक़ उड़ाने वाला स्कूल का एक सबसे दुष्ट लड़का ग्रीशा बूब्नोव और हमेशा छेड़कर लड़ने वाला तगड़ा लड़का फ़ेद्या दोल्गानोव भी थे, लेकिन उस समय वे न तो उसे बुरे लग रहे थे और न ही उनसे उसे चिढ़ हो रही थी। उसे उनसे कुछ ईर्ष्या ही हो रही थी। उसका स्वयं जी चाह रहा था कि वह गाने वालों की टोली में होता और वहाँ से एकत्रित लोगों को नीचे नज़र डालकर देखता।

गिरजाघर से बाहर निकलने पर उसके मन में दया का भाव उमड़ने लगा और वह बूब्नोव, दोल्गानोव और दूसरे सभी छात्रों के साथ मेल-जोल कर लेने को तैयार था। लेकिन सोमवार को जब वह स्कूल से घर लौटा तो वह उतना ही खिन्न और उदास था जितना हमेशा रहता था।

हर भीड़ में एक न एक आदमी ऐसा ज़रूर होता है जो वहाँ अटपटा महसूस करता है, लेकिन उसका यह मतलब नहीं है कि वह दूसरों से अच्छा या बुरा है। ज़रूरी नहीं है कि किसी का दिमाग़ बहुत तेज़ हो या नाक बेतुकी हो तभी उसका मज़ाक़ उड़ाया जाये। मज़ाक़ उड़ाने के लिए किसी को नक्कू बना लेने की प्रेरणा भीड़ को केवल आमोद-प्रमोद की इच्छा से मिलती है। इस मौक़े पर इल्या लुन्योव को नक्कू बना लिया गया। उसका अंजाम बहुत बुरा होता अगर ठीक उसी क्षण एक ऐसी घटना न हो गयी होती जिसकी वजह से स्कूल में उसकी सारी दिलचस्पी ख़त्म हो गयी और वह अपने आप को स्कूल से परे महसूस करने लगा।

सारा क़िस्सा शुरू इस तरह हुआ कि एक दिन जब वह स्कूल से याकोव के साथ घर वापस आया तो उसे फाटक के पास शोर-ग़ुल सुनायी दिया।

"वह देखो!" उसने अपने दोस्त से चिल्लाकर कहा, "ज़रूर फिर कोई लड़ाई हो रही होगी। जल्दी चलो, चलकर देखते हैं!"

वे लपककर आगे पहुँचे और देखा कि आँगन में कुछ अजनबी लोग इधर-उधर भाग रहे हैं और चिल्ला रहे हैं :

"पुलिस बुलाओ! उसे बाँध दो!"

लोहारख़ाने के पास बहुत घनी भीड़ थी। लड़के धक्का-मुक्की करते हुए भीड़ के बीच में तो पहुँच गये, लेकिन जल्दी ही वहाँ से वापस चले आये। एक औरत औंधे मुँह बर्फ़ में पड़ी थी। उसकी गुद्दी पर ख़ून और कोई चिपचिपी चीज़ जमी हुई थी, और सिर के चारों ओर की बर्फ़ गहरे लाल रंग की हो गयी थी। उसके पास ही एक मिंजी हुई सफ़ेद शाल और लोहार की बड़ी-सी सँड़सी पड़ी हुई थी। सावेल लोहारख़ाने की चौखट पर सिमटा-सिकुड़ा बैठा था और उस औरत के हाथों को घूर रहा था जो सामने की ओर फैले थे और उसकी उँगलियाँ बर्फ़ में धँसी हुई थी। लोहार की त्योरियों पर गहरे बल थे, उसके चेहरे पर मुर्दनी छायी हुई थी; उसने अपने दाँत इतने कसकर भींच रखे थे कि जबड़ों के जोड़ के पास दो गोल-गोल गूमड़े-से उभर आये थे। अपने दाहिने हाथ से उसने दरवाज़े की चौखट पकड़ रखी थी, उसकी काली-काली उँगलियाँ बेचैन थीं, उँगलियों को छोड़कर उसका सारा शरीर निश्चल था।

लोग कठोर मुद्रा से चुपचाप उसे घूर रहे थे और अहाते में हालाँकि काफ़ी शोर और चहल-पहल थी, लेकिन यहाँ लोहारख़ाने के पास बिल्कुल ख़ामोशी थी। बूढ़ा येरेमेई पसीने से तर और बाल बिखेरे हुए भीड़ को चीरकर आगे पहुँचा।

"लो, यह पी लो, सावेल," उसने काँपते हाथ से पानी उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा।

"इसे, बदमाश को पानी की नहीं, फाँसी के फन्दे की ज़रूरत है," भीड़ में से किसी ने धीरे से कहा।

सावेल ने पानी अपने बाएँ हाथ में ले लिया और बड़ी देर तक पानी पीता रहा। सारा पानी पी चुकने के बाद उसने खाली बर्तन में घूरकर देखा और अपनी खोखली आवाज़ में बोला :

"मैंने उसे पहले ही मना किया था, 'बाज़ आ जा, छिनाल कहीं की!' मैंने उससे कहा था। 'तुझे मार डालूँगा मैं!' मैंने पहले ही कह दिया था। मैंने उसे कितनी बार माफ़ किया... एक बार नहीं, कई बार... लेकिन वह मानती ही नहीं थी। सो उसका यह नतीजा हुआ... पावेल अब अनाथ हो गया... उसका ध्यान रखना, दादा... भगवान भला करे तुम्हारा..."

"हाय, नसीब!" दादा ने करुणा-भरे स्वर में कहा और अपना काँपता हुआ हाथ लोहार के कन्धे पर रख दिया।

"कमबख़्त!.... इसकी यह मजाल कि भगवान की बात करता है!..." भीड़ में से फिर आवाज़ आयी।

यह सुनते ही लोहार की भवें तन गयीं।

"तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो?" उसने गरजकर कहा। "भाग जाओ यहाँ से सब!"

उसके शब्द चाबुक की तरह लगे और भीड़ बुड़बुड़ाती हुई वहाँ से खिसकने लगी। लोहार उठा और चलकर अपनी मरी हुई बीवी के पास तक गया, लेकिन झटके से पीछे घूमकर सीधा, अपना विशाल शरीर लिये लोहारख़ाने में जा पहुँचा। सभी ने देखा कि वह निहाई पर बैठ गया और अपना सिर इस तरह पकड़कर झोंके खाने लगा मानो उसमें असह्य पीड़ा हो रही हो। इल्या को उस पर तरस आ रहा था; वह वहाँ से चला आया और आँगन में इधर-उधर ऐसे टहलने लगा जैसे नींद में चल रहा हो। वह एक गिरोह से दूसरे गिरोह के पास जाता; वह लोगों की आवाज़ें तो सुन रहा था लेकिन वे कह क्या रहे थे यह उसकी समझ में बिल्कुल नहीं आ रहा था।

पुलिसवालों ने आकर भीड़ को तितर-बितर कर दिया, और फिर वे लोहार को लेकर चले।

"अच्छा, सलाम, दादा," फाटक से बाहर निकलते हुए सावेल ने पुकारकर कहा।

"सलाम, सावेल इवानिच। सलाम, भाई," येरेमेई ने उसके पीछे लपककर जल्दी-जल्दी चिल्लाकर कहा।

किसी और ने लोहार को विदा करते हुए कुछ नहीं कहा...

छोटी-छोटी टोलियाँ बनाकर लोग आँगन में इधर-उधर खड़े थे, बातें कर रहे थे, उदासी से उस औरत की लाश को देख रहे थे; किसी ने उसके सिर पर कोयले का बोरा डाल दिया। एक पुलिसवाला अपने दाँतों में पाइप दबाये लोहारख़ाने की चौखट पर वहीं बैठा था जहाँ सावेल बैठा करता था। वह पाइप पीता जाता था, ज़मीन पर थूकता जाता था और बुझी-बुझी आँखों से दादा येरेमेई की ओर देखकर उसकी बातें सुन रहा था।

"तुम समझते हो कि उसने उसे मारा है?" येरेमेई ने धीमे रहस्य भरे स्वर में कहा। "उसने नहीं, बल्कि शैतान के कारिन्दों ने   उन्होंने ही उसकी जान ली है। कोई आदमी किसी दूसरे आदमी की जान नहीं ले सकता। नहीं मार सकता है आदमी, भले मानसो!"

जो कुछ हुआ था उसका रहस्य सुनने वालों के सामने खोलते हुए उसने दोनों हाथ पहले अपने सीने पर रखे, फिर हाथों को इस तरह हिलाया जैसे किसी को भगा रहा हो और ज़ोर से खाँसा।

"सँड़सी तो उसी ने चलायी थी   शैतान नहीं आया था चलाने," पुलिसवाले ने ज़मीन पर थूकते हुए अपना मत व्यक्त किया।

"लेकिन उससे यह काम कराया किसने?" बूढ़े ने चिल्लाकर कहा। "तुम्हें यही

देखना होगा उसे उकसाया किसने?"

"देखो, वह तुम्हारा कौन लगता है यह लोहार? तुम्हारा बेटा है?" पुलिसवाले ने पूछा।

"नहीं, नहीं!"

"कोई रिश्तेदार है?"

"बिल्कुल नहीं! मेरा कोई रिश्तेदार नहीं..."

"फिर तुम्हें उसकी क्या चिन्ता?"

"हे परमात्मा!"

"मुझे तुमसे बस इतना कहना है," पुलिसवाले ने सख़्ती से उसे डाँटते हुए कहा। "बूढ़े होने की वजह से तुम यह सारी बक-बक कर रहे हो... चले जाओ यहाँ से!"

पुलिसवाले ने मुँह के एक कोने से धुएँ का घना बादल बाहर निकाला और बूढ़े की तरफ़ पीठ फेर ली। लेकिन येरेमेई अपने हाथ हिलाकर ऊँची आवाज़ में जल्दी-जल्दी फिर बोलने लगा।

इल्या का चेहरा पीला पड़ गया था और उसकी आँखें फटी हुई थीं; वह लोहारख़ाने से हटकर उस गिरोह के बीच जा मिला जिसमें मकार, पेर्फ़ीश्का, मुटल्ली और अटारी पर रहने वाली कुछ दूसरी औरतें खड़ी थीं।

"अरे भैया, वह तो शादी के पहले ही बदचलन थी," एक औरत कह रही थी। "कौन जाने पावेल लोहार का बेटा हो ही नहीं, उस मास्टर की औलाद ही हो जो दुकानदार मलाफ़ेयेव के यहाँ रहता था।"

"वही जिसने अपने गोली मार ली थी?" पेर्फ़ीश्का ने पूछा।

"वही! उसी से तो उसका पहला चक्कर चला था।"

पेर्फ़ीश्का की अपाहिज बीवी भी ऊपर आ गयी और अपने चीथड़ों में लिपटी हुई तहख़ाने के पास अपनी जगह पर बैठी रही। उसके हाथ निर्जीव-से उसकी गोदी में रखे हुए थे; उसकी काली-काली आँखें आसमान पर टिकी हुई थीं; उसने अपने होंठ कसकर बन्द कर रखे थे और वे दोनों छोरों पर नीचे की ओर झुक आये थे। इल्या की नज़र बारी-बारी से उसकी आँखों और आसमान के बीच आ-जा रही थी और उसके मन में यह विचार उठा कि पेर्फ़ीश्का की घरवाली भगवान को देख रही होगी और चुपचाप उससे कोई फ़रियाद कर रही होगी।

थोड़ी ही देर में आँगन के सब बच्चे भी तहख़ाने के दरवाज़े के पास जमा हो गये। ठिठुरते हुए अपने कपड़ों में लिपटकर वे सीढ़ियों पर बैठ गये और भय विस्मित होकर सावेल के बेटे के मुँह से उस घटना का ब्यौरा सुनने लगे। पावेल का चेहरा उतरा हुआ था और उसकी चालाक आँखों में उलझन और खिसियाहट का भाव था। पर वह

अपने को हीरो महसूस कर रहा था : इससे पहले कभी किसी ने उसकी ओर इतना ध्यान नहीं दिया था। अपना यह क़िस्सा वह कम से कम एक दर्जन बार सुना चुका था, और सब वह मानो अनिच्छापूर्वक भावशून्य होकर बोल रहा था।

"तीन दिन पहले जब वह चली गयी थी, तो पापा दाँत पीसकर रह गये थे, और तभी से उन्हें उस पर ग़ुस्सा सवार था और वह पागलों की तरह गरज रहे थे। वह बार-बार मेरे बाल पकड़कर खींचते थे... मैं समझ गया कि कुछ होने वाला है। फिर वह घर आयी। कमरा बन्द था हम लोग लोहारख़ाने में थे। मैं धौंकनी के पास खड़ा था। मैंने उसे हम लोगों की तरफ़ आते देखा। वह देहरी पर खड़ी हो गयी और बोली, 'चाभी देना मुझे!' पापा ने सँड़सी उठा ली और उसकी तरफ़ बढ़े... वह धीरे-धीरे उसके पास पहुँचते जा रहे थे... देखकर मैंने तो डर के मारे आँखें बन्द कर लीं! मैं चिल्लाना चाहता था, 'माँ, भागो!' लेकिन मैं चिल्ला न सका... जब मैंने आँखें खोलीं उस वक़्त भी वह उसकी ओर बढ़ रहे थे! देखते कैसी आग बरस रही थी उनकी आँखों से! तभी वह पीछे हटने लगी और उसने भागना चाहा मगर...,"

पावेल का चेहरा फड़कने लगा और उसके दुबले-पतले हड़ियल शरीर में सिहरन दौड़ गयी। उसने एक गहरी साँस ली और धीरे-धीरे साँस छोड़ते हुए बोला :

"उसी वक़्त उन्होंने उसे सँड़सी से पकड़ लिया, उफ़!"

बच्चे विचलित हो उठे।

"उसने अपने हाथ ऊपर उठा दिये और ज़मीन पर ऐसे गिर पड़ी... जैसे तालाब में कूद पड़ी हो।"

उसने लकड़ी का एक छोटा-सा टुकड़ा उठाया, उसे बड़े ध्यान से देखा और बच्चों के सिर के ऊपर से उसे दूर फेंक दिया। वे सब निश्चल बैठे रहे, मानो यह देख रहे हों कि वह अपना क़िस्सा सुनाना जारी रखे, लेकिन वह सिर झुकाये चुपचाप बैठा रहा।

"क्या उसने उसे जान से मार डाला था?" माशा ने महीन काँपती हुई आवाज़ में पूछा।

"मूरख," पावेल ने सिर उठाये बिना ही कहा।

याकोव ने माशा के गले में बाँह डालकर उसे अपनी ओर खींच लिया और इल्या खिसककर पावेल के और पास आ गया।

"क्या तुम्हें उसका अफ़सोस है?" उसने धीरे-से पूछा।

"तुमसे मतलब?" पावेल ने चिढ़कर पूछा।

सब बच्चों ने एक साथ और चुपचाप उसे देखा।

"वह बदचलन औरत थी," माशा ने साफ़-साफ़ कहा, लेकिन याकोव ने जल्दी

से उसकी बात काट दी :

"ऐसा मरद हो तो कोई भी औरत हो जायेगी! हमेशा मैला कुचैला और हरदम कोई न कोई शिकायत इतनी कि डर के मारे जान ही निकल जाये!... और वह थी हँसमुख और ख़ुशमिज़ाज पेर्फ़ीश्का की तरह..."

पावेल ने एक नज़र उस पर डाली, और फिर बड़ों की तरह गम्भीरता से, खिन्न स्वर में उसने अपना वर्णन शुरू किया :

"मैं उससे कहता रहता था, 'ध्यान रखना, माँ, वह तुम्हें मार डालेंगे!' लेकिन उसने मेरी बात पर कोई ध्यान ही नहीं दिया... बस मुझसे इतना कहती थी कि मैं बाप को कुछ न बताऊँ... मेरा मुँह बन्द रखने के लिए वह मुझे तोहफ़े ख़रीदकर देती रही। और जिस अफ़सर के साथ वह गयी थी वह मुझे पाँच कोपेक के सिक्के देता था। जब भी मैं उसके पास पर्ची लेकर जाता था वह मुझे पाँच कोपेक का एक सिक्का देता था। बहुत अच्छे स्वभाव का आदमी था!... और बला का ताक़तवर था!... और क्या बड़ी-बड़ी मूँछें थी उसकी..."

"और तलवार?" माशा ने पूछा।

"तुमने देखी होती!" पावेल ने जवाब दिया और फिर बड़े गर्व से यह भी जोड़ दिया : "एक बार मैंने उसे म्यान में से निकाला था। भारी ऐसी भारी थी!"

याकोव विचारमग्न होकर बोला :

"अब तुम भी इल्या की तरह अनाथ हो गये।"

"मैं क्यों होने लगा?" अनाथ ने चिढ़कर जवाब दिया। "तुम समझते हो कि मैं उसकी तरह चीथड़े बटोरूँगा? उम्र भर नहीं करुँगा!"

"मेरा यह मतलब नहीं था..."

"अब तो मेरा जो जी चाहेगा करूँगा," पावेल ने डींग मारते हुए कहा, और अपना सिर ऊँचा उठाकर बिजली की तरह चमकती हुई आँखों से चारों ओर देखा। "मैं अनाथ नहीं हूँ, मैं तो बस... बस... मैं तो बस अकेला रहूँगा। पापा मुझे स्कूल नहीं भेजना चाहते थे... अब उन्हें जेल में डाल दिया जायेगा तो मैं स्कूल जाऊँगा और पढ़ाई में तुम सब लोगों से अच्छा निकलूँगा!"

"स्कूल जाने के लिए कपड़े कहाँ से मिलेंगे तुम्हें?" इल्या ने विजय-गर्व के साथ धीरे-से हँसकर कहा। "स्कूल में चीथड़े पहनने वालों को भर्ती नहीं करते।"

"कपड़े? मैं लोहारख़ाना बेच दूँगा, समझे?"

सभी बच्चों ने सम्मान-भरी दृष्टि उस पर डाली, और इल्या समझ गया कि वह हार गया है। पावेल ने देखा कि उसके अन्तिम शब्दों का कितना गहरा प्रभाव पड़ा है, इसलिए वह पहले से भी ज़्यादा डींग मारने लगा।

"और मैं अपने लिए एक घोड़ा ख़रीदूँगा   सचमुच का ज़िन्दा घोड़ा! मैं घोड़े पर बैठकर स्कूल जाया करुँगा!..."

इस बात की कल्पना करके वह इतना ख़ुश था कि उसने मुस्कराकर सबकी ओर देखा, अलबत्ता उसकी मुस्कराहट बहुत ही दबी हुई और क्षणिक ही थी।

"अब तो कोई तुम्हारी पिटाई करने वाला जो नहीं रहा," माशा ने उसे ईर्ष्या से देखकर कहा।

"वह करने के लिए कोई न कोई मिल जायेगा," इल्या ने पूरे भरोसे के साथ कहा।

पावेल ने उस पर दृष्टि डाली और चुनौती देते हुए ज़मीन पर थूका।

"कौन होगा वह, तुम? ज़रा कोशिश तो करके देखो!"

एक बार फिर याकोव बीच में कूद पड़ा।

"बड़ी अजीब बात है, यारो," वह बोला, "अभी कुछ ही देर पहले तक वह चल-फिर रही थी और बातें कर रही थी और सारा काम-काज कर रही थी   हमारी-तुम्हारी तरह ज़िन्दा आदमी थी   और फिर सिर पर सँड़सी की चोट पड़ी और   अब कहाँ वह?"

दूसरे बच्चों ने   तीनों ने   याकोव को बड़े ध्यान से देखा; उसकी आँखें उभरी आ रही थीं और बड़े हास्यास्पद ढंग से बाहर की ओर निकलकर देख रही थीं।

"हाँ-आँ!" इल्या बोला, "मैं भी इसी के बारे में सोच रहा था।"

"लोग कहते हैं   आदमी मर गया है," धीरे से और रहस्यपूर्ण ढंग से याकोव ने अपनी बात जारी रखी, "लेकिन इसका मतलब क्या होता है?"

"उसकी आत्मा उड़ गयी," पावेल ने बहुत उदास होकर समझाया।

"स्वर्ग की ओर," माशा ने जोड़ दिया और याकोव से और सटकर बैठते हुए आकाश पर नज़रें जमा लीं। वहाँ सितारे निकल आये थे; उनमें से एक बड़ा-सा चमकदार सितारा, जो झिलमिला नहीं रहा था, दूसरों की अपेक्षा पृथ्वी से अधिक निकट मालूम होता था और वह कभी न झपकने वाली क्रूर आँख की तरह नीचे घूर रहा था। माशा की तरह बाक़ी तीन लड़कों ने अपनी नज़रें ऊपर उठायीं। पावेल एक सरसरी-सी नज़र डालकर उठ खड़ा हुआ और जल्दी-जल्दी वहाँ से चला गया; इल्या देर तक नज़रें जमाये देखता रहा, उसकी आँखों में भय समाया था; याकोव की बड़ी-बड़ी आँखें नीले आकाश पर इस तरह भटकती रहीं मानो कुछ खोज रही हों।

"याकोव," उसके दोस्त ने अपना सिर नीचे करके कहा।

"क्या है?"

"मैं सोचता रहता हूँ..." इल्या की आवाज़ का सिलसिला बीच में ही टूट गया।

"काहे के बारे में?" याकोव ने धीमे स्वर में पूछा।

"किस तरह... आदमी को मार डाला गया... और वे चारों ओर बातें करते फिरते

हैं और दुनिया भर का शोर मचाते हैं... और कोई रोता नहीं... किसी को कोई दुख नहीं..."

"येरेमेई रोया था।"

"वह तो... ज़रूर... लेकिन पावेल का क्या हाल है? मानो कोई क़िस्सा-कहानी सुना रहा था..."

"वह बनता है... उसे दुख है, लेकिन इस बात को मानने में उसे शर्म आती है। वह यहाँ से भाग गया है, और अब शायद रो-रोकर अपनी आँखें अन्धी किये ले रहा होगा।"

कुछ देर तक कुछ बोले बिना वे एक-दूसरे से सटे वहाँ बैठे रहे।

माशा याकोव के घुटनों पर सिर रखकर सो गयी; उसका चेहरा अभी तक आसमान की ओर था।

"तुम्हें डर लगता है?" याकोव ने फुसफुसाते हुए पूछा।

"हाँ," इल्या ने भी उसी तरह जवाब दिया।

"अब तो उसकी आत्मा यहाँ घूम-फिर रही होगी..."

"हाँ-आँ... देखो, माशा सो गयी है..."

"उसे घर पहुँचा दिया जाये... लेकिन मुझे कहीं आने-जाने में डर लगता है।"

"मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

याकोव ने बच्ची का सिर अपने कन्धों पर टिकाया, अपनी बाँहें उसके दुबले-पतले शरीर के चारों ओर जकड़ लीं, और ज़ोर लगाकर उठ खड़ा हुआ।

"ठहरो, इल्या पहले मैं चलता हूँ..." उसने फुसफुसाकर कहा।

वह आगे-आगे चला, बोझ से उसके पाँव लड़खड़ा रहे थे, और इल्या उसके पीछे-पीछे इतने पास चल रहा था कि उसकी नाक अपने दोस्त के सिर से लगभग सटी हुई थी। इल्या को ऐसा लग रहा था कि कोई अदृश्य प्राणी उसके पीछे चल रहा है और उसकी साँस उसकी गर्दन पर ठण्डी-ठण्डी लग रही है और वह किसी भी क्षण उसे धर दबोचेगा।

"जल्दी-जल्दी चलो," उसने अपने मित्र की पीठ को धक्का देते हुए दबे स्वर में कहा।

इस घटना के बाद येरेमेई का स्वास्थ्य गिरने लगा। अब तो वह फटी-पुरानी टूटी-फूटी चीज़ें कभी-कभी ही बटोरने जाता था, घर पर ही रहता था और या तो उदास-सा आँगन में टहलता रहता था या अपनी अँधेरी कोठरी में खटिया पर पड़ा रहता था। वसन्त आ रहा था, और जब भी आसमान पर सूरज चमकता था बूढ़ा उसकी नर्म धूप में बैठकर अपनी उँगलियों पर कुछ गिनता रहता था और उसके होंठ

बिना कोई आवाज़ निकाले हिलते रहते थे। अब वह बच्चों को कहानियाँ भी बहुत कम और पहले के मुकाबले अच्छी तरह नहीं सुनाता था। उसकी खाँसी की वजह से बीच-बीच में विघ्न पड़ता रहता था। उसके सीने की गहराई में भर्रायी हुई कराहने जैसी आवाज़ सुनायी देती थी, मानो बाहर निकलने के लिए गिड़गिड़ा रही हो।

"बस, अब रहने दो," माशा कहती, जिसे उसकी कहानियों से दूसरे सभी बच्चों से ज़्यादा प्यार था।

"ज़रा इन्तज़ार करो," बूढ़ा फूलती हुई साँस सीने में समाने की कोशिश करते हुए कहता। "अभी ठीक हो जाऊँगा... एक मिनट में..."

लेकिन वह ठीक न होता। खाँसी बदतर होती जाती, और उसके सूखे-मुरझाये शरीर में से प्राण तक बाहर आ जाने को होते। कभी-कभी तो बच्चे कहानी का अन्त सुनने की राह देखे बिना ही चले जाते, और तब बूढ़ा बड़े व्यथित भाव से उन्हें जाते हुए एकटक देखता रहता।

इल्या ने देखा कि आबदार पेत्रूख़ा और उसका अपना चाचा तेरेन्ती दोनों बूढ़े की बीमारी से बहुत चिन्तित थे। दिन में कई बार पेत्रूख़ा शराबख़ाने के पीछे वाले दरवाज़े पर आता और ख़ुशी से चमकती हुई भूरी आँखों से दादा येरेमेई को ढूँढ़कर पूछता :

"कहो, क्या हाल है, दादा? पहले से कुछ तबीयत अच्छी है?"

गठे हुए शरीर पर गुलाबी रंग की सूती क़मीज़ पहने बनात की ढीली-ढाली पतलून की दोनों ज़ेबों में हाथ डाले, जिसके पायंचे चमकदार लम्बे बूट जूतों में ठूँसे रहते थे, वह इधर-उधर इतराता फिरता था। उसकी जेबों से हमेशा सिक्कों के खनकने की आवाज़ आती रहती थी। उसकी गोल खोपड़ी सामने से गंजी होती जा रही थी, फिर भी उस पर बहुत-से सुनहरे घुँघराले बाल थे जिन्हें बड़ी शान से पीछे झटकते रहने की उसकी आदत पड़ गयी थी। इल्या को वह कभी अच्छा नहीं लगता था, लेकिन अब तो और भी बुरा लगने लगा था। वह जानता था कि पेत्रूख़ा को दादा येरेमेई से कोई लगाव नहीं था और एक बार उसने उसे चाचा तेरेन्ती को समझाते सुना था :

"उस पर नज़र रखना, तेरेन्ती! वह बड़ा कंजूस है! मैं शर्त बदकर कह सकता हूँ कि अपने तकिये में अच्छी-ख़ासी रक़म दबा रखी है उसने। देखना, कहीं तुम्हारे हाथ से निकल न जाये। अब वह बूढ़ा कुत्ता ज़्यादा दिन जीने का नहीं; तुम्हारा उससे दोस्ताना है, और इस दुनिया में उसका कोई नहीं है... अक़्ल से काम लेना, प्यारे!..."

बूढ़ा येरेमेई अब भी अपनी शामें शराबख़ाने में ही तेरेन्ती के पास उससे भगवान की और संसार की समस्याओं की चर्चा करने में बिताता था। शहर की ज़िन्दगी ने कुबड़े को पहले से भी ज़्यादा बदसूरत बना दिया था। ऐसा लगता था कि बर्तन माँजते-माँजते उसका अंग-अंग सील गया था; उसकी आँखों पर एक झिल्ली-सी आ

गयी थी और उनमें हरदम डर समाया रहता था और ऐसा लगता था कि शराबख़ाने की गर्मी में उसका शरीर पिघल गया था। उसकी मैली क़मीज़ बार-बार उसके कूबड़ के ऊपर आ जाती, जिसकी वजह से उसकी कमर खुल जाती। लोगों से बातें करते वक़्त वह अपने हाथ पीठ के पीछे करके झटके से क़मीज़ नीचे खींचता रहता था, जिससे लगता यह था कि वह अपने कूबड़ में कोई चीज़ छिपा रहा है।

जब भी बूढ़ा येरेमेई आँगन में आकर बैठता तो तेरेन्ती बाहर ओसारे पर निकल आता और आँखें सिकोड़कर और हाथ से आँखों के ऊपर एक छज्जा-सा बनाकर उसे घूरता रहता। उसके नुकीले चेहरे पर छितरी पीली दाढ़ी हिलती रहती थी।

"कोई चीज़ चाहिए तो नहीं, दादा?" वह दोषी की तरह पूछता।

"कुछ नहीं, शुक्रिया। कुछ नहीं... कुछ नहीं..." बूढ़ा जवाब देता।

कूबड़ा धीरे-धीरे अपनी सींक जैसी टाँगों पर पीछे मुड़कर शराबख़ाने में वापस चला जाता।

"अब मैं कभी अच्छा नहीं होऊँगा," येरेमेई बार-बार और अकसर कहने लगता था। "साफ़ है कि मेरा वक़्त आ गया है।"

एक दिन जब वह अपने बिल में सोने जा रहा था तो उसे खाँसी का बहुत ही ज़ोर का दौरा पड़ा। खाँस चुकने के बाद उसने बुदबुदाकर कहा :

"अभी तो वक़्त नहीं आया है, प्रभु, मेरा काम अभी पूरा नहीं हुआ है!... वह पैसा. .. इतने वर्षों से मैं बचाता रहा हूँ... एक गिरजाघर बनवाने के लिए... अपने गाँव में। लोगों को भगवान के मन्दिरों की ज़रूरत है। वहीं तो हमें शरण मिलती है... लेकिन अभी तक मैं काफ़ी पैसा नहीं बचा पाया हूँ। हे भगवान! कोई मक्खा मँडरा रहा है... शायद अपने शिकार की महक मिल गयी है उसे। इल्या, मेरे पास पैसा है याद रखना, लेकिन किसी को बताना नहीं, समझे?"

इल्या बूढ़े की बहकी-बहकी बातें सुनकर यह महसूस करने लगा कि अब तो उसे कोई बहुत बड़ी भेद की बात मालूम हो गयी है; वह समझ गया था कि वह "मक्खा" कौन था। कुछ दिन बाद स्कूल से घर वापस आकर जब इल्या कोने में अपने स्कूल के कपड़े उतार रहा था उसने दादा येरेमेई की उखड़ी-उखड़ी साँस की और कराहने की आवाज़ सुनी जैसे कोई गला घोंटकर उसे मारे डाल रहा हो।

"शिः... शिः... भाग जा!" बूढ़े ने हाँफते हुए कहा।

लड़के ने डरते-डरते दरवाज़े को धक्का दिया। वह अन्दर से बन्द था। दूसरी ओर से बूढ़े की उतावली-भरी फुसफुसाने की आवाज़ आ रही थी।

"शिः!... हे परम पिता, दया करो... दया करो..."

इल्या ने दरवाज़े की एक दरार में से अन्दर झाँका तो देखता क्या है कि बूढ़ा

अपनी खटिया पर पीठ के बल लेटा हुआ है और दोनों बाँहें हिला रहा है।

"दादा!" लड़का घबराकर चिल्लाया।

बूढ़े ने चौंककर अपना सिर उठाया और ज़ोर से बुदबुदाने लगा :

"पेत्रूख़ा... ख़बरदार... यह भगवान का है! यह उसके लिए है! उसके मन्दिर के लिए। शिः... अरे मक्खे! भगवान... यह तुम्हारा है!... बूढ़े की रक्षा करना... दया करना... दया करना..."

इल्या डर के मारे काँप उठा लेकिन वहाँ से हिल नहीं सका और बूढ़े के उस काले सूखे-सिकुड़े हाथ पर से अपनी नज़र न हटा सका जो बड़ी क्षीणता से हवा में हिल रहा था और एक टेढ़ी उंगली से किसी को धमकी दे रहा था :

"ख़बरदार! यह भगवान का है!... ख़बरदार!..."

बूढ़े का शरीर अचानक सिमटकर एक गठरी बन गया; फिर वह उठकर खटिया पर बैठ गया और उसकी दाढ़ी हवा में उड़ती हुई फ़ाख़्ता के पंख की तरह हिलने लगी। अपनी बाँहें सामने फैलाकर उसने ज़ोर से किसी को झटका दिया और फ़र्श पर ढेर हो गया।

इल्या के मुँह से ज़ोर से चीख़ निकल गयी और वह वहाँ से भाग गया; बूढ़े की "शिः... शिः...!" की आवाज़ उसके कानों में गूँज रही थी।

भागकर हाँफता हुआ वह शराबख़ाने में आया और ज़ोर से चिल्लाया :

"वह मर गया..."

तेरेन्ती के मुँह से आह निकल गयी, वह अपने पाँव पटकने लगा और झटके से अपनी क़मीज़ को नीचे खींचते हुए पेत्रूख़ा को घूरने लगा, जो काउण्टर के पीछे खड़ा था।

"कहा ही क्या जा सकता है," सीने पर सलीब का निशान बनाकर आबदार ने गम्भीर स्वर में कहा। "भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे! बड़ा नेक बूढ़ा था। मैं जाकर देखता हूँ। तुम यहीं रहना, इल्या, और अगर किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मुझे बुला लेना। याकोव, तुम यहाँ का काम सँभालना।"

पेत्रूख़ा बड़े इतमीनान से फर्श पर ज़ोर से अपनी एड़ियाँ पटकता हुआ बाहर निकला... उसके पीछे दरवाज़ा बन्द होते ही लड़कों ने उसे कूबड़े से कहते सुना :

"चल, जल्दी चल, मूरख!..."

इल्या बेहद सहमा हुआ था, फिर भी उसके चारों ओर जो कुछ हो रहा था उसे देखने से उसकी नज़र नहीं चूकी।

"तुमने उसे मरते देखा था?" याकोव ने काउण्टर के पीछे से पूछा।

इल्या ने उसकी ओर देखा।

"ये लोग वहाँ किसलिए जा रहे हैं?" उसने याकोव के सवाल की ओर ध्यान न देते हुए पूछा।

"देखने के लिए!... तुम उन्हें बुलाने आये थे न?.."

इल्या ने अपनी आँखें कसकर बन्द कर लीं।

"उसने कैसा धक्का दिया था उसे..."

"किसे धक्का दिया?" याकोव ने जिज्ञासा से अपनी गर्दन आगे की ओर निकालते हुए पूछा।

"शैतान को," इल्या ने कुछ ठहरकर जवाब दिया।

"तुमने शैतान को देखा था?" याकोव ने भागकर उसके पास आते हुए हल्की-सी चीख़ के साथ पूछा। पर इल्या ने कोई जवाब दिये बिना फिर अपनी आँखें बन्द कर लीं।

"तुम्हें डर लग रहा है?" याकोव ने इल्या की आस्तीन को झटका देकर पूछा।

"ज़रा ठहरो," इल्या ने अचानक कहा। "मैं... एक मिनट के लिए बाहर जा रहा हूँ... अपने बाप से न कहना, नहीं कहोगे न?"

अपने अनुमान से प्रेरित होकर वह पलक झपकते तहख़ाने में घुस गया और चूहे की तरह चुपचाप रेंगता हुआ फिर दरवाज़े की दरार के पास पहुँचा और देखने लगा। बूढ़ा अभी तक ज़िन्दा था। वह अभी तक फर्श पर पड़ा उखड़ी-उखड़ी साँसें ले रहा था और दो काली आकृतियाँ उसके पाँवों के पास खड़ी दिखाई दे रही थीं।

धुँधली रोशनी में उन दोनों ने आपस में मिलकर एक बड़ी-सी टेढ़ी-मेड़ी आकृति का रूप धारण कर लिया था। आख़िरकार इल्या ने देखा कि उसका चाचा बूढ़े की चारपाई के पास घुटनों के बल बैठा जल्दी-जल्दी तकिया सी रहा है। उसे कपड़े में से होकर धागा खींचे जाने की आवाज़ साफ़ सुनायी दे रही थी। पेत्रूख़ा तेरेन्ती के पीछे खड़ा था और उस पर झुका हुआ था।

"जल्दी करो..." उसने कानाफूसी करते हुए कहा। "मैंने तुमसे पहले ही सुई-धागा तैयार रखने को कह दिया था। कमाल कर दिया, यहाँ सुई में धागा पिरोने बैठे हो!"

पेत्रूख़ा की कानाफूसी, मरते हुए आदमी की आहें, सिलाई की आवाज़, और खिड़की के बाहर एक सूराख में बहते हुए पानी की करुण कलकल ध्वनि ने मिलकर एक ऐसे विचित्र गुंजन का रूप धारण कर लिया था जिससे लड़के की सारी चेतनाएँ मन्द पड़ गयीं थीं। चुपके से वह दीवार के पास से खिसक आया और सीढ़ियाँ चढ़कर तहख़ाने के बाहर आ गया। उसकी आँखों के सामने एक बड़ा-सा काला धब्बा शिः-शिः की आवाज़ करता हुआ पहिये की तरह नाच रहा था। सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उसने जीने

के जंगले का डण्डा कसकर पकड़ रखा था क्योंकि उसके लिए अपने पाँव उठाना भी मुश्किल हो रहा था; शराबख़ाने के दरवाज़े पर पहुँचकर वह ठहर गया और चुपके-चुपके रोने लगा। याकोव उसके सामने फुदक-फुदककर चल रहा था और कुछ कह रहा था। फिर अचानक उसने महसूस किया कि किसी ने उसकी पीठ पर धक्का दिया और उसे पेर्फ़ीश्का की आवाज़ सुनायी दी :

"क्या बात है? कौन कैसे हुआ? मर गया? अरे, शैतान!"

और इल्या को एक और धक्का देकर मोची सीढ़ियों पर इतनी तेज़ी से नीचे भागा कि वे हिल उठीं। पर सीढ़ियों के नीचे पहुँचकर वह अत्यन्त करुण और ऊँचे स्वर में चीख़ा :

"आ-ह!"

इल्या ने अपने चाचा और पेत्रूख़ा के सीढ़ियाँ चढ़ने की आहट सुनी। वह नहीं चाहता था कि वे उसे रोता हुआ देखें लेकिन वह अपने आँसू रोक न सका।

"हाय रे!" पेर्फ़ीश्का ने चिल्लाकर कहा। "तो तुम लोग वहाँ होकर आये हो न?"

तेरेन्ती भतीजे की ओर देखे बिना ही उसके पास से होकर गुज़र गया, लेकिन पेत्रूख़ा ने रुककर इल्या के कन्धे पर अपना हाथ रखा।

"रो रहे हो?" वह बोला। "अच्छी बात है... इसका मतलब यह है कि तुम उपकार मानने वाले लड़के हो और तुम्हारे साथ जो उपकार किया जाता है उसे याद रखते हो। बूढ़े ने तुम्हारे साथ बहुत भलाई की!"

फिर इल्या को एक ओर ढकेलते हुए उसने जोड़ दिया "लेकिन अब मैं तुम्हें दरवाज़े पर खड़ा न देखूँ।"

इल्या ने क़मीज़ की आस्तीन से अपना मुँह पोंछा और लोगों पर नज़र डाली। पेत्रूख़ा फिर काउण्टर के पीछे खड़ा था और अपने घुँघराले बालों को पीछे की ओर झटक रहा था। उसके सामने पेर्फ़ीश्का खड़ा था, उसके चेहरे पर चालाकी-भरी मुस्कराहट थी। इस चालाकी-भरी मुस्कराहट के बावज़ूद उसके चेहरे पर उस आदमी का-सा भाव था जो अभी-अभी जुए में अपना आख़िरी कोपेक हार चुका हो।

"क्या चाहते हो?" पेत्रूख़ा ने अपनी भवें तानकर रुखाई से पूछा।

"हमें भी कुछ प्यास बुझाने को मिलेगा भला?" पेर्फ़ीश्का ने कहा।

"क्यों?" आबदार ने गम्भीरता से टका-सा जवाब दिया।

"हाय रे!" मोची पाँव पटकते हुए चिल्ला उठा। "तो मुझे उसकी हवा तक नहीं लगने दी जायेगी, क्यों? अच्छी बात है! तुम ख़ुश रहो और ऐश करो!"

"तुम काहे के बारे में बक-बक किये जा रहे हो," पेत्रूख़ा ने शान्त भाव से पूछा।

"अरे, कोई ख़ास बात नहीं है। मैं तो हूँ ही मूरख!"

"मैं समझता हूँ कि मुफ़्त की पीने के चक्कर में हो। क्या इसी बात की तरफ़ इशारा था तुम्हारा? हें-हें!"

"हा-हा!" शराबख़ाने में मोची की गूँजती हुई हँसी सुनायी दी।

इल्या ने अपना सिर इस तरह झटका जैसे उसमें से कोई चीज़ बाहर निकाल देना चाहता हो, और वहाँ से चला गया।

उस रात वह अपनी कोठरी में नहीं बल्कि शराबख़ाने में उस मेज़ के नीचे सोया जिस पर तेरेन्ती बर्तन धोता था। कुबड़ा उसे सुलाकर मेज़ें पोंछने में लग गया। काउण्टर पर रखे हुए लैम्प की रोशनी अलमारी में रखी हुई चायदानियों और बोतलों के फूले हुए पेटों पर पड़ रही थी। शराबख़ाने में अँधेरा था। बाहर हल्की-हल्की फुहार पड़ रही थी और हवा हल्के-हल्के झोंकों के साथ चल रही थी... तेरेन्ती जो देखने में एक बड़ी-सी साही जैसा लगता था, मेज़ें इधर-उधर खिसका रहा था, आहें भरता जा रहा था। जब भी वह लैम्प के पास आता था तो एक बड़ी-सी काली छाया फर्श पर पड़ती थी और इल्या कल्पना करता था कि दादा येरेमेई की आत्मा लौट आयी है और तेरेन्ती से वह कह रही है :

"शिः-शिः!"

लड़के को सर्दी लग रही थी और वह डरा हुआ था। सीलन से उसका दम घुटा जा रहा था : सनीचर का दिन था और अभी धोकर साफ़ किये गये फर्श में से सड़ाँध आ रही थी। वह अपने चाचा से कहना चाहता था कि वह जल्दी से आकर उसके पास लेट जाये, लेकिन पीड़ा और झुँझलाहट की एक भावना उसे उससे बोलने से रोक रही थी। बूढ़े येरेमेई की झुकी हुई सफ़ेद दाढ़ी वाली आकृति उसकी आँखों के आगे घूमती रही और उसे अपनी स्नेहपूर्ण भर्रायी हुई आवाज़ में कहते हुए सुनता रहा :

"भगवान के पास सच्ची कसौटी है... चिन्ता न करो..."

आख़िरकार वह और ज़्यादा बर्दाश्त न कर सका।

"अब आ भी चुको और लेट जाओ!" उसने रुआँसे स्वर में कहा।

कुबड़ा चौंक पड़ा और निस्तब्ध रह गया।

"एक मिनट, बस एक मिनट!" उसने आख़िरकार मन्द स्वर में और बड़ी भीरुता से कहा और जल्दी-जल्दी एक मेज़ से दूसरी मेज़ तक छलाँग लगाने लगा। इल्या समझ गया कि उसके चाचा को भी डर लग रहा था। "तुम्हारी यही सज़ा है," उसने मन ही मन कहा।

पानी की बूँदें एक ही सुर में खिड़की के काँच से टकरा रही थीं, लैम्प की लौ झिलमिला रही थी, लैम्प की रोशनी में बोतलें और चायदानियाँ खीसें निकाले हँस रही

थीं। इल्या ने अपने चाचा का भेड़ की खाल का ओवरकोट सिर के ऊपर तक खींच लिया और दम साधे लेटा रहा। अचानक उसे अपनी बग़ल में एक सरसराहट-सी महसूस हुई। उसका शरीर बर्फ़ हो गया। उसने सिर पर से ओवरकोट हटाया तो देखा कि तेरेन्ती अपने सिर को इस तरह झुकाये घुटनों के बल बैठा है कि उसकी ठोड़ी सीने को छू रही है।

"हे भगवान!" वह अस्फुट स्वर में कह रहा था। "मेरे भगवान..."

उसकी फुसफुसाहट सुनकर इल्या को दादा येरेमेई के साँस लेने की फटी हुई आवाज़ की याद आ गयी। कमरे में अँधेरा मानो हिल रहा था और उसके साथ फर्श भी डोल रहा था और चिमनी में तेज़ हवा की हुंकार सुनायी दे रही थी।

"भगवान का नाम मत लो!" इल्या ने ऊँचे स्वर में कहा।

"अरे तोबा!" कुबड़े ने दबी ज़ुबान में कहा। "सो जाओ, भगवान के लिए सो जाओ!"

"भगवान का नाम मत लो!" लड़के ने एक बार फिर आग्रहपूर्वक कहा।

"अच्छी बात है, नहीं लूँगा!..."

अँधेरे और सीलन का बढ़ता हुआ दबाव इल्या को कुचले दे रहा था। वह साँस नहीं ले पा रहा था। उसके अन्दर विभिन्न भावनाओं के बीच द्वन्द्व चल रहा था : भय, दादा येरेमेई के प्रति दया, अपने चाचा पर क्रोध। वह कुछ देर तो इधर-उधर करवटें बदलता रहा, फिर उठ बैठा और कराहने लगा।

"क्या बात है?" चाचा ने उसे थामकर डरते-डरते दबे स्वर में पूछा। इल्या ने उसका हाथ झटक दिया तथा भय और निराशा से विह्वल होकर वह आँसुओं में भीगी हुई साँसे लेने लगा :

"हे भगवान! काश, मैं कहीं छिप सकता... हे भगवान!"

आँसुओं से उसका गला रुँध गया था। उसने गन्दी हवा में एक लम्बी-सी साँस ली और सिसकियाँ लेता हुआ तकिये पर गिर पड़ा।

उसके बाद से वह लड़का बिल्कुल बदल गया। पहले तो वह सिर्फ़ स्कूल में लड़कों से अलग-थलग रहता था, जिनसे दोस्ती बढ़ाने की उसकी कोई इच्छा नहीं होती थी। लेकिन घर पर वह बड़ा मिलनसार था और जब बड़े लोग उसकी ओर ध्यान देते थे तो उसे अच्छा लगता था। अब वह सबसे अलग-थलग रहने लगा था और उम्र को देखते हुए ज़्यादा गम्भीर हो गया था। उसके चेहरे पर रुखाई का भाव रहने लगा था, उसके होंठ हरदम भिंचे रहते थे, वह अपने से बड़ों पर बड़े ध्यान से नज़र रखने लगा था और जब वह उनकी बातें सुनता था तो उसकी आँखों में उकसाव भरी भावना आ

जाती थी। दादा येरेमेई के मरने के दिन उसने जो कुछ देखा था उसकी याद उसे हरदम सताती रहती थी, और यह ख़्याल किसी तरह उसके दिल से निकलता ही नहीं था कि पेत्रूख़ा और अपने चाचा के अपराध में वह भी हिस्सेदार है। मरते वक़्त जब बूढ़े ने अपने आपको लुटते हुए देखा होगा तो उसने यही सोचा होगा कि उसी ने, इल्या ने ही, पेत्रूख़ा को पैसों के बारे में बताया होगा। यह विचार अनजाने ही उसके दिमाग़ पर हावी होता गया, उसके मन में निराशा भरती गयी और अपने चारों ओर के लोगों को वह पहले की तरह ज़्यादा शक की निगाह से देखने लगा। दूसरों की किसी दुष्टता का पता लगाकर उसे सन्तोष मिलता, मानो उसके अपराध से दादा येरेमेई के प्रति स्वयं उसका अपना अपराध घट जाता हो।

और दुष्टता उसे बहुतेरी दिखाई देती थी। उस घर में रहने वाला हर आदमी पेत्रूख़ा को धोखेबाज़ और चोरी का माल वसूल करने वाला कहता था, फिर भी सभी उसके आगे सिर झुकाते थे और उसकी खुशामद करते थे और बहुत सम्मानपूर्वक उसे प्योत्र याकीमिच कहकर सम्बोधित करते थे। उन लोगों ने मुटल्ली का एक भद्दा-सा नाम रख छोड़ा था और जब भी वह शराब के नशे में होती थी तो लोग उसे धकियाते थे और पीटते थे; एक दिन तो जब वह नशे में धुत्त बावर्चीख़ाने की खिड़की के नीचे बैठी थी तो बावर्ची ने उस पर गन्दा पानी और कूड़ा-करकट तक डाल दिया था...

लेकिन उससे खिदमत सब लेते थे, और बदले में उसे घूँसों-लातों और गाली-कोसनों के अलावा कुछ नहीं देते थे। पेर्फ़ीश्का अपनी अपाहिज बीवी को नहलाने-धुलाने को हमेशा उसी से कहता था; पेत्रूख़ा एक भी पाई दिये बिना हर छुट्टी से पहले उससे शराबख़ाना साफ़ करवाता था; तेरेन्ती के लिए वह क़मीज़ें बनाती थी। वह सबका काम करती थी और बहुत अच्छी तरह कोई शिकायत किये बिना करती थी। उसे बीमारों की देखभाल करने और बच्चों को पालने का शौक़ था...

इल्या देखता था कि पेर्फ़ीश्का उस घर में सबसे मेहनती आदमी था पर लोग उसकी खिल्ली उड़ाते थे, वे उसकी ओर तभी ध्यान देते थे, जब वह शराब के नशे में चूर होकर शराबख़ाने में अपना अकार्डियन लेकर बैठ जाता था या अपना अकार्डियन बजाता हुआ और मज़ाक़िया गाने गाता हुआ आँगन में लड़खड़ाता फिरता था। पर कोई यह नहीं जानना चाहता था कि कितने प्यार से वह अपनी अपाहिज बीवी को उठाकर तहख़ाने के दरवाज़े तक ले जाता था या अपनी बेटी को चूम-चूमकर और उसका मन बहलाने के लिए तरह-तरह की हँसाने वाली सूरतें बनाकर उसे सुलाता था। कोई उसे नहीं देखता था जब वह बेटी के साथ हँसी-मज़ाक़ करते हुए उसे खाना पकाना या कोठरी साफ़ करना सिखाता था और उसके बाद अपनी कमर दोहरी करके गन्दे जूतों पर झुका बैठा रहता था और बहुत रात गये तक उनकी सिलाई करता रहता था।

जब लोहार को गिरफ़्तार करके जेल ले जाया गया था, तो वह मोची अकेला आदमी था जिसे उसके बेटे की चिन्ता थी। वह फ़ौरन पावेल को अपने यहाँ रहने के लिए ले गया था। लड़का मोम-लगा धागा बटता था फर्श पर झाड़ू लगाता था, पानी भर-भरकर लाता था, और दुकान से रोटी, क्वास और प्याज़ वग़ैरह ला देता था। इतवार को या छुट्टी के दिन मोची को शराब पिये हुए तो सब देखते थे, लेकिन अगले दिन नशा उतरने पर वह अपनी बीवी से क्या कहता था यह कोई नहीं सुनता था :

"दून्या, मुझे माफ़ कर देना। तू समझती है कि मैं अपने शौक़ के लिए पीता हूँ? ऐसा नहीं है कि मैं पैदायशी शराबी हूँ, मैं तो बस उकताहट दूर करने के लिए पीता हूँ। पूरे हफ़्ते मैं बैठा जूते ठोकता रहता हूँ। थक जाता हूँ। इसलिए मैं बस दो-चार चुस्कियाँ लगा लेता हूँ।"

"कभी इसके लिए दोष दिया है मैंने तुम्हें? भगवान जानता है, मुझे तुम्हारे ऊपर कितना तरस आता है!" उसकी आवाज़ भर्रायी हुई होती थी और उसके गले में से गरगराहट की आवाज़ आती थी।

"तुम समझते हो मैं देखती नहीं कि तुम कितना काम करते हो। भगवान ने मुझे तुम्हारे लिए एक बोझ बना दिया है। अच्छा होता जो मैं मर जाती!... तुम्हें छुटकारा मिल जाता तो मुझे चैन पड़ता!..."

"ख़बरदार, जो फिर कभी ऐसी बात कही! मैं तुम्हारे मुँह से ऐसी बात नहीं सुनना चाहता! तुम्हारे साथ ज़्यादती तो मैं करता हूँ। मगर इसलिए नहीं कि मैं दिल का बुरा हूँ बस कमज़ोर हूँ। एक दिन ऐसा आयेगा कि हम लोग किसी और गली में जाकर रहने लगेंगे और फिर हर चीज़ बदल जायेगी... खिड़कियाँ, दरवाज़े सभी चीज़ें दूसरी होंगी... खिड़कियाँ गली में खुलेंगी। मैं काग़ज़ का एक जूता काटकर खिड़की पर चिपका दूँगा साईनबोर्ड की तरह। फिर देखना, लोग कैसे टूटकर आयेंगे! काम चमक उठेगा! आग में ईंधन झोंको, धौंकनियों पर ज़ोर लगाओ; हम तो पैसा ढाल रहे हैं, आओ, मेरे यारो!"

पेर्फ़ीश्का के जीवन की कोई बात इल्या से छिपी नहीं थी। वह जानता था कि मोची जीते जी मरता था, फिर भी वह मस्त आदमी था, हमेशा हँसता रहता था और अकार्डियन कमाल का बजाता था। इस बात के लिए इल्या उसका आदर करता था। इसके विपरीत पेत्रूख़ा सुबह से रात तक शराबख़ाने के काउण्टर के पीछे बैठा ड्राफ्ट खेलता रहता था, चाय पीता रहता था और वेटरों को डाँटता-फटकारता रहता था। येरेमेई की मौत के कुछ ही दिन बाद उसने तेरेन्ती को काउण्टर पर काम करने के लिए लगा दिया था और ख़ुद आँगन में टहल-टहलकर सीटी बजाने, घर का हर पहलू से मुआइना करने और मुक्के मार-मारकर दीवारों की मज़बूती आज़माने के अलावा और

कुछ नहीं करता था।

इल्या बहुत-सी बातें देखता था, पर सारी की सारी बुरी और निराशाजनक ही होती थीं और उसमें लोगों से अलग-थलग रहने की और ज़्यादा इच्छा पैदा करती थीं। कभी-कभी उस पर कुछ भी प्रभाव पड़ता था उसके बारे में उसके बारे में वह किसी से बातें करने को तरसता था। लेकिन चाचा से वह बात करना नहीं चाहता था : येरेमेई के मरने के बाद से उनके बीच एक दीवार-सी खड़ी हो गयी थी, जो दिखाई तो नहीं देती थी पर थी बहुत मजबूत; उसकी वजह से अब इल्या के लिए अपने चाचा के साथ पहले की तरह बेझिझक और घुल-मिलकर बात करना नामुमकिन हो गया था। वह याकोव से भी यह उम्मीद नहीं कर सकता था कि वह उसे कुछ समझाएगा, क्योंकि याकोव की भी अपनी अलग ही ज़िन्दगी थी, हालाँकि बिल्कुल ही दूसरे ढंग की।

याकोव को भी उस टूटी-फूटी फटी-पुरानी चीज़ें बटोरने वाले की बहुत कमी महसूस होती थी। वह अकसर उदास स्वर में और मातमी सूरत बनाकर उसकी बातें करता था :

"ज़िन्दगी में अब कुछ मज़ा नहीं रह गया है!... अगर दादा येरेमेई ज़िन्दा होते तो हमें कोई कहानी ही सुनाते। अच्छी कहानी से बढ़कर कोई चीज़ नहीं होती।"

एक दिन उसने इल्या से बड़े रहस्यमय ढंग से कहा :

"तुम्हें एक चीज़ दिखाऊँ? पहले क़सम खाओ कि किसी को बताओगे नहीं। कहो, 'मैं हमेशा के लिए नरक में जाऊँ अगर ...'"

जब इल्या ने क़सम दुहरा दी तो याकोव उसे आँगन के कोने में लाईम के पुराने पेड़ के पास ले गया और बड़ी सावधानी से उसकी छाल का एक टुकड़ा हटाया जो एक खोखल को ढकने के लिए पेड़ के तने पर बड़ी होशियारी से ठीक जगह पर बिठा दिया गया था। उसने खोखल को छुरी से बड़ा किया था और उसे अन्दर से पुराने कपड़े और काग़ज़ के रंग-बिरंगे टुकड़ों, पन्नी और चाय लपेटने के काग़ज़ से बहुत सुन्दर ढंग से सजाया गया था। खोखल के बिल्कुल अन्दर गहराई में पीतल की एक छोटी-सी देव-प्रतिमा रखी थी जिसके सामने एक मोमबत्ती जल रही थी।

"कैसा लगा?" याकोव ने छाल का टुकड़ा उसी जगह पर बिठाते हुए पूछा।

"यह है काहे के लिये?"

"पूजा की जगह है," याकोव ने कहा। "मैं रात को यहाँ प्रार्थना करने आया करूँगा, जब कोई मुझे देख न पाये।"

इल्या को यह विचार तो अच्छा लगा, लेकिन उसने सोचा कि यह बात है ख़तरनाक।

"अगर किसी ने रोशनी देख ली तो? तुम्हारा बाप तुम्हारी अच्छी तरह मरम्मत करेगा!..."

"रात को कौन देखेगा? सब लोग सोते रहते हैं, चारों ओर सन्नाटा रहता है... मैं छोटा हूँ न दिन के वक़्त अगर मैं प्रार्थना करूँ तो भगवान मेरी बात सुन नहीं सकता, लेकिन रात को सुन लेगा। ज़रूर सुनेगा, क्यों है न?"

"मालूम नहीं, शायद सुन ही ले!..." इल्या ने अपने दोस्त के बड़ी-बड़ी आँखों वाले, पीले चेहरे को घूरते हुए विचारमग्न होकर कहा।

"तुम मेरे साथ प्रार्थना करने आओगे?" याकोव ने पूछा।

"तुम किस चीज़ के लिए प्रार्थना करना चाहते हो? मैं भगवान से कहूँगा कि मुझे बुद्धिमान बना दें और मैं जो कुछ चाहूँ वह मुझे मिल जाये। और तुम?"

"मैं भी..."

लेकिन एक क्षण सोचने के बाद याकोव बोला :

"मैं किसी ख़ास चीज़ के लिए प्रार्थना नहीं करना चाहता था। ख़ाली प्रार्थना करना चाहता था, बस। बाक़ी उसकी मरज़ी की बात है... वह जो चाहे मुझे दे दे..."

उन दोनों ने आपस में तय कर लिया कि उसी रात प्रार्थना करेंगे, और वे आधी रात को जागने का दृढ़ संकल्प लेकर सोये। लेकिन न वे उस रात को जागे, न उससे अगली रात को, न अगली कई रातों को, और इसके बाद इल्या के दिमाग़ पर लगातार इतनी बहुत-सी नयी बातों की छाप पड़ती रही थी कि वह पूजा की उस जगह के बारे में बिल्कुल भूल गया।

उसी लाइम के पेड़ पर, जिस पर याकोव ने अपनी पूजा की जगह बनायी थी, पावेल ने सिस्किन और टिटमिस चिड़ियाँ पकड़ने के लिए जाल भी लगाया था। पावेल का नया जीवन बहुत कठिन था। वह दुबला हो गया था और पीला पड़ गया था। वह पेर्फ़ीश्का के लिए काम करने में इतना फँसा रहता था कि उसे आँगन में आकर खेलने का समय भी नहीं मिलता था; दोस्तों से उसकी मुलाक़ात बस किसी त्यौहार के दिन ही होती थी जब मोची शराब के नशे में धुत्त रहता था। पावेल उनसे पूछता कि स्कूल में उन्हें क्या पढ़ाया जा रहा था और जब वह उनके डींग-भरे क़िस्से सुनता तो वह त्योरियाँ पर बल डालकर ईर्ष्या से उन्हें देखता।

"तुम लोग अकड़ो नहीं। मैं भी पढ़ा करूँगा!..."

"पेर्फ़ीश्का तुम्हें पढ़ने ही नहीं देगा।"

"मैं भाग जाऊँगा।" पावेल ने दृढ़ संकल्प के साथ कहा।

और हुआ भी यही, कुछ दिन बाद मोची कुछ हँसकर कह रहा था :

"वह मेरा शार्गिद भाग गया, शैतान कहीं का!"

उस दिन पानी बरस रहा था। इल्या ने एक नज़र बिखरे हुए बालों वाले पेर्फ़ीश्का पर डाली और फिर बेरंग और उदास आसमान को देखा और उसके दिल में पावेल के लिए तरस उमड़ आया। इल्या छज्जे के नीचे सायबान की दीवार से टिका हुआ खड़ा था और एकटक उस घर को देखे जा रहा था। ऐसा लगता था कि घर धीरे-धीरे छोटा होता जा रहा है और ज़मीन में धँसता जा रहा है। पुरानी कड़ियाँ बाहर की ओर पहले से ज़्यादा उभर आयी थीं, मानो दर्जनों साल के दौरान घर में जो कचड़ा जमा हो गया था वह उन्हें ज़ोर से बाहर की ओर ढकेल रहा था। उस घर ने अपने जीवन-भर जो विपत्तियाँ, शराब के नशे में डूबी हुई जो चीख़-पुकार और जो कटुता-भरे गीत अपने अन्दर सोखे थे वे उसकी नस-नस में इस तरह समा गये थे, उसमें बसने वाले असंख्य लोगों के पाँवों तले उसके लकड़ी के फर्श के तख़्ते इतनी बुरी तरह रौंदे गये थे और वह इतनी बुरी तरह हिल गया था, कि अब वह ज़्यादा दिन चलने वाला नहीं था, और धीरे-धीरे ढहता जा रहा था और अपनी खिड़कियों के बुझे हुए काँचों की उदास नज़रों से दुनिया को तक रहा था।

"हूँ-ऊँ," मोची ने आह भरी। "कुछ ही दिन की बात और है, यह फली फट जायेगी और सारे बीज बिखर जायेंगे। यहाँ के हम रहने वाले रेंगकर घुस जाने के लिए नयी दरारों की खोज में चारों दिशाओं में भागते फिरेंगे!... अगली बार हम इस तरह नहीं रहेंगे... हर चीज़ बिल्कुल दूसरी होगी खिड़कियाँ और दरवाज़े, और यहाँ तक कि हमें काटने वाला खटमल भी!... जितनी ही जल्दी यह हो जाये उतना ही अच्छा है... मैं तो इस महल से तंग आ चुका हूँ..."

लेकिन मोची के सपने व्यर्थ थे। घर की फली फटी नहीं, उसे आबदार पेत्रूख़ा ने ख़रीद लिया। घर बिकने के बाद दो दिन तक वह काम-काजी ढंग से पुराने खम्भों और कड़ियों को ठोक-बजाकर देखता रहा। फिर ईंटें और तख़्ते लाये गये, पाड़ बाँधा गया और अगले दो महीनों तक वह घर हथौड़ों की चोट से काँपता-कराहता रहा। उस पर आरे चलाये गये, कुल्हाड़े चलाये गये, कीलें ठोकी गयीं, पुराने सड़े हुए तख़्ते चरचराहट के साथ नोंच फेंके गये और उनकी जगह नये तख़्ते लगाये गये, और जब उस घर में एक नया हिस्सा जोड़कर उसे बड़ा बना दिया गया तो पूरे मकान की दीवारों पर बाहर से तख़्ते जड़ दिये गये। नीचा-सा और फैला हुआ वह मकान अब सीधा धरती से उभरता हुआ लगता था, मानो उसमें नयी जड़ें निकल आयी हों। पेत्रूख़ा ने घर के बाहर नीली पृष्ठभूमि पर सुनहरे अक्षरों में लिखा हुआ एक बड़ा-सा नया साईनबोर्ड लगा दिया :

'प. या. फ़िलिमोनोव के मित्रों की प्रमोदशाला'।

"लेकिन अन्दर से तो यह जगह अब भी सड़ी हुई है," पेफ़्रीश्का ने अपनी राय दी।

इल्या उसके समर्थन में मुस्करा दिया। उसे भी ऐसा लगता था कि नये सिरे से बनाया गया यह घर एक ढकोसला था। वह पावेल के बारे में सोचने लगा, जो अब कहीं और रहता था और दूसरी चीज़ें देखता था। मोची की तरह ही इल्या भी नयी खिड़कियों, नये दरवाज़ों और नये लोगों के सपने देखता रहता था... अब उस घर में जीवन पहले से भी बुरा हो गया था। पुराना लाइम का पेड़ काट डाला गया था और जिस सुखद कोने में वह उगा हुआ था वह जगह घर के नये हिस्से ने घेर ली थी। दूसरी प्रिय जगहें भी, जहाँ बच्चे बड़े चाव से बैठ कर बातें किया करते थे, गायब हो गयी थीं। अब उनके जमा होने के लिए एकमात्र सुविधाजनक जगह पुरानी सड़ी-गली लकड़ियों और काठ-कबाड़ के उस बड़े-से ढेर के पीछे रह गयी थी, जहाँ पहले लोहारख़ाना हुआ करता था, लेकिन वहाँ बैठते दिल डरता था, लगता था कि कचरे के उस ढेर के नीचे अपने फटे हुए सिर के साथ सावेल की घरवाली पड़ी हुई है।

पेत्रूख़ा ने चाचा तेरेन्ती को रहने के लिए नयी जगह दे दी   काउण्टर के पीछे एक छोटी-सी कोठरी। हरे काग़ज़ में मढ़ी हुई पतली दीवार में से होकर तम्बाकू का धुआँ, शराबख़ाने की आवाज़ें और वोद्का की गन्ध रिस-रिसकर कोठरी में आती थी। कोठरी साफ़-सुथरी थी और उसमें सीलन नहीं थी, लेकिन वह तहख़ाने वाली कोठरी से बदतर थी। उसकी अकेली खिड़की एक सायबान की सुरमई दीवार की ओर खुलती थी; दीवार की आड़ की वजह से सूरज, सितारे, आसमान कुछ भी दिखायी नहीं देता था, जबकि तहख़ाने वाली कोठरी की खिड़की के पास घुटनों के बल बैठकर ये सारी चीज़ें दिखायी देती थीं...

चाचा तेरेन्ती हल्के बैंगनी रंग की क़मीज़ और उसके ऊपर एक जैकेट पहनने लगा था, जो उसके शरीर पर ऐसी झूलती रहती थी जैसे किसी बड़े-से डिब्बे को पहना दी गयी हो, और वह सुबह से रात तक शराबख़ाने के काउण्टर के पीछे खड़ा रहता था। वह लोगों को "आप" कहकर सम्बोधित करने लगा था, रुखाई और झटके से मानो भूँकते हुए बोलने लगा था और काउण्टर के पार उन्हें इस तरह घूरता था जैसे कोई कुत्ता अपने मालिक के जायदाद की रखवाली कर रहा हो। उसने इल्या को सलेटी रंग की बनात की जैकेट, बूट जूते, एक कोट और टोपी ख़रीद दी थी; इल्या ने जब भी उन्हें पहना, उसे बरबस बूढ़े कबाड़ी की याद आ गयी। वह अपने चाचा से कभी-कभार ही बोलता था और उसके दिन धीरे-धीरे बहुत ही नीरस ढंग से कट रहे थे। उसे अब गाँव की याद अक्सर आने लगी थी; उसे अब पहले से ज़्यादा यक़ीन हो चला था कि वहाँ का जीवन बेहतर था   ज़्यादा शान्त, ज़्यादा सीधा-सादा और ज़्यादा समझ में आने

वाला। उसे केर्जेनेत्स के घने जंगल और वे कहानियाँ याद आती थीं जो चाचा तेरेन्ती ने उसे संन्यासी अन्तीपा के बारे में सुनायी थी। अन्तीपा की याद आते ही उसे पावेल याद आता। वह अब कहाँ होगा? शायद वह भी भागकर जंगल में चला गया होगा और कोई गुफा काटकर उसमें रहता होगा। जंगल में तेज़ हवाओं का रुदन और भेड़ियों के हौंकने की आवाज़ गूँजती रहती हैं ये आवाज़ें कितनी डरावनी क्यों न हों पर होती हैं मधुर। जाड़े में, जब मौसम अच्छा होता है, तो चारों ओर पेड़ और ज़मीन चाँदी की तरह चमकते हैं और पाँवों तले बर्फ़ के चरमर-चरमर बोलने के अलावा कोई दूसरी आवाज़ सुनायी नहीं देती है, और अगर कोई बिल्कुल चुपचाप खड़ा रहे तो उसे अपने दिल की धड़कनों के सिवा कुछ भी सुनायी नहीं देता है।

शहर में हमेशा बहुत शोर और हुल्लड़ रहता है, रात को भी। लोग गाते हैं, चिल्लाते हैं, कराहते हैं; गाड़ियाँ और बग्घियाँ सड़कों पर खड़खड़ाती हुई गुजरती रहती हैं, जिनकी आवाज़ से खिड़कियों के काँच तक हिल उठते हैं। स्कूली लड़के हमेशा कोई न कोई शरारत करते रहते हैं; बड़े लोग हरदम गालियाँ बकते रहते हैं, आपस में झगड़ते रहते हैं, और शराब पीकर धुत्त हो जाते हैं। किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। वे या तो पेत्रूख़ा की तरह धोखेबाज़ होते हैं, या सावेल की तरह जंगली, या पेर्फ़ीश्का, चाचा तेरेन्ती और मुटल्ली की तरह किसी गिनती में न आने वाले लोग... इल्या सबसे ज़्यादा उस मोची से प्रभावित हुआ था।

एक दिन सवेरे इल्या जब स्कूल जाने को तैयार था तो पेर्फ़ीश्का अस्त-व्यस्त हालत में शराबख़ाने में आया; उसे देखकर ऐसा लगता था जैसे रात-भर वह सोया न हो। एक भी शब्द बोले बिना वह आकर काउण्टर के पास खड़ा हो गया और तेरेन्ती को घूरता रहा। उसकी बायीं आँख फड़क रही थी और आधी बन्द थी, और उसका निचला होंठ बहुत हास्यास्पद ढंग से लटका हुआ था। चाचा तेरेन्ती ने मोची को एक नज़र देखा, मुस्कराया और उसके लिए वोद्का का तीन कोपेक वाला गिलास उड़ेल दिया रोज़ सवेरे वह इतनी ही पीता था। पेर्फ़ीश्का ने काँपते हाथ से गिलास थाम लिया, वोद्का अपने मुँह में उड़ेल ली, लेकिन हमेशा की तरह वह न तो गुर्राया और न ही उसने गाली दी। एकबार फिर उसने आबदार को अजीब ढंग से फड़कती बायीं आँख से घूरा; उसकी दाहिनी आँख प्रकाशहीन और ठहरी हुई थी, जैसे वह उससे कुछ भी नहीं देख रहा था।

"आपकी आँख को क्या हो गया है?" तेरेन्ती ने पूछा।

पेर्फ़ीश्का ने आँख मली, अपनी उंगली को ग़ौर से देखा और फिर बहुत ज़ोर से और स्पष्ट स्वर में बोला :

"मेरी बीवी, अव्दोत्या पेत्रोव्ना, चल बसी।"

तेरेन्ती ने कोने में टंगी हुई देव-प्रतिमा को देखकर अपने सीने में सलीब का निशान बनाया।

"भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे," उसने कहा।

"क्या कहा?" पेफ़ीश्का ने उसे एकटक घूरते हुए पूछा।

"मैंने कहा, 'भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे'।"

"हुँह! मर गयी!" और इतना कहकर मोची तेज़ी से मुड़ा तथा शराबख़ाने के बाहर चला गया।

"अजीब बन्दा है!" तेरेन्ती ने बड़े उदास भाव से अपना सिर हिलाकर कहा। इल्या भी उससे सहमत था कि मोची सचमुच अजीब बन्दा था...

स्कूल जाते हुए वह लाश को देखने के लिए तहख़ाने में एक मिनट के लिए गया था। कोठरी में अँधेरा था और बहुत-से लोग जमा थे। अटारी पर की औरतें कोने में बिछी हुई खाट के चारों ओर जमा हो गयी थीं और कानाफूसी में बातें कर रही थीं। मुटल्ली माशा को कोई कपड़ा पहनाकर देख रही थीं।

"बग़ल के नीचे कसता है?" उसने पूछा।

"हाँ-आं-आं," माशा ने अपनी बाँहें फैलाकर चिड़चिड़ाते हुए कहा।

मोची बैठा अपनी बेटी को देख रहा था। उसकी बायीं आँख अभी तक फड़क रही थी। मृतात्मा के सूजे हुए सफ़ेद चेहरे को ध्यान से देखते हुए उसे उन काली-काली आँखों की याद हो आयी जो अब हमेशा के लिए बन्द हो गयी थीं। वह बाहर चला आया; उसका दिल डूबा जा रहा था और उसे बेहद दुख महसूस हो रहा था।

लेकिन स्कूल से लौटकर जब वह शराबख़ाने में आया तो पेफ़ीश्का अकार्डियन बजा रहा था और लहक-लहककर गा रहा था :

दिल क्यों छीना,
गोरी मेरा?
छीना भी, औ'
फिर फेंक दिया?

"हाय! हाय! उन शाहज़ादियों ने निकाल दिया मुझे। 'निकल जा!' उन्होंने मुझे फटकारा। 'निकल जा यहाँ से, पिशाच, शराबी, कलमुँहे!' मैं इसका बुरा नहीं मानता... मैं सब कुछ सह सकता हूँ... मुझे गाली दो सब मंजूर है। मैं तो बस ज़िन्दगी का थोड़ा-सा रस लेना चाहता हूँ!... बस थोड़ा-सा रस। भैया, जीवन का थोड़ा-बहुत रस तो सभी लेना चाहते हैं यह है सारी बात। हम सब एक जैसे हैं वान्या हो कि मान्या। हम सब एक जैसे हैं!..."

काहे को अब रोना-धोना?
आहें भरने से क्या होना?
लब सी ले, फ़रियाद न कर तू,
क्या पायेगा तू रो-रोके लहू!

पेफ़ींश्का का चेहरा खिला हुआ था। उसे देखकर इल्या को डर भी लग रहा था और उससे नफ़रत भी हो रही थी। उसे यक़ीन था कि अपनी घरवाली के मौत के दिन ऐसी हरकतें करने पर भगवान मोची को सज़ा ज़रूर देगा। अगले दिन भी पेफ़ींश्का नशे में धुत्त था, और जनाजे के पीछे वह लड़खड़ाता हुआ, अपनी आँखें झपकाता हुआ और यहाँ तक कि कभी-कभी मुस्कराता हुआ भी चल रहा था। हर आदमी उसे धिक्कार रहा था और किसी ने तो उसकी गर्दन पर एक झापड़ तक मारा।

"अरे वाह! ज़रा सोचो तो!" कफ़न-दफ़न के दिन शाम को इल्या ने याकोव से कहा। "पूरा विधर्मी है यह पेफ़ींश्का।"

"मुझे कोई परवाह नहीं कि वह क्या है," याकोव ने भावहीन स्वर में कहा।

इधर कुछ दिन से इल्या को ऐसा लग रहा था कि याकोव बदलता जा रहा है। बाहर आने के बजाय वह घर पर ही बैठा रहता था जैसे इल्या से कतरा रहा हो। शुरू में तो इल्या ने सोचा कि स्कूल में उसकी सफलता पर ईर्ष्या की वजह से वह पढ़ाई में जुटा रहता होगा। लेकिन याकोव का नतीजा बेहतर होने के बजाय दिन-ब-दिन और बुरा होता गया; मास्टर साहब उसे हमेशा डाँटते रहते थे कि उसका ध्यान न जाने कहाँ रहता था और सीधी से सीधी बात भी उसकी समझ में न आती थी। पेफ़ींश्का की ओर याकोव के रवैये पर इल्या को कोई आश्चर्य नहीं हुआ : उसका दोस्त घर में होने वाली किसी भी बात में दिलचस्पी नहीं लेता था। लेकिन उसे यह जानने की उत्सुकता ज़रूर थी कि आख़िर इस परिवर्तन का कारण क्या है।

"तुम्हें क्या हो गया है?" उसने एक दिन पूछा। "क्या तुम अब मुझसे दोस्ती नहीं रखना चाहते?"

"तुमसे दोस्ती नहीं रखना चाहता?" याकोव ने चकित होकर कहा; फिर जल्दी से बोला, "सुनो, घर जाओ! तुम जाओ तो, मैं अभी एक मिनट में आता हूँ... मेरा इन्तज़ार करना फिर देखना मैं तुम्हें क्या दिखाता हूँ!"

याकोव मुड़ा और भाग गया। इल्या अपनी कोठरी में चला गया; कौतूहल से उसका सीना फटा जा रहा था। थोड़ी ही देर में याकोव ने अन्दर आकर दरवाज़ा बन्द कर लिया और खिड़की के पास जाकर अपनी क़मीज़ के अन्दर से एक लाल किताब निकाली।

"यहाँ आओ," याकोव ने तेरेन्ती की चारपाई पर बैठकर और इल्या को अपने पास बैठने का इशारा करते हुए धीमे स्वर में कहा। उसने किताब खोलकर अपने घुटनों पर रख ली और उस पर झुक गया।

"'दूर, बहुत दूर, बहादुर सूरमा को एक पहाड़ दिखाई दिया जो इतना ऊँचा था. .. इतना ऊँचा था जैसे आसमान,'" वह पढ़ रहा था। "'और उसके बीचों-बीच एक लोहे का फाटक था। सूरमा के... निर्भीक हृदय में साहस उमड़ आया। उसने अपना भाला सीधा किया, घोड़े को एड़ लगाई, और ज़ोर से चीख़कर आगे झपटते हुए... अपनी पूरी ताक़त से उसने फाटक को धक्का दिया। बिजली जैसी कड़क के साथ लोहे का फाटक हज़ारों टुकड़ों में चूर-चूर हो गया... और उसी समय पहाड़ के सीने में से धुआँ और लपटें... धुआँ और लपटें निकलने लगीं और एक ऐसी गरज सुनायी दी जिससे धरती काँप उठी और पहाड़ की चोटियों पर से चट्टानें टूट-टूटकर नीचे सूरमा के घोड़े के पैरों पर गिरने लगीं। "तो आख़िरकार तू आ गया, दीवाने दुस्साहसी! कब से मौत को और मुझे तेरा इन्तज़ार था!..." धुएँ की वजह से कुछ भी दिखायी न देने पर भी वह बहादुर सूरमा..."

"कौन था वह?" इल्या ने पूछा; वह आश्चर्यचकित होकर अपने दोस्त की जोश के कारण काँपती आवाज़ सुन रहा था।

"कौन?" याकोव ने अपना पीला चेहरा ऊपर उठाकर दबी ज़बान में कहा।

"सूरमा कौन होता है?"

"सूरमा वह होता है... वह होता है... जो घोड़े पर सवार होता है... जिसके हाथ में भाला होता है... निर्भीक राऊल... एक ड्रैगन ने उस लड़की को चुरा लिया था जिससे उसे प्यार था... सुन्दरी लुईज़ा को। तुम बस चुपचाप सुनते जाओ, शैतान," याकोव अधीर होकर चिल्लाया।

"अच्छी बात है!... लेकिन सुनो   ड्रैगन क्या होता है?"

"साँप होता है जिसके पंख होते हैं... और फ़ौलाद के पंजे होते हैं... और तीन सिर होते हैं उसके... और उसके मुँह से आग निकलती है।"

"बाप रे बाप!" इल्या ने आँखें फाड़कर कहा। "वह अभी उसे... क्या नाम है उसका... ख़त्म कर देगा न?"

कौतूहल के मारे दम साधे और मन में एक अनोखा चमत्कृत कर देने वाला उल्लास लिये दोनों लड़के उस किताब पर सिर झुकाये एक-दूसरे से सटे बैठे रहे, जिसने उन्हें एक नयी और जादुई दुनिया में पहुँचा दिया था जहाँ बहादुर सूरमाओं के वार से पापी राक्षस धराशायी हो जाते थे, जहाँ की हर चीज़ विशाल और अद्भुत थी और जहाँ की कोई भी चीज़ इस नीरस, बेरंग ज़िन्दगी जैसी नहीं थी। उस दुनिया में

न शराबी होते थे और न चीथड़े लगाये हुए निकम्मे लोग, और लकड़ी के हिलते हुए मकानों के बजाय सोने की तरह जगमगाते हुए महल और गगनचुम्बी मीनारों वाले फ़ौलादी अभेद्य किले होते थे। दोनों बच्चों ने कल्पना की इस शानदार दुनिया में क़दम रखा; दीवार के दूसरी तरफ़ अकार्डियन बज रहा था और पेर्फ़ीश्का मोची मस्त होकर गा रहा था :

जब मौत हमें ललकारेगी
वह जीती बाजी हारेगी।
शैतान कने मैं जाऊँगा,
मैं उससे मेल बढ़ाऊँगा।

"शाबाश है! हम मस्तानों को भगवान प्यार करता है!"

मोची के पंचम सुर का साथ देने की कोशिश में अकार्डियन बीच-बीच में लड़खड़ा जाता था :

ठण्ड का मारा, वह बेचारा
क़िस्मत से है अब मरने वाला।
जब सीधा नरक में जायेगा
तब शायद कुछ गरमायेगा।

हर अन्तरे पर ज़ोर का ठहाका लगता और चारों ओर वाह-वाह की आवाज़ गूँज उठती।

शोर के इस तूफ़ान से लकड़ी की पतली-सी दीवार से अलगायी हुई कोठरी में दोनों लड़के किताब पर झुके हुए थे; उनमें से एक बहुत धीमे स्वर में बोला :

"'... फिर सूरमा ने ड्रैगन को अपने फ़ौलादी शिकंजे में जकड़ लिया, और वह पीड़ा और भय से बिजली की कड़क की तरह गरज उठा...,"

सूरमा और ड्रैगन वाली किताब के बाद और किताबों की बारी आयी : 'गुआक, या अटल वफादारी' और 'बहादुर राजकुमार फ़्रांत्सील वेनेत्सिआन और सुन्दर राजकुमारी रेंत्सिवेना की कहानी'।

इल्या के दिमाग़ में अभी कुछ ही समय पहले तक यथार्थ के चित्रों की छाप रहती थी; वह जगह अब सूरमाओं और राजकुमारियों से भर गयी। दोनों दोस्त बारी-बारी से गल्ले में से दस-दस कोपेक चुराते और उनके पास किताबों की कोई कमी नहीं रह गयी। उन्होंने 'याश्का स्मेर्तेंस्की' के साहसी कारनामों की जानकारी हासिल की, और

‘तातार घुड़सवार यापांचा’ की कहानी से मन्त्रमुग्ध हुए। वे अपने चारों ओर की मनहूस ज़िन्दगी से दिन-ब-दिन दूर होते गये और एक ऐसी दुनिया में पहुँच गये जहाँ लोग हमेशा बदनसीबी की जंजीरें तोड़कर सुखी जीवन व्यतीत करते थे।

एक दिन पेर्फ़ीश्का को थाने बुलाया गया। वह परेशान-सा चल पड़ा, लेकिन जब वह लौटा तो बहुत ख़ुश था; वह पावेल ग्राचोव को अपने साथ लाया था, जिसका हाथ उसने मज़बूती से पकड़ रखा था। पावेल की नज़रें अब भी पहले की तरह ही पैनी थीं लेकिन वह बेहद दुबला हो गया था और पीला पड़ गया था और उसके चेहरे में अब वह पहले जैसी ढिठाई नहीं रह गयी थी। मोची उसे घसीटता हुआ शराबख़ाने में लाया।

“तो, भाइयो, यह रहा पावेल ग्राचोव, जो क़ैदियों के एक जत्थे के साथ पेंज ा शहर से पैदल चलकर अभी यहाँ पहुँचा है...” वह बोला, उसकी बायीं आँख अभी तक फड़क रही थी। “देखो तो आजकल के लड़के कैसे हो गये हैं। अब वे चूल्हे के पास बैठकर इस बात की बाट नहीं जोहते कि सुख उनके पास आये; जैसे ही पिछले पैरों पर खड़े होने लगते हैं उसकी खोज में निकल खड़े होते हैं!”

पावेल एक हाथ अपनी फटी हुई पतलून की जेब में डाले उसकी बग़ल में खड़ा था और दूसरा हाथ मोची के पंजे से छुड़ाने की कोशिश कर रहा था; वह बहुत नाराज़ होकर मोची को कनखियों से देखता जा रहा था। किसी ने मोची को लौण्डे की पिटाई करने की सलाह दी।

“किसलिए?” पेर्फ़ीश्का ने गम्भीर होकर आपत्ति की। “घूमने दो जहाँ इसका जी चाहे। कौन जाने इसे सचमुच सुख मिल ही जाये।”

“भूखा होगा,” तेरेन्ती ने अनुमान लगाया। “यह लो, पावेल,” उसने उसकी तरफ़ रोटी का टुकड़ा बढ़ा दिया।

लड़का उतावलापन दिखाये बिना रोटी का टुकड़ा लेकर दरवाज़े की ओर बढ़ा।

“ह्वी!” मोची ने उसके पीछे ज़ोर से सीटी बजायी। “जाओ, बेटा, ख़ुश रहो!”

इल्या अपनी कोठरी के दरवाज़े से सारा दृश्य देख रहा था; उसने इशारे से पावेल को बुलाया। पावेल उसके पास गया और घुसने से पहले कुछ झिझकता हुआ रुक गया और कोठरी में आकर उसने चारों ओर सन्देह-भरी दृष्टि डाली।

“क्या चाहते हो?” उसने रुखाई से पूछा।

“हेल्लो!”

“हेल्लो!”

“बैठ जाओ!...”

“किसलिए?”

"कुछ नहीं!... बातें करेंगे!..."

पावेल के तीखे सवाल और उसकी भारी आवाज़ सुनकर इल्या कुछ घबरा गया। वह उससे यह पूछने को बेचैन हो रहा था कि वह इतने दिन कहाँ रहा और उसने क्या-क्या देखा, लेकिन पावेल कुर्सी पर बैठ गया और बड़े इतमीनान से रोटी खाते हुए उसने ख़ुद सवाल पूछना शुरू किया।

"स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली?"

"अभी नहीं, वसन्त में!"

"मैंने तो पूरी कर ली!..."

"तुमने कर ली?" इल्या की आवाज़ में सन्देह की झलक थी।

"मुझे ज़्यादा वक़्त नहीं लगा!"

"कहाँ पढ़ा तुमने?"

"जेल में। कैदियों ने मुझे सब सिखा दिया!"

इल्या सरककर और भी पास आ गया।

"क्या वह डरावनी जगह है?" उसने अपने साथी के दुबले-पतले चेहरे की ओर आदर से देखते हुए पूछा।

"अरे नहीं! मैं तो बहुत-से शहरों के न जाने कितने जेलों में रहा। वहाँ मैं सिर्फ़ शरीफों से मेल-जोल रखता था... वहाँ शरीफ औरतें भी थीं। तरह-तरह की भाषाएँ बोल लेते थे वे। मैं उनकी कोठरियाँ झाड़-बुहारकर साफ़ कर देता था। बड़े मस्त लोग थे मानो जेल में रहने में उन्हें कोई तकलीफ़ ही न हो।"

"डाकू?"

"पक्के चोर," पावेल ने बड़े गर्व से कहा।

इल्या की आँखें झपक गयीं और पावेल के प्रति उसकी श्रद्धा बढ़ गयी।

"रूसी थे वे?" उसने पूछा।

"यहूदी भी थे... दुनिया में सबसे अच्छे लोग होते हैं ये क़ैदी!... कौन-सा करम नहीं किया था उन्होंने! आँख बन्द करके दायें-बायें सबको लूटा था!... लेकिन पकड़े गये और उसका मतलब था साइबेरिया!"

"तुमने जेल में पढ़ा कैसे?"

"सीधी-सी बात है... मैंने बस उनसे कहा, 'मुझे सिखाओ', और उन्होंने मुझे सिखा दिया..."

"पढ़ना-लिखना?"

"लिखने में तो मैं कच्चा हूँ, लेकिन पढ़ने को जितना कहो पढ़ सकता हूँ। मैंने बहुत-सी किताबें पढ़ी हैं!..."

किताबों की बात निकलते ही इल्या का जोश बढ़ गया।

"मैं और याकोव दोनों किताबें पढ़ते हैं," वह बोला।

अपनी पढ़ी हुई किताबों के नाम गिनाने की उत्सुकता में वे बीच-बीच में एक-दूसरे की बात काटते रहे। थोड़ी ही देर में पावेल ने रुककर आह भरी।

"तुम शैतानों ने मुझसे ज़्यादा पढ़ा है," वह बोला। "मैं ज़्यादातर कविता पढ़ता था... वहाँ हर तरह की किताबें थीं, लेकिन अच्छी किताबें बस कविता की थीं..."

इतने में याकोव अन्दर आया, आश्चर्य से उसकी आँखें बाहर उभर आयीं और वह हँसने लगा।

"अरे, दुम्बे," पावेल बोला, "तू हँस किस बात पर रहा है?"

"कहाँ रहा तू?"

"ऐसी जगह जहाँ तू कभी पहुँच नहीं सकता।"

"तू समझता क्या है?" इल्या ने याकोव से कहा। "इसने भी किताबें पढ़ी हैं।"

"सचमुच?" याकोव ने चिल्लाकर कहा और फ़ौरन उसके स्वर में दोस्ताना कुछ बढ़ गया। तीनों लड़के बैठकर जल्दी-जल्दी बातें करने लगे; उनकी बातों में कोई सिलसिला तो नहीं था लेकिन जो कुछ वे कह रहे थे वह बेहद दिलचस्प था।

"कैसी-कैसी चीज़ें देखी हैं मैंने! कभी उनमें से आधी भी तुम्हें बता नहीं पाऊँगा!" पावेल ने उत्कंठित स्वर में डींग मारते हुए कहा। "एक बार मैंने दो दिन तक कुछ खाया नहीं   एक टुकड़ा तक नहीं... जंगल में रात बितायी   बिल्कुल अकेले।"

"डर नहीं लगा तुम्हें?" याकोव ने पूछा।

"जाकर देखो तो पता चले! एक बार तो कुत्तों ने मुझे कच्चा ही चबा लिया होता... यह कजान की बात है... वहाँ किसी कवि की बड़ी-सी मूर्त्ति है   इसीलिए वहाँ लगायी गयी है कि वह कवि था... तुम देखते कितना बड़ा था वह! ये बड़े-बड़े पाँव! और मुट्ठी इतनी बड़ी जितना बड़ा तुम्हारा सिर है, याकोव! भाई, मैं भी कविता लिखा करूँगा। मैंने थोड़ा-बहुत तो सीख भी लिया है!..."

अचानक उसने सिकुड़कर अपने पाँव नीचे खींच लिए, नज़रें एक जगह पर जमायीं, बहुत महत्त्वपूर्ण आदमी की तरह, भवें चढ़ाकर देखा और धड़ाधड़ सुनाने लगा :

> खुली सड़क पर जाते लोग,
> पहने-ओढ़े, मोटे लोग,
> रोटी भी जो इनसे माँगो,
> यही कहेंगे : भागो, भागो!...
> चलो यहाँ से!...

कविता पूरी करके उसने एक नज़र लड़कों पर डाली और धीरे-धीरे अपना सिर झुका लिया। थोड़ी देर तक ख़ामोश तनाव रहा।

"तुम इसे कविता कहते हो?" इल्या ने आख़िरकार साहस करके कहा।

"तुम्हें सुनायी नहीं देता?" पावेल ने चिढ़कर जवाब दिया। "'माँगो' और 'भागो'। इसका मतलब है कविता।"

"बिल्कुल कविता है," याकोव जल्दी से बीच में बोला। "इल्या, तुम तो हमेशा ऐब ही निकालते रहते हो।"

"मैंने कुछ और कविताएँ बनायी हैं," पावेल ने बड़ी उत्कण्ठा से कहा, और याकोव की ओर मुड़कर अपनी नयी कविता भी उसी तरह फर्राटे से सुना दी :

भूरी-भूरी बदली छायी,
धरती सर्दी से थर्रायी,
चुपके-चुपके, धीरे-धीरे
पतझड़ आया पर्वत तीरे,
खाने को बस लाठी-पत्थर,
तन ढकने को धज्जी-गूदड़।

"वा-ह!" याकोव ने अपनी आँखें फाड़कर प्रशंसा के भाव से कहा।

"यह बात हुई, इसे मैं कविता कहता हूँ," इल्या ने भी याकोव जितने ही प्रशंसा के भाव से कहा।

पावेल के गालों पर हल्की-सी लाली दौड़ गयी और उसने अपनी आँखें ऐसे सिकोड़ीं जैसे उनमें धुआँ चला गया हो।

"मैं लम्बी-लम्बी कविताएँ बनाने वाला हूँ," उसने डींग मारते हुए कहा। "कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है! जंगल दिखायी देता है तो 'मंगल' का ध्यान आता है, आसमान दिखायी देता है तो आदमी 'आन-बान' के बारे में सोचता है। शब्द अपने आप आते जाते हैं!"

"अब तुम क्या करने वाले हो?" इल्या ने उससे पूछा।

पावेल ने आँखें झपकायीं, अपने चारों ओर देखा, कुछ देर चुप रहा और आख़िरकार धीरे से सकुचाते हुए कहा : "अरे, कुछ न कुछ तो!..."

लेकिन क्षण भर बाद उसने बड़े दृढ़ संकल्प के साथ कहा :

"पर जल्दी ही मैं फिर भाग जाऊँगा!..."

वह मोची के यहाँ रहने लगा था। रोज़ शाम को लड़के उससे मिलने जाते थे। तेरेन्ती की छोटी-सी कोठरी की अपेक्षा तहख़ाने का वातावरण शान्त और सुखद था।

पेफ़्रींश्का शायद ही कभी घर पर होता था। उसके पास अपना जो कुछ भी था उसकी वह शराब पी गया था और अब वह दूसरे मोचियों के लिए फुटकर काम करने में समय बिताता था, या जब काम नहीं होता था तो शराबख़ाने में जा बैठता था। अपना पुराना अकार्डियन बग़ल में दबाये वह नंगे पाँव और अधनंगा घूमता रहता था। वह अकार्डियन उसके शरीर का हिस्सा बन चुका था। उसके मस्त व्यक्तित्व का एक हिस्सा उस बाजे में रच-बस गया था, और दोनों एक-दूसरे से बहुत कुछ मिलने-जुलने लगे थे : दोनों की पसलियाँ निकली हुई थीं, दोनों की सूरतें फटी-पुरानी थीं, और दोनों ही मस्त धुनों और तानों से भरे हुए थे। सभी कारीगरों में पेफ़्रींश्का हमेशा चटपटी तुकबन्दियाँ जोड़ते रहने के लिए मशहूर था; कोई भी जगह ऐसी नहीं थी जहाँ उसका स्वागत न किया जाता हो। वे लोग उससे इसलिए प्यार करते थे कि वह मेहनत करने वालों के नीरस जीवन में अपने गीतों से और अपनी हँसाने वाली कहानियों से रौनक पैदा कर देता था।

जब भी वह कुछ कोपेक कमा लेता था उनमें से आधे वह अपनी बेटी को दे देता था, और उसके कल्याण की उसे जो चिन्ता रहती थी उसका यही आदि होता था और यही अन्त। उसकी बेटी पूरी तरह अपनी नियति की मालिक थी। वह बढ़कर काफ़ी लम्बी हो गयी थी, उसकी काली-काली घुँघराली लटें उसके कन्धों पर पड़ी रहती थीं और उसकी काली-काली आँखें अधिक बड़ी और अधिक गम्भीर हो गयी थीं। वह दुबली-पतली फुर्तीली लड़की तहख़ाने की उस छोटी-सी कोठरी में गृहिणी की भूमिका अच्छी तरह अदा करती थी। जलाने के लिए वह निर्माण-स्थलों से लकड़ी की चिपटियाँ बटोरकर लाती थी, किसी न किसी तरह सूप बनाने की कोशिश करती थी, और दोपहर तक अपनी स्कर्ट ऊपर चढ़ाये इधर-उधर भागती फिरती थी मैली-कुचैली, पसीने से नहायी, अपने काम में डूबी हुई। खाना तैयार करके वह कोठरी साफ़ करती, हाथ-मुँह धोती, कपड़े बदलती और खिड़की के पास मेज़ पर बैठकर अपने कपड़े मरम्मत करने लगती।

मुटल्ली अक्सर चाय, शक्कर और मीठी डबल रोटी लेकर उससे मिलने आती थी। एक बार उसने माशा को एक नीली पोशाक भी उपहार में दी थी। उसके सामने माशा का आचरण वयस्क गृहिणी जैसा रहता था। वह अपना छोटा-सा टिन का समोवार गरम करती थी और गरम-गरम मज़ेदार चाय पीते वक़्त वे दोनों गप लड़ाती थीं और पेफ़्रींश्का को बुरा-भला कहती थीं। मुटल्ली उसे ख़ूब आड़े हाथों लेती थी, माशा ऊँची महीन आवाज़ में उसकी हाँ में हाँ तो मिलाती थी लेकिन बिना किसी उत्साह के केवल शिष्टता के नाते। वह अपने बाप की चर्चा हमेशा बड़े दया भाव से करती थी।

"उसका पोटा सूखे!" मुटल्ली अपनी भवें सिकोड़कर गूँजती हुई आवाज़ में कहती। "क्या वह भूल गया है, वह शराबी, कि छोटी-सी बच्ची उसकी निगरानी में छोड़ी गयी थी? मुझे उसके थोबड़े से नफ़रत है, उसका मुरदा उठे, उस कुत्ते का!"

"उन्हें मालूम है कि मैं बड़ी हो गयी हूँ और अपनी देखभाल ख़ुद कर सकती हूँ," माशा कहती।

"हे भगवान, हे भगवान!" मुटल्ली आह भरकर कहती। "दुनिया का क्या हाल होता जा रहा है? इस लड़की का क्या होगा? मेरी भी तुम्हारी जैसी एक छोटी-सी बच्ची थी... मैं उसे घर छोड़ आयी थी, खोरोल शहर में... इतनी दूर है यहाँ से कि अगर मुझे वापस जाने भी दिया जाये तो मुझे कभी रास्ता ही ढूँढ़े न मिले। देखो तो, आदमी का क्या हाल हो सकता है!... वह जीता रहता है और यह भी भूल जाता है कि उसका घर कहाँ है!"

माशा को गाय जैसी आँखों वाली इस औरत की आवाज़ सुनना बहुत अच्छा लगता था। उससे हमेशा वोद्का की जो बू आती रहती थी वह भी माशा को नहीं रोक पाती थी वह जाकर उसकी गोद में बैठ जाती थी, उसकी भारी-भरकम छातियों से चिपट जाती थी और उसके सुडौल मुँह के भरे-भरे होंठों को चूम लेती थी। मुटल्ली माशा से मिलने सवेरे आती थी, और लड़के उसके यहाँ शाम को आते थे। अगर बच्चों के पास किताब न होती थी तो वे ताश खेलते थे, लेकिन ऐसा बहुत कम ही होता था। जब किताब पढ़ी जाती तो उसे सुनना माशा को भी बहुत अच्छा लगता था, और जब पढ़ने के दौरान सबसे भयानक स्थान आते तो वह दबी-दबी चीख़ें मारती।

याकोव अब माशा का ध्यान पहले से ज़्यादा रखने लगा था। वह उसके लिए हमेशा चाय, शक्कर, रोटी के टुकड़े और गोश्त और बियर की बोतलों में मिट्टी का तेल लाता रहता था। कभी-कभी वह उसे किताबें ख़रीदने से बची हुई रेजगारी भी दे देता था। यह उसकी आदत-सी बन गयी थी और वह यह काम ऐसे सहज भाव से करता था कि उसकी ओर किसी का ध्यान भी नहीं जाता था, और माशा भी कोई विशेष ध्यान दिये बिना सहज भाव से उसे ले लेती थी।

"याकोव," वह कहती, "कोयला नहीं रह गया है हमारे पास!"

और कुछ ही समय बाद वह उसे या तो कोयला लाकर दे देता या पैसे दे देता, और अगर पैसे देता तो कह देता :

"लो, जाकर ख़रीद लाओ। इस बार मैं चुरा नहीं पाया।"

इल्या भी उनके इस सम्बन्ध का आदी हो गया था; सच तो यह था कि अहाते में रहने वाला कोई भी आदमी इसके बारे में कुछ सोचता नहीं था। कभी-कभी याकोव के कहने पर इल्या ख़ुद रसोई में से या शराबख़ाने में से कोई चीज़ चुराकर मोची के

तहख़ाने में पहुँचा देता था। उसे वह दुबली-पतली साँवली छोटी-सी लड़की बहुत अच्छी लगती थी, जो उसी की तरह अनाथ थी, और वह इस बात के लिए उसे बहुत सराहता था कि वह अकेली रहती थी और अपना सारा काम ख़ुद बड़े लोगों की तरह कर लेती थी। इल्या को उसके हँसने की आवाज़ बहुत अच्छी लगती थी और वह हमेशा उसे हँसाने की कोशिश करता रहता था। जब वह इसमें सफल न होता तो चिढ़ जाता था और उसे चिढ़ाने लगता था।

"कलमुँही कहीं की!" वह कहता।

"नकचपटा शैतान!" वह भी आँखें सिकोड़कर तड़ से जवाब देती।

बात में से बात निकलती जाती, यहाँ तक कि दोनों सचमुच लड़ने लगते। माशा का ग़ुस्सा बड़ी जल्दी भड़क उठता और वह इल्या पर उसका मुँह नोचने की इच्छा से टूट पड़ती, लेकिन वह हमेशा भाग जाता और बहुत ख़ुश होकर हँसता रहता।

एक बार जब वे लोग ताश खेल रहे थे तब इल्या ने माशा को तिकड़म करते हुए पकड़ लिया और ग़ुस्से से बिफरकर चिल्लाया :

"याकोव की चहेती!"

इसके साथ ही उसने एक ऐसा भद्दा-सा शब्द जोड़ दिया जिसका अर्थ उसने अभी हाल ही में सीखा था। याकोव उसकी बग़ल में ही बैठा था। पहले तो वह हँस दिया, लेकिन जब उसने देखा कि माशा के चेहरे का रंग बदल गया है और उसकी आँखों में आँसू भर आये हैं तो उसने हँसना बन्द कर दिया और उसका चेहरा उतर गया। अचानक वह उछलकर इल्या पर टूट पड़ा, उसकी नाक पर घूँसा मारा, और उसके बाल पकड़कर उसे खींचकर ज़मीन पर पटक दिया। यह सब कुछ इतनी जल्दी हो गया कि इल्या को अपना बचाव करने का भी समय नहीं मिला। अगले ही मिनट पीड़ा और क्रोध से व्याकुल होकर वह उछलकर खड़ा हो गया और सिर नीचा करके साण्ड़ की तरह याकोव की ओर झपटा और चिल्लाया, "तुझे अभी बताता हूँ!" लेकिन उसने देखा कि याकोव मेज़ पर बैठा अपना सिर हाथों पर टिकाये रो रहा है और माशा उसके पास उस पर झुकी खड़ी है।

"उससे खुट्टी कर लो," वह आँखों में आँसू भरे याकोव से कह रही थी। "वह बिल्कुल जानवर है, निकम्मा! वे सब एक जैसे हैं   बाप सज़ा काट रहा है और चाचा कुबड़ा है! इसके भी कूबड़ निकल आयेगा! मनहूस, कमीने!" वह निडर होकर इल्या की ओर बढ़ते हुए चिल्लायी। "सुअर! डरपोक बिलौटे! कबाड़ी कहीं का! आ, मुझसे लड़! मैं तो तेरी आँखें खुरचकर निकाल लूँगी! आ जा!"

लेकिन इल्या अपनी जगह से नहीं हिला। याकोव को वहाँ बैठकर रोते देखकर वह दुखी हो गया, क्योंकि उसका दिल दुखाने का इल्या का कोई इरादा नहीं था, और

लड़की से लड़ते उसे शर्म आती थी। माशा उससे लड़ने को बिल्कुल उतारू थी   यह बात वह अच्छी तरह जानता था। कुछ भी कहे बिना वह तहख़ाने के बाहर चला गया और कुछ देर तक बहुत उदास होकर, दुख में डूबा अहाते में इधर-उधर टहलता रहा। आख़िरकार वह पेर्फ़ीश्का की खिड़की के पास गया और चोरी से कमरे में झाँककर देखने लगा। याकोव और माशा फिर ताश खेल रहे थे। माशा ने अपने पत्तों से आधा चेहरा ढँक रखा था और ऐसा लग रहा था कि वह हँस रही है, याकोव अपने पत्तों को ग़ौर से देख रहा था, और दुविधा में पड़ा हुआ कभी एक पत्ते को छूता था और कभी दूसरे को। यह दृश्य देखकर इल्या बेहद उदासी महसूस करने लगा। उसने अहाते में एक-दो चक्कर और लगाये और फिर दिल कड़ा करके तहख़ाने की सीढ़ियाँ उतरने लगा।

"मुझे फिर खिला लो!" उसने मेज़ के पास आकर कहा।

उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, उसके गाल तमतमाये हुए थे और वह नज़रें नीची किये खड़ा था। न माशा ने एक शब्द कहा और न याकोव ने।

"मैं कभी भद्दी बात नहीं कहूँगा   सच कहता हूँ, बिल्कुल नहीं कहूँगा!" इल्या ने उनकी ओर देखते हुए कहा।

"अच्छी बात है, बैठ जाओ," माशा ने कहा। "हुँह, बड़ा आया!"

"अरे बेवकू   फ़!" याकोव ने सख़्ती से जोड़ दिया। "अब तुम बच्चे तो हो नहीं   तुम्हें जानना चाहिए कि क्या कह रहे हो।"

"और तुमने मेरे साथ क्या किया?" इल्या ने शिकायत के स्वर में कहा।

"तुमने हरकत ही ऐसी की थी," माशा ने कठोर स्वर में कहा।

"ठीक है! मैं नाराज़ नहीं हूँ। गल्ती मेरी ही थी!..." इल्या ने स्वीकार किया और याकोव की ओर देखकर सकपकाकर मुस्करा दिया। "और तुम भी मुझसे नाराज़ न होना, ठीक है न?"

"अच्छी बात है। यह लो पत्ते..."

"तुम भी बिल्कुल शैतान हो," माशा ने कहा और इसके साथ ही सारा झगड़ा निबट गया।

एक मिनट बाद ही इल्या भवें चढ़ाकर अपने पत्तों को ध्यान से देख रहा था। वह हमेशा इस तरह बैठता था कि माशा को उसके बाद पत्ता चलना पड़े। उसे हारता देखकर इल्या को बहुत मज़ा आता था, लेकिन वह बहुत होशियार खिलाड़ी थी। आम तौर पर हारता याकोव था।

"आ-ह, घोंचू कहीं के!" वह बड़े प्यार और अफ़सोस से कहती।

"फिर हार गये न!"

"भाड़ में जायें ये पत्ते! मैं इनसे तंग आ गया हूँ। आओ, कुछ पढ़ें!"

वे कोई मैली-कुचैली बिखरे हुए पन्नों वाली किताब निकालते और पढ़ने लगते कि प्यार की ख़ातिर कैसी-कैसी मुसीबतें झेली गयीं और कैसे-कैसे बहादुरी के कारनामे किये गये।

पावेल ग्राचोव उनके ज़िन्दगी के ढर्रे से बहुत प्रभावित हुआ।

"तुम शैतानों के भी मज़े हैं," उसने एक बार ऐसे आदमी के अन्दाज़ में कहा जो कुछ घूमा-फिरा हो और जिसने बहुत दुनिया देखी हो।

फिर याकोव और माशा की ओर देखकर उसने हल्की-सी मुस्कराहट से लेकिन पूरी गम्भीरता के साथ कहा :

"किसी दिन तुम माशा से ब्याह कर लोगे, याकोव।"

"चल, बुद्धू!..." माशा ने हँसते हुए कहा, और वे चारों ठहाका मारकर हँस पड़े।

जब वे कोई किताब पूरी कर लेते या पढ़ते-पढ़ते थक जाते तो पावेल उन्हें अपने कारनामे सुनाता, और उन्हें सुनकर उन लोगों को उतना ही मज़ा आता जितना किताबें पढ़कर आता था।

"जैसे ही मैंने देखा कि पासपोर्ट के बिना मेरा काम नहीं चलने का तो मैं तिकड़मों का सहारा लेने लगा। अगर मैं किसी पुलिसवाले को देखता तो तेज़ क़दम बढ़ाता हुआ चलने लगता, जैसे मैं किसी ज़रूरी काम से कहीं जा रहा हूँ, या मैं किसी आदमी के साथ ऐसा चिपक जाता जैसे वह मेरा मालिक या मेरा बाप या ऐसा कोई और है... पुलिसवाला मुझे देखता ज़रूर था लेकिन पकड़ता कभी नहीं था... गाँवों में सबसे अच्छा रहता था   वहाँ पुलिसवाले होते ही नहीं थे   बस बूढ़े-बुढ़ियाँ और बच्चे होते थे। मर्द तो हमेशा खेतों पर रहते हैं। वे पूछते, 'कौन हो तुम?'   'भिखारी।'   'किसके यहाँ के हो?'   'किसी के नहीं।'   'कहाँ से आये हो?'   'शहर से।' बस, इतने ही में काम चल जाता था। वे लोग मुझे खाने-पीने को ढेरों देते थे। वहाँ जो मेरा जी चाहता था करता था   रेंगकर कहीं पहुँच जाना, भागना-दौड़ना   कोई फ़र्क   नहीं पड़ता था। चारों ओर खेतों और जंगलों के अलावा कुछ नहीं होता था... और चण्डूल गाते रहते थे... जी चाहता कि उड़कर उन्हीं में जा मिलूँ! जब पेट भरा होता तब एक ही इच्छा होती   कि चलते-चलते धरती के छोर पर पहुँच जाऊँ। ऐसा लगता था कि कोई मुझे आगे खींचे लिये जा रहा है, या मेरी माँ मुझे अपनी गोद में ले जा रही है। लेकिन, उफ़! कभी-कभी कितनी भूख लगती थी मुझे! पेट के अन्दर आँतें सूख जाती थीं! जी चाहता था कि धूल-मिट्टी जो भी मिले खा लूँ! सिर चकराने लगता था... लेकिन फिर, आख़िरकार जब दाँतों से रोटी का टुकड़ा काटना नसीब होता था   ओह, कैसा मज़ा

आता था, सच्ची! जी चाहता था दिन-रात खाता ही रहूँ। बड़ा मज़ा आता था! फिर भी जब मुझे जेल में डाल दिया गया तो बहुत ख़ुश हुआ! शुरू में तो मुझे डर लगा, लेकिन फिर ख़ुशी हुई... पुलिसवालों से मेरी जान निकलती थी मैं समझता था कि जब वे मुझे पकड़ लेंगे तो मार-मारकर मेरा कचूमर निकाल देंगे। लेकिन उसी पुलिसवाले ने... बस पीछे से आकर मेरी गर्दन पकड़ ली! मैं खड़ा एक दुकान के काँच के पीछे रखी हुई घड़ियाँ देख रहा था ढेरों घड़ियाँ सोने की और हर तरह की और अचानक लो, मैं पकड़ा गया! कैसे ज़ोर से दहाड़ता था मैं! लेकिन उसने बड़ी नरमी से मुझसे पूछा, 'कौन हो तुम? कहाँ के रहने वाले हो?' मैंने उसे सच-सच बता दिया पता तो वे यों भी लगा ही लेते; वे हर बात का पता लगा लेते हैं... सो वह मुझे थाने ले गया... वहाँ भाँति-भाँति के साहब लोग थे... 'कहाँ जा रहे हो?' उन्होंने मुझसे पूछा। 'तीरथ करने जा रहा हूँ,' मैंने कहा। क्या हँसे थे वे लोग यह सुनकर! ख़ैर, उन्होंने मुझे जेल में डाल दिया... वहाँ भी लोग मुझ पर ख़ूब हँसे। फिर उन भले मानसों ने मुझसे अपना काम कराना शुरू किया। क्या ख़ूब बन्दे थे वे लोग भी! वाह-वाह!"

जब भी वह उन "भले मानसों" की बात करता था तो बड़ी हैरत से। साफ़ लगता था कि वह उनसे बहुत प्रभावित हुआ था, लेकिन अलग-अलग लोगों की जो छापें उसके दिल पर पड़ीं थीं वे सब उसकी स्मृति में मिलकर एक बड़ा-सा धब्बा बन गयी थीं जिसकी कोई ख़ास शक्ल नहीं थी। लगभग एक महीने में पावेल फिर गायब हो गया। बाद में पेर्फ़ीश्का को पता चला कि वह किसी छापेख़ाने में काम करता था और शहर में कहीं काफ़ी दूर रहता था। यह सुनकर इल्या ने बड़ी ईर्ष्या से आह भरी।

"लगता है कि हम लोग ज़िन्दगी-भर यहीं सड़ते रहेंगे..." उसने याकोव से कहा।

इल्या को कुछ दिन तो पावेल का न होना खला, लेकिन जल्दी ही वह फिर कल्पना की विचित्र और अनोखी दुनिया में खो गया। वह और याकोव फिर किताबें पढ़ने लगे और इल्या ऐसे आदमी की सुखद स्थिति में रहने लगा जो न पूरी तरह जागा हुआ होता है न सोया हुआ।

अचानक जैसे किसी ने उसे बुरी तरह झँझोड़ दिया और वह इस धरती पर लौट आया। एक दिन सवेरे उसके चाचा ने उसे जगाकर कहा :

"उठकर अच्छी तरह नहा-धो लो और जल्दी करो!"

"क्यों? कहाँ जा रहे हैं हम लोग?" उसने उनींदे स्वर में पूछा।

"काम पर। भगवान की कृपा से आख़िरकार तुम्हें काम मिल गया है... मछली की दुकान में!"

इल्या का मन आशँका से भारी हो उठा। अचानक उसे लगा कि इस घर से जाने की उसे कोई इच्छा नहीं रह गयी थी, जिसे वह इतनी अच्छी तरह जानता था और जिसकी उसे आदत पड़ गयी थी; और यह कोठरी, जिससे उसे इतनी नफ़रत थी, अब उसे बेहद रोशन और साफ़ लगने लगी थी। वह चारपाई के कगर पर बैठा फर्श को घूरता रहा; वह कपड़े पहनना नहीं चाहता था... याकोव मुँह बिसूरता हुआ और बाल बिखेरे अन्दर आया; उसका सिर एक कन्धे की ओर झुका हुआ था।

"जल्दी करो, पापा तुम्हारी राह देख रहे हैं..." उसने जल्दी से एक नज़र अपने दोस्त पर डालते हुए कहा। "कभी-कभी आया तो करोगे न?"

"हाँ-हाँ।"

"अच्छी बात है... जाने से पहले माशा से मिलकर जाना।"

"क्यों? मैं हमेशा के लिए तो नहीं जा रहा हूँ," इल्या ने चिढ़कर कहा।

माशा ख़ुद आयी। दरवाज़े पर पहुँचकर वह रुक गयी और इल्या को घूरती रही।

"देखो, विदा करने का समय आ गया!" माशा ने उदास होकर कहा।

इल्या ने बहुत झल्लाकर अपनी जैकेट पहनी और गाली दी। माशा और याकोव दोनों ने आह भरी।

"तो आना ज़रूर!" याकोव बोला।

"कहा न मैंने आऊँगा," इल्या ने गुर्राकर कहा।

"अपने को बहुत समझने लगे हो, क्या? कारिन्दे बन गये हो न," माशा बोली।

"बेवकूफ़ छोकरी!" इल्या ने धीमे स्वर में झिड़कते हुए कहा।

कुछ ही मिनट बाद वह पेत्रूख़ा के साथ सड़क पर चला जा रहा था, जो लम्बा कोट और चर्र-मर्र करते हुए जूते पहने बहुत बना-संवरा लग रहा था।

"मैं तुम्हें किरील इवानोविच स्त्रोगानी के यहाँ काम करने के लिए ले जा रहा हूँ, जिसकी शहर में सब लोग बड़ी इज़्ज़त करते हैं," उसने उसे समझाते हुए कहा। "उसे अपने दान-पुण्य और अच्छे कामों के लिए मेडल तक मिल चुके हैं! वह शहर की काउन्सिल के मेम्बर हैं और कौन जाने मेयर भी चुन लिया जाये। अगर तुम उसके यहाँ जी लगाकर और वफादारी से काम करोगे तो तुम्हें उससे दुनिया में तरक्की करने में बड़ी मदद मिलेगी... तुम तो समझदार लड़के हो, शरारती नहीं... और किसी के साथ भलाई करना तो उसके लिए बाएँ हाथ का खेल है..."

ये बातें सुनते हुए इल्या ने अपने दिमाग़ में स्त्रोगानी का चित्र बनाने की कोशिश की। न जाने क्यों उसे ऐसा लग रहा था कि वह दादा येरेमेई जैसा होगा दुबला-पतला, मिलनसार और नेक। लेकिन मछली की दुकान में घुसने पर उसने देखा कि बड़ी-सी तोंदवाला एक लम्बा आदमी गल्ले के पीछे खड़ा है। उसके सिर पर एक भी बाल नहीं

था, लेकिन आँखों से ठोड़ी तक उसका पूरा चेहरा घनी लाल दाढ़ी से ढका हुआ था। उसकी भवें भी घनी और लाल थीं और भवों के नीचे छोटी-छोटी कंजी ग़ुस्सैल आँखें तेज़ी से इधर-उधर चलती रहती थीं।

"झुककर सलाम करो," पेत्रूख़ा ने लाल बालों वाले आदमी की ओर आँखों से इशारा करके इल्या के कान में कहा। इल्या ने निराश होकर अपना सिर झुका लिया।

"नाम क्या है तुम्हारा?" दुकान में गूँजती हुई आवाज़ सुनायी दी। "अच्छा, इल्या, अच्छी तरह आँखें खोलकर देख लो। अब इस दुनिया में तुम्हारे मालिक के अलावा तुम्हारा कोई नहीं है। न कोई दोस्त, न कोई रिश्तेदार   समझ में आया? आज से मैं ही तुम्हारी माँ हूँ और मैं ही तुम्हारा बाप   बस, मैंने सब कुछ कह दिया।"

इल्या ने आँख बचाकर दुकान पर नज़र डाली। बड़े-बड़े टोकरों में बड़ी-बड़ी शीट और स्टर्जन मछलियाँ बर्फ़ पर रखी थीं, अल्मारियों के पटरों पर सूखी हुई पाइक और कार्प मछलियाँ रखी थीं और हर तरफ़ चमकदार डिब्बे दिखाई दे रहे थे। दुकान ठसाठस-भरी थी; उसमें घुटन थी और मछली के खारे पानी की बू बसी हुई थी। फर्श पर बड़े-बड़े पीपों में ज़िन्दा मछलियाँ   स्टर्जन, बुर्बोट, पर्च और कार्प   तैर रही थीं। एक छोटी पाइक मछली बड़ी ढिठाई से दूसरी मछलियों से टकराकर अपनी दुम से छपछप करते हुए और पानी फर्श पर बिखेरते हुए इधर-उधर तेज़ी से तैर रही थी। इल्या को उस पर बड़ा तरस आ रहा था।

दुकान के एक कारिन्दे ने   जो एक छोटे क़द का मोटा-सा गोल-गोल आँखों वाला आदमी था, जिसकी नाक आगे से मुड़ी हुई कंटिया जैसी थी और जो बिल्कुल उल्लू की शक्ल का लगता था   इल्या से पीपों में से मरी हुई मछलियाँ निकाल देने को कहा। लड़के ने अपनी आस्तीने चढ़ायीं और अन्धाधुन्ध उन पर झपटने लगा।

"सिर की तरफ़ से पकड़, बेवकू   फ़!" कारिन्दे ने दबी आवाज़ में कहा।

कभी-कभी इल्या ग़लती से कोई ठहरी हुई ज़िन्दा मछली पकड़ लेता था, जो उसकी उँगलियों में से फिसल जाती थी और छटपटाकर पीपे की दीवार पर अपना सिर पटकने लगती थी।

एक बार मछली का पंख इल्या की उंगली में चुभ गया और वह अपने घाव को चूसने लगा।

"उंगली मुँह के बाहर निकाल!" मालिक ने गरजकर कहा। उसके बाद इल्या को एक बड़ा-सा कुल्हाड़ा दे दिया गया और उसे बर्फ़ तोड़ने के लिए तहख़ाने में भेज दिया गया, कि बर्फ़ को तोड़-तोड़कर ऐसा चूर-चूर कर दे कि वह पीपों में ठूँस-ठूँसकर भरी जा सके। बर्फ़ की छोटी-छोटी कंकरियाँ उछलकर उसके चेहरे पर आकर लगतीं या उसके कॉलर के अन्दर चली जातीं; तहख़ाना ठण्डा और अँधेरा था और अगर इल्या

सावधान न रहता तो कुल्हाड़ा ऊपर उठाते वक़्त वह ज़रूर छत से टकरा जाता। कुछ मिनट काम करने के बाद वह पसीने में नहाया हुआ सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आ गया।

"मुझसे एक मर्तबान टूट गया है," उसने मालिक से कहा।

स्त्रोगानी एक क्षण उसे चुपचाप देखता रहा, फिर बोला :

"इस बार मैं तुम्हें माफ़ किये देता हूँ। इसलिए माफ़ किये देता हूँ कि तुमने ख़ुद बता दिया। लेकिन अगली बार तुम्हारे कान ऐंठूँगा।"

इल्या का घटनाहीन जीवन घूम-फिरकर एक नीरस चक्कर में चलता रहा, वैसे ही घटनाहीन ढंग से जैसे कोई पेंच किसी बड़ी-सी शोर करने वाली मशीन में घूमता रहता है। वह सवेरे पाँच बजे उठता, सारे घर के जूतों पर पालिश करता, जिनमें उसके मालिक के परिवार वालों और दुकान के कारिन्दों सभी के जूते शामिल रहते थे। इसके बाद वह दुकान में जाता, फर्श पर झाड़ू लगाता और मेज़ों और तराज़ुओं को धोता। जब दुकान खुलती तो वह ग्राहकों की सेवा में लग जाता और उनका माल उनकी गाड़ियों तक पहुँचाता। दोपहर को वह खाना खाने घर जाता। खाना खाने के बाद उसके पास करने को कुछ न होता, इसलिए अगर उसे किसी काम से कहीं भेजा न जाता तो वह दरवाज़े पर खड़ा बाज़ार की चहल-पहल देखता रहता और सोचता रहता कि इस दुनिया में कितने बहुत-से लोग थे और वे कितनी मछलियाँ कितना माँस और कितनी सब्जियाँ खा जाते थे।

"मिखाईल इग्नात्यिच!" एक बार उसने उल्लू की सूरत वाले कारिन्दे से कहा।

"क्या बात है?"

"जब लोग सारी मछलियाँ पकड़ लेंगे और सारे मवेशी मार डालेंगे तब वे खायेंगे क्या?"

"बुद्धू!" कारिन्दे ने जवाब दिया।

दूसरी बार उसने काउण्टर पर पड़ा हुआ एक अख़बार उठा लिया और दरवाज़े पर खड़ा होकर उसे पढ़ने लगा। कारिन्दे ने अख़बार उसके हाथ से छीन लिया और उसकी नाक पर टहोका दिया।

"किसने इजाज़त दी तुझे?" उसने धमकाते हुए पूछा। "गधा!"

इल्या इस कारिन्दे से दिली नफ़रत करता था। मालिक से बात करते वक़्त वह उसके सामने बहुत झुक-झुककर बातें करता था लेकिन पीठ पीछे उसे धोखेबाज और लाल बालों वाला शैतान कहता था। हर सनीचर को और हर छुट्टी से पहले वाले दिन मालिक गिरजाघर में प्रार्थना करने जाता था, और तब इस कारिन्दे की बीवी या उसकी बहन दुकान में आती थी और वह उन्हें घर ले जाने के लिए ताजा और डिब्बों में बन्द मछलियाँ और मछलियों के अण्डे बण्डल के बण्डल बाँधकर देता था। उसे भिखारियों

को दुतकारने में बहुत मज़ा आता था, जिनमें से बहुत-से बूढ़े होते थे और उन्हें देखकर इल्या को दादा येरेमेई की याद आती थी। जब कभी कोई बूढ़ा दरवाज़े पर आकर खड़ा हो जाता और सिर झुकाकर भीख माँगता तो यह कारिन्दा एक छोटी-सी मछली सिर पकड़कर उठाता और भिखारी के फैले हुए हाथ पर उसकी पूँछ इतने ज़ोर से दे मारता कि मछली के पंख के काँटे उसकी हथेली में चुभ जाते। जब भिखारी पीड़ा से तिलमिलाकर अपना हाथ पीछे खींच लेता तो यह कारिन्दा बड़ी क्रूरता से उसे चिढ़ाते हुए चिल्लाकर कहता :

"नहीं चाहिए? काफ़ी नहीं है तेरे लिए? भाग जा!"

एक दिन एक बुढ़िया भिखारिन ने एक सूखी हुई पाइक मछली उठाकर अपने चीथड़ों में छिपा ली; कारिन्दे ने उसे देख लिया; उसने उसकी गर्दन पकड़ ली, मछली उससे छीन ली और बायें हाथ से उसका सिर नीचे झुकाकर दाहिने हाथ से उसके एक घूँसा जड़ दिया। वह न चिल्लायी, न उसने कुछ कहा; बस, सिर झुकाये चुपचाप वहाँ से चली गयी और इल्या ने उसकी नाक से गहरे रंग के ख़ून की दो धाराएँ बहती हुई देखीं।

"जो चाहती थी वह मिल गया!" कारिन्दे ने भिखारिन के पीछे से चिल्लाकर कहा।

और दूसरे कारिन्दे कार्प से बोला :

"मैं भिखारियों को बर्दाश्त नहीं कर सकता! दूसरों के बल पर जीते हैं, बस और कुछ नहीं! भीख माँगते फिरते हैं और ऊपर तक पेट भरा होता है। चैन की ज़िन्दगी बसर करते हैं... लोग कहते हैं कि वे ईसा मसीह के छोटे भाई होते हैं। तो मैं पूछता हूँ कि मैं ईसा मसीह का क्या लगता हूँ कोई नहीं? ज़िन्दगी-भर मैं धूप में कीड़े की तरह बिलबिलाता रहा हूँ, और उसके बदले मुझे क्या मिला है? न आराम, न चैन, न इज़्ज़त।"

दूसरा कारिन्दा कार्प बहुत धर्मात्मा आदमी था। वह हमेशा गिरजाघर की, वहाँ वन्दना गाने वालों की और पादरी के प्रवचन की बातें करता रहता था, और हर सनीचर को उसे यह डर लगा रहता था कि कहीं उसे गिरजाघर पहुँचने में देर न हो जाये। उसे हाथ की सफाई में भी बड़ी दिलचस्पी थी और जब भी कोई "जादूगर" शहर में आता था तो वह उसका तमाशा देखने ज़रूर जाता था... कार्प लम्बा, दुबला और बहुत चतुर था; जब दुकान में गाहकों की भीड़ होती थी तो वह उनके बीच से साँप की तरह रेंगता हुआ भाग-दौड़ करता रहता था, हर एक की तरफ़ देखकर मुस्कराता था और सबसे बातें करता था और बीच-बीच में मालिक के लम्बे-चौड़े डीलडौल पर भी एक नज़र डाल लेता था; मानो अपने व्यापार के गुणों के लिए उसकी प्रशंसा प्राप्त करना चाहता

हो। वह इल्या को बड़े तिरस्कार और उपहास से देखता था, और वह भी उसे पसन्द नहीं करता था। लेकिन इल्या मालिक को बहुत पसन्द करता था। सवेरे से रात तक स्त्रोगानी गल्ले पर खड़ा उसमें पैसा डालता रहता था। इल्या देखता था कि वह यह काम बिना किसी लालच के बड़े शान्त भाव से करता था, और इस बात से इल्या बहुत ख़ुश होता था। उसे यह देखकर भी ख़ुशी होती थी कि स्त्रोगानी दूसरे कारिन्दों की अपेक्षा उससे ज़्यादा बातें करता था और ज़्यादा स्नेह से बोलता था। कभी-कभी उस वक़्त जब व्यापार कुछ मन्दा होता था और इल्या मुँह लटकाये दरवाज़े पर उदास खड़ा होता था तो स्त्रोगानी पुकारकर उससे कहता था :

"ऐ इल्या, सो गया क्या?"

"नहीं तो..."

"हर वक़्त इतना गम्भीर क्यों रहता है?"

"मालूम नहीं..."

"ऊब गया है?"

"कुछ-कुछ।"

"कोई बात नहीं है। अपने जमाने में मैं भी ऊब जाता था। नौ बरस की उम्र से बत्तीस बरस की उम्र तक दूसरों के लिए काम करते-करते... ऊब जाता था... लेकिन पिछले तेईस साल से मैं दूसरे लोगों को ऊबते देखता रहता हूँ।" और वह अपना सिर इस तरह हिलाता था मानो कह रहा हो कि कोई चारा नहीं है ऐसा तो होता ही रहता है।

जब स्त्रोगानी ने दो-तीन बार इल्या से इस तरह की बातें कीं तो इल्या के मन में यह प्रश्न उठा कि इतना धनी-मानी आदमी अपना सारा वक़्त नमक-लगी मछली की तेज़ बदबू से भरी हुई उस गन्दी दुकान में क्यों बिताता है जबकि उसके पास रहने को इतना बड़ा साफ़-सुथरा मकान है? वह अजीब घर था : बहुत कठोर और निःशब्द और सारा जीवन एक अटल व्यवस्था के अधीन। हालाँकि उसकी दो मंजिलों पर मालिक, उसकी बीवी, उसकी तीन बेटियों, एक खाना पकाने वाली, एक नौकरानी और एक चौकीदार के अलावा, जो कोचवान का भी काम करता था, कोई और नहीं रहता था, फिर भी वहाँ हर वक़्त दम घुटता था। उस घर में रहने वाले सभी लोग बहुत धीमी आवाज़ में बोलते थे और जब वे उसके बड़े-से साफ़-सुथरे अहाते में से होकर गुजरते थे तो चारदीवारी से सटकर चलते थे, मानो डरते हों कि कहीं कोई उन्हें खुले में देख न ले। इस आलीशान और शान्त मकान की तुलना पेत्रूख़ा के मकान से करने पर इल्या को खुद अपने इस फ़ैसले पर ताज्जुब हुआ कि पेत्रूख़ा का मकान उसे ज़्यादा अच्छा लगता था, हालाँकि वह गन्दा था और उससे ग़रीबी टपकती थी और वहाँ शोर बहुत

होता था। लड़के का बहुत जी चाहता था कि वह उस व्यापारी से पूछे कि वह अपना सारा वक़्त बाज़ार के शोरगुल और हंगामें में क्यों बिताता था जबकि वह अपने घर के शान्त वातावरण में चैन से रह सकता था।

एक बार जब कार्प कहीं बाहर गया हुआ था और मिखाईल खैरातखाने को देने के लिए सड़ी-गली मछलियाँ चुनने नीचे तहख़ाने में गया हुआ था, स्त्रोगानी इल्या से बातें करने लगा, और तब लड़के ने उससे पूछा :

“आप इस दुकान को छोड़ क्यों नहीं देते, किरील इवानोविच? आपके पास इतना पैसा है और रहने को इतना अच्छा घर है... आप इस बेरंग बदबूदार जगह और उदास वातावरण में क्यों रहते हैं?”

स्त्रोगानी की लाल भवें फड़कने लगीं; वह गल्ले पर टिककर लड़के को नज़रें गड़ाकर घूरने लगा।

“तो?” इल्या के अपनी बात पूरी कर लेने पर उसने कहा। “तुम जो कुछ कहना चाहते थे वह कह चुके?”

“जी हाँ...” लड़के ने घबराकर कहा।

“इधर आओ!”

इल्या उसके पास चला गया। व्यापारी ने उसकी ठोड़ी पकड़कर उसका सिर पीछे की ओर झुका दिया, और आँखें सिकोड़कर उसे देखने लगा।

“यह बात कहने को किसी ने तुमसे कहा था या यह बात खुद तुमने सोची है?”

“मैंने ख़ुद, सचमुच...”

“अच्छी बात है, अगर तुम सच कह रहे हो! लेकिन मुझे तुमसे बस इतना कहना है : फिर कभी मुझसे अपने मालिक से, समझ गये न इस तरह की बात कहने की हिम्मत न करना! याद रखना! अब जाओ अपनी जगह...”

और जब कार्प वापस आया तो मालिक ने बिना किसी ख़ास वजह के उससे कहा, और हालाँकि वह सम्बोधित उसे कर रहा था लेकिन कनखियों से इल्या की ओर देख रहा था :

“आदमी को मरते दम तक कुछ न कुछ करते रहना चाहिए! बेवकू फ़ होता है जो यह बात भी नहीं समझता। काम किये बिना कोई आदमी ज़िन्दा नहीं रह सकता। अगर वह किसी काम में लगा न रहे तो उसकी कोई साख नहीं रह जाती।”

“बिल्कुल ठीक बात है, किरील इवानोविच,” कारिन्दे ने कहा और फ़ौरन चिन्तित होकर दुकान में चारों ओर नज़र दौड़ाकर देखा कि कोई काम दिखायी दे जिसमें वह जुट जाये। स्त्रोगानी को एकटक देखते हुए इल्या विचारों में डूब गया। इन लोगों के साथ ज़िन्दगी दिन-ब-दिन ज़्यादा नीरस होती जा रही थी। एक के बाद दूसरा

दिन इस तरह खिंचता हुआ बीत रहा था जैसे किसी अदृश्य गोले में से लम्बे-लम्बे सुरमई धागे खुलकर निकलते आ रहे हों, और लड़के को ऐसा लगने लगा कि इन दिनों का कभी अन्त नहीं होगा, कि जब तक वह ज़िन्दा रहेगा तब तक वह इसी तरह दरवाज़े पर खड़ा-खड़ा बाज़ार की चहल-पहल का शोर सुनता रहेगा। लेकिन उसका दिमाग़, जो उन सब बातों से, जो उसने पढ़ी थीं और देखी थीं, उद्दीप्त हो चुका था, उसके जीवन की एकरसता से निःसंज्ञ नहीं हुआ; वह लगातार काम करता रहा। कभी-कभी इस गम्भीर शान्त बच्चे के लिए अपने चारों ओर के लोगों को देखते रहना इतना असह्य हो जाता कि उसका जी चाहता कि वह अपनी आँखें मूँद ले और कहीं दूर पहुँच जाये   उन जगहों से भी दूर जहाँ तक पावेल ग्राचोव अपने घुमक्कड़ जीवन में पहुँच पाया था; बहुत दूर चला जाये और फिर कभी इस नीरस उकताहट और समझ में न आने वाले इस कोलाहल के बीच लौटकर न आये।

हर त्योहार के दिन उसे गिरजाघर भेजा जाता था। हमेशा घर लौटने पर उसे ऐसा लगता जैसे उसकी आत्मा को हल्के गरम और सुगंधित जल से धोया गया हो। छह महीनों में केवल दो बार उसे अपने चाचा से मिलने की इजाज़त दी गयी थी। वहाँ उसे हर चीज़ कमोबेश हमेशा जैसी ही लगी। कुबड़ा दुबला होता जा रहा था, पेत्रूख़ा पहले से ज़्यादा ज़ोर से सीटी बजाने लगा था और उसका चेहरा गुलाबी से लाल होता जा रहा था। याकोव शिकायत करता था कि उसका बाप उसे चैन नहीं लेने देता था।

“वह हमेशा डाँटते-फटकारते हैं : ‘कारोबार में लग जाओ, मुझे अपने घर में किताबी कीड़े नहीं चाहिए।’ लेकिन अगर मैं काउण्टर के पीछे खड़े रहना बर्दाश्त नहीं कर सकता तो क्या यह मेरा क़सूर है? शोर-गुल, चीख़-पुकार   आदमी यह भी नहीं सुन सकता कि वह खुद क्या कह रहा है!... मैंने उनसे कहा कि मुझे देव-प्रतिमाओं की किसी दुकान में नौकरी दिलवा दें   वहाँ गाहक कम होते हैं और मुझे देव-प्रतिमाओं से बड़ा लगाव है...”

याकोव उदास होकर पलकें झपका रहा था और उसके माथे की खाल जाने क्यों पीली पड़ गयी थी और उसी तरह चमकने लगी थी जैसे उसके बाप की गंजी चाँद चमकती थी।

“अब भी किताबें पढ़ते हो?” इल्या ने पूछा।

“बिल्कुल पढ़ता हूँ। ज़िन्दगी में वही तो एक मज़ा रह गया है... किताब पढ़ते वक़्त ऐसा लगता है कि जैसे किसी दूसरी दुनिया में पहुँच गये हों और जब किताब ख़त्म हो जाती है तो ऐसा लगता है जैसे अचानक आसमान से नीचे गिर पड़े हों...”

इल्या ने अपने दोस्त की ओर देखकर कहा :

“कितने बूढ़े लगने लगे हो... माशा कहाँ है?”

“भीख माँगने खैरातख़ाने गयी है। अब मैं उसे बहुत मदद नहीं दे पाता बाप मेरे ऊपर कड़ी नज़र रखते हैं... पेर्फ़ीश्का हमेशा बीमार रहता है... इसलिए माशा खैरातख़ाने जाने लगी है। वहाँ वे लोग उसे सूप वग़ैरह दे देते हैं... मुटल्ली भी उसकी मदद करती है... माशा को बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ रहा है...”

“मैं देखता हूँ कि तुम लोगों की ज़िन्दगी भी काफ़ी नीरस क़िस्म की है,” इल्या ने विचारमग्न होकर कहा।

“क्या तुम्हारी ज़िन्दगी भी बहुत नीरस है?”

“बिल्कुल नीरस। तुम्हारे पास कम से कम किताबें तो हैं... हमारे यहाँ जो अकेली किताब है वह है ‘बाजीगरी के सबसे नये तमाशे और हाथ की सफाई’। एक कारिन्दा उसे अपने सन्दूक़ में ताला लगाकर रखता है। मुझे यह किताब पढ़ने का मौक़ा कभी नहीं मिलेगा वह मुझे देता ही नहीं, कंजूस-मक्खीचूस। ज़िन्दगी तुम्हारे साथ और मेरे साथ बेहूदा मज़ाक़ करती रहती है, याकोव।”

“सो तो करती है, भाई।”

वे थोड़ी देर तक और बातें करते रहे और एक-दूसरे से विदा हुए तो दोनों निराशा में डूबे हुए थे।

अगले कुछ हफ़्ते किसी परिवर्तन के बिना बीत गये, और फिर अचानक इल्या का भाग्य उस पर तरस खाकर मुस्कराया, हालाँकि बड़ी क्रूर थी यह मुस्कराहट। एक दिन सवेरे जब कारोबार तेज़ी पर था, मालिक घबराया हुआ गल्ले की मेज़ पर रखी हुई चीज़ें जल्दी-जल्दी उलट-पुलटकर देखने लगा। उसका चेहरा लाल हो गया और उसकी गर्दन की नसें फूल गयीं।

“इल्या!” उसने पुकारकर कहा। “फर्श पर देखो तो, कहीं दस रूबल का नोट तो नहीं पड़ा है?”

इल्या ने मालिक की ओर देखा, फिर अपनी तीर जैसी तेज़ नज़र फर्श पर दौड़ायी।

“नहीं तो,” उसने शान्त भाव से कहा।

“मैं कहता हूँ अच्छी तरह देखो!” स्त्रोगानी ने अपनी कड़कती हुई आवाज़ में गरजकर कहा।

“देखा मैंने...”

“तुझे अभी दिखाता हूँ, ज़िद्दी बदमाश!” मालिक ने धमकाते हुए कहा।

और जब सारे गाहक दुकान से चले गये तो उसने इल्या को अपने पास बुलाया, अपनी मोटी-मोटी मज़बूत उँगलियों से उसका कान पकड़ा और उसे झँझोड़ने लगा।

"जब तुझसे देखने को कहा जाये, तो देखा कर! जब तुझसे देखने को कहा जाये, तो देखा कर!" वह अपनी गरजती आवाज़ में दोहराता रहा।

इल्या ने अपने दोनों हाथ उसकी तोंद पर रख दिये और ज़ोर लगाकर अपने आपको छुड़ा लिया।

"मुझे झँझोड़ क्यों रहे हैं?" वह झुँझलाकर चिल्लाया, उसका सारा बदन पीड़ा से काँप रहा था। "पैसा मिखाईल इग्नात्यिच ने चुराया है... वह उसकी वास्कट की बायीं जेब में है।"

कारिन्दे का उल्लू जैसा चेहरा पहले तो आश्चर्य से नीचे लटक गया, फिर झटके के साथ फड़क उठा और अचानक उसने इल्या के सिर पर इतने ज़ोर से अपना दाहिना हाथ मारा कि लड़का ज़मीन पर गिर पड़ा और पेट के बल रेंगता हुआ दुकान के कोने में जा पहुँचा; उसके गालों पर आँसू बह रहे थे।

"ठहर! चला कहाँ!" व्यापारी की आवाज़ ऐसे सुनायी दी जैसे वह सपने में बोल रहा हो। "पैसा इधर ला!"

"वह झूठ बोलता है..." मिखाईल ने महीन आवाज़ में कहा।

"यह बट्टा अभी तेरे सिर पर लगेगा!"

"यह मेरा पैसा है, किरील इवानोविच! क़सम खाकर कहता हूँ!"

"चुप रह!"

हर तरफ़ ख़ामोशी छा गयी। मालिक अपने दफ़्तर में चला गया और थोड़ी ही देर बाद उन्हें गिनतारे पर गोलियाँ खड़कने की आवाज़ सुनायी दी। इल्या अपना सिर दोनों हाथों में थामे फर्श पर बैठा था और मिखाईल को नफ़रत से घूर रहा था; वह भी सामने वाले कोने में खड़ा उसे ग़ुस्सैल आँखों से घूर रहा था।

"क्यों, बदमाश, मज़ा मिल गया?" उसने धीमे स्वर में दाँत निकालकर पूछा।

इल्या ने अपने कन्धे झुका लिए और कुछ नहीं बोला।

"पूरा मज़ा तो तब आयेगा जब अभी एक और दूँगा!"

और वह अपनी गोल-गोल दुष्टता-भरी आँखें इल्या के चेहरे पर जमाये हुए किसी उतावली के बिना उसकी ओर बढ़ा। इल्या उछलकर खड़ा हो गया और उसने काउण्टर पर पड़ा हुआ पतला-सा लम्बा चाकू किसी संकोच के बिना उठा लिया।

"आ जाओ!" वह बोला।

मिखाईल रुक गया और हाथ में चाकू लिए हुए मज़बूत गठीले शरीर वाले उस लड़के के सिर से पाँव तक नज़र दौड़ाकर उसकी थाह लेता रहा।

"हुँह, क़ैदी की औलाद!..." उसने तिरस्कार से कहा।

"आ जाओ, आ जाओ!" लड़के ने एक क़दम उसकी ओर बढ़ते हुए दोहराया।

उसकी आँखों के सामने हर चीज़ नाच रही थी और उछल रही थी पर उसे इस बात का आभास हो रहा था कि कोई अदम्य शक्ति उसके अन्दर उभर रही थी और उसे आगे बढ़ने के लिए उकसा रही थी।

"चाकू फेंक दो," स्त्रोगानी की आवाज़ सुनायी दी।

इल्या चौंक पड़ा, उसकी लाल दाढ़ी और तमतमाये हुए चेहरे को एक नज़र देखा, लेकिन अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ।

"चाकू रख दो, मैं कहता हूँ," मालिक ने ज़्यादा नरमी से कहा।

इल्या ने चाकू काउण्टर पर रख दिया और ज़ोर-ज़ोर से रोता हुआ फिर फर्श पर बैठ गया। उसका सिर चकरा रहा था, कान दुख रहा था और सीने पर एक बोझ-सा था जिसकी वजह से उसके लिए साँस लेना भी मुश्किल हो रहा था। वह बोझ ऊपर चढ़कर उसके गले में आकर ऐसा अटक गया था कि उसके लिए बोलना नामुमकिन हो गया था। उसे मालिक की आवाज़ मानो कहीं दूर से सुनायी दी :

"यह रही तुम्हारी तनख्वाह; तुम नौकरी से अलग किये जाते हो, मिखाईल।"

"लेकिन..."

"चले जाओ, या मैं पुलिस को बुलवाऊँ.."

"अच्छी बात है, मैं तो चला जाऊँगा, लेकिन इस छोकरे पर कड़ी नज़र रखिएगा   और चाकू पर भी   ही-ही!"

"निकल जाओ यहाँ से!"

एक बार फिर दुकान में ख़ामोशी छा गयी। इल्या एक अरुचिकर सम्वेदना से काँप उठा कि जैसे कोई चीज़ उसके चेहरे पर रेंग रही हो। उसने अपने गाल पर हाथ फेरकर आँसू पोंछ डाले और देखा कि गल्ले के पीछे से मालिक उसे तीखी नज़रों से घूर रहा था। तभी वह उठा और लड़खड़ाता हुआ दरवाज़े के पास अपनी जगह वापस चला गया।

"ठहरो, सुनो," स्त्रोगानी ने कहा। "क्या तुम सचमुच उसे चाकू मार देते?"

"मार देता!" लड़के ने धीमे, लेकिन दृढ़ स्वर में कहा।

"हुँह... तुम्हारा बाप काहे के लिए पकड़ा गया था? क़त्ल के लिए?"

"आग लगाने के लिए..."

"वह भी कोई बुरी बात नहीं थी।"

कार्प लौटकर अन्दर आया, चुपचाप दरवाज़े के पास स्टूल पर बैठ गया और सड़क की ओर नज़रें जमाये देखता रहा।

"कार्प!" स्त्रोगानी ने हँसी से कहा, "मैंने मिखाईल की छुट्टी कर दी है।"

“आपको हक़ है, किरील इवानोविच!”

“चोरी करने लगा था वह, है न?”

“चिः चिः! सच?” कार्प ने धीमे स्वर में और डरते हुए कहा।

हँसी से स्त्रोगानी की लाल दाढ़ी हिलने लगी और गल्ले के पीछे खड़ा वह एक ओर से दूसरी ओर झोंके खाते हुए ठहाके मारने लगा।

“अरे, कार्प, कार्प... तू भी बड़ा बाज़ीगर है...”

अचानक उसने हँसना बन्द कर दिया, एक लम्बी साँस ली और विचारमग्न होकर रुखाई से बोला :

“इन्सान ही तो है आख़िर इन्सान ही तो है। तुम सभी जीना चाहते हो, खाना तो तुम सभी को चाहिए। यह बताओ, इल्या, क्या तुम्हें यह बात बहुत दिन से मालूम थी कि मिखाईल चोरी करता है?”

“हाँ...”

“तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? उससे डरते थे न?”

“नहीं, मैं डरता नहीं था...”

“मतलब यह कि इस बार तुमने मुझे बस इसलिए बता दिया कि तुम्हें ग़ुस्सा आ गया था?”

“हाँ,” इल्या ने निश्चयपूर्वक कहा।

“तो ऐसे हो तुम!” मालिक ने हैरत से कहा। कुछ देर तक वह खड़ा अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता रहा और एक शब्द भी कहे बिना इल्या को घूरता रहा।

“और तुम ख़ुद, इल्या तुम चोरी करते हो?”

“नहीं...”

“मुझे तुम्हारा विश्वास है। तुम चोरी नहीं करते और कार्प के बारे में वही कार्प क्या ख़्याल है? वह चोरी करता है?”

“करता है।” लड़के ने पुष्टि की।

कार्प एक क्षण तक आश्चर्य से लड़के की ओर देखकर आँखें झपकाता रहा और फिर उसने मुँह फेर लिया। मालिक की भवें तन गयीं और वह भी अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरने लगा। इल्या को इस बात का आभास था कि कोई असाधारण बात होने वाली है और वह बड़ी उत्सुकता से यह देखने की प्रतीक्षा कर रहा था कि यह मामला ख़त्म कैसे होता है। बदबूदार हवा में मक्खियाँ भिनभिना रही थीं और ज़िन्दा मछलियाँ पीपों में उछल-कूद मचा रही थीं।

“कार्प!” मालिक ने दुकान के नौकर से कहा, जो निश्चल बैठा सड़क की ओर घूर रहा था।

"हुकुम, मालिक?" कार्प ने जल्दी से मालिक के पास आकर अपनी ख़ुशामद-भरी आँखों से उसके चेहरे की ओर देखते हुए कहा।

"इसने जो कुछ कहा वह सुना तुमने?" स्त्रोगानी ने थोड़ा-सा हँसकर पूछा।

"जी हाँ।"

"तो?"

"मैं क्या कह सकता हूँ," कार्प ने कन्धे बिचकाते हुए कहा।

"क्या मतलब तुम्हारा, 'मैं क्या कह सकता हूँ'?"

"यही बात है, किरील इवानोविच। मैं तो ऐसा आदमी हूँ जो अपनी हैसियत जानता है, किरील इवानोविच, इसलिए मैं लौण्डे के मुँह लगकर अपने आपको गिराना नहीं चाहता। आप ख़ुद देख सकते हैं, किरील इवानोविच, यह लड़का बिल्कुल बुद्धू है कुछ भी समझ नहीं पाता। यह है ही ऐसा..."

"बात बदलने की कोशिश न करो! जो कुछ इसने कहा क्या वह सच है?"

"सच क्या होता है, किरील इवानोविच?" कार्प ने एक बार फिर अपने कन्धे बिचकाकर और अपना सिर एक ओर को झुकाकर कहा। "ज़ाहिर है, अगर आप चाहें तो इसकी बात को सच मान सकते हैं आपको अख़्तियार है!..."

कार्प ने आह भरी और ऐसा जताया जैसे उसके दिल को बहुत ठेस लगी हो।

"ठीक है, यहाँ की हर चीज़ पर मेरा अख़्तियार है..." मालिक ने सहमति प्रकट की। "तो तुम समझते हो कि लड़का नासमझ है, क्यों?"

"एकदम नासमझ।" पूरे विश्वास के साथ कार्प ने कहा।

"लगता है, तुम सच नहीं कह रहे हो..." स्त्रोगानी ने गोलमोल तरीक़े से कहा। अचानक वह ठहाका मार हँस पड़ा। "सोचो तो कि उसने यह बात बतायी कैसे सीधे तुम्हारे मुँह पर फेंककर मारी, ही-ही! 'कार्प चोरी करता है?' 'करता है।' ही-ही!"

मालिक की हँसी सुनकर इल्या का हृदय प्रतिशोध के उल्लास से भर उठा; उसने मन ही मन ख़ुश होते हुए कार्प की ओर और कृतज्ञता के भाव से स्त्रोगानी की ओर देखा। कार्प मालिक के जवाब में ख़ुद हँसने लगा।

"हि-हि-हि!" वह बड़ी सतर्कता से आवाज़ भींचकर चिचियाया।

पर स्त्रोगानी ने उसकी महीन आवाज़ सुनकर रुखाई से कहा :

"दुकान बन्द कर दो!"

जब इल्या घर जा रहा था तो कार्प ने अपना सिर हिलाते हुए उससे कहा :

"अरे, तुम भी निरे बेवकूफ़ हो! बिल्कुल घामड़! तुमने आख़िर ऐसा किया क्यों? तुम समझते हो कि मालिक को ख़ुश करने और उसे पसन्द आने का यह तरीक़ा है! बुद्धू कहीं के! तुम समझते हो कि उन्हें मालूम नहीं है कि मिखाईल और मैं चोरी करते

रहे हैं। उन्होंने भी इसी तरह शुरू किया था... जहाँ तक मिखाईल के निकाले जाने का सवाल है तो मैं उसके लिए दिल से तुम्हारा उपकार मानता हूँ। लेकिन जो कुछ तुमने मेरे बारे में कहा है उसके लिए मैं तुम्हें कभी माफ़ नहीं करूँगा। नादानी की ढिठाई बस और कुछ नहीं! मेरे ही मुँह पर मेरे बारे में ऐसी बात कहना! अरे नहीं, मैं अच्छी तरह कभी ख़बर लूँगा तुम्हारी! इससे पता चलता है कि तुम मेरी बिल्कुल इज़्ज़त नहीं करते..."

इल्या सिटपिटा गया। वह जानता था कि कार्प बहुत नाराज़ था; पर उसके विचार में उसे अपना ग़ुस्सा बिल्कुल ही दूसरे तरीक़े से निकालना चाहिए था। इल्या को पूरा यक़ीन था कि घर जाते समय कार्प उसकी अच्छी तरह मरम्मत करेगा। इसी वजह से वह घर जाने से डर रहा था... लेकिन कार्प के शब्दों में क्रोध से अधिक व्यंग्य था, और उसकी धमकियों से इल्या बिल्कुल नहीं डरा। उस दिन शाम को मालिक ने इल्या को अपने यहाँ ऊपर बुलवाया।

"अहा!" कार्प ने ज़हर बुझे स्वर में कहा। "जाओ, तुम देखना अभी..."

इल्या ऊपर जाकर एक बड़े-से कमरे के दरवाज़े पर खड़ा हो गया जिसके बीच में एक गोल मेज़ के ऊपर बहुत भारी लैम्प लटक रहा था और मेज़ पर एक बड़ा-सा समोवार रखा था। मेज़ के चारों ओर मालिक, उसकी बीवी और उसकी तीनों बेटियाँ बैठी थीं। हर लड़की अपने से बड़ी वाली बहन के कन्धे तक आती थी और उन सबके बाल लाल रंग के थे, चेहरे लम्बे थे और उनकी फीकी पीली खाल पर जगह-जगह चित्तियाँ पड़ी हुई थीं। जब इल्या कमरे में आया तो वे एक-दूसरे से सटकर बैठ गयीं और भयभीत नीली आँखों के तीन जोड़े उसके चेहरे पर जम गये।

"यही है वह," स्त्रोगानी ने कहा।

"देखो, सूरमा आया है!" उसकी बीवी ने सहमकर ऊँचे स्वर में कहा और इल्या को ऐसे देखने लगी जैसे उसने उसे पहले कभी न देखा हो। स्त्रोगानी धीरे से हँसा, दाढ़ी पर हाथ फेरा और उँगलियों से मेज़ पर तबला बजाने लगा।

"तो इल्या," उसने बड़े रौब से कहना शुरू किया, "मैंने तुम्हें यह कहने के लिए बुलाया है कि अब मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है; मतलब यह कि तुम अपना ताम-झाम समेटो और चलते बनो।"

इल्या चौंक पड़ा और उसका मुँह खुला का खुला रह गया; फिर वह पीछे मुड़ा और दरवाज़े की ओर चल दिया।

"ठहरो!" व्यापारी ने अपना हाथ इल्या की ओर बढ़ाकर कहा। "ठहरो," उसने अपना हाथ मेज़ पर मारकर पहले से धीमी आवाज़ में दोहराया। "सिर्फ़ इतना ही बताने के लिए मैंने तुम्हें यहाँ नहीं बुलाया था।" वह उंगली उठाकर गरिमा के साथ धीरे-धीरे

बोल रहा था।

"अरे, नहीं! मैं तुम्हें एक नसीहत देना चाहता हूँ। मैं तुम्हें समझाना चाहता हूँ कि अब तुम क्यों मेरे लिए किसी काम के नहीं रहे। तुमने मुझे कोई नुक़सान नहीं पहुँचाया है   तुम पढ़े-लिखे लड़के हो, तुम आलसी भी नहीं हो, और तुम ईमानदार हो और हट्टे-कट्टे हो... तुम्हारे हाथ में ये सब तुरुप के पत्ते हैं। लेकिन इन तुरुप के पत्तों के साथ भी मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। तुम यहाँ खपते नहीं... क्यों नहीं   यही तो सवाल है।"

इल्या की समझ में कुछ नहीं आ रहा था : एक तरफ़ तो मालिक उसकी तारीफ़ कर रहा था और साथ ही वह उसे अपने यहाँ से निकाले भी दे रहा था। वह इन दोनों बातों का मेल नहीं बिठा पा रहा था, और उसके अन्दर स्वाभिमान और क्षोभ की भावनाओं में द्वन्द्व चल रहा था। उसे लग रहा था कि मालिक को ख़ुद नहीं मालूम था कि वह क्या कह रहा था... लड़का एक क़दम आगे बढ़ा और बड़े आदर के भाव से पूछा :

"आप मुझे इसलिए निकाल रहे हैं कि मैं   उस चाकू की वजह से?"

"दुहाई है!" मालिक की बीवी डरकर चिल्लायी। "कैसा ढीठ लड़का है! मेरी तौबा!"

"यही बात है!" मालिक ने मुस्कराते हुए और इल्या की ओर उंगली से इशारा करते हुए कहा। "तुम ढीठ हो! बस इतनी बात है! तुम ढीठ हो... दुकान के छोकरे को विनयपूर्ण होना चाहिए   विनयपूर्ण और आज्ञाकारी, जैसा कि धर्मग्रन्थों में लिखा है। वह अपने मालिक के आसरे ज़िन्दा रहता है : अपने मालिक का खाना, अपने मालिक का दिमाग़, अपने मालिक की ईमानदारी... लेकिन तुम्हारे पास यह सब कुछ अपना है... मिसाल के लिए, तुम आदमी को उसके मुँह पर चोर कह देते हो! यह बुरी बात है, यह ढिठाई है... अगर तुम ईमानदार हो तो तुम्हें अपने सारे क़िस्से मुझे चुपके से बताने चाहिए। हर बात का फ़ैसला मुझे करना है   मालिक मैं हूँ!... लेकिन तुम धड़ से कह देते हो, 'चोर हो!' इतनी जल्दबाजी से काम नहीं लेना चाहिए। मुझे इससे क्या मतलब कि तीन में से एक आदमी ईमानदार है? मेरे लिए तो एक ही बात है। हमें एक ख़ास क़िस्म की कसौटी चाहिए! अगर एक ईमानदार है और नौ बदमाश हैं, तो उससे किसी का कोई भला नहीं होने का और जो ईमानदार है उसका अंजाम बुरा होगा... लेकिन अगर सात ईमानदार हैं और तीन बदमाश हैं, तो तुम्हारे पक्ष की जीत होगी। समझे? जो गिनती में ज़्यादा होते हैं वही ठीक होते हैं... ईमानदारी को तुम्हें इसी तरह देखना चाहिए..."

स्त्रोगानी ने हथेली से अपने माथे का पसीना पोंछा और कहना जारी रखा :

"और फिर वह चाकू वाली बात भी है..."

"हे भगवान!" उसकी बीवी सहमकर चीख़ी और लड़कियाँ एक-दूसरे से पहले से भी ज़्यादा सट गयीं।

"धर्मग्रन्थों में लिखा है : जो चाकू उठायेगा वह चाकू से मारा जायेगा... इसीलिए मुझे अब तुम्हारी ज़रूरत नहीं रही... यह है दो-टूक बात... यह लो आधा रूबल, और हम-तुम अदा-विदा... अपना रास्ता लो... इतना याद रखना   तुमने मुझे कोई नुक़सान नहीं पहुँचाया है, न मैंने तुम्हें... इतना ही नहीं, मैंने तो आधा रूबल तुम्हें अपनी तरफ़ से भेंट दिया है... और हालाँकि तुम लड़के हो, मैंने तुमसे बड़ी संजीदगी से बात की है, तुम्हें समझाया है कि कैसे रहना चाहिए, वग़ैरह-वग़ैरह... हो सकता है कि मुझे तुम्हारे लिए दुख भी हो, लेकिन तुम यहाँ खपते नहीं! अगर धुरे की कील उसमें ठीक से न बैठे तो उसे फेंक देने के अलावा कोई और चारा नहीं होता... इसलिए हमारा-तुम्हारा साथ ख़तम!"

अब मामला इल्या को ज़्यादा सीधा-सादा नज़र आ रहा था : उसका मालिक उसे इसलिए निकाल रहा था कि उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि कार्प को निकाल दे और दुकान में उसके पास कोई कारिन्दा न रह जाये। यह सोचकर उसका मन कुछ हल्का हुआ और वह ख़ुश हो गया; उसने सोचा कि उसका मालिक बहुत अच्छे स्वभाव का और खरा आदमी है!

"सलाम!", इल्या ने चाँदी का सिक्का कसकर अपनी मुट्ठी में पकड़ते हुए कहा। "आपका बहुत-बहुत शुक्रिया!"

"ठीक है," स्त्रोगानी ने सिर हिलाकर जवाब दिया।

"हाय, हाय! एक आँसू तक नहीं बहाया," कमरे से बाहर निकलकर इल्या ने मालिक की बीवी की झिड़की-भरी आवाज़ सुनी। जब इल्या पीठ पर गठरी लादे व्यापारी के मकान के मज़बूत फाटक से बाहर निकला तो उसे लगा कि वह एक ऐसे निर्जन देश को छोड़कर जा रहा है जिसके बारे में उसने किसी किताब में पढ़ा था। उस देश में न आदमी थे न पेड़   बस पत्थर ही पत्थर, और उन पत्थरों के बीच एक नेक जादूगर बैठा उस देश में भटककर आ जाने वाले सभी लोगों को रास्ता बताता रहता था।

वसन्त के सुहाने दिन की शाम थी। सूरज डूब रहा था और घरों की खिड़कियों में आग जैसी लग रही थी। इसे देखकर इल्या को उस दिन की याद आयी जब उसने पहले-पहल इस शहर को देखा था। पीठ पर लदी गठरी के बोझ की वजह से वह धीरे-धीरे चल रहा था। राह चलने वाले उसकी गठरी से टकरा जाते थे; गाड़ियाँ घड़घड़ाती हुई पास से निकल जाती थीं; सूरज की तिरछी किरणों में धूल के कण नाच रहे थे और तेज़ी से चक्कर काट रहे थे; हर तरफ़ चहल-पहल और शोर था और मस्ती

थी। लड़का अपने दिमाग़ में उन सब बातों के बारे में सोचता रहा जो कुछ साल इस शहर में रहने के दौरान उस पर बीती थीं, और यह सोचकर वह महसूस करने लगा कि वह बड़ा हो गया है। उसका दिल गर्व और साहस से धड़क रहा था और उसके कानों में व्यापारी के ये शब्द गूँज रहे थे :

"... तुम पढ़े-लिखे लड़के हो, तुम होनहार और हट्टे-कट्टे हो और आलसी भी नहीं हो... तुम्हारे हाथ में ये सब तुरुप के पत्ते हैं..."

इल्या ने अपने क़दम तेज़ कर दिये; वह ख़ुशी से फूल उठा और यह याद करके कि सवेरे उसे मछली वाले की दुकान पर नहीं जाना है उससे मुस्कराये बिना न रहा गया।

पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव के घर में वापस पहुँचकर इल्या ने बड़े गर्व से अनुभव किया कि मछली की दुकान में काम करने के दौरान वह सचमुच बड़ा हो गया है। हर आदमी उसकी ओर जिस तरह ध्यान दे रहा था और उसके बारे में पूछ रहा था उससे वह ख़ुशी के मारे फूला नहीं समा रहा था। पेर्फ़ीश्का ने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया।

"सलाम, कारिन्दा साहब! जी भर गया, क्यों? मैंने सुना कि तुम वहाँ कैसे हीरो साबित हुए   हि-हि! वे लोग चाहते हैं कि तुम्हारी ज़बान उनके जूते चाटे, न कि सच्चाई उनके मुँह पर फेंककर मारे..."

"अरे, तुम कितने बड़े हो गये हो!" माशा उसे देखकर ख़ुश होकर चिल्लायी।

याकोव भी बहुत ख़ुश हुआ।

"अब हम सब फिर एक साथ रहेंगे... मेरे पास एक किताब है 'द एल्बिजेंसीज'। तुमने सुनी होती! उसमें एक आदमी है   उसका नाम है साइमन मोनफोर्ट   पूरा दैत्य है!"

और याकोव घबराकर जल्दी-जल्दी इल्या को उस कहानी का सार बताने लगा। उसे देखते हुए इल्या ने बड़े सन्तोष के साथ सोचा कि उसका बड़े सिर वाला दोस्त बिल्कुल नहीं बदला है। मछली की दुकान में इल्या ने जो किया था उसमें याकोव को कोई असाधारण बात दिखाई नहीं दी।

"तुम्हें यही करना चाहिए था..." उसने सीधे-सादे ढंग से कहा।

इसके विपरीत पेत्रूख़ा अपनी आश्चर्य की भावना को न छिपा सका।

"तुमने उनको अच्छा मज़ा चखाया, बेटा!" उसने सराहना करते हुए कहा। "ज़ाहिर है किरील इवानोविच यह तो कर नहीं सकता था कि कार्प को निकाल दे और तुम्हें रख ले, कार्प कारोबार जानता है, वह बहुत काम का आदमी है। तुम ईमानदार बनना और खुलेआम विरोध करना चाहते थे... इसीलिए कार्प का पलड़ा तुमसे भारी हो गया..."

लेकिन अगले दिन तेरेन्ती अपने भतीजे को अलग ले गया और उससे चुपके से बोला :

"देखो, बहुत ज़्यादा खुलकर... मेरा मतलब है... पेत्रूख़ा से बातें न करना। उसके साथ ज़रा सावधान रहना... वह तुम्हारी निन्दा कर रहा था। 'बड़ा सन्त आया कहीं का!' वह कह रहा था।"

"और कल रात तो वह मेरी तारीफ़ कर रहा था!" इल्या हँसकर बोला।

इल्या ने अपने बारे में जो अच्छी राय बनायी थी उसमें पेत्रूख़ा के रवैये से कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह महसूस करता था कि वह हीरो है; वह जानता था कि उसकी जगह होने वाले किसी दूसरे आदमी के मुकाबले उसका आचरण बेहतर था।

दो महीने तक किसी नयी नौकरी की खोज में बेकार की बहुत दौड़-धूप करने के बाद इल्या और उसके चाचा के बीच यह बातचीत हुई :

"हाय! हाय!" कुबड़े ने बड़े उदास भाव से शब्दों को खींच-खींचकर कहा, "तुम्हारे लिए कोई काम नहीं मिला... बहुत बड़े हो गये हो, किसी को तुम्हारी ज़रूरत नहीं है... तो, अब हमारी गाड़ी कैसे चलेगी, बेटा?"

"मैं पन्द्रह साल का हूँ और पढ़ना-लिखना जानता हूँ," इल्या ने बड़ी गरिमा और विश्वास के साथ कहा। "लेकिन मैं क्या इतना ढीठ हूँ कि कोई भी नौकरी हो मैं उससे निकाल दिया जाऊँगा!"

"तो अब हमें करना क्या चाहिए?" तेरेन्ती ने चारपाई पर बैठते हुए उसकी पट्टी पकड़कर झिझकते हुए पूछा।

"सुनो, मैं कहता हूँ; मुझे लकड़ी का एक बक्सा बनवा दो और बेचने के लिए कुछ चीज़ें ख़रीदकर दे दो   साबुन, इत्र, सुई, किताब   हर तरह की चीज़ें, और मैं उन्हें घूम-घूमकर बेचा करूँगा।"

"तुम्हारी बात ठीक से मेरी समझ में नहीं आयी, इल्या,   मेरे अन्दर शराबख़ाने का शोर गूँज रहा है भड़-भड़, खट-खट! अब मुझसे साफ़-साफ़ सोचा भी नहीं जाता... और मेरे दिल और दिमाग़ में तो एक ही बात रहती है... बस एक बात... हर वक़्त..."

सचमुच कुबड़े की आँखों में मानो तनाव जमकर रह गया था, जैसे वह कोई ऐसी चीज़ें गिन रहा हो जिनका सिलसिला किसी तरह ख़त्म होने ही न आता हो।

"कोशिश तो करें। मुझे करके देखने तो दो," इल्या ने गिड़गिड़ाकर कहा; वह अपनी उस योजना की प्रेरणा से विभोर हो उठा जिसकी बदौलत उसे आजादी मिलने की उम्मीद थी।

“भगवान तुम्हारा भला करे। चलो, कोशिश करते हैं।”

“देख लेना! सब कुछ ठीक ही रहेगा!” इल्या ख़ुशी से चिल्ला पड़ा।

कुबड़े ने गहरी आह भरी।

“बस, तुम किसी तरह जल्दी से बड़े हो जाओ!” उसने बड़ी हसरत से कहा। “अगर तुम थोड़े और बड़े होते तो मैं इस जगह को छोड़ देता... तुम तो उस लंगर की तरह हो जिसने मुझे इस दलदल में बाँध रखा है... मैं संन्यासियों के बीच चला गया होता... ‘धन्य सन्तो!’ मैं उनसे कहता। ‘दयालु, रक्षा करने वाले सन्तो! मुझ अधम नीच ने घोर पाप बटोरा है!’”

कुबड़ा चुपके-चुपके रोने लगा। इल्या जानता था कि चाचा किस पाप के बारे में कह रहा था; उसे वह बात बहुत अच्छी तरह याद थी। तेरेन्ती के लिए तरस की भावना से उसका हृदय मसोस उठा; तेरेन्ती के आँसुओं की धारा और तेज़ होती गयी।

“रोओ नहीं...” इल्या ने कहा, फिर चुप होकर कुछ देर सोचा और दिलासा देते हुए इतना और जोड़ दिया, “तुम्हें क्षमा कर दिया जायेगा।”

और इस तरह इल्या ने फेरीवाले का जीवन आरम्भ किया। सवेरे से रात तक वह अपने सीने पर एक बक्सा लटकाये, नाक ऊपर उठाये और बड़े गर्व से अपने चारों ओर लोगों को घूरता हुआ शहर की सड़कों पर इधर से उधर घूमता रहता। टोपी अपने कानों तक खींचकर और अपना टेंटुआ बाहर को उभारकर वह फटी हुई आवाज़ में पुकार-पुकारकर चिल्लाता :

“साबुन ले लो! मोम ले लो! पिन ले लो! बालों के क्लिप ले लो! सुई-धागा ले लो!”

उसके चारों ओर की चहल-पहल की ज़िन्दगी एक चमकदार और तेज़ी से बहती हुई धारा की तरह थी जिसमें वह बिना किसी रोक-टोक के और आसानी से तैरता रहता था। बाज़ारों में घूमता-फिरता वह कभी किसी शराबख़ाने में जाकर अपने लिए दो गिलास चाय और गेहूँ की रोटी माँगता जिसे वह ऐसे आदमी की गरिमा के साथ धीरे-धीरे खाता जो अपनी हैसियत पहचानता हो। ज़िन्दगी उसे सीधी-सादी, आसान और खुशियों से भरी हुई लगती थी। और उसके सपने स्पष्ट और सुलझे हुए हो गये थे। वह कल्पना करता कि कुछ ही बरसों में किसी इज़्ज़तदार शान्त सड़क पर उसकी अपनी एक छोटी-सी साफ़-सुथरी दुकान होगी। उसकी दुकान में बिसातख़ाने का ऐसा साफ़-सुथरा माल होगा जिससे हाथ गन्दे न हों और कपड़े खराब न हों। वह ख़ुद भी साफ़-सुथरा और तनदुरुस्त और ख़ूबसूरत हो जायेगा। पड़ोसी उसकी इज़्ज़त करेंगे और लड़कियाँ उसे स्नेह-भरी नज़रों से देखा करेंगी। शाम को दुकान बन्द हो जाने के बाद वह एक साफ़-सुथरे रोशन कमरे में बैठकर चाय पिया करेगा

और किताबें पढ़ा करेगा। हर चीज़ में सफाई को वह इज़्ज़त की ज़िन्दगी का मुख्य और अनिवार्य लक्षण मानता था। जब लोग उसके साथ अच्छा व्यवहार करते थे और उसकी भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाते थे तब वह यह सपना देखा करता था; जब से उसने अपना यह स्वतन्त्र जीवन आरम्भ किया था तब से ज़रा-सा भी अपमान उसे ख़ास तौर पर बुरा लगने लगा था।

लेकिन जब किसी दिन उसका माल नहीं बिकता था और वह थका-हारा शराबख़ाने में या सड़क की पटरी के किनारे जाकर बैठता था तो उसे पुलिसवालों की घुड़कियाँ, अपने गाहकों का शक व अपमान का रवैया, होड़ करने वाले दूसरे फेरीवालों की गालियाँ और ताने याद आते थे; और तब उसके अन्दर कहीं बहुत गहराई में बहुत चिन्ता पैदा हो जाती थी। उसकी आँखें खुल जातीं, वह जीवन की गहराई में देखने लगता, और उसकी स्मरण-शक्ति, जिसमें असंख्य स्मृतियों की भीड़ थी, उसके विवेक की व्यूह-रचना में उन स्मृतियों को सुव्यवस्थित पाँतों में सजा देती। और उसे साफ़ दिखाई देता कि सभी लोग एक ही लक्ष्य तक पहुँचने की कोशिश कर रहे थे; वे सभी साफ़-सुथरे, आरामदेह और चिन्ताओं से मुक्त जीवन की खोज में थे जिसकी कामना स्वयं वह करता था। और उनमें से किसी को भी अपने रास्ते में आने वाले किसी भी आदमी को परे ढकेल देने में कोई संकोच नहीं होता था; वे सभी लालची और क्रूर थे और अक्सर वे एक-दूसरे को अकारण ही, निजी स्वार्थ के लिए नहीं, केवल पीड़ा पहुँचाने का सन्तोष प्राप्त करने के लिए नुक़सान पहुँचाते रहते थे। कभी-कभी दूसरे का अपमान करते समय वे हँसते थे और शायद ही कभी ऐसा देखने में आता था कि उनमें से कोई भी किसी के प्रति दया दिखाता हो...

इस तरह के विचारों की वजह से फेरीवाले के काम के प्रति उसकी रुचि ख़त्म होती जाती; इन विचारों के प्रभाव की वजह से एक छोटी-सी साफ़-सुथरी दुकान का उसका सपना धूमिल पड़ता जाता और वह अपनी आत्मा में बेहद खोखलापन और शरीर में बेहद थकान और आलस महसूस करता। उसे लगता था कि वह कभी ख़ुद अपनी दुकान जमाने भर को पैसा नहीं जुटा पायेगा, कि जीवन के अन्त तक वह अपने सीने पर बक्सा लटकाये तपती हुई धूल-भरी सड़कों पर मारा-मारा फिरता रहेगा, और तसमे के तनाव से उसकी पीठ और उसके कन्धे दुखते रहेंगे। लेकिन एक दिन भी अगर बिक्री अच्छी हो जाती तो उसका उत्साह फिर बढ़ जाता और उसका सपना ज़िन्दा हो जाता।

एक दिन इल्या को शहर की एक भीड़-भाड़ वाली सड़क पर पावेल ग्राचोव दिखाई दिया। लोहार का बेटा अपनी फटी हुई पतलून की जेबों में हाथ डाले बड़े आराम से पटरी पर मटरगश्ती कर रहा था; उसके कन्धों पर एक लम्बी नीली क़मीज़ झूल रही

थी जो उसके डील-डौल के हिसाब से बहुत बड़ी थी और उसकी पतलून जैसी ही गन्दी और फटी हुई थी, उसके घिसे हुए जूते सड़क के किनारे जड़े हुए पत्थरों पर खट-खट की आवाज़ पैदा कर रहे थे। टूटे हुए छज्जे वाली टोपी उसने अपने बाएँ कान की ओर तिरछी झुकाकर सिर पर लगा रखी थी, जिसकी वजह से उसका आधा शरीर नंगा था और उस पर तपते हुए सूरज की धूप पड़ रही थी। उसके चेहरे और गर्दन पर मैल की चिकनी तह जमी हुई थी। उसने इल्या को दूर से ही पहचान लिया, ख़ुश होकर उसका स्वागत करते हुए सिर हिलाया, पर अपनी रफ़्तार तेज़ नहीं की।

"क्या ख़ूब छैला बना रखा है अपने को..." इल्या ने कहा।

पावेल ने अपने दोस्त का हाथ पकड़ लिया और हँस पड़ा। मैल की परत के नीचे उसकी आँखें और उसके दाँत ख़ुशी से चमक रहे थे।

"कैसा चल रहा है?" इल्या ने पूछा।

"जैसी बन पड़ती है काट रहे हैं। कुछ खाने को होता है तो खा लेते हैं; अगर नहीं होता तो मन मारकर सो जाते हैं!... तुमसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई, मेरे यार!..."

"कभी हम लोगों से मिलने क्यों नहीं आते?" इल्या ने मुस्कराकर पूछा। उसे भी अपने पुराने दोस्त को ऐसी मस्त और मैली-कुचैली हालत में देखकर बहुत ख़ुशी हुई थी। उसने पावेल के फटे हुए जूतों की ओर देखा और फिर ख़ुद अपने नये जूतों पर नज़र डाली, जो उसने नौ रूबल में ख़रीदे थे, और बड़े आत्म-सन्तोष से मुस्करा दिया।

"मुझे क्या मालूम कि तुम रहते कहाँ हो!..." पावेल ने कहा।

"उसी पुरानी जगह   पेत्रूख़ा के यहाँ..."

"याकोव ने तो मुझे बताया था कि तुम कहीं मछली बेचते हो..."

इल्या ने बड़े गर्व के साथ उसे स्त्रोगानी के यहाँ का अपना अनुभव सुनाया।

"शाबाश!" पावेल ने सहमति के भाव से कहा। "मेरा भी यही हुआ   जब मुझे शरारत करने पर छापेख़ाने से निकाल दिया गया तो मैं साइनबोर्ड बनाने वालों के यहाँ काम करने लगा   यही रंग मिलाने वग़ैरह का काम था। मेरी क़िस्मत फूटी, एक दिन मैं गीले साईनबोर्ड पर बैठ गया... क्या मारा है मुझे उन लोगों ने! मालिक ने और उसकी घरवाली ने और उस्ताद ने! इतनी पिटाई की, इतनी पिटाई की कि उनके भी हाथ थक गये... अब मैं एक नल मरम्मत करने वाले के यहाँ काम करता हूँ... महीने में छह रूबल मिलते हैं... अभी खाना खाया है अब वापस काम पर जा रहा हूँ..."

"मगर लगता तो नहीं है कि तुम्हें जाने की कोई जल्दी है।"

"भाड़ में जाये यह काम! सारा काम तो यों भी कभी पूरा नहीं होगा। किसी दिन आकर तुम लोगों से मिलना चाहिए..."

"ज़रूर आना," इल्या ने बड़े तपाक से कहा।

"किताबें अब भी पढ़ते हो?"

"क्यों नहीं! और तुम?"

"मैं भी कभी-कभार पन्ने उलट लेता हूँ..."

"और कविताएँ लिखते हो?"

"हाँ..."

पावेल ख़ुश होकर हँसने लगा।

"तो, आकर मिलना ज़रूर। और अपनी कविताएँ लेते आना..."

"आऊँगा... और थोड़ी-सी वोद्का भी लेता आऊँगा..."

"क्या तुम पीते हो?"

"छककर... अच्छा, अब चलूँ।"

"फिर मिलेंगे," इल्या ने कहा।

और वह पावेल के बारे में सोचता हुआ अपने रास्ते चल दिया। यह बात उसकी समझ में नहीं आयी कि इस छोकरे ने, ख़ुद फटेहाल होने के बावजूद उसके मज़बूत जूतों और साफ़-सुथरे कपड़ों को देखकर किसी तरह की ईर्ष्या का परिचय नहीं दिया था सच तो यह है कि उसने उनकी ओर शायद ध्यान तक नहीं दिया था। और जब इल्या ने उसे अपने स्वतन्त्र जीवन के बारे में बताया था तो ऐसा लगा था कि पावेल को सचमुच ख़ुशी हुई थी। क्या यह मुमकिन था कि पावेल को इस बात में कोई दिलचस्पी ही न हो कि दूसरे लोग किस चीज़ की तलाश में थे : शान्त, साफ़-सुथरा और स्वतन्त्र जीवन? इस विचार ने उसे विचलित कर दिया।

गिरजाघर जाने के बाद इल्या हमेशा ख़ास तौर पर बहुत उदास और परेशान हो जाता था। शायद ही कभी ऐसा होता था कि वह सुबह की या शाम की प्रार्थना में न जाता हो। वह ख़ुद प्रार्थना नहीं करता था; वह बस कोने में खड़ा स्तुति-माला का गायन सुनता रहता था; उसका दिमाग़ बिल्कुल खाली रहता था। उपासना करने वाले उसके चारों ओर चुपचाप निश्चल खड़े रहते थे और अपनी इस मूकता के सूत्र में एक-दूसरे से बँधे रहते थे। गीत की लहरें और अगरबत्तियों का धुआँ गिरजाघर में तैरता रहता था, और कभी-कभी इल्या कल्पना करता था कि वह भी ऊपर जा रहा है और उस उष्ण तथा सुखद शून्य में तैर रहा है और उसमें पूरी तरह खोता जा रहा है। उसका हृदय उमंग में भर उठता और वह ऐसी शान्ति अनुभव करता जिसका इस दुनिया की भाग-दौड़ से कोई सामंजस्य नहीं था और जो इस दुनिया की आकाँक्षाओं से बिल्कुल मेल नहीं खाती थी। पहले उसने इस भावना को अपनी आत्मा के अलग कोने में रख दिया जहाँ उसका उन प्रभावों से कोई टकराव नहीं होता था जो प्रतिदिन उसके मन

में अंकित होते रहते थे और इसलिए उसे कोई परेशानी नहीं होती थी। लेकिन धीरे-धीरे उसे अपने दिल में किसी ऐसी शक्ति की मौजूदगी का आभास होने लगा जो लगातार उस पर नज़र रख रही थी। सहमी हुई वह उसकी आत्मा की गहराइयों में दुबकी रहती थी और जब इल्या इस दुनिया की समस्याओं में उलझा होता था उस समय वह अपनी आवाज़ तक नहीं उठाती थी, लेकिन जब वह गिरजाघर में होता था तो वह फैलकर बड़ी हो जाती थी और उसके मन में एक ख़ास विचलित करने वाली भावना पैदा करती थी जिसका साफ़-सुथरे तथा आरामदेह जीवन के उसके सपनों से कोई मेल नहीं होता था। ऐसे क्षणों में उसे हमेशा अन्तीपा संन्यासी के बारे में सुनी हुई कहानियाँ याद आने लगती थीं और वह चीथड़े जमा करने वाले बूढ़े को प्यार-भरी आवाज़ में कहते हुए सुनता था :

"भगवान सब कुछ देखता है, उसके पास सच्ची कसौटी है। भगवान के अलावा किसी की कोई हैसियत नहीं है!"

इल्या घर लौटता तो बहुत परेशान हालत में होता : उसे आभास रहता कि भविष्य के बारे में उसके सपनों में कोई चमक-दमक बाक़ी नहीं रह गयी थी और यह कि उसके अन्दर एक दूसरा व्यक्ति भी था जो बिसातख़ाने की दुकान नहीं खोलना चाहता था। लेकिन ज़िन्दगी उस पर हावी हो गयी और यह दूसरा व्यक्ति उसकी आत्मा की गहराइयों में छिपा रहा। इल्या याकोव से अपने इस दोहरे व्यक्तित्व के बारे में बोला नहीं करता था। वह ख़ुद इस बारे में सोचने से कतराता था, वह अपनी इच्छा से कभी इस अस्पष्ट भावना के बारे में नहीं सोचता था।

वह हमेशा शाम का वक़्त अच्छी तरह बिताता था। शहर से घर लौटकर वह सीधा माशा के तहख़ाने वाले कमरे में जाता था।

"अच्छा, समोवार के बारे में क्या ख़्याल है, माशा?" वह मालिकाना ढंग से कहता।

समोवार मेज़ पर पहले से ही गरम रहता था और उसमें से पानी उबलने की और भाप की सी-सी की आवाज़ आती रहती थी। इल्या अपने साथ हमेशा कोई न कोई पकवान लेकर आता था डूनट, पेपरमिण्ट के केक, शहद के केक या कभी-कभार मुरब्बा भी। इसलिए माशा को चाय बनाकर उसे पिलाना बहुत अच्छा लगता था। वह ख़ुद भी पैसा कमाने लगी थी। मुटल्ली ने उसे काग़ज़ के फूल बनाना सिखा दिया था और उसे पतले काग़ज़ के चटकीले रंग के गुलाब के फूल बनाने में बहुत मज़ा आता था, जिनमें से बड़ी उल्लासमय आवाज़ निकलती थी। कभी-कभी वह दिन में दस कोपेक तक कमा लेती थी। उसके बाप को टाइफ़स हो गया था; वह दो महीने से ज़्यादा अस्पताल में रहा था और जब घर लौटा था तो बहुत दुबला हो गया था और पीला पड़

गया था और उसका सिर महीन काले-काले बालों के छल्लों से ढका हुआ था। झबरी उलझी हुई दाढ़ी मूड़ दिये जाने की वजह से वह अपने पीले और पिचके हुए गालों के बावजूद ज़्यादा जवान लगने लगा था। वह पहले की तरह ही दूसरे मोचियों के लिए काम करता था और कभी-कभार ही घर पर रात बिताने के लिए आता था, इसलिए उसकी बेटी उनकी छोटी-सी गृहस्थी की पूरी मालकिन बन बैठी थी। वह भी बाप को बाक़ी सब लोगों की तरह पेर्फ़ीश्का कहने लगी थी। अपनी तरफ़ बेटी का यह रवैया मोची को बहुत दिलचस्प लगता था और घुँघराले बालों वाली वह लड़की, जो उसी की तरह खिलखिलाकर हँसती थी, शायद उसमें आदर की भावना पैदा करती थी।

माशा के साथ चाय पीना याकोव और इल्या का दस्तूर बन गया था। रोज़ शाम को वे बहुत देर तक ढेरों चाय पीते रहते, उनके पसीना बहता रहता और वे अपनी दिलचस्पी की हर चीज़ के बारे में बातें करते रहते। इल्या उन्हें बताता कि उसने शहर की सड़कों पर क्या देखा था; याकोव, जो अपना ज़्यादातर वक़्त पढ़ने में बिताता था, उन्हें किताबों के बारे में और शराबख़ाने में होने वाले झगड़ों के बारे में बताता, अपने बाप की शिकायत करता, और कभी-कभी, इधर यह अक्सर होने लगा था, ऐसे विचारों की व्याख्या करता जो इल्या और माशा की समझ में नहीं आते थे और उन्हें बेतुके लगते थे। चाय का स्वाद बेहद अच्छा होता था और वह धब्बेदार समोवार की चमक ऐसी लगती जैसे कोई चालाक और स्नेहमयी बुढ़िया उन्हें देखकर मुस्करा रही हो। लगभग हमेशा जब उनके चाय के दौर पूरे ज़ोर पर होते उसी वक़्त वह समोवार, मानो उनको चिढ़ाने के लिए गुर्राने और बड़बड़ाने लगता था क्योंकि उसमें पानी बहुत कम रह जाता था। माशा उसे फिर से भर लाने के लिए उठा ले जाती; यह एक ऐसा सिलसिला था जो शाम को कई बार दोहराया जाता था।

अगर आसमान पर चाँद निकला होता तो उसकी किरणें भी खिड़की में से होकर बच्चों का साथ देने के लिए आ जातीं।

सीली हुई और बोसीदा दीवारों से घिरे हुए और नीची-सी भारी छत से ढके हुए उस बिल में कभी काफ़ी हवा और रोशनी नहीं होती थी, लेकिन हँसी-ख़ुशी की कभी कोई कमी नहीं रहती थी, और रोज़ शाम को वहाँ अच्छी-अच्छी भावनाएँ और मासूम युवा विचार जन्म लेते रहते थे।

कभी-कभी पेर्फ़ीश्का भी उनके साथ आ बैठता था। वह आम तौर पर एक अँधेरे कोने में बेढंगे भारी-भरकम चूल्हे के पास बेंच पर बैठता था, या चूल्हे के चबूतरे पर चढ़ जाता था और वहाँ सिर नीचे की ओर लटकाये लेटा रहता था; उसके छोटे-छोटे सफ़ेद दाँत अँधेरे में चमकते रहते थे। उसकी बेटी उसे मीठी चाय का बड़ा-सा प्याला, शकर और रोटी का एक टुकड़ा दे देती थी।

“बहुत-बहुत शुक्रिया तुम्हारा, मारीया पेर्फ़ील्येव्ना। मैं तो एहसान के बोझ से दबा जा रहा हूँ!” वह मज़ाक़ करते हुए कहता और फिर बड़ी ईर्ष्या से इतना और जोड़ देता, “ऐश करो, बच्चो! तुम्हारी ज़िन्दगी भी बड़े ठाठ की है। जैसे बिल्कुल सचमुच के इन्सान हो तुम।”

फिर मुस्कराते और आह भरते हुए वह बयान करता रहता :

“ज़िन्दगी? बेहतर होती जा रही है। हर साल बेहतर होती जा रही है। जब मैं तुमलोगों की उम्र का था तो बात करने के लिए मेरा एक ही दोस्त था   चमड़े का पट्टा। जब वह मेरी पीठ को थपथपाता था तो मैं ख़ुशी से गला फाड़कर चीख़ पड़ता था। जब वह थपथपाना बन्द कर देता था तो अपने दोस्त के बिना मेरी पीठ को ऐसा अकेलापन महसूस होता था कि वह फूलकर कुप्पा हो जाती थी और हाँफने लगती थी और मेरी आँखों को कुतरने लगती थी। लेकिन वह दोस्त बहुत देर उससे अलग नहीं रहता था   मित्रों का बहुत ध्यान रखने वाला था वह पट्टा! तो, अपनी ज़िन्दगी में मुझे इसके अलावा कभी कोई और सुख नहीं मिला! जब तुम बड़े हो जाओगे तो तुम्हारे पास याद करने को बहुत-कुछ होगा   ये बातें और बहुत-सी दूसरी घटनाएँ और तुम्हारी यह शानदार ज़िन्दगी। लेकिन मैं? मुझे देखो, पैंतालीस बरस का हो गया, और मेरे पास याद करने को कुछ भी नहीं है! एक छोटा-सा टुकड़ा भी नहीं! कुछ भी नहीं   बिल्कुल कुछ नहीं। ऐसा लगता है कि मैं जनम का बहरा और अन्धा हूँ। मुझे बस एक बात याद है कि मेरे दाँत हमेशा सर्दी और भूख से बजते रहते थे और मेरे मुँह पर हमेशा मार का निशान रहता था। मेरे बाल और कान और मेरी हड्डियाँ कैसे सही-सलामत बच गयीं यह तो मैं समझ ही नहीं पाता। अगर कोई चीज़ मुझे फेंककर नहीं मारी गयी तो वह थी चूल्हा, लेकिन इससे भी मुझे इतनी बार टकराया गया है कि मुझे गिनती भी नहीं याद है। रस्सी की तरह ऐंठ-ऐंठकर मेरी यह शक्ल बना दी गयी है। मुझे पीटा जाता था, मेरी धुनाई होती थी और पानी में डुबो दिया जाता था, लेकिन मैं हर बार ज़िन्दा बचकर निकल आता था। रूसी आदमी बड़े जीवट का होता है! कुछ भी कर लो मगर उससे पार पाना मुश्किल होता है। चट्टान जैसा मज़बूत होता है... मिसाल के लिए, मुझी को ले लो : उन लोगों ने मुझे पीस-पीसकर चूरा बना दिया, काटकर मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दिये, लेकिन मैं जैसे का तैसा हूँ, बिल्कुल मस्त-मौला, एक शराबख़ाने से दूसरे शराबख़ाने का चक्कर काटता रहता हूँ, सारी दुनिया से सन्तुष्ट हूँ। भगवान को मुझसे प्यार है। एक बार उस ऊपर वाले ने मुझे अच्छी तरह देखा, हँसा और अपना सिर हिलाकर बोला : ‘इसका कुछ नहीं किया जा सकता!’”

उसकी लच्छेदार बातें सुनकर याकोव और माशा हँस पड़ते। और इल्या भी हँस

देता, लेकिन उसके मन में एक ही विचार उठता जिससे वह किसी तरह छुटकारा न पाता।

एक बार उसने उस मोची से शंकापूर्ण मुस्कराहट से पूछा, "तुम तो ऐसे बातें करते हो जैसे इस दुनिया में तुम्हें कुछ चाहिए ही नहीं..."

"कौन कहता है? मिसाल के लिए, शराब मुझे हर वक़्त चाहिए।"

"लेकिन सच बताओ क्या तुम्हें सचमुच कुछ चाहिए भी," इल्या ने आग्रह करते हुए पूछा।

"सच बताऊँ? अच्छा, तो मुझे एक नया अकार्डियन चाहिए! अव्वल दर्जे का वह वाला जो बीस-पच्चीस रूबल का मिलता है! मुझे तो बस वही चाहिए।"

वह चुपके से थोड़ा-सा हँस दिया, लेकिन अगले ही क्षण वह गम्भीर हो गया।

"नहीं, बेटा, मुझे तो नया अकार्डियन भी नहीं चाहिए," उसने एक क्षण सोचकर पूरे विश्वास के साथ कहा। "कोई फ़ायदा नहीं है। पहली बात तो यह है कि अगर उसका कुछ भी मोल होगा तो मैं उसे बेचकर शराब पी जाऊँगा! दूसरे, जो अब मेरे पास है अगर वह इससे बुरा हुआ तो? जो मेरे पास है, वह कैसा है? अनमोल, इसमें मेरी आत्मा बसी हुई है। नायाब बाजा है सारी दुनिया में शायद अपनी क़िस्म का अकेला है। अकार्डियन तो तुम्हारी घरवाली की तरह होता है... मेरी भी घरवाली थी बिल्कुल फ़रिश्ता थी वह! मैं दूसरी शादी कैसे कर सकता हूँ? अब उसकी जैसी दूसरी मिलेगी कहाँ, और मैं हमेशा नयी वाली का मुक़ाबला पुरानी वाली से करता रहूँगा। और यह नयी वाली उसके बराबर नहीं होगी... यह हम दोनों में से किसी के लिए अच्छा नहीं होगा! अरे, बेटा, कोई चीज़ अच्छी इसलिए नहीं होती है कि वह अच्छी होती है, बल्कि इसलिए कि उससे प्यार होता है!"

अपने बाजे के बारे मोची की राय से इल्या पूरी तरह सहमत था : जिन लोगों ने भी उसे सुना था वे सभी उसकी सुरीली आवाज़ से दंग थे। लेकिन उसे इस बात पर विश्वास नहीं होता था कि उसे सचमुच कुछ नहीं चाहिए था। यह प्रश्न उसके दिमाग़ में निश्चित रूप से ढल चुका था : क्या ऐसा हो सकता है कि एक ऐसे आदमी को जो ज़िन्दगी भर चीथड़े लगाये गन्दगी में रहा हो, जो ज़्यादातर वक़्त शराब के नशे में धुत्त रहता हो और अकार्डियन बजाना जानता हो, उसे इससे बेहतर किसी चीज़ की इच्छा न हो। इस विचार की वजह से वह पेर्फ़ीश्का को एक तरह का खब्ती समझने लगा था और इसके साथ ही वह बड़ी जिज्ञासा और अविश्वास से उस मस्त फक्कड़ आदमी को टकटकी बाँधकर देखता था और महसूस करता था कि वहाँ जितने लोग रहते थे उनमे वह, निकम्मा शराबी होने के बावजूद, सबसे अच्छा आदमी था।

कभी-कभी वे अल्पवयस्क लोग उन गहरी और विशाल समस्याओं में उलझ जाते

थे जो मनुष्य के मस्तिष्क के सामने सहसा अथाह गर्त की तरह खुल जाती हैं और जिज्ञासु लोगों को अपनी रहस्यमयी गहराइयों में पैठने का प्रलोभन देती हैं। याकोव ऐसी समस्याओं को उठाता था। उसकी एक अजीब आदत यह पड़ गयी थी कि वह हमेशा ठोस चीज़ों से चिपका रहता था मानो उसे अपनी माँसपेशियों पर भरोसा न हो। वह या तो अपना कन्धा किसी चीज़ से टिकाकर बैठता था या उस पर सहारे के लिए अपना हाथ रख लेता था। जब वह अपने तेज़ और डगमगाते हुए क़दमों से सड़क पर चलता था तो वह जाने क्यों खम्भों को छूता हुआ चलता था जैसे उन्हें गिन रहा हो या चारदीवारियों को इस तरह ढकेलता रहता था जैसे उनकी मज़बूती को परख रहा हो। शाम को माशा के यहाँ वह हमेशा खिड़की के पास दीवार का सहारा लेकर बैठता था और अपनी लम्बी-लम्बी उँगलियों से मेज़ या कुर्सी को पकड़े रहता था; उसका बड़ा-सा चिकने और मुलायम सन के रंग के बालों वाला सिर उसके एक कन्धे पर झुका रहता था, उसकी नीली आँखें अपने दोस्तों को नज़र जमाकर देखते समय उसके पीले चेहरे में कभी सिकुड़ जाती थीं और कभी फैल जाती थीं। उसे अब भी अपने सपने बयान करने का बड़ा शौक़ था और जब वह अपनी पढ़ी हुई किताबों की कहानियाँ सुनाता था तो वह उनमें अपने मन से सोची हुई विचित्र बातों को जोड़ने का लोभ संवरण नहीं कर पाता था। इल्या उसे ऐसा करते हुए पकड़ लेता, लेकिन वह इस पर शर्मिन्दा न होता।

"जिस तरह मैंने सुनाया है वह बेहतर है," वह बड़ी सादगी से कहता। "बस धर्म की किताबों में कोई हेर-फेर करने की मनाही है, आम किताबों के साथ जो चाहो करो। वे मामूली लोगों की ही लिखी हुई होती हैं। मैं भी आदमी हूँ। जो भी चीज़ मुझे अच्छी न लगे उसे मैं बदल सकता हूँ... लेकिन एक बात बताओ मुझे : जब आदमी सो जाता है तो उसकी आत्मा का क्या होता है?"

"मैं क्या जानूँ?" इल्या ने कहा, उसे इस तरह के सवालों से चिढ़ थी, वे उसकी आत्मा में गड़बड़ी पैदा करते थे।

"मैं समझता हूँ कि यह ठीक है कि वह उड़ जाती है," याकोव ने अपनी राय दी।

"ज़रूर उड़ जाती है," माशा ने विश्वास के साथ कहा।

"तुम्हें कैसे मालूम?" इल्या ने कठोर स्वर में पूछा।

"बस मालूम है..."

"उड़ जाती है," याकोव मुस्करा कर विचारों में खोया-खोया-सा बोला। "उसे भी आराम चाहिए; इसीलिए तो हमें सपने दिखाई देते हैं।"

इल्या इस बात का खण्डन नहीं कर पाया इसलिए वह चुप रहा, हालाँकि अपने

दोस्त की बात का खण्डन करने को उसका हमेशा बहुत जी चाहता था। इसके बाद कई मिनट तक ख़ामोशी रही, जिसके दौरान ऐसा लगा कि तहख़ाने का अँधेरा और गहरा हो गया है। लैम्प से धुआँ निकल रहा था, समोवार से कोयले की बू आ रही थी और बच्चों के कानों में दबी-दबी आवाज़ें आ रही थीं ऊपर शराबख़ाने में लोगों के गरजने और चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ें। याकोव ने फिर धीमे स्वर में कहना शुरू किया :

"आदमी शोर-गुल मचाता है... काम करता है, वग़ैरह-वग़ैरह। मतलब है जीता है। और फिर, अचानक धाँय! वह मर जाता है... क्या मतलब है इसका? तुम्हारा क्या खयाल है, इल्या?"

"कुछ भी मतलब नहीं है। बस वह बूढ़ा हो गया, मर जाने का समय आ गया।"

"लेकिन नौजवान लोग भी मर जाते हैं... बच्चे भी मर जाते हैं। और तनदुरुस्त लोग भी।"

"अगर वे मर जाते हैं तो वे तनदुरुस्त नहीं हो सकते..."

"लोग ज़िन्दा किसलिए रहते हैं?"

"फिर चलने लगा तुम्हारा चरखा!" इल्या ने बड़े व्यंग्य से चिल्लाकर कहा। "वे बस इसलिए ज़िन्दा रहते हैं कि ज़िन्दा रहें। वे काम करते हैं और कामयाब होने की कोशिश करते हैं। हर आदमी अच्छी तरह रहना चाहता है। हर आदमी अमीर बन जाने और साफ़-सुथरा रहने का मौक़ा खोजता रहता है।"

"यह तो ग़रीब लोगों की बात हुई। लेकिन जो अमीर हैं? उसके पास तो सब कुछ होता है... उन्हें किस चीज़ की ज़रूरत रह जाती है?"

"क्या कहा! बड़ा आया समझदार कहीं का! अमीर? अगर अमीर न हों तो ग़रीब लोग काम किसके लिए करें?"

याकोव ने एक क्षण इस पर विचार किया और फिर पूछा :

"तो तुम समझते हो कि हर आदमी काम करने के लिए ज़िन्दा रहता है?"

"ज़रूर... मतलब है कि सब नहीं... कुछ लोग काम करते हैं, और दूसरे लोग... वे अपना सारा काम कर चुके होते हैं और वे अपना पैसा बचा लेते हैं और बस... बस... ज़िन्दा रहते हैं।"

"किसलिए?"

"अरे, तुम्हारा क्या ख़याल है? क्या तुम यह समझते हो कि वे ज़िन्दा नहीं रहना चाहते? क्या तुम नहीं चाहते ज़िन्दा रहना?" इल्या अधीर होकर चिल्लाया। उसे ग़ुस्सा आ रहा था, लेकिन वह यह नहीं बता सकता था कि ग़ुस्सा इसलिए आ रहा था कि याकोव ऐसे सवाल पूछता था या इसलिए कि वह उन्हें बेवकूफ़ी से पूछता था।

"तुम किसलिए ज़िन्दा रहते हो?" उसने चिल्लाकर याकोव से पूछा।

"बात तो यही है कि मुझे नहीं मालूम," याकोव ने बड़ी भीरुता से कहा। "मुझे तो मर जाने में भी कोई एतराज नहीं है। अलबत्ता, मुझे डर लगता है लेकिन जिज्ञासा भी है..."

अचानक उसके स्वर में स्नेह और साथ ही झिड़की का एक हल्का-सा पुट आ गया :

"तुम्हें इतना झुँझलाने की कोई ज़रूरत नहीं है। देखो, लोग काम करने के लिए ज़िन्दा रहते हैं, और काम लोगों के लिए बनाया गया है, और... और फिर होता क्या है? यह सिलसिला एक पहिये की तरह है   जो घूमता रहता है, घूमता रहता है, और कहीं पहुँचता नहीं। और यह समझ में नहीं आता   किसलिए? और इसके बीच में भगवान की जगह कहाँ है? वह धुरा है, भगवान धुरा है! उसने आदम और हव्वा से कहा था, अपने जैसे लोगों को पैदा करो और इस धरती को बसा दो। लेकिन किसलिए?"

फिर याकोव अपने दोस्त की ओर झुका और जब वह रहस्यमय ढंग से धीमे स्वर में बोला तो उसकी आँखों में भय दिखाई दे रहा था :

"मुझे यक़ीन है कि भगवान ने इस सवाल का जवाब दिया होगा, लेकिन किसी ने यह स्पष्टीकरण चुरा लिया होगा। वह शैतान का काम है! और कौन चुराएगा? शैतान! और इसीलिए किसी को यह नहीं मालूम है कि किसलिए?"

इल्या अपने दोस्त के इस चक्करदार भाषण को सुन रहा था और उसके प्रति आकर्षण महसूस करके ख़ामोश था।

और याकोव जैसे-जैसे बोलता गया उसकी रफ़्तार तेज़ और उसकी आवाज़ ज़्यादा शान्त होती गयी। उसकी आँखें बाहर की ओर निकल आयीं, उसके चेहरे पर डर दिखाई दे रहा था, और वह जितना ही बोलता गया उसकी बातें उतनी ही बेतुकी होती गयीं :

"भगवान तुमसे क्या चाहता है   जानते हो? अहा!" उसके मुँह से जो बिखरे हुए शब्द धाराप्रवाह निकल रहे थे उनके बीच में यह विजयोल्लासपूर्ण विस्मयबोधक शब्द अचानक बड़े ज़ोर से उभरकर सामने आ गया। माशा मुँह खोले आश्चर्य से अपने दोस्त और उपकारी को देखती रही। इल्या झुँझलाया हुआ त्योरियाँ चढ़ाये हुए बैठा रहा। उसके स्वाभिमान को इस बात से ठेस लगती थी कि वह इन बातों को समझ नहीं पा रहा था। वह अपने आपको याकोव से ज़्यादा तेज़ समझता था, लेकिन वह याकोव की स्मरण-शक्ति से और जटिल विषयों पर बोलने की उसकी क्षमता से प्रभावित था। आख़िरकार वह सुनते-सुनते और ख़ामोश रहते-रहते थक गया; उसे ऐसा लग रहा था कि उसके सिर में जैसे कुहरा भरा हुआ है।

"जहन्नुम में जाओ!" उसने चिढ़कर बीच में टोका। "तुमने बहुत-सी ऐसी चीज़ें पढ़ रखी हैं जो तुम्हारी समझ में नहीं आतीं..."

"यही तो मैं कह रहा हूँ कि मेरी समझ में कुछ नहीं आता!" याकोव ने आश्चर्य से कहा।

"तो फिर साफ़-साफ़ कहो कि मेरी समझ में नहीं आता! तुम तो पागलों की तरह बके जा रहे हो और मुझे बैठकर तुम्हारी बातें सुननी पड़ रही हैं।"

"लेकिन ठहरो," याकोव ने हठपूर्वक कहा। "कुछ भी नहीं समझा जा सकता है... मिसाल के लिए, इस लैम्प को ले लो। इसमें जो आग है, वह कहाँ से आती है? अभी है, अभी नहीं है! माचिस रगड़ो : आग पैदा हो जाती है... इसका मतलब है कि वह हमेशा रही होगी। कहाँ? हवा में अनदेखी उड़ रही थी?"

इस सवाल ने फिर इल्या को आकर्षित किया। उसके चेहरे से उपेक्षा का भाव गायब हो गया।

"अगर वह हवा में होती तो हवा को हमेशा गर्म रहना चाहिए," उसने लैम्प को घूरते हुए कहा। "लेकिन तुम बाहर सर्दी में भी माचिस जला सकते हो, इसलिए वह हवा में नहीं हो सकती..."

"फिर कहाँ?" याकोव ने आशा-भरी दृष्टि से अपने दोस्त को एकटक देखते हुए कहा।

"माचिस में," माशा ने अपनी राय दी।

लेकिन जब लड़के ज़िन्दगी की अधिक गम्भीर समस्याओं पर बातचीत कर रहे होते थे उस समय माशा की राय की ओर कभी कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। वह इसकी आदी हो गयी थी और इसका बुरा नहीं मानती थी।

"कहाँ?" इल्या ने फिर नये सिरे से चिढ़कर कहा। "न मैं यह जानता हूँ और न मुझे इसकी परवाह है। मैं तो बस इतना जानता हूँ कि तुम्हें उससे गर्मी मिल सकती है लेकिन तुम्हें उसमें अपनी उंगली नहीं घुसेड़नी चाहिए।"

"बड़ा सयाना आया!" याकोव उत्साह से और ग़ुस्से से बीच में बोला। "'न जानता हूँ, न परवाह है!' यह बात तो मैं भी कह सकता हूँ, और कोई बेवकूफ़ भी कह सकता है... तुम तो यह समझाने की कोशिश करो कि आग आती कहाँ से है? मैं तुमसे रोटी के बारे में नहीं पूछता कोई भी देख सकता है कि रोटी कहाँ से आती है : पौधे से हमें अनाज मिलता है, अनाज से आटा मिलता है, आटे से रोटी मिलती है। सीधी-सी बात है। पर यह बताओ आदमी कहाँ से आता है?"

इल्या ने आश्चर्य और ईर्ष्या से अपने दोस्त के बड़े-से सिर पर एक नज़र डाली। कभी-कभी जब वह याकोव के सवालों का जवाब देने में अपने को असमर्थ पाता तो

उछलकर खड़ा हो जाता और याकोव से कड़ी बातें करने लगता। किसी वजह से ऐसे मौक़ों पर वह हमेशा जाकर चूल्हे की ओर पीठ करके उससे टिककर खड़ा हो जाता था   चौड़े-कन्धों वाला हट्टा-कट्टा लड़का, जो एक-एक शब्द का साफ़ उच्चारण करते हुए अपने विचारों को व्यक्त करते समय अपने घुँघराले बालों वाले सिर को झटका देता रहता था।

"तुम्हारा दिमाग़ बिल्कुल उलझा हुआ है, बस और कुछ नहीं! और यह सब इसका नतीजा है कि तुम्हारे पास करने को कुछ नहीं है। तुम अपना वक़्त कैसे बिताते हो? शराबख़ाने के काउण्टर पर खड़े रहकर। वह भी कोई काम है! और शायद तुम ज़िन्दगी भर खूँटे की तरह वहीं गड़े रहोगे। अगर तुम्हें कुछ कामयाबी हासिल करने के चक्कर में रोज़ सवेरे से शाम तक मेरी तरह सड़कों पर घूमना पड़े तो तुम्हें इन सब बकवास बातों के बारे में सोचने का वक़्त न मिले। तुम सिर्फ़ इस बात के बारे में सोचते रहो कि दुनिया में अपने लिए रास्ता कैसे निकालो, कैसे अपने लिए कोई मौक़ा झपटककर पकड़ लो। इसीलिए तो तुम्हारा सिर इतना बड़ा है   उसमें सारी बेवकू   फ़ी की बातें भरी हैं। समझदारी के विचार छोटे होते हैं   उनसे सिर फूलकर बड़ा नहीं हो जाता..."

याकोव कुर्सी पर बैठा बिल्कुल आगे झुका हुआ और हाथ किसी चीज़ पर टिककार चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा। कभी-कभी उसके होंठ कोई आवाज़ निकाले बिना हिलने लगते थे और वह अपनी आँखें जल्दी-जल्दी झपकाने लगता था।

लेकिन जैसे ही भाषण ख़त्म हो जाता था और इल्या फिर आकर मेज़ पर बैठ जाता था, याकोव फिर फलसफ़ा बघारने लगता था।

"लोग कहते हैं कि कोई किताब है   विज्ञान की   जादू के बारे में   जिसमें हर चीज़ की वजह समझाई गयी है। काश वह मेरे हाथ लग पाती और मैं उसे पढ़ पाता... मैं सोचता हूँ   डर लगेगा!"

माशा उठकर अपने पलंग पर जा बैठती, जहाँ से उसकी काली-काली आँखें एक दोस्त के चेहरे से दूसरे दोस्त के चेहरे तक चक्कर लगाती रहतीं। कुछ ही देर में वह जम्हाई लेने लगती, फिर वह ऊँघने लगती, और आख़िरकार उसका सिर तकिये पर लुढ़क जाता।

"सोने का वक़्त हो गया," इल्या कहता।

"ठहरो, ज़रा मैं माशा को कुछ ओढ़ा दूँ और बत्ती बुझा दूँ।"

इल्या उसकी राह देखे बिना दरवाज़े की मूँठ पकड़ लेता, और तब याकोव रुआँसी आवाज़ में कहता :

"मेरा इन्तज़ार करना। मुझे अकेले जाते डर लगता है   अँधेरा है!..."

"उफ़!" लुन्योव तिरस्कार के भाव से कहता। "सोलह साल का हो गया है, और अभी तक बच्चा है। मुझे देखो, मुझे डर किसी से नहीं लगता! अगर शैतान भी सामने आ जाये तो मैं पलक न झपकाऊँ।"

कोई जवाब दिये बिना याकोव माशा को सुलाकर जल्दी से बत्ती बुझा देता। रोशनी भक-भक करके बुझ जाती और कमरे में चुपके-चुपके चारों ओर से अँधेरा सिमट आता। लेकिन कभी-कभी चाँदनी की कोई क़िस्म दबे पाँव चुपके से खिड़की में से आती और फ़र्श पर बिखर जाती।

एक छुट्टी के दिन लुन्योव उतरा हुआ चेहरा लिए और दाँत भींचे हुए घर लौटा और कपड़े उतारे बिना ही चारपाई पर लेट गया। ग़ुस्सा उसके दिल पर एक ठण्डे बोझ की तरह लदा हुआ था। गर्दन में दबा-दबा-सा दर्द होने की वजह से वह अपना सिर नहीं घुमा पा रहा था, और लगता था कि जो चोट उसे लगी थी उसकी वजह से उसका सारा बदन दुख रहा था।

उस दिन सवेरे एक पुलिसवाले ने एक बट्टी साबुन और एक दर्जन कँटियाँ लेकर उसे सर्कस के बाहर अपना माल बेचने की इजाज़त दे दी थी, जहाँ उस वक़्त मैटिनी शो हो रहा था। इल्या ने बेखटके सर्कस के फाटक पर अपना अड्डा जमाया था। लेकिन अचानक थानेदार का सहायक वहाँ आया, उसके सिर पर ज़ोर से मारा और जिस ठीहे पर उसका बक्सा रखा था, उसे ऐसी ठोकर मारी कि उसका सारा सामान ज़मीन पर बिखर गया। कुछ चीज़ें मिट्टी में गिरकर खराब हो गईं और कुछ गायब हो गईं।

"आपको कोई हक़ नहीं है, साहब..." इल्या ने अपना सामान बटोरते हुए कहा।

"क - या?" पुलिसवाले ने अपनी लाल मूँछों पर ताव देते हुए कहा।

"आपको मुझे हाथ लगाने का कोई हक़ नहीं है..."

"अच्छा, मुझे हक़ नहीं है? मिगुनोव! इसे थाने ले जाओ!" थानेदार के सहायक ने पुलिसवाले से कहा।

और वही पुलिसवाला जिसने इल्या को अपना ठीहा सर्कस के सामने लगाने की इजाज़त दी थी, उसे पकड़कर थाने ले गया जहाँ उसे शाम तक बन्द रखा गया।

इससे पहले भी पुलिस से लुन्योव की झड़पें हो चुकी थीं, लेकिन इससे पहले न तो कभी वह थाने गया था और न ही कभी उसके मन में ऐसा क्रोध और ऐसी झुँझलाहट पैदा हुई थी।

चारपाई पर लेटे-लेटे उसने अपनी आँखें मूँद लीं और अपना सारा ध्यान व्यथा के उस बोझ पर केन्द्रित किया जिसने पत्थर की सिल की तरह उसके सीने को दबा रखा था। दीवार के पार शराबख़ाने से ऐसी गड़गड़ाहट की आवाज़ आ रही थी जैसे पतझड़ के मौसम में जब बादल छाये हों गन्दले पानी के तेज़ झरने पहाड़ के ढलान

से नीचे गिर रहे हों : टीन की ट्रे की टनटनाहट, तश्तरियों की खड़खड़ाहट, वोद्का, चाय और बीयर माँगती हुई अलग-अलग आवाज़ें।

"अभी लाया!" वेटर जवाब देते।

किसी के गाने की ऊँची और उदास आवाज़ इस शोर को फ़ौलाद के झनझनाते हुए तार की तरह काट गयी :

> किसने जाना पहले से
> विरह-व्यथा की लीला को...

एक दूसरी भारी और गूँजती हुई आवाज़ धीमे और मधुर स्वर में उसमें आकर मिल गयी; उसकी मधुर तानें शराबख़ाने के कोलाहल में खो गयीं :

> यौवन की इस पीड़ा को...

"तुम झूठे हो!" कोई ऐसी आवाज़ में चिल्लाया जो सूखे फटे हुए बाँस जैसे गले से निकलती हुई मालूम हो रही थी। "लिखा है : 'अगर तू सहन करने के मेरे आदेश का पालन करेगा, तो मैं तेरी परीक्षा के क्षण में तुझे नहीं भूलूँगा।'"

"तू ख़ुद झूठा है!" शब्दों का साफ़-साफ़ उच्चारण करते हुए और ताव में आकर किसी आवाज़ ने आपत्ति उठाई। "उसी किताब में लिखा है : 'क्योंकि तू कुनकुना है, न बहुत गर्म है न बहुत ठण्डा, इसलिए मैं तुझे अपने मुँह से थूक दूँगा।' सुना यह? कौन ठीक है?.."

इस पर ज़ोर का ठहाका पड़ा और इसके बाद किसी ने चिचियाती हुई आवाज़ में कहा :

"मैंने उसके मुँह पर एक दिया! उसके मख़मल जैसे मुँह पर एक दिया, फिर उसके कान पर! फिर उसकी बत्तीसी पर! धड़! धड़! धड़!"

एक और ठहाका पड़ा।

"वह ज़मीन चाटने लगी!" वह चिचियाती हुई आवाज़ कहती रही। "तो मैंने उसके छोटे-से थोबड़े पर एक और जड़ दिया! लो! सबसे पहले मैंने ही चूमा था, मैंने ही उसकी मरम्मत की..."

"ऐसी हठधर्मी अच्छी नहीं," किसी ने डंक मारते हुए कहा।

"अरे नहीं, अब मेरा ग़ुस्सा भड़क उठा है!"

"'मैं प्यार करता हूँ, मैं दोष लगाता हूँ और दण्ड देता हूँ...' यह भूल गये तुम?... और फिर 'किसी के बारे में फ़ैसला न दो कि कहीं तुम्हारे बारे में भी फ़ैसला न दे दिया जाये...' बादशाह डेविड ने क्या कहा था   वह भी भूल गये तुम?"

इल्या इस बहस को, गीत को और हँसी को सुन रहा था, लेकिन वे सब उसकी

पहुँच के बाहर रहे और इनसे उसके मन में कोई विचार नहीं उठ रहे थे। थानेदार के सहायक का दुबला-पतला, चोंच की तरह मुड़ी हुई नाक वाला चेहरा उसके सामने कमरे के अँधेरे में तैर रहा था, उस चेहरे पर क्रूर आँखें चमक रही थीं और लाल मूँछें हिल रही थीं। उस चेहरे को देखते समय इल्या ने अपने दाँत और कसकर भींच लिए। लेकिन दीवार के उस पार से आती हुई गीत की आवाज़ और तेज़ होती गयी, गाने वालों का जोश बढ़ता जा रहा था, उनकी आवाज़ें ऊँची होती जा रही थीं और खुलती जा रही थीं और गीत की दर्दभरी धुन इल्या के दिल में घर करती जा रही थी और उसके क्रोध और झुँझलाहट की बर्फ़ को छू रही थी।

सारे देश में घूमा मैं...
इस कोने से उस कोने तक...

दोनों आवाज़ें एक-दूसरे में घुल-मिलकर अपना दुखड़ा रोने लगीं :

साइबेरिया के निर्जन उन विस्तारों में
घर जाने की खोज-खोज राह मैं हारा...

उन उदास शब्दों को सुनते हुए इल्या ने एक लम्बी आह भरी। शराबख़ाने के शोर में वे शब्द उसी तरह झिलमिला रहे थे जैसे बादलों में सितारे टिमटिमाते हैं, आसमान पर तेज़ी से भागते हुए बादलों में वे कभी चमक उठते हैं और कभी छिप जाते हैं...

भूख से अपनी जीभ चबाई मैंने, जब
कुतर रही थी सर्दी मेरी हड्डी-हड्डी को...

इल्या ने मन ही मन सोचा कि अब ये लोग गा रहे हैं, बहुत अच्छा गा रहे हैं इतना अच्छा कि गीत उसकी आत्मा पर छा गया था। लेकिन एक ही मिनट में उन्हें नशा चढ़ जायेगा और वे शायद लड़ना शुरू कर दें... आदमी जो कुछ अच्छा होता है वह ज़्यादा देर तक नहीं रह सकता...

कैसा मैं मनहूस अभागा!

ऊँची आवाज़ वाले ने रुदन किया।

क़िस्मत जैसे पाँव की बेड़ी...

भारी आवाज़ ने गाया।

अतीत के चित्रों में से इल्या की स्मरण-शक्ति ने दादा येरेमेई की आकृति खोज निकाली। बूढ़े ने बड़े उदास भाव से सिर हिलाते हुए और अपने गालों पर आँसू बहाते हुए कहा था :

"कितने बरस मैंने इस दुनिया में बिताये हैं और कितना अन्याय मैंने देखा है!"

इल्या सोचने लगा कि दादा येरेमेई को भगवान से प्यार था, और उसने चुपके-चुपके पैसा बचाया था। उसका चाचा तेरेन्ती भगवान से डरता था, फिर भी उसने यह पैसा चुरा लिया था। हर आदमी के हमेशा दो पहलू होते हैं। ऐसा लगता है कि उसके सीने में कोई तराजू लगा होता है, और उसका दिल तराजू के काँटे की तरह कभी बायीं तो कभी दाहिनी ओर झुकता है, और इस तरह भले और बुरे को तौलता रहता है।

"अहा!" शराबख़ाने में कोई गरजा। इसके बाद कोई चीज़ ऐसे ज़ोर के धमाके के साथ फर्श पर गिरी की इल्या के नीचे चारपाई तक काँप उठी।

"रोको! हे भगवान..."

"पकड़ो..."

"बचाओ!"

फ़ौरन शोर बढ़ गया। हर तरफ़ कुहराम मचा हुआ था; वातावरण में नयी आवाज़ों के बगूले उठ रहे थे, वे गूँज रही थीं और बिफरे हुए भूखे कुत्तों के झुण्ड की तरह एक-दूसरे को फाड़े खा रही थीं।

इल्या सन्तोष से सुनता रहा; वह इसी की उम्मीद कर रहा था और इससे मानव स्वभाव के बारे में उसकी राय की पुष्टि हो गयी थी। दोनों हाथ सिर के नीचे रखकर वह अपने विचारों की धारा में बहता रहा :

"...अन्तीपा ने बहुत बड़ा पाप किया होगा अगर उसका प्रायश्चित करने के लिए उसे आठ साल तक मौन रखना पड़ा और प्रार्थना करनी पड़ी... फिर भी लोगों ने उसे माफ़ कर दिया और वे उसकी चर्चा बड़ी श्रद्धा से करते थे उसे सन्त तक कहते थे... लेकिन उन्होंने उसकी सन्तान को नष्ट कर दिया। एक को उन्होंने साइबेरिया भेज दिया और दूसरे को गाँव से निकाल दिया..."

"हमें एक ख़ास क़िस्म की कसौटी चाहिए!" यही कहा था व्यापारी स्त्रोगानी ने। "अगर एक ईमानदार है और नौ बदमाश हैं, तो उससे किसी का कोई भला नहीं होने का और जो ईमानदार है उसका अंजाम बुरा होगा... जो गिनती में ज़्यादा होते हैं वही ठीक होते हैं..."

इल्या धीरे से हँसा। उसके दिल में लोगों के प्रति नफ़रत की भावना एक ठण्डे साँप की तरह लहरा रही थी। उसकी स्मृति में जानी-पहचानी आकृतियाँ उभर रही

थीं। मिसाल के लिए, भारी-भरकम बेडौल मुटल्ली आँगन में कीचड़ में लोट रही थी।

"माँ, मेरी प्यारी माँ!" उसने कराहते हुए ज़ोर से कहा। "तुम मुझे इस वक़्त आकर देखतीं!"

पेर्फ़ीश्का खड़ा नशे में डूबा हुआ उसे एकटक देख रहा था।

"धुत्त है!" उसने उसे डाँटते हुए कहा। "सुअर कहीं की..." और तनदुरुस्त, लाल चेहरे वाला पेत्रूख़ा ओसारे से उन्हें देख रहा था; उसके होंठों पर तिरस्कार-भरी मुस्कराहट थी।

शराबख़ाने में हंगामा ठण्डा पड़ गया था। तीन आवाज़ों ने दो औरतों की और एक मर्द की एक गीत छेड़ दिया था, लेकिन जल्दी ही वह ख़त्म हो गया। कोई अकार्डियन ले आया, उसे थोड़ी देर और बहुत बुरी तरह बजाया, और फिर बजाना बन्द कर दिया।

अचानक पेर्फ़ीश्का की आवाज़ बाक़ी सब आवाज़ों पर छा गयी :

"प्याला भर दो, भर दो प्याला, मालिक हो तुम, कौन है हाथ पकड़ने वाला, मुँह तक भर दो इसमें हाला!" वह लहक-लहककर तुकबन्दी करने लगा। "हम पीकर धूम मचायेंगे, प्यार करेंगे, नैन लड़ायेंगे, छेड़ेंगे और छेड़ के भागेंगे, बाहर जाकर भीख सड़क पर माँगेंगे। माँगके रस्सी लायेंगे, फन्दा एक बनायेंगे! अगर किसी ने फन्दा काटा, उसका अपना होगा घाटा; आँतें काट छिनालों की, दर्जन भर हम लायेंगे, फन्दा नया बनायेंगे..."

इस पर ज़ोर का ठहाका पड़ा और चारों ओर से वाह-वाह होने लगी...

इल्या उठकर बाहर चला गया और ओसारे में जाकर खड़ा हो गया। उसका जी चाह रहा था कि कहीं चला जाये लेकिन उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि जाये कहाँ। बहुत देर हो गयी थी; माशा सो रही थी और याकोव सिर में दर्द होने की वजह से बिस्तर पर लेटा था। याकोव से मिलने जाने से इल्या कतराता भी था क्योंकि उसे देखते ही पेत्रूख़ा की त्योरियाँ चढ़ जाती थीं। पतझड़ की ठण्डी हवा चल रही थी। अँधेरा इतना घना था कि आसमान बिल्कुल दिखाई नहीं देता था। अहाते में सभी मकान अँधेरे के काले-काले धब्बों जैसे दिखाई दे रहे थे जिन्हें हवा ने जमा दिया था। सीली हुई हवा में कोई चीज़ ज़ोर से टकरायी और चाबुक फटकारने जैसी आवाज़ हुई और एक विचित्र-सी मन्द-मन्द मर्मर ध्वनि भर गयी, लोगों की शिकायतों जैसी दबी-दबी आवाज़ की तरह। हवा के झोंके इल्या के सीने पर लग रहे थे, उसके चेहरे पर थपेड़े मार रहे थे और उसके कॉलर में घुसकर फूँक मार रहे थे... इल्या सिहर उठा और उसने मन ही मन कहा कि वह अब और ज़्यादा दिन तक इस तरह अपनी ज़िन्दगी नहीं बिताता रह सकता। उसे इस गन्दगी और गड़बड़ी से दूर चला जाना चाहिए और अकेले रहना

चाहिए बिल्कुल अकेले एक साफ़-सुथरी और शान्त ज़िन्दगी बितानी चाहिए...

"कौन है?" किसी की भर्राई हुई आवाज़ आयी।

"कौन जानना चाहता है?"

"मैं हूँ... मुटल्ली..."

"कहाँ हो तुम?"

"यहाँ लकड़ी के ढेर पर बैठी हूँ..."

"किसलिए?"

"कुछ नहीं, यों ही..."

थोड़ी देर ख़ामोशी रही...

"आज के दिन मेरी माँ मरी थी," अँधेरे में से आवाज़ आयी।

"उसे मरे बहुत दिन हो गये?" इल्या ने बस कुछ कहने की ख़ातिर पूछा।

"बहुत दिन हो गये... लगभग पन्द्रह बरस... शायद ज़्यादा ही हो गये हों... तुम्हारी माँ ज़िन्दा है?"

"नहीं, वह भी मर गयी... तुम्हारी उम्र कितनी है?"

मुटल्ली ने फ़ौरन जवाब नहीं दिया।

"लगभग यही कोई तीस साल...", उसने सीटी जैसी आवाज़ निकालते हुए कहा। "मेरी टाँग में कुछ हो गया है। तरबूज की तरह फूल गयी है और बहुत दुखती है। मैंने उसकी मालिश की। हर तरह की चीज़ों से मालिश की लेकिन कोई फ़ायदा नहीं होता।"

किसी ने शराबख़ाने का दरवाज़ा खोला। ऊँची आवाज़ों का एक झुण्ड तेज़ी से बाहर निकला; हवा ने उन्हें झपट लिया और अँधेरे में बिखेर दिया।

"तुम यहाँ किसलिए खड़े हो?" मुटल्ली ने पूछा।

"बस यों ही... उदासी के मारे..."

"मेरी तरह... मेरा कमरा तो ताबूत जैसा है।"

इल्या ने उसे एक लम्बी साँस लेते हुए सुना।

"मेरे साथ ऊपर आओ," वह बोली।

इल्या ने उस तरफ़ नज़र डाली जिधर से आवाज़ आ रही थी।

"अच्छी बात है," उसने अनमनेपन से कहा।

मुटल्ली उसके आगे-आगे सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। पहले वह अपना दाहिना पाँव जीने पर रखती, फिर कराहते हुए धीरे-धीरे बायाँ पाँव उठाती। उतने ही धीरे-धीरे उसके पीछे-पीछे चलते समय इल्या का दिमाग़ खाली था, मानो उदासी के बोझ ने उसकी रफ़्तार धीमी कर दी हो, जिस तरह दर्द की वजह से मुटल्ली की रफ़्तार धीमी हो गयी थी।

मुटल्ली का कमरा लम्बा और पतला था और उसकी छत सचमुच ताबूत के ढक्कन जैसी लगती थी। दीवार में दरवाज़े के पास एक बड़ा-सा चूल्हा बना हुआ था, दीवार के किनारे एक चौड़ा-सा पलंग बिछा था जिसका सिरहाना चूल्हे की ओर था; पलंग के सामने एक मेज़ थी जिसके दोनों ओर एक-एक कुर्सी पड़ी थी। खिड़की के पास, जो सुरमई दीवार में एक काले चौखटे की तरह थी, एक और कुर्सी रखी थी। शराबख़ाने का शोर और हवा की रोने-जैसी आवाज़ यहाँ ज़्यादा साफ़ सुनायी देती थी। इल्या खिड़की के पास वाली कुर्सी पर बैठ गया और उसने अपने चारों ओर नज़र डाली।

"वह किसकी प्रतिमा है?" एक कोने में लटकी हुई छोटी-सी प्रतिमा पर नज़र पड़ने पर उसने पूछा।

"सन्त आन्ना की," मुटल्ली ने श्रद्धा से धीमी आवाज़ में जवाब दिया।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम भी आन्ना है... तुम्हें मालूम नहीं था?"

"नहीं।"

"किसी को भी नहीं मालूम," और यह कहकर वह धम्म से पलंग पर बैठ गयी। इल्या उसे देखता रहा; उसे बात करने की कोई इच्छा नहीं हो रही थी। वह भी चुप थी। और इस तरह बहुत देर तक, लगभग तीन मिनट तक, वे कुछ भी बोले बिना बैठे रहे, जैसे दोनों को दूसरे की मौजूदगी का पता ही न हो।

"तो अब क्या करना है?" आख़िरकार उस औरत ने पूछा।

"मालूम नहीं...", इल्या बोला।

"अरे, यह भी नहीं मालूम?" उस औरत ने शंकित स्वर में हँसकर कहा। "मुझे कुछ खिलाने-पिलाने के बारे में क्या खयाल है। एक-दो बोतल बीयर ख़रीद लाओ या, रहने दो, जाकर मेरे लिए कुछ खाने को ख़रीद लाओ! खाने के अलावा और कुछ न ख़रीदना!..."

उसकी आवाज़ उखड़ गयी और वह खाँसने लगी।

"देखो...", उसने बहुत सकुचाते हुए कहा, "जब से मेरी टाँग में यह तकलीफ़ हुई है तब से मेरी कोई कमाई नहीं हुई। बाहर निकल ही नहीं पाई... घर में जो कुछ था वह मैंने खा-पी कर ख़त्म कर दिया... पाँच दिन से यहाँ टापे में बन्द हूँ। कल मैंने लगभग कुछ नहीं खाया और आज-आज तो कुछ भी नहीं खाया... भगवान की क़सम खाकर कहती हूँ।"

और अब इल्या को पहली बार याद आया कि मुटल्ली रण्डी थी। वह उसके बड़े-से चेहरे को घूरने लगा और उसने देखा कि उसकी काली आँखों में हल्की-सी मुस्कराहट थी और उसके होंठ इस तरह हिल रहे थे जैसे वह कोई चीज़ चूस रही हो...

अचानक उसके सामने इल्या कुछ सकुचाने लगा, फिर भी उसे उसके प्रति एक अस्पष्ट-सी रुचि पैदा हुई।

"मैं कुछ लिए आता हूँ..."

वह झट से उठ खड़ा हुआ और तेज़ी से सीढ़ियाँ उतरता हुआ शराबख़ाने में जाकर बावर्चीख़ाने के दरवाज़े पर आकर खड़ा हो गया। अचानक उसके दिल में अटारी में वापस जाने की कोई इच्छा बाक़ी नहीं रह गयी। लेकिन यह भावना क्षणिक थी जो उसकी आत्मा के उदास अँधेरे में चिनगारी की तरह चमककर फ़ौरन बुझ गयी। वह बावर्चीख़ाने में घुसा और उसने दस कोपेक का बचा-खुचा गोश्त, रोटी और खाने की कुछ दूसरी चीज़ें ख़रीदीं। बावर्ची ने सारी चीज़ें चिकनाई से मैली एक छलनी में रख दी जिसे इल्या ने अपने दोनों हाथों में इस तरह पकड़ लिया जैसे वह कोई तश्तरी हो। दरवाज़े से बाहर निकलकर वह एक बार फिर रुका और सोचने लगा कि बीयर कैसे ले। वह खुद काउण्टर पर जाकर ख़रीद नहीं सकता था क्योंकि तेरेन्ती उससे ज़रूर ढेरों सवाल करता। इसलिए उसने बर्तन माँजने वाले को बुलाया और उससे बीयर ख़रीद लाने को कहा। वह आदमी भागकर शराबख़ाने में गया और वापस आकर उसने एक भी शब्द कहे बिना बोतलें उसकी बग़लों में घुसेड़ दीं और बावर्चीख़ाने में वापस जाने लगा।

"सुनो!" इल्या ने कहा, "यह मेरे लिए नहीं है... मेरे यहाँ एक दोस्त आया है..."

"क्या कहा?" बर्तन माँजने वाले ने पूछा।

"एक आदमी मुझसे मिलने आया है..."

"अच्छा... तो क्या हुआ?"

इल्या ने महसूस किया कि झूठ बोलने की ज़रूरत नहीं थी, और इस बात से उसे अपने ऊपर झुँझलाहट-सी होने लगी। वह बिना कोई जल्दी किये ध्यान से सुनता हुआ सीढ़ियाँ चढ़ने लगा, जैसे वह उम्मीद कर रहा हो कि कोई उसे रोकेगा। लेकिन उसे हवा की हुंकार के अलावा कुछ भी सुनायी नहीं दिया; किसी ने उसे नहीं रोका, और वह औरत के पास वापस पहुँच गया; उसके मन में डरी-डरी वासना भरी हुई थी, जो फिर भी स्पष्ट रूप से अपने अस्तित्व को मनवाने का आग्रह कर रही थी।

मुटल्ली ने छलनी अपनी गोद में रख ली और खाने के सुरमई टुकड़े मोटी-मोटी उँगलियों से निकालकर अपने खुले हुए चौड़े मुँह में ठूँसने लगी और चप-चप की आवाज़ करके उन्हें चबाने लगी। उसके दाँत बड़े-बड़े और पैने थे और हर कौर को उनके बीच ढकेलने से पहले वह उसे चारों ओर से उलट-पलटकर देखती थी मानो यह पता लगा रही हो कि उसका कौन-सा हिस्सा सबसे रसीला है जिसे चबाया जाये।

इल्या नज़रें जमाये उसे घूर रहा था और सोच रहा था कि वह किस तरह उसका आलिंगन करेगा। इस डर की वजह से कि वह ऐसा कर नहीं पायेगा और वह उस पर हँसेगी, वह उस पर बारी-बारी से कभी गरम हो जाता और कभी ठण्डा पड़ जाता।

खिड़की से आती हुई तेज़ हवा कमरे के दरवाज़े पर सिर पटक रही थी, और हर बार जब दरवाज़ा हिलता था तो इल्या चौंक पड़ता था, वह सहम जाता था कि कहीं कोई अन्दर आकर उसे वहाँ पकड़ न ले...

"दरवाज़ा बन्द न कर दूँ?" वह बोला।

मुटल्ली ने सहमति प्रकट करते हुए सिर हिलाया। फिर उसने छलनी चारपाई पर रख दी और उँगलियों से अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया।

"भगवान की कृपा है मेरा पेट भर गया। आदमी को ख़ुश रहने के लिए चाहिए ही कितना!"

इल्या कुछ नहीं बोला। मुटल्ली ने उस पर एक नज़र डालकर आह भरी और फिर इतना और जोड़ दिया :

"जिसे ज़्यादा दिया जायेगा, उससे ज़्यादा माँगा भी जायेगा!" वह बोली।

"कौन माँगेगा?"

"भगवान..."

इल्या फिर कुछ नहीं बोला। इस औरत के मुँह से भगवान का नाम सुनकर उसके मन में एक बहुत प्रबल भावना उठ रही थी जिसे शब्दों में व्यक्त करना असम्भव था पर जो उसको अपनी बाँहों में समेट लेने की उसकी इच्छा से टकरा रही थी। मुटल्ली बिस्तर पर हाथ टेककर पलंग पर चढ़ गयी और उसने अपने स्थूल शरीर को दीवार के सहारे टिका दिया।

"जितनी देर मैं खा रही थी, मैं बराबर पेर्फ़ीश्का की बेटी के बारे में सोच रही थी..." उसने खोखले निरीह स्वर में कहना शुरू किया। "बहुत देर उसके बारे में सोचती रही... तुम लोगों के साथ रहती है वह तुम्हारे और याकोव के साथ और मैं समझती हूँ कि इससे कोई अच्छा नतीजा नहीं निकलने वाला है... तुम लोग उस लड़की को खराब कर दोगे, और उसे भी उसी रास्ते चलना पड़ेगा, जो मैंने पकड़ा है... बहुत ही गन्दा और मनहूस रास्ता है यह... लड़कियाँ और औरतें इस रास्ते पर चलती नहीं हैं अपने पेट के बल इस पर रेंगती हैं..."

वह कुछ देर चुप रही और फिर गोद में रखे हुए अपने हाथों को एकटक देखते हुए उसने कहना जारी रखा :

"कुछ ही दिन में वह जवान हो जायेगी। मैंने एक जान-पहचान के बावर्ची से और कुछ दूसरी औरतों से पूछा था कि उसकी जैसी लड़की के लिए कहीं कोई नौकरी

तो नहीं है? कोई नौकरी नहीं है, वे कहते हैं... कहते हैं उसे बेच दो... उसके लिए सबसे अच्छा यही होगा उसे कपड़े और पैसा मिलेगा... और रहने के लिए घर मिलेगा. .. ऐसा होता है, मैं जानती हूँ, ऐसा होता है... कभी-कभी जब कोई बूढ़ा आदमी कमज़ोर और बेकार हो जाता है और किसी औरत के काम का नहीं रह जाता, तो वह खूसट बूढ़ा घोंघा जाकर अपने लिए कोई लड़की ख़रीद लेता है... शायद उसके लिए यही ज़्यादा अच्छा हो... लेकिन शुरू-शुरू में बहुत घिनौना लगेगा... अच्छा तो यही होगा कि इसके बिना ही काम चल जाये... कहीं अच्छा होगा कि वह भूखी रहे, पर साफ़, बजाय इसके कि..."

वह इस तरह खाँसने लगी जैसे कोई शब्द उसके गले में अटक गया हो। लेकिन जल्दी ही उसने फिर उसी निरीह स्वर में अपना वाक्य पूरा किया :

"... बजाय इसके कि वह भूखी भी रहे और गन्दी भी रहे..."

हवा अटारी में से होकर तेज़ी से चलती रही और दरवाज़े को बड़ी ढिठाई से थपथपाती रही।

उस औरत के सपाट स्वर और उसके भारी और निश्चल शरीर की वजह से लड़के की भावनाओं पर ओस-सी पड़ती जा रही थी और अपनी वासना को सन्तुष्ट करने के लिए आवश्यक साहस से वह वंचित होता जा रहा था। ऐसा लग रहा था कि मुटल्ली उसे लगातार अपने से दूर ढकेलती जा रही है, और इस बात से उसे झुँझलाहट हो रही थी।

"हे भगवान, भगवान!" मुटल्ली ने धीरे-से आह भरकर कहा। "हे पवित्र देवी-माँ मरियम!..."

इल्या झल्लाकर अपनी कुर्सी पर कसमसाया।

"ख़ुद कहती हो कि तुम गन्दी हो, और फिर भी भगवान की दुहाई देती रहती हो!" उसने कठोर स्वर में कहा। "क्या तुम समझती हो कि भगवान को उसकी ज़रूरत है?"

मुटल्ली ने कुछ कहे बिना उसकी ओर देखा।

"तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आती..." आख़िरकार उसने सिर हिलाकर कहा।

"काफ़ी आसानी से समझ में आ जाने वाली बात है मेरी!" इल्या ने उठते हुए कहा। "तुम रण्डी हो, पहले पाप करती हो फिर भगवान को याद करती हो। अगर भगवान पर विश्वास करती हो तो रण्डी का धन्धा छोड़ दो..."

"अरे, अरे!" औरत बेचैन होकर चिल्लायी। "क्या कह रहे हो तुम? हम पापी नहीं देंगे तो फिर कौन दुहाई देगा भगवान की?"

"यह तो मैं नहीं जानता कौन देगा!" इल्या ने बुदबुदाकर कहा, उसका हृदय इस औरत का और पूरी मानवजाति का अपमान करने की अदम्य इच्छा से भर उठा था। "लेकिन इतना मैं जानता हूँ कि उसका नाम लेने का अधिकार तुम लोगों को नहीं है! हाँ, तुम्हें नहीं है! तुम तो बस एक-दूसरे की आँख में धूल झोंकने के लिए उसके नाम की आड़ लेती हो। अब मैं बच्चा नहीं रहा... मैं ख़ुद हर बात को समझता हूँ। हर आदमी रोता है और शिकायत करता है, लेकिन सभी अपना गन्दा धन्धा चलाते रहते हैं। वे एक-दूसरे को बेवकू फ़ क्यों बनाते हैं! एक-दूसरे को लूटते क्यों हैं? वे पहले पाप करते हैं, फिर भगवान के सामने घुटने टेककर दया की भीख माँगने लगते हैं। मैं सब समझता हूँ... मक्कार, ढोंगी हो तुम लोग... तुम अपने आप को भी धोखा देते हो और भगवान को भी..."

मुटल्ली चुपचाप मुँह खोले, अपना सिर आगे की ओर बढ़ाये और अपनी आँखों में आश्चर्य भरे उसे देखती रही। इल्या दरवाज़े के पास गया, झटके से कुण्डा खोला, और बाहर निकलकर धड़ से दरवाज़ा बन्द कर दिया। वह जानता था कि उसने मुटल्ली का दिल बहुत दुखाया था, और उसे इस बात की ख़ुशी थी; उसका जी हल्का हो गया था और उसका दिमाग़ कुछ झुलसा हुआ था। धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरते हुए वह किसी धुन पर सीटी बजा रहा था, और उसके दिल में भरा हुआ ज़हर उसे तरह-तरह के फ़ौलाद जैसे कठोर और कष्टदायक शब्द कहने पर मजबूर कर रहा था। उसे लग रहा था कि उन शब्दों की आँच में एक ऐसी चमक थी जो उसके हृदय में अन्धकार को आलोकित कर रही थी, और उसे एक ऐसा मार्ग दिखा रही थी जो उसे लोगों से दूर ले जाता था। इन शब्दों से वह मुटल्ली को ही नहीं बल्कि चाचा तेरेन्ती और पेत्रूख़ा और व्यापारी स्त्रोगानी और सभी दूसरे लोगों को सम्बोधित कर रहा था।

बाहर आँगन में निकलते हुए उसने अपने आप से कहा : "मुझे कोई परवाह नहीं है। अगर मैं तुम्हारी भावनाओं को ठेस पहुँचाता भी हूँ तो क्या हुआ? कचरा ही तो हो तुम तुम सबके सब!"

इसके शीघ्र ही बाद वह औरतों के पास जाने लगा। उसका पहला अनुभव इस प्रकार हुआ : एक दिन शाम को जब वह घर लौट रहा था तो एक औरत ने उससे कहा :

"चलते हो, राजा?"

उसने उसकी ओर देखा और एक शब्द भी कहे बिना साथ हो लिया। लेकिन जाते-जाते वह सिर झुकाये चारों ओर देखता जा रहा था; वह डर रहा था कि उसकी जान-पहचान का कोई आदमी उसे कहीं देख न ले।

"एक रूबल की चोट होगी," कुछ दूर चलने के बाद उस औरत ने चेतावनी दी।

"कोई बात नहीं," इल्या बोला। "जल्दी करो..."

और चुपचाप चलते हुए वे उस औरत के दरवाज़े तक पहुँच गये थे। बस इतना ही हुआ था...

इस नये शौक़ में उसका बहुत पैसा खर्च होने लगा; वह यही सोचता रहता था कि उसका फेरी लगाकर चीज़ें बेचना वक़्त की खराबी थी और उससे उसे कभी इज़्ज़त की साफ़-सुथरी ज़िन्दगी बसर करने का मौक़ा नहीं मिल पायेगा। एक बार तो उसे यह लालच भी हुआ कि दूसरे फेरीवालों की तरह वह भी अपना माल लॉटरी से बेचकर ग्राहकों को बेवकू फ़ बनाये। लेकिन उसने फ़ैसला किया कि यह घटिया और झंझट में फँसाने वाला धन्धा है। उसे पुलिस से छिपना पड़ेगा या उनके तलुवे सहलाना पड़ेगा और घूस देनी पड़ेगी। इसे वह अपने लिए बहुत गिरी हुई बात समझता था। वह लोगों से आँख मिलाकर रहने का आदी था, और उसे यह जानकर ख़ुशी होती थी कि वह दूसरे फेरीवालों से बेहतर कपड़े पहनता था और शराब नहीं पीता था और किसी को धोखा नहीं देता था। वह सड़क पर धीरे-धीरे बड़ी गरिमा के साथ चलता था; गालों की उभरी हुई हड्डियों वाले उसके दुबले-पतले चेहरे की मुद्रा कठोर और गम्भीर रहती थी; वह शब्दों को तोल-तोलकर बहुत कम बोलता था और उसकी आदत थी कि किसी से बातें करते वक़्त वह अपनी काली आँखें सिकोड़ लेता था। वह अक्सर सोचा करता था कि अगर कोई बहुत बड़ी रक़म उसके हाथ लग जाती तो कितना अच्छा होता यही कोई हज़ार रूबल या उससे भी ज़्यादा। डकैती की चर्चाओं में वह बहुत दिलचस्पी लेता था; वह अख़बार ख़रीदकर हर नयी डकैती का पूरा ब्यौरा पढ़ जाता था, फिर उस वारदात की अगली ख़बरों पर नज़र रखता था कि चोर पकड़े गये कि नहीं। अगर वे पकड़े जाते थे तो उसे ग़ुस्सा आता था और वह उन्हें धिक्कारता था।

"पकड़वा दिया न अपने आपको, काठ के उल्लू कहीं के!" वह याकोव से कहता। "ऐसा काम करने की कोशिश ही क्यों करते हैं जो उनके बस के बाहर हो?"

एक दिन शाम को उसने अपने दोस्त से कहा :

"ईमानदार लोगों के मुक़ाबले चोर ज़्यादा अच्छी तरह रहते हैं।"

याकोव के चेहरे पर तनाव पैदा हो गया, उसकी आँखें सिकुड़ गयीं।

"परसों तुम्हारा चाचा शराबख़ाने में एक बूढ़े के साथ चाय पी रहा था कोई बहुत ज्ञानी आदमी मालूम होता था," उसने बहुत धीमी रहस्य-भरी आवाज़ में कहा, जैसी आवाज़ वह कोई भी गूढ़ बात करते वक़्त अपना लेता था। "वह बूढ़ा कह रहा था कि बाइबिल में लिखा है : 'डाकुओं के डेरों में ख़ुशहाली रहती है, और जो लोग भगवान को चुनौती देते हैं, उन पर कभी कोई आँच नहीं आती, उनके हाथों में भगवान बहुत देता है...'"

"सच कह रहे हो न?" अपने दोस्त की बात बड़े ध्यान से सुनकर इल्या ने पूछा।

"ये शब्द मेरे नहीं हैं," याकोव ने दोनों हाथ फैलाकर मानो हवा में किसी चीज़ को टटोलते हुए कहा। "ये शब्द बाइबिल में लिखे हैं... हो सकता है कि बूढ़े ने ख़ुद गढ़ लिए हों, लेकिन मैंने उससे फिर पूछा था और उसने एक-एक शब्द फिर दोहरा दिया था..."

फिर इल्या की ओर झुककर उसने दबी ज़बान से कहा :

"मेरे बाप की ही ले लो वह दिन-ब-दिन पनप रहा है और वह भगवान को चुनौती देता है।"

"सो तो करता है!" इल्या ने चिल्लाकर कहा।

"और अब तो वह नगर परिषद में भी चुन लिया गया है..."

याकोव ने सिर झुकाकर आह भरी और इतना और जोड़ दिया :

"आदमी जो कुछ भी करता है वह उसके अन्तःकरण के सामने बिल्कुल साफ़-साफ़ आना चाहिए, बिल्कुल अण्डे की तरह गोल और सफ़ेद, लेकिन यहाँ तो... मैं तो तंग आ चुका हूँ इन सब बातों से! मेरी तो समझ में कुछ नहीं आता... मैं इस ज़िन्दगी के लिए नहीं बनाया गया था, मुझे शराबख़ाने से नफ़रत है... पर बाप हर वक़्त मेरी जान खाता रहता है। कहता है, 'कारोबार में लग जाओ! बहुत दिन ऊँघ चुके; काम करना शुरू करो अब!' क्या काम करूँ? जब तेरेन्ती नहीं होता तो मैं काउण्टर पर खड़े होकर शराब बेचता हूँ... मुझे इस काम से नफ़रत है, लेकिन मन मारकर करता हूँ... सचमुच कोई भी काम करने को मेरा जी नहीं चाहता..."

"सीखा करो!" इल्या ने गम्भीर होकर कहा।

"ज़िन्दगी बहुत कठिन है," याकोव ने धीमी आवाज़ में कहा।

"कठिन? तुम्हारे लिए? झूठ बोल रहे हो तुम!" इल्या पलंग से उछलकर खिड़की के पास जाकर, जहाँ याकोव बैठा था, चिल्लाया।

"मेरे लिए कठिन है, यह तो सच है। लेकिन तुम्हारे लिए? जब तुम्हारा बाप बूढ़ा हो जायेगा तब तुम यहाँ के मालिक हो जाओगे। लेकिन मैं? मैं दुकानों की खिड़कियों के सामने से गुजरता हूँ पतलून और वास्कटें... और घड़ियाँ और तरह-तरह की दूसरी चीज़ें देखता हूँ... मैं कभी वैसे पतलून नहीं ख़रीद सकूँगा... मेरे पास कभी वैसी घड़ियाँ नहीं होंगी, समझे? और मैं चाहता हूँ कि वे मेरे पास हों... मैं चाहता हूँ कि लोग मेरा आदर करें... मैं किस बात में दूसरों से कम हूँ? मैं उनसे बेहतर हूँ! पर चोर मेरे सामने डींग मारते हैं, वे नगर परिषद के सदस्य चुन लिए जाते हैं! वे मकानों के और शराबख़ानों के मालिक हैं। ऐसा क्यों है कि सब कुछ चोरों के ही नसीब में है, और मेरे नसीब में कुछ भी नहीं है? मैं चाहता हूँ कि कुछ मेरे नसीब

में भी हो...”

याकोव ने अपने दोस्त को एक नज़र देखा और फिर बहुत धीरे से साफ़-साफ़ कहा :

“भगवान न करे कि तुम्हारे पास हो।”

“क्यों नहीं?” इल्या ने कमरे के बीच में रुककर और उत्तेजित होकर अपने दोस्त को देखते हुए चिल्लाकर पूछा।

“क्योंकि तुम लालची हो। तुम्हें किसी चीज़ से सन्तोष नहीं होगा।”

इल्या सूखी द्वेषपूर्ण हँसी हँस दिया।

“मुझे किसी चीज़ से सन्तोष नहीं होगा? अपने बाप से कह दो कि उसने और मेरे चाचा तेरेन्ती ने दादा येरेमेई का जो पैसा चुराया था उसमें से चाहें तो आधा ही मुझे दे दे, बस मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगा।”

उसी क्षण याकोव उठ खड़ा हुआ और चुपचाप दरवाज़े की ओर चल दिया। इल्या ने देखा कि उसके कन्धे हिल रहे थे और उसकी गर्दन इस तरह झुकी हुई थी, मानो उसे कोई आघात पहुँचा हो।

“ठहरो,” इल्या ने झिझकते हुए अपने दोस्त की बाँह पकड़कर कहा। “जा कहाँ रहे हो?”

“मुझे छोड़ दो, भाई,” याकोव ने दबी आवाज़ से कहा, लेकिन रुककर इल्या की तरफ़ देखा। उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था, उसके होंठ भिंचे हुए थे, और उसका पूरा शरीर ढीला पड़ गया था मानो उसे कुचला गया हो...

“रुको, जाओ नहीं!” इल्या ने बड़ी नरमी से उसे दरवाज़े के पास से खींचकर लाते हुए खिन्न होकर कहा। “नाराज़ न हो। बहरहाल, बात तो सच है ही...”

“मैं जानता हूँ,” याकोव बोला।

“जानते हो? किसने बताया तुम्हें?”

“सभी लोग चर्चा करते हैं इसकी...”

“हुँह... ख़ैर, जो लोग चर्चा करते हैं वे कोई बेहतर नहीं है!”

याकोव ने उसे बड़े विनीत भाव से देखा और गहरी साँस ली।

“मुझे यक़ीन नहीं होता था। मैं सोचता था कि लोग बस जलन के मारे कहते हैं। लेकिन फिर मुझे यक़ीन होने लगा। और अगर तुम भी ऐसा ही कहते हो...”

उसने घोर निराशा से अपना हाथ थोड़ा-सा हवा में घुमाया और अपने दोस्त की ओर से मुँह मोड़कर एक कुर्सी पर निश्चल बैठ गया; उसकी ठोड़ी सीने की ओर झुकी हुई थी और उसकी उँगलियों ने कुर्सी को जकड़ रखा था। इल्या भी याकोव से दूर जाकर उसकी ही जैसी मुद्रा में पलंग पर बैठ गया, उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था

कि अपने दोस्त को तसल्ली देने के लिए क्या कहे।

"तो तुम समझते हो कि मेरी ज़िन्दगी अच्छी है?" याकोव ने धीरे से कहा।

"भाई," इल्या ने उतने ही धीरे से कहा। "मैं समझता हूँ, वह अच्छी तो नहीं है। बस यही तसल्ली है : जिधर देखो वही हाल है..."

"क्या तुम्हें वह बात पक्के तौर पर मालूम है?" याकोव ने अपनी नज़रें उठाये बिना भीरुता के साथ कहा।

"हाँ। याद है उस दिन जब मैं भागकर गया था? मैंने दरवाज़े की एक दरार में से झाँककर देखा था कि वे लोग तकिये को सी रहे थे। उस वक़्त तक उसकी साँस चल रही थी..."

याकोव अपने कन्धे बिचकाकर उठा और दरवाज़े की ओर चल दिया।

"अच्छा, मैं चलता हूँ," वह बोला।

"अच्छी बात है। इतने दुखी न हो... क्या किया जाये?"

"ठीक है," याकोव ने दरवाज़ा खोलते हुए कहा।

इल्या उसे जाता हुआ देखता रहा और फिर पलंग पर गिर पड़ा। उसे याकोव का बड़ा दुख था, और एक बार फिर उसे अपने चाचा से, पेत्रूख़ा से और आम तौर पर सभी लोगों से बेहद झुँझलाहट हो रही थी। याकोव जैसा आदमी उन जैसे लोगों के बीच नहीं रह सकता था। वह अच्छा था। वह निष्कलंक था और नेक था। इल्या लोगों के बारे में सोच रहा था और उसकी स्मरण-शक्ति ने उसे कितने ही ऐसे उदाहरण दिये जिनसे यह साबित होता था कि वे लोग कितने बेरहम, कितने झूठे और कितने द्वेष से भरे हुए थे। उसे इस तरह के इतने उदाहरण याद थे कि वह बड़ी आसानी से पूरी मानवजाति को अपनी स्मृतियों के कीचड़ से नहला सकता था। उनकी आकृतियाँ जितनी ही अधिक गन्दगी में लिथड़ी हुई होती थीं, उतनी ही अधिक उनसे पैदा होने वाली भावनाएँ दम घोंटने वाली होती थीं; ये भावनाएँ विषाद का, द्वेषयुक्त आनन्द का और इस आभास से उत्पन्न होने वाले भय का मिश्रण थीं कि उसके चारों ओर उन्मत्त होकर चक्कर काटने वाले अन्धकारमय और दुखद जीवन के बीच वह बिल्कुल अकेला था।

जब उसके लिए वहाँ उस छोटी-सी कोठरी में दीवार को पार करके शराबख़ाने से आती हुई धुँधली और बदबूदार आवाज़ों के बीच अकेले पड़े रहना असह्य हो गया तो वह उठकर बाहर चला गया। रात बड़ी देर तक वह शहर की सड़कों पर टहलता रहा, लेकिन वह व्यथित करने वाले अपने सरल-से विचारों से छुटकारा न पा सका। अँधेरे में वह चलता रहा और सोचता रहा कि जैसे कोई शत्रु उस पर नज़र रख रहा था और उसको बदतरीन, सबसे मनहूस जगहों की ओर ढकेल रहा था, जहाँ उसे ऐसी

चीज़ों के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता था जो उसकी आत्मा में विषाद और उसके हृदय में विष भर देती थीं। यक़ीनन इस दुनिया में कुछ तो अच्छा होगा : अच्छे लोग, अच्छे काम, और अच्छे जीवन का कोई उल्लासमय ढर्रा। वह कभी उनके सम्पर्क में क्यों नहीं आया? जो बुरा था और खीझ पैदा करने वाला था उसके अलावा और कुछ उसने कभी क्यों नहीं जाना? वह कौन था जो उसे हमेशा अँधेरे की ओर, गन्दगी की ओर और बुराई की ओर ले जाता रहता था?

ऐसे ही विचारों में जकड़ा हुआ वह शहर के बाहर खेतों में एक मठ की पत्थर की दीवार के किनारे-किनारे चला जा रहा था और अपने सामने देख रहा था। उसने ऊपर नज़रें उठाकर देखा तो दूर अँधेरे में से काले-काले बादल उसकी ओर उमड़ते चले आ रहे थे। सिर पर छाये हुए बादलों के बीच-बीच में दरारें थीं, जिनमें से आकाश की नीलिमा झलक रही थी जिस पर नन्हें-नन्हें सितारे टिमटिमा रहे थे। कभी-कभी मठ के गिरजाघर का पीतल का घण्टा अपनी सुरीली आवाज़ रात के निस्तब्धता में उड़ेल देता था, लेकिन और कुछ भी इस मौत जैसे सन्नाटे को छेड़ने के लिए नहीं था। इल्या अपने पीछे जिस शहर को छोड़ आया था उसकी घनीभूत परछाइयों से भी कोई आवाज़ खेतों तक नहीं पहुँच रही थी, हालाँकि अभी बहुत देर नहीं हुई थी। रात ठण्डी थी। इल्या मिट्टी के जमे हुए तूदों से ठोकर खाकर बार-बार लड़खड़ा जाता था। उसके विचारों ने उसके मन में भय और अकेलेपन का जो आभास पैदा कर दिया था उसकी वजह से उसके लिए अब और चलते रहना असम्भव हो गया था। वह रुककर मठ की चारदीवारी के ठण्डे पत्थर के सहारे खड़ा हो गया और बार-बार अपने आप से पूछने लगा कि वह कौन था जो उसे उसके जीवन को निर्देशित करता था, वह कौन था जो उसे आगे ले जाता था, जो उसे केवल उन्हीं चीज़ों से परिचित कराता था जो दुष्टता से भरी थीं और एक बोझ जैसी थीं।

"क्या वह तुम हो, भगवान?" यह प्रश्न उसकी आत्मा के अन्धकार में चकाचौंध कर देने वाली रोशनी के साथ चमक उठा।

उस विचार से वह सहम गया और उसके सारे शरीर में एक सिहरन दौड़ गयी। आगे चलकर होने वाली किसी भयानक बात के पूर्वाभास से भरा हुआ वह एक झटके के साथ दीवार से दूर हट आया और जल्दी-जल्दी शहर की ओर वापस चल पड़ा; चलते-चलते वह बार-बार ठोकर खाकर लड़खड़ा जाता था; पीछे मुड़कर देखने से उसे डर लग रहा था; उसके हाथ शरीर से चिपके हुए थे।

कुछ दिन बाद इल्या की मुलाकात पावेल ग्राचोव से हो गयी। शाम का वक़्त था बर्फ़ के नन्हें-नन्हें गाले अलसाये हुए हवा में मँडरा रहे थे और सड़क की बत्तियों की रोशनी में जगमगा रहे थे। सर्दी के बावजूद पावेल ने फ़लालेन की एक क़मीज़-सी

पहन रखी थी जिसे कमर पर बाँधने के लिए पेटी तक नहीं थी। वह कन्धे झुकाये हुए, नज़रें ज़मीन पर जमाए, दोनों हाथ जेबों में डाले धीमी चाल से चला जा रहा था, मानो कुछ ढूँढ़ रहा हो। जब इल्या ने उसके पास पहुँचकर उसे पुकारा तो उसने सिर उठाकर उसके चेहरे की ओर देखा।

"उंह," वह विरक्त भाव से बोला।

"कैसे हो?" इल्या ने उसके साथ-साथ चलते हुए पूछा।

"इससे बुरा भी क्या होता... तुम कैसे हो?"

"चलता है..."

"मैं देखता हूँ कि तुम्हारे पास भी डींग मारने को कुछ है नहीं..."

चलते-चलते वे दोनों कुछ देर तक चुप रहे; दोनों की कुहनियाँ एक-दूसरे को छू रही थीं।

"कभी हम लोगों से मिलने क्यों नहीं आते?" इल्या ने कहा।

"वक़्त नहीं मिलता... हम लोगों को ज़्यादा फुर्सत नहीं मिलती। यह तो तुम्हें मालूम ही है।"

"अगर चाहो तो वक़्त निकाल सकते हो..." इल्या ने झिड़कते हुए कहा।

"नाराज़ न हो... तुम यह तो चाहते हो कि मैं आकर तुमसे मिला करूँ, लेकिन तुम मुझसे मिलने कभी नहीं आते। मुझसे यह तक नहीं पूछा कि मैं रहता कहाँ हूँ..."

"यह बात तो है," इल्या ने मुस्कराकर कहा।

पावेल ने जल्दी से उस पर एक नज़र डाली और कुछ ज़्यादा चुस्ती से कहा :

"मैं अकेला रहता हूँ। कोई भी दोस्त नहीं है। कोई भी आदमी मुझे ऐसा नहीं मिलता जो मुझे पसन्द आये। मैं बीमार था कोई तीन महीने अस्पताल में पड़ा रहा। इस बीच कोई भी तो बन्दा मुझे देखने नहीं आया..."

"क्या हो गया था तुम्हें?"

"शराब पिये हुए था, सर्दी लग गयी... टाइफाइड हो गया... सबसे बुरा तो तब लगता था जब मैं अच्छा होने लगता था! दिन-रात अकेले पड़े-पड़े सोचने लगता था कि बहरा, गूँगा और अन्धा हो गया हूँ। जैसे कोई दुत्कारा हुआ कुत्ते का पिल्ला किसी गड्ढे में डाल दिया गया हो। भला हो डॉक्टर का कि मेरे पास पढ़ने को किताबें थीं। उनके बिना तो मैं मर ही गया होता..."

"अच्छी किताबें थीं?"

"बहुत अच्छी! कविता की किताबें लेर्मोन्तोव, नेक्रासोव, पुश्किन। उन्हें पढ़ना दूध पीने जैसा था। कभी ऐसी कविताएँ मिलती हैं जिन्हें पढ़कर लगता है कि जिस लड़की से तुम प्यार करते हो वह तुम्हें चूम रही है। फिर कभी कोई कविता ऐसी

मिलती है जो तुम्हारे दिल के पत्थर पर छेनी की तरह करारी चोट करती है, और उससे ऐसी चिंगारी निकलती है कि तुम्हारा सारा अस्तित्व ज्वाला बनकर धधक उठता है...”

“मेरी तो पढ़ने की आदत ही छूट गयी,” इल्या ने आह भरकर कहा। “जो पढ़ते हो वह कुछ और होता है, जो देखते हो वह कुछ और होता है...”

“यही अच्छा है... चलो, शराबख़ाने में चलें? कुछ बातें करेंगें... मुझे कहीं जाना है; लेकिन अभी बहुत जल्दी है...”

“आओ, चलें,” इल्या ने कहा और पावेल की बाँह थाम ली।

पावेल ने एक बार फिर जल्दी से उसकी ओर देखा और मुस्करा दिया। “हमारी दोस्ती कभी बहुत गहरी नहीं थी,” वह बोला, “लेकिन तुम से मिलकर मुझे हमेशा बड़ी ख़ुशी होती है...”

“मालूम नहीं तुम्हें होती है कि नहीं, लेकिन मुझे तो ज़रूर होती है,” इल्या ने कहा।

“अरे, भाई, तुम नहीं जानते कि जब तुम मेरे पास आये थे उस वक़्त मैं क्या सोच रहा था!” पावेल ने उसकी बात काटते हुए कहा। “लेकिन उसे भूल जाना ही अच्छा है!” वह चुप हो गया और उसके क़दम ढीले पड़ गये।

रास्ते में जो पहला शराबख़ाना आया उसमें जाकर वे एक कोने में बैठ गये और उन्होंने बीयर मँगायी। लैम्प की रोशनी में इल्या ने देखा कि पावेल का चेहरा बहुत दुबला-पतला और उतरा हुआ था। उसकी आँखों में बेचैनी थी, और उसके होंठ, जो हमेशा व्यंग्य-भरी मुस्कराहट से खुले रहते थे, अब कसकर भिंचे हुए थे।

“कहाँ काम करते हो तुम?” इल्या ने पूछा।

“वहाँ छापेख़ाने में,” पावेल ने उदास भाव से कहा।

“मुश्किल काम है?”

“काम तो मुश्किल नहीं है, लेकिन चिन्ता मारे डालती है।”

इल्या को यह देखकर कुछ सन्तोष मिल रहा था कि उसका दोस्त जो कभी इतना मस्त और फुर्तीला हुआ करता था, अब ऐसा बेजान और निराश हो गया था। उसे यह जानने की इच्छा थी कि यह परिवर्तन किस चीज़ की वजह से आया होगा। और उसने पावेल का गिलास जोश से भरते हुए पूछा :

“कविता अब भी लिखते हो?”

“अब तो नहीं, पहले बहुत लिखता था। डॉक्टर को दिखाई भी थीं। उसने तारीफ़ की थी। मेरी एक कविता अख़बार में छपवाई भी थी।”

“ओह-हो!” इल्या ने प्रसन्न होकर कहा। “किस तरह की कविता? कुछ मुझे भी तो सुनाओ!”

इल्या की जिज्ञासा और बीयर के कुछ गिलासों ने पावेल में नयी जान डाल दी। उसकी आँखें चमकने लगीं और उसके पीले गालों पर लाली के दो धब्बे उभर आये।

"किस तरह की?" अपने माथे को ज़ोर से रगड़ते हुए उसने इल्या के शब्दों को दोहराया। "मैं भूल गया हूँ   सचमुच भूल गया हूँ! ठहरो, शायद कुछ याद आ जाये। वे मेरे दिमाग़ में हमेशा छत्ते में मक्खियों की तरह भनभनाती रहती हैं   भन्न! भन्न! कभी-कभी जब मैं लिखना शुरू करता हूँ   तो उत्तेजित भी हो जाता हूँ, ऐसा लगता है कि मैं फट जाऊँगा, और मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं। मैं चाहता हूँ कि कविता बहुत अच्छी और सुथरी हो लेकिन... कोई शब्द नहीं सूझते..." उसने आह भरकर अपना सिर झटके के साथ पीछे की ओर झुका लिया। "मेरे अन्दर बहुत कुछ भरा है, लेकिन काग़ज़ पर फैलकर वह कुछ भी नहीं रह जाता..."

"कुछ सुनाओ तो," इल्या ने आग्रह किया। वह पावेल को जितना ही देखता था उसकी उत्सुकता उतनी ही बढ़ती जाती थी, और उसकी उस उत्सुकता में धीरे-धीरे उदासी मिली सहानुभूति जुड़ती जाती थी।

"बहुत मसख़रेपन की होती हैं जो कविताएँ मैं लिखता हूँ। सब कुछ बस अपनी ज़िन्दगी के बारे में," पावेल ने झेंपी-झेंपी मुस्कराहट के साथ कहा। फिर उसने अपने चारों ओर नज़र दौड़ायी, गला साफ़ किया और अपने दोस्त से नज़रें मिलाने से कतराते हुए दबी जुबान से कविता सुनाने लगा :

रात है... उदासी है!
पार निकलकर खिड़की के
धुँधले-धुँधले शीशे से
फीकी-फीकी चाँद की किरणें
अपना सारा नूर समेटे
मैले-मैले फर्श पे मेरे
कब से आकर लोट रही हैं,
दीवार के रिसते गीले पत्थर पर
उस पर चिपके मैले काग़ज़ के
फटे-पुराने चप्पों पर
सिर अपना फोड़ रही हैं :
कमरे की मायूसी में
खुलने वाले दरवाज़े के
जर्जर हिलते तख़्तों पर
इक जाल-सा बुनती है कब से :
गुमसुम, खोया-खोया-सा

मैं बैठा हूँ ख़ामोशी में
जाने नींद नहीं क्यों आती है...

पावेल ने रुककर साँस ली और फिर पहले से भी ज़्यादा धीमी आवाज़ में और धीरे-धीरे सुनाने लगा :

गला घोंट रखा है ज़िन्दगी ने
हर तरफ़ से थपेड़े, लगातार बौछार चोटों की,
कभी टीस उठती है सीने में
कभी पीठ पर पड़ता है घूँसा
संजोये बैठा था कब से मैं इक आस दिल में
सो वह भी अब चूर हो चुकी है,
मेरे पास अब बचा ही क्या है
वोद्का की इस बोतल के सिवा,
चाँदनी में जो झिलमिलाती है
जब बढ़ाता हूँ हाथ उसकी जानिब
पुराने दोस्त की तरह मुस्कराती है।
चलो, यों ही सही।
हर ज़ख़्म को मेरे शराब से भर दो
जब दिमाग़ पर छा जायेगा धुँधलका-सा,
यह दर्द भी गुजर जायेगा,
मुझे चैन आयेगा,
मैं नींद के गहरे समुन्दर में
डूब जाऊँगा...
क्यों न पी लूँ एक जाम और भरकर?
यह कुछ बात हुई!
न पीये जिनको नींद आती है
तुझे तो दर्द मेरा पिलाता है।

कविता पूरी करके उसने जल्दी से एक नज़र इल्या पर डाली और अपना सिर पहले से भी ज़्यादा झुका लिया।

"मेरी ज़्यादातर कविताएँ ऐसी ही हैं," उसने बुदबुदाकर कहा।

वह उँगलियों से मेज़ पर तबला बजाने लगा और अपनी कुर्सी पर कसमसाने लगा।

इल्या आश्चर्यचकित होकर और साथ ही शंका के भाव से कुछ क्षण तक उसे घूरता रहा। लयबद्ध पंक्तियाँ उसके कानों में गूँजती रहीं और उसे सहज ही यह

विश्वास नहीं हो रहा था कि वे इस दुबले-पतले लड़के की लिखी हुई थीं जो एक मोटे कपड़े की पुरानी कमीज़ और बेडौल जूते पहने उसके सामने बैठा था और जिसकी आँखों में इतनी बेचैनी थी।

"इसमें कोई ऐसी मसख़रेपन की बात तो नहीं है," आख़िरकार उसने पावेल को नज़रें जमाकर देखते हुए धीमे स्वर में शब्दों को खींच-खींचकर कहा। "मुझे तो अच्छी लगी... मेरी आँखों में तो आँसू आ गये सच कहता हूँ... फिर पढ़कर सुनाओ..."

पावेल ने जल्दी से अपना सिर ऊपर उठाया और ख़ुश होकर अपने दोस्त की ओर देखा।

"सचमुच तुम्हें अच्छी लगी?" उसने अपनी कुर्सी और क़रीब खींचते हुए धीरे से कहा।

"क्या सवाल है! तुम समझते हो कि मैं तुमसे झूठ बोलूँगा?"

पावेल ने कविता फिर पढ़कर सुनायी धीरे-धीरे, विचारमग्न होकर, और जब आवाज़ जवाब देने लगती तो बीच-बीच में रुककर और लम्बी साँसें भरकर। उसके दुबारा कविता सुनाने पर इल्या को इस बात में और भी सन्देह होने लगा कि वे कविताएँ पावेल ने ख़ुद लिखी थीं।

"कुछ और सुनाओ," उसने कहा।

"शायद बेहतर यह होगा कि मैं किसी दिन तुमसे मिलने आऊँ और अपनी कापी साथ लेता आऊँ... मेरी सारी कविताएँ बहुत लम्बी हैं... और फिर मुझे अब चलना भी चाहिए! और मेरी याद भी बहुत खराब है... मुझे बस शुरू का और आख़िर का हिस्सा याद रहता है... एक कविता है : मैं रात को जंगल में चला जा रहा हूँ, रास्ता भटक गया हूँ, थककर चूर हो गया हूँ और सहमा हुआ हूँ... बिल्कुल अकेला... तो रास्ता खोजते हुए मैं कहता हूँ :

पाँव बोझिल
सिर झुका हुआ
पीड़ा से।
कहाँ जाऊँ मैं?
हे, धरती माँ,
मुझे रास्ता दिखा।
मैं गिर पड़ा धरती पर
एक छतनार पेड़ के नीचे
गाल रख दिया धरती पर
और मेरे दिल ने

एक आवाज़ सुनी
कोई कान में कह रहा था :
"मेरे पास आओ!"

"सुनो, इल्या मेरे साथ चलो। चलो तो। मैं अभी तुमसे अलग होने को तैयार नहीं हूँ..."

पावेल जल्दी करते हुए इल्या की बाँह पकड़कर उसे खींचता रहा और उसे बड़े स्नेह से उसके चेहरे को देखता रहा।

"अच्छी बात है!" इल्या राज़ी हो गया। "मैं भी अभी तुमसे अलग नहीं होना चाहता... तुमसे ईमानदारी की बात कहूँ मुझे विश्वास भी है और इसके साथ शंका भी है कि ये तुमने लिखी हैं... तुम हो ही ऐसे विचित्र जीव। और कविताएँ कितनी अच्छी बन पड़ी हैं..."

"तो तुम्हें विश्वास नहीं होता कि वे मेरी हैं?"

"ख़ैर, अगर तुम्हारी हैं, तो तुम कमाल के आदमी हो," इल्या ने सच्चे दिल से कहा।

"बस देखते जाओ मैं लिखना सीखूँगा, तब देखना मेरा कमाल!"

"शाबाश, आगे बढ़ते रहो!"

"अरे, इल्या! काश मैं कुछ ज़्यादा बुद्धिमान होता!..."

वे एक-दूसरे के शब्दों को झपटते हुए, तेज़ी से उन्हें लोकते हुए और दूसरे की ओर फेंकते हुए, लम्बे-लम्बे क़दम बढ़ाते सड़क पर चले जा रहे थे, और जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते जा रहे थे वैसे-वैसे उनका जोश भी बढ़ता जा रहा था और उनके बीच ज़्यादा भाईचारा पैदा होता जा रहा था। दोनों यह जानकर बेहद ख़ुश थे कि दूसरा उसके विचारों से सहमत था, और उनकी उमंग उल्लास के पंखों से उड़ती हुई ऊँची उठती जा रही थी। अब बर्फ़ तेज़ी से गिरने लगी थी। वह उनके चेहरों पर पिघल रही थी, उनके कपड़ों पर जमती जा रही थी और उनके जूतों पर चिपक रही थी; उनके चारों ओर पतला-पतला कीचड़ फैला था।

"लानत है!" कीचड़ और मैले पानी से भरे हुए एक गड्ढे में पाँव पड़ते ही इल्या चिल्ला उठा।

"बायीं ओर को होकर चलो..."

"कहाँ जा रहे हैं हम लोग?"

"सिदोरिखा के यहाँ। उसका ठिकाना जानते हो?"

"जानता हूँ..." इल्या ने कुछ देर रुकने के बाद कहा, फिर हँसते हुए बोला, "हम लोग एक ही रास्ते पर लग जाते हैं।"

"जानता हूँ!" पावेल ने धीरे से कहा। "लेकिन मुझे वहाँ जाना ही है... एक ख़ास वजह से... मैं तुम्हें बताता हूँ क्यों, हालाँकि यह बताना बला का मुश्किल काम है..."

उसने ज़ोर से थूका।

"सुनो वहाँ एक लड़की है। देखना कैसी है... देखते ही दिल जैसे पिघलने लगता है... जिस डॉक्टर ने मेरा इलाज किया था उसके यहाँ ऊपर का काम करती थी। अच्छा हो जाने के बाद मैं डॉक्टर के यहाँ किताबें लेने जाया करता था... वहाँ बैठा पढ़ता रहता था... और जब देखो वह वहाँ मँडराती हुई आ जाती थी, तितली की तरह पर फड़फड़ाती हुई, हँसती हुई... मैंने उससे मेलजोल बढ़ाया... उसने एक शब्द भी कहे बिना सीधे आत्म-समर्पण कर दिया... कैसा ज़ोरदार मामला शुरू हो गया हम दोनों के बीच कि बस कुछ पूछो नहीं! ऐसा लगता था कि आसमान तक धधक रहा है! मैं उसकी ओर उड़कर ऐसे जाने लगा जैसे चिराग पर पतंगा जाता है... एक-दूसरे को चूमते-चूमते हम दोनों के होंठ सूज गये थे और हमारी हड्डियाँ तक दुखने लगी थीं। क्या सुन्दर-सलोनी साफ़-सुथरी लड़की थी, इल्या! बिल्कुल खिलौने जैसी। बाँहों में समेट लो तो जैसे कुछ हो ही नहीं। ऐसा लगता था कि जैसे कोई चिड़िया उड़कर मेरे दिल में पहुँच गयी थी और वहाँ गा रही थी, गाये चली जा रही थी..."

वह बोलते-बोलते रुक गया और उसके मुँह से एक अजीब-सी कराह जैसी आवाज़ निकली।

"फिर?" इल्या ने कहा, वह बाक़ी क़िस्सा सुनने को उत्सुक था।

"डॉक्टर की बीवी ने हमें पकड़ लिया... बहुत ही नेक और शरीफ क़िस्म की औरत थी वह, क़सम से। कभी-कभी वह मुझ तक से बातें करती रहती थी... बहुत ही अच्छी तरह... बहुत ही ख़ूबसूरत... मगर चुड़ैल थी वह! बेड़ा ग़र्क हो उसका!"

"तो फिर?"

"तो हुआ यह कि डॉक्टर की बीवी ने बखेड़ा खड़ा कर दिया... वेरा को निकाल दिया गया... बुरी तरह झाड़ा गया वेरा को... और मुझे भी... वेरा आकर मेरे साथ रहने लगी... मेरे पास कोई काम नहीं था उस वक़्त... जो कुछ था हम लोग पोंछ-पाँछकर खा गये... वेरा बड़े जीवट की थी वह... वह भाग गयी... दो हफ़्ते तक गायब रही... फिर मेरे यहाँ आयी... अच्छे-अच्छे कपड़ों में बनी-ठनी, कंगन पहने, ढेरों पैसा लिये..." पावेल दाँत पीसने लगा। "मैंने उसे मारा... बुरी तरह मारा..."

"क्या वह तुम्हें छोड़कर चली गयी?" इल्या ने पूछा।

"नहीं। अगर चली जाती तो मैं नदी में कूदकर जान दे देता... 'या तो मुझे मार डालो', वह बोली, 'या फिर मुझे हाथ न लगाओ। तुम्हें मेरे साथ रहना बहुत मुश्किल लगता है,' वह बोली, 'लेकिन मैं अपना दिल कभी किसी दूसरे को नहीं दूँगी...'"

"और तुमने क्या किया?"

"जो कुछ मैं कर सकता था वह मैंने किया   उसे मारा, झगड़ा किया, रोया... मैं और कर ही क्या सकता था? मैं उसका पेट जो नहीं पाल सकता था।"

"क्या वह कहीं काम नहीं करना चाहती थी?"

"शैतान भी उसे राज़ी नहीं रख सकता था! 'अच्छी बात है!' वह बोली। 'लेकिन हम लोगों के बच्चे होंगे। हम उनका क्या करेंगे? इस तरह तो सब कुछ तुम्हारा है। और कोई बच्चे भी नहीं होंगे'..."

इल्या एक क्षण सोचता रहा।

"बहुत समझदारी की बात है," वह बोला।

पावेल कोई जवाब दिये बिना बर्फ़ीले अँधेरे में झपटकर आगे बढ़ गया।

अपने दोस्त से कोई तीन क़दम आगे निकल जाने पर वह रुका और उसने मुड़कर पीछे देखा।

"जब कभी मैं सोचता हूँ कि कोई दूसरा उसे चूम रहा है तो ऐसा लगता है... ऐसा लगता है जैसे मेरे दिल में पिघला हुआ शीशा उँडेल दिया गया हो," उसने हाँफते हुए कहा।

"तुम उसे छोड़ नहीं सकते?"

"क्या?" पावेल आश्चर्य से चिल्लाया।

उस लड़की को देखने के बाद इल्या को उसका आश्चर्य समझ में आ गया।

शहर के छोर पर वे एकमंजिले मकान के पास पहुँचे। उसकी छह खिड़कियाँ कसकर बन्द थीं, जिसकी वजह से वह देखने में एक लम्बी पुरानी-सी बखारी जैसा लगता था। उसकी दीवारों पर और छत पर गीली-गीली बर्फ़ ऐसे चिपकी हुई थी मानो उस मकान को छिपाने की कोशिश कर रही हो।

"इस तरह के दूसरे घरों के मुकाबले में यह ख़ास क़िस्म का घर है," पावेल ने दरवाज़े पर दस्तक देते हुए कहा। "सिदोरिखा लड़कियों को रहने के लिए कमरा और खाना देती है। हर एक से पचास रूबल महीना लेती है... कुल चार लड़कियाँ हैं... ज़ाहिर है मादाम शराब और बियर और मिठाइयाँ भी बेचती है... लेकिन वह लड़कियों को अपने शिकंजे में कसकर नहीं रखती है   जी चाहे तो बाहर जाओ, नहीं तो घर पर बैठो... उसे बस अपने पचास रूबल की चिन्ता रहती है। लड़कियाँ महंगी हैं   इतना तो वे बड़ी आसानी से कमा लेती हैं। उनमें से एक है   ओलिम्पियादा   वह तो पच्चीस रूबल से कम में मिल ही नहीं सकती।"

"तुम्हारी वाली कितने लेती है?" इल्या ने अपने कोट पर से बर्फ़ झाड़ते हुए कहा।

पावेल ने फ़ौरन कोई जवाब नहीं दिया।

"मुझे मालूम नहीं; वह भी काफ़ी महँगी है," उसने धीरे से कहा।

दरवाज़े के दूसरी तरफ़ कुछ सरसराहट-सी हुई और सुनहरी रोशनी की एक महीन-सी लकीर अँधेरे को चीरती हुई बाहर आयी।

"कौन है?"

"वास्सा सिदोरोव्ना, मैं हूँ... ग्राचोव"

"अच्छा!" दरवाज़ा खुला और एक दुबली-पतली छोटी-सी बुढ़िया ने, जिसके थलथल चेहरे पर बड़ी-सी नाक थी, पावेल के चेहरे के सामने मोमबत्ती लाते हुए उससे कहा, "सलाम! वेरा कब से तुम्हारी राह देख रही है। यह तुम्हारे साथ कौन है?"

"एक दोस्त है।"

"कौन है?" लम्बे, अँधेरे, बड़े-से बरामदे के दूसरे सिरे से किसी की साफ़ आवाज़ सुनायी दी।

"वेरा के पास आये हैं, ओलिम्पियादा," बुढ़िया ने कहा।

"तुम्हारा वाला आया है, वेरा," उसी साफ़ आवाज़ ने पुकारकर कहा।

बरामदे के दूसरे छोर पर एक दरवाज़ा धड़ से खुला और रोशनी के चौकोर की पृष्ठभूमि पर एक लड़की की छोटी-सी आकृति दिखायी दी। वह सिर से पाँव तक सफ़ेद कपड़े पहने थी और सुनहरे बालों की घनी-घनी भारी लटें उसके कन्धों पर बिखरी थीं।

"बहुत देर कर दी तुमने!..." उसने लचकीले स्वर में कहा। फिर उसने पंजों के बल उचककर अपने हाथ पावेल के कन्धों पर रख दिये और अपनी भूरी आँखों से उसके कन्धे के ऊपर से झाँककर इल्या को देखा।

"मेरा दोस्त है इल्या लुन्योव..."

"कैसे हैं आप?"

जब उसने मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया तो उसके सफ़ेद ब्लाउज़ की ढीली आस्तीन लगभग कन्धे तक सरक गयी। इल्या ने बड़ी नरमी से और बड़े आदर के भाव से उसका छोटा-सा हाथ थाम लिया और उसे इस तरह ख़ुश होकर एकटक देखने लगा जैसे कोई घने जंगल के झाड़-झंखाड़ के बीच ऊपर उभरे हुए नाज़ुक सुडौल बर्च के पेड़ को देखकर ख़ुश होता है। जब वह उसे कमरे में जाने का रास्ता देने के लिए एक ओर को हटकर खड़ी हो गयी तो वह भी एक तरफ़ हट गया और आदरपूर्वक बोला :

"पहले आप!"

"अरे, आप भी कैसा तकल्लुफ करते हैं!" वह हँसकर बोली, और कितनी ख़ूबसूरत थी उसकी हँसी मस्ती-भरी और साफ़। पावेल भी हँस दिया।

“तुम्हें तो देखकर वह बिल्कुल हक्का-बक्का रह गया है, वेरा,” पावेल ने कहा, “देख रही हो कैसे खड़ा है, जैसे शहद की नाँद के सामने कोई भालू खड़ा हो।”

“सच?” वेरा ने इल्या की ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा। “सचमुच,” इल्या ने जवाब में मुस्कराते हुए कहा। “आपकी ख़ूबसूरती देखकर तो मेरे पाँव तले की ज़मीन खिसक गयी है...”

“ज़रा इससे प्यार करने की कोशिश करके तो देखो! गला काट दूँगा!” पावेल ने ख़ुशमिज़ाजी से हँसते हुए कहा, उसकी आँखें गर्व से चमक रही थीं। उसे यह देखकर बहुत ख़ुशी हो रही थी कि इल्या उसकी प्रेमिका की सुन्दरता पर लट्टू हो गया था। और वह भी बड़ी मासूम बेहयाई से इतरा रही थी; उसे अपनी नारी-सुलभ शक्ति का पूरा आभास था। वह सिर्फ़ दूध जैसी सफ़ेद स्कर्ट और कुरती के ऊपर एक ढीला-सा ब्लाउज़ पहने थी। ब्लाउज़ का गरेबान खुला हुआ था जिसके नीचे पके हुए आड़ू जैसा उसका गदराया हुआ और ताजा बदन दिखायी दे रहा था। उसके छोटे-से मुँह के गुलाबी होंठ आत्म-सन्तुष्ट मुस्कराहट में खुले हुए थे : वह अपने आपसे इतनी ख़ुश दिखायी दे रही थी जैसे कोई बच्चा उस खिलौने से ख़ुश रहता है जिससे उसका जी अभी तक उकताया न हो। इल्या उस पर से अपनी नज़रें हटा नहीं पा रहा था; वह बड़ी लचक और फुर्ती से कमरे में इधर से उधर आ-जा रही थी, उसकी छोटी-सी सुडौल नाक ऊपर को उठी हुई थी, वह पावेल को प्यार-भरी नज़रों से देख रही थी और बहुत चहककर बातें कर रही थी। इल्या को यह सोचकर अफ़सोस हो रहा था कि कोई ऐसी लड़की उसकी दोस्त नहीं थी।

उस छोटे-से साफ़-सुथरे कमरे के बीच में एक मेज़ रखी थी जिस पर सफ़ेद मेज़पोश पड़ा हुआ था। समोवार से निकलती हुई भाप चारों ओर ख़ुशी बिखेर रही थी और कमरे की हर चीज़ में ताजगी और जवानी की झलक थी। वहाँ की कोई चीज़ ऐसी नहीं थी जिसे इल्या ने सराहा न हो प्यालियाँ, शराब की बोतल, सॉसेज और रोटी की प्लेटें। उसे बरबस पावेल से ईर्ष्या होने लगी। पावेल मेज़ के पास बैठा ख़ुशी के मारे खिला जा रहा था और अच्छी-अच्छी ख़ूबसूरत बातें कह रहा था :

“जब मैं तुम्हें देखता हूँ तो जैसे चाँदनी में नहा जाता हूँ... मेरे सारे दुख-दर्द दूर हो जाते हैं और नयी आशाओं के अंकुर फूटने लगते हैं... रूप तुम्हारा तारों जैसा, पास तुम्हारे मरना कैसा...”

“पावेल! कितनी सुन्दर पंक्तियाँ है!...” वेरा ने सराहते हुए कहा।

“बिल्कुल ताजा हैं। अभी-अभी तैयार की हैं! अरे, बात सुनो, इल्या! कुढ़ो नहीं! अपने लिए भी एक ढूँढ़ लो!”

"कोई अच्छी-सी!" वेरा ने इल्या की आँखों में आँखें डालकर देखते हुए अपने स्वर में एक नया विचित्र भाव पैदा करते हुए कहा।

"मुझे तुम्हारी जैसी अच्छी तो कभी कोई मिलेगी नहीं!" इल्या ने आह भरकर मुस्कराते हुए कहा।

"तुम कुछ नहीं जानते हो..." वेरा ने धीमे स्वर में कहा।

"अच्छी तरह जानता है..." पावेल ने त्योरियाँ चढ़ाकर कहा, फिर इल्या की ओर मुड़कर बोला, "सब कुछ अच्छा-भला रहता है! बहुत शानदार रहता है! फिर अचानक मुझे वही बात याद आती है... जैसे किसी ने मेरे दिल में छुरा भोंक दिया हो!..."

"याद न किया करो," वेरा ने अपना सिर मेज़ तक नीचे झुकाकर कहा। इल्या ने उसकी ओर देखा और उसे दिखाई दिया कि उसके कानों की लवें तक लाल हो गयी थीं।

"तुम्हें अपने आप से यह कहना चाहिए," वह धीमे स्वर में लेकिन बड़ी दृढ़ता से बोली, "'चाहे हम एक ही दिन साथ रहे हों, लेकिन वह मेरा दिन था।' मेरे लिए भी यह सब कुछ आसान नहीं है... जैसा कि एक गीत में कहा गया है, अपने दुख मैं अपने तक ही रखता हूँ लेकिन अपने सुख तुम्हारे साथ बाँट लेता हूँ..."

उसकी बात सुनकर पावेल की त्योरियों पर बल पड़ गये... इल्या का बेहद जी चाहा कि वह कोई अच्छी-सी बात कहे, कोई ऐसी बात जिससे उन दोनों का हौसला बढ़े।

"अगर गाँठ न खुल सके तो क्या किया जा सकता है?" उसने एक क्षण सोचने के बाद कहा। "लेकिन मैं तुम लोगों से यह कहना चाहता हूँ : अगर मेरे पास हज़ार रूबल हों, तो मैं सारे के सारे तुम लोगों को दे दूँ लो, ये रहे! अपने प्यार के ख़ातिर इन्हें ले लो... क्योंकि मैं देखता हूँ कि यह अच्छा, निर्मल और सच्चा प्यार है, और इसके अलावा किसी भी चीज़ का महत्त्व तिनके के बराबर भी नहीं है!"

वह अचानक भावनाओं के प्रबल प्रवाह में फँस गया। यहाँ तक कि वह उठ खड़ा हुआ ताकि वह लड़की की कृतज्ञतापूर्ण पैनी नज़रों को और पावेल की मुस्कराहट को ज़्यादा आसानी से बर्दाश्त कर सके, जो उससे कुछ और ही अपेक्षा करता हुआ लग रहा था।

"मैंने ज़िन्दगी में पहली बार ऐसे लोगों को देखा है जो सचमुच एक-दूसरे को प्यार करते हैं... और पहली बार मुझे तुम्हारे दिल के अन्दर की सच्ची झलक देखने को मिली है, पावेल मैंने तुम्हारी असली कद्र जानी है... और सच पूछो तो मुझे तुमसे जलन होती है। जहाँ तक... तस्वीर के दूसरे पहलू का सवाल है... मुझे उसके बारे

में इतना ही कहना है कि मुझे चुआस और मोर्दवा लोग बिल्कुल पसन्द नहीं। मैं उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सकता! उन सबकी आँखें हमेशा आयी रहती हैं। लेकिन मैं उसी नदी में नहाता हूँ जिसमें वे नहाते हैं और वही पानी पीता हूँ। क्या मैं उनकी वजह से नदी को त्याग दूँ? मैं ऐसा नहीं करूँगा। मुझे यक़ीन है कि भगवान नदी के पानी को शुद्ध करता है..."

"शाबाश, इल्या!" पावेल ने ऊँचे स्वर में कहा।

"पर तुम तो चश्मे का पानी पियो," वेरा धीमे स्वर में बोली।

"कहीं अच्छा हो कि तुम मुझे एक प्याला चाय बनाकर पिलाओ," इल्या ने कहा।

"तुम कितने अच्छे हो!" लड़की ने उत्साह से कहा।

"शुक्रिया," इल्या संजीदगी से बोला।

इस छोटी-सी घटना का पावेल पर तेज़ शराब जैसा असर हुआ। उसके जानदार चेहरे पर लाली दौड़ गयी, आँखें चमकने लगीं; वह उछलकर खड़ा हो गया और कमरे में इधर से उधर टहलने लगा।

"बेड़ा गर्क हो मेरा! जब तक इस पृथ्वी पर लोग तुम्हारे जैसे, बच्चों की तरह भोले हैं, तब तक ज़िन्दा रहने में मज़ा है!" उसने भावुक होकर कहा। "तुम्हें यहाँ लाकर, इल्या, मैंने अपने दिल के साथ बड़ा उपकार किया। यह जाम तुम्हारे नाम का, दोस्त!"

"कितने जोश में आ गया है," लड़की ने उसकी ओर बड़े प्यार से देखकर मुस्कराते हुए कहा। "इसका हमेशा यही रहता है या उत्साहित, जोशीला या उदास और झुँझलाया हुआ..."

उसी वक़्त किसी ने दरवाज़ा खटखटाया।

"मैं अन्दर आ सकती हूँ, वेरा?" किसी औरत की आवाज़ ने पूछा।

"हाँ-हाँ, आओ न। इल्या याकोव्लेविच, यह है ओलिम्पियादा, मेरी सहेली..."

इल्या ने मुड़कर देखा कि लम्बे क़द की एक शालीन नौजवान औरत शान्त नीली आँखों से उसे नज़रें जमाये देख रही थी। उसके कपड़ों से इत्र की ख़ुशबू आ रही थी, उसके गुलाबी गालों में ताजगी थी, और उसके सिर पर काले बालों का एक ऊँचा-सा ताज बना हुआ था जिसकी वजह से उसका क़द कुछ और लम्बा हो गया था।

"मैं अकेली बैठी थी... उदास हो गयी... तुम लोगों को यहाँ हँसते सुना तो यहाँ आ जाने का फ़ैसला किया। बुरा तो नहीं माना? मैं देख रही हूँ कि यहाँ एक नौजवान है जिसका साथ देने को कोई औरत नहीं है। मैं इसे सँभाले लेती हूँ कोई एतराज तो नहीं है?"

इतमीनान से वह एक कुर्सी खींचकर इल्या के पास बैठ गयी।

“इन लोगों की चिड़िया-चिरौंटे जैसी बातें सुनकर आप उकता नहीं जाते? आपको जलन नहीं होती?”

“इन लोगों से उकता जाना मुश्किल है,” इल्या ने उसे इतना नजदीक पाकर कुछ सिटपिटाकर कहा।

“यह तो बड़ी अफ़सोस की बात है,” उस औरत ने शान्त भाव से कहा; फिर वह वेरा की ओर मुड़कर बोली, “कल मैं मठ में प्रार्थना के लिए गयी थी, वहाँ एक छोटी-सी ख़ूबसूरत लड़की देखी जिसने नया-नया वैराग्य लिया था। मैं उसे देखती रही और सोचती रही कि किस चीज़ ने उसे सब कुछ त्याग कर यह सधुनियों का भेष अपनाने पर मजबूर किया होगा। मुझे उस पर बड़ा तरस आया...”

“मुझे तो न आता,” वेरा बोली।

“क्या कहा! मैं तुम्हारी इस बात पर यक़ीन नहीं करती...”

इल्या बैठा उस औरत के चारों ओर फैली सुगन्ध में साँस लेता रहा, नज़रें बचाकर कनखियों से उसे देखता रहा और उसकी आवाज़ सुनता रहा। उसकी आवाज़ अस्वाभाविक रूप से धीमी और शान्त थी; उसने चेतनाओं को मन्द कर दिया और इल्या कल्पना करने लगा कि उसके शब्दों में भी अपनी ही एक तीव्र सुगन्ध थी...

“मैं सोचती हूँ, वेरा, कि जाकर पोलुएक्तोव के साथ रहूँ या नहीं।”

“मालूम नहीं।”

“शायद मैं ऐसा ही करूँगी... वह बूढ़ा है और पैसे वाला है। लेकिन है बड़ा कंजूस... मैं उससे कहती हूँ कि पाँच हज़ार बैंक में जमा करवा दे और मुझे डेढ़ सौ रूबल महीना दे दिया करे, लेकिन वह बस तीन हज़ार जमा करने और मुझे सौ रूबल देने को राज़ी है।”

“उसकी बातें इस वक़्त न करो, मेरी जान!” वेरा ने कहा।

“अच्छी बात है!” ओलिम्पियादा राज़ी हो गयी और फिर इल्या की ओर मुड़कर बोली। “आइये, हम-आप बातें करें... आप मुझे बहुत अच्छे लगते हैं... आपकी सूरत बहुत अच्छी है और आपकी आँखों में सच्चाई झलकती है। आप क्या कहेंगे?”

“कुछ भी नहीं,” इल्या ने शरमाते हुए मुस्कराकर कहा; उसे महसूस हो रहा था कि यह औरत उसे अपने आँचल में बाँधे जा रही थी।

“कुछ भी नहीं? यह तो कोई बात न हुई! आप करते क्या हैं?”

“फेरी लगाता हूँ...”

“सचमुच? मैं तो समझी थी कि किसी बैंक में क्लर्क होंगे या किसी बड़ी दुकान में काम करते होंगे। आप देखने में बहुत शरीफ लगते हैं...”

“मुझे साफ़-सुथरा रहना अच्छा लगता है,” इल्या ने कहा। उसे गरमी-सी लगने

लगी, उस पर सुगन्ध का नशा छाता जा रहा था।

"साफ़-सुथरा? यह तो अच्छी बात है... क्या आप अन्दाज़ा अच्छा लगा लेते हैं?"

"मालूम नहीं आपका क्या मतलब है इससे।"

"क्या आपको इस बात का अन्दाज़ा नहीं है कि आप अपने दोस्तों के लिए कबाब में हड्डी बने हुए हैं?" नीली आँखों वाली उस औरत ने बड़ी नरमी से पूछा।

"मैं तो बस जाने ही वाला था!..." इल्या ने सकपकाकर कहा।

"मैं इनको उड़ा ले जाऊँ, वेरा?"

"अगर वह राज़ी हो तो ले जाओ!" वेरा ने हँसकर कहा।

"कहाँ?" इल्या ने घबराकर पूछा।

"जा न इसके साथ, बुद्धू," पावेल बोला।

इल्या चकराया हुआ खड़ा बेवकू फ़ों की तरह मुस्कराता रहा, लेकिन उस औरत ने चुपचाप उसकी बाँह पकड़ी और उसे बाहर ले जाते हुए बोली :

"आपको अभी किसी ने क़ाबू में नहीं किया है, और मैं बहुत मनमौजी हूँ, हर काम अपने ही ढंग से करती हूँ। अगर मेरा जी चाहे कि सूरज को बुझा दूँ तो मैं छत पर चढ़कर तब तक फूँक मार-मारकर उसे बुझाती रहूँगी जब तक मेरा दम बिल्कुल फूल न जाये। ऐसी हूँ मैं।"

इल्या उसके साथ-साथ चुपचाप चलता रहा; उसकी समझ में नहीं आ रहा था बल्कि सच तो यह है कि वह ठीक से सुन भी नहीं पा रहा था कि वह कह क्या रही है; उसे तो बस उसके शरीर की हल्की-हल्की आँच का, उसकी कोमलता का, उसकी सुगन्ध का आभास था...

उस औरत की मर्ज़ी से अचानक स्थापित हो जाने वाले इस सम्बन्ध में इल्या बिल्कुल डूब गया। उसकी वजह से उसमें कुछ आत्म-सन्तोष पैदा हो गया और ज़िन्दगी ने उसके दिल पर जो जख्म लगाये थे वे भर गये। इस विचार से खुद अपनी नज़रों में उसकी साख काफ़ी बढ़ गयी कि वह ख़ूबसूरत सजी-संवरी औरत अपनी मर्ज़ी से उस पर अपने अनमोल चुम्बन लुटा रही थी और इसके बदले में उससे कुछ माँगती भी नहीं थी। ऐसा लगता था कि वह किसी पाटदार नदी में तैरता चला जा रहा है और नदी की शान्तिपूर्ण लहरें उसके शरीर को सहला रही हैं।

"मेरे सपनों के राजा," ओलिम्पियादा उसके घुँघराले बालों से खेलते हुए और उसके ऊपरी होंठ के ऊपर गहरे रंग के रोमों पर उंगली फेरकर कहती। "तुम दिन-ब-दिन मुझे ज़्यादा अच्छे लगने लगे हो... तुम दिल के बहुत बहादुर हो, तुम पर भरोसा किया जा सकता है और मैं जानती हूँ कि तुम्हें तब तक सन्तोष नहीं होता

जब तक तुम्हें अपनी चाही हुई चीज़ मिल न जाये... मैं भी ऐसी ही हूँ... अगर मेरी उम्र कुछ कम होती तो मैं तुमसे शादी कर लेती... हम दोनों की ज़िन्दगी एक मधुर गीत बन जाती...”

इल्या उसे बड़ी इज़्ज़त की नज़र से देखता रहा। वह समझ गया था कि वह बहुत चतुर थी और जिस तरह की ज़िन्दगी वह बसर करती थी उसके बावजूद वह अपनी कद्र जानती थी। उसका शरीर भी उसकी आवाज़ की तरह ही मज़बूत और लचकीला था, और उसके चरित्र जैसा ही सुडौल था। उसकी किफ़ायतशारी, उसका सुथरापन, किसी भी चीज़ के बारे में अपनी राय क़ायम करने की उसकी क्षमता और लगभग गर्व की हद तक उसके स्वभाव की स्वतन्त्रता इल्या को बहुत पसन्द थी। लेकिन कभी-कभी जब वह उससे मिलने आता तो वह बिस्तर पर लेटी होती थी, उसका चेहरा उतरा हुआ और उजाड़ होता था, उसके बाल चारों ओर बिखरे होते थे। उस समय इल्या के मन में उसके प्रति घृणा-सी उत्पन्न होती थी, और वह खड़ा बड़ी कठोरता से उसकी बुझी-बुझी भावशून्य आँखों को देखता रहता था, और उससे अभिवादन का एक शब्द भी कहने की इच्छा उसमें पैदा नहीं होती थी।

लगता था कि वह इल्या की भावना को जान लेती थी और कम्बल ओढ़कर उससे कहती थी :

“चले जाओ यहाँ से! जाकर वेरा के कमरे में बैठो... बुढ़िया से कह दो कि मेरे लिए बर्फ़ डालकर थोड़ा-सा पानी दे जाये...”

और वह उस साफ़-सुथरे छोटे-से कमरे में चला जाता जो पावेल की प्रेमिका का कमरा था। उसके चेहरे पर परेशानी देखकर वेरा अपराधियों की तरह मुस्करा देती।

“हम जैसी लड़कियों से दिल लगाना भी बड़ी मुसीबत है, क्यों है न?” एक बार वह इल्या से बोली थी।

“वेरा, वेरा!” उसने आह भरकर कहा था, “तुम्हारे पाप तो बर्फ़ की तरह हैं तुम्हारे मुस्कराते ही पिघल जाते हैं।”

“बेचारे तुम! बेचारा पावेल!”

उसे वेरा अच्छी लगती थी और उस पर उसे तरस आता था। जब भी वेरा और पावेल का झगड़ा हो जाता था तो वह बहुत परेशान हो जाता था और हमेशा उनके बीच सुलह-समझौता कराने की पूरी कोशिश करता था। वेरा के कमरे में बैठकर उसे अपने सुनहरे बालों में कंघी करते हुए या अपने कपड़ों की मरम्मत करने के साथ-साथ गुनगुनाते हुए देखकर इल्या को बहुत आनन्द आता था। ऐसे मौक़ों पर वह उसे और भी अच्छी लगती थी और उसे उसके दुखी होने का और भी गहरा आभास होता था। वह अपनी तरफ़ से उसे तसल्ली देने की पूरी कोशिश करता था; लेकिन वह कहती थी :

“तुम लोग इसी तरह तो नहीं चलते रह सकते, इल्या याकोव्लेविच, बिल्कुल नहीं चलते रह सकते। मेरे ऊपर तो हमेशा के लिए कलंक लग ही गया है लेकिन पावेल क्यों मेरे साथ चिपका रहे?” ओलिम्पियादा चुपचाप अन्दर आकर उनकी बातचीत का क्रम भंग कर देती। हल्के आसमानी रंग के ड्रेसिंग-गाउन में वह चाँदनी की ठण्डी किरन जैसी लगती।

“आओ, चलकर मेरे साथ चाय पियो, मेरे सपनों के राजा! बाद में तुम भी आना, वेरा...”

ठण्डे पानी की बदौलत गुलाबी, साफ़-सुथरी, गठी हुई और शान्त वह बड़े रोब से इल्या को साथ लेकर चली जाती, और उसके पीछे-पीछे चलते हुए इल्या मन ही मन सोचता रहता : क्या यह वही उतरे हुए चेहरे वाली औरत है जो अभी घण्टा-भर पहले गन्दे हाथों से मली-दली वहाँ पड़ी हुई थी?

“अफ़सोस की बात है कि तुम इतना कम पढ़े हो...” चाय पीते हुए उसने इल्या से कहा। “फेरी लगाने का यह काम छोड़कर तुम्हें कुछ और करना चाहिए। धीरज रखो, मैं तुम्हारे लिए कोई काम खोज निकालूँगी... तुम्हें मदद की ज़रूरत है... जब मैं जाकर पोलुएक्तोव के साथ रहने लगूँगी तो तुम्हारे लिए कुछ कर सकूँगी...”

“क्या वह तुम्हें तुम्हारे पाँच हज़ार देगा?” इल्या ने पूछा।

“देगा,” औरत ने पूरे भरोसे से कहा।

“अगर मैं कभी उसे यहाँ देखता तो मैं उसका सिर फोड़ देता,” इल्या ने ताव में आकर कहा।

“जब वह मुझे पैसा दे दे उसके बाद करना,” औरत ने हँसकर कहा।

व्यापारी ने उसे मुँहमाँगी रक़म दे दी। कुछ ही समय बाद इल्या ओलिम्पियादा के नये फ़्लैट में बैठा फर्श पर बिछे हुए मोटे-मोटे क़ालीनों और गहरे रंग के मख़मल से मढ़ी हुई कुर्सियों को देख रहा था और उसकी रखैल के शब्दों के शान्त प्रवाह की ध्वनि सुन रहा था। उसकी बदली हुई स्थिति के अनुरूप उसमें कोई ख़ास ख़ुशी दिखाई नहीं दी वह हमेशा की तरह ही शान्त और निश्चिन्त थी।

“मैं सत्ताईस साल की हूँ। जब मैं तीस साल की हो जाऊँगी तब मेरे पास दस हज़ार रूबल हो जायेंगे। तब मैं इस बूढ़े से पीछा छुड़ा लूँगी और आजाद हो जाऊँगी। मुझसे सीखो ज़िन्दगी में अपने लिए रास्ता बनाना, मेरे सपनों के राजा।”

इल्या ने अपनी मनचाही चीज़ को हासिल करने की कोशिश में अडिग रहना उससे सीखा। लेकिन जब भी उसे याद आता कि वह अपना लाड़-प्यार किसी दूसरे को अर्पित करती है तो उसके कलेजे पर साँप लोट जाता और वह अपमानित महसूस

करता। और तब उसका यह सपना और भी प्रबल रूप से उसके मन में जागृत हो उठता कि वह एक दुकान का मालिक होगा और उसका अपना एक साफ़-सुथरा कमरा होगा जहाँ वह इस औरत से मिला करेगा। वह भरोसे के साथ यह तो नहीं कह सकता था कि वह उससे प्यार करता था, लेकिन उसे उसकी ज़रूरत थी, इतना वह जानता था।

इसी तरह तीन महीने बीत गये।

एक शाम दिन-भर के काम के बाद घर लौटने पर इल्या मोची के तहख़ाने वाले कमरे में गया और उसे यह देखकर ताज्जुब हुआ कि याकोव और पेर्फ़ीश्का बीच में वोद्का की बोतल रखे मेज़ के पास बैठे हैं। पेर्फ़ीश्का ख़ुशी से मुस्करा रहा था और याकोव मेज़ पर सीना टिकाये पड़ा था और सिर हिला-हिलाकर बुदबुदा रहा था :

"अगर भगवान सब कुछ देखता है तो वह मुझे भी देखता होगा... मेरा बाप मुझसे प्यार नहीं करता। वह चोर है, है न?"

"सो तो है, याकोव! अफ़सोस की बात है लेकिन सच है," मोची ने कहा।

"मैं अब क्या करूँ?" याकोव ने अपने उलझे हुए बाल पीछे झिटकते हुए रुँधे हुए गले से कहा।

इल्या के दिल में एक टीस-सी उठी। उसने देखा कि याकोव का बड़ा-सा सिर उसकी पतली गर्दन पर बड़ी बेबसी से हिल रहा था; उसने देखा कि पेर्फ़ीश्का का दुबला-पतला और पीला चेहरा सुखद मुस्कराहट से चमक रहा था, और उसे किसी तरह यक़ीन नहीं आ रहा था कि यह सचमुच याकोव है वही विनम्र और चुप रहने वाला याकोव जिसे वह जानता था।

"क्या कर रहे हो?" उसने याकोव के पास जाकर कहा।

याकोव चौंक पड़ा, डरी-डरी आँखों से इल्या की ओर देखा और मुँह टेढ़ा करके धीरे से मुस्करा दिया।

"मैं समझा कि मेरे बाप आये हैं," वह चिल्ला उठा।

"कर क्या रहे हो, मैं पूछता हूँ?"

"उसे रहने दो, इल्या याकोव्लेविच," पेर्फ़ीश्का ने लड़खड़ाकर उठते हुए कहा। "उसे पूरा हक़ है... शायद इसी में उसका भला है कि वह शराब पी रहा है..."

"इल्या!" याकोव विह्वल होकर चिल्लाया। "मेरे बाप ने... मेरे बाप ने मुझे मारा!"

"हाँ, उसने मारा। मैंने ख़ुद देखा!" पेर्फ़ीश्का ने अपना सीना ठोंकते हुए घोषणा की। "मैंने सब कुछ देखा, क़सम खाकर कह सकता हूँ।"

याकोव का चेहरा और ख़ास तौर पर उसका ऊपर वाला होंठ, बुरी तरह सूजा

हुआ था। वह अपने होंठों पर दयनीय मुस्कराहट लिए खड़ा अपने दोस्त को देखता रहा।

"क्या मैं इस लायक़ हूँ कि मुझे पीटा जाये?"

इल्या ने महसूस किया कि वह न उसे तसल्ली दे सकता था, न उसे दोष दे सकता था।

"आख़िर उसने ऐसा किया क्यों?"

याकोव ने अपने होंठ हिलाये मानो कुछ समझाना चाहता हो, लेकिन इसके बजाय वह दोनों हाथों से अपना सिर पकड़कर दहाड़ें मार-मारकर रोने लगा; उसका सारा शरीर एक ओर से दूसरी ओर बुरी तरह हिल रहा था।

"रो लेने दो," पेर्फ़ीश्का ने अपने लिए वोद्का उँडेलते हुए कहा। "रो लेने से आदमी का जी हल्का हो जाता है। माशा भी... वह गला फाड़-फाड़कर चीख़ रही थी... वह चिल्ला रही थी कि उसकी आँखें निकाल लेगी। मैंने उसे मुटल्ली के पास भेज दिया..."

"याकोव और उसके बाप के बीच हुआ क्या?" इल्या ने पूछा।

"भयानक झगड़ा हुआ," पेर्फ़ीश्का ने बताया। "इस सारे झगड़े की शुरुआत तुम्हारे चाचा से हुई... 'मेरी छुट्टी कर दो,' उसने पेत्रूख़ा से कहा। 'मैं कियेव जाना चाहता हूँ, वहाँ के सन्त-महात्माओं के पास...' सच पूछो तो पेत्रूख़ा इस बात से बहुत ख़ुश हुआ। तेरेन्ती से छुटकारा पाकर ख़ुश तो होता ही वह। हर कारोबार में साथी होने से ख़ुशी नहीं होती। 'जाओ,' वह बोला। 'जाकर उन सन्त-महात्माओं से मेरे लिए भी प्रार्थना कर आना।' इस पर यह याकोव उठकर बोला, 'मुझे भी जाने दो।'"

पेर्फ़ीश्का ने अपनी आँखें फाड़कर डरावनी सूरत बनायी, और धमकी-भरे स्वर में हर शब्द को खींच-खींचकर बोलने लगा :

"'क्या कहा?' पेत्रूख़ा बोला। 'मुझे भी जाने दो,' याकोव ने दोहराया। 'तुम्हें?' पेत्रूख़ा ने कहा। 'मैं तुम्हारी आत्मा के लिए प्रार्थना करना चाहता हूँ...' याकोव ने कहा। 'मैं तुम्हें अभी बताता हूँ प्रार्थना कैसे की जाती है!' पेत्रूख़ा बोला। 'मुझे जाने दो,' याकोव अपनी बात दोहराता रहा। इस पर पेत्रूख़ा ने उसके मुँह पर एक घूँसा जड़ दिया धड़! और फिर धड़! फिर धड़!"

"मैं अब उसके साथ नहीं रह सकता!" याकोव चिल्लाया। "मैं अपनी जान दे दूँगा! उसने मुझे मारा क्यों? मैंने उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ा था..."

इल्या उसकी चीखों की आवाज़ बर्दाश्त न कर सका; उसने बेबसी से अपने कन्धे बिचकाए, मुड़ा और तहख़ाने से बाहर निकल गया। उसे यह सुनकर बहुत ख़ुशी हुई थी कि उसका चाचा तीर्थ यात्रा पर जा रहा था : तेरेन्ती के जाते ही वह भी उस जगह

को छोड़कर चला जायेगा। वह कोई नयी साफ़-सुथरी जगह ढूँढ़ लेगा और अकेला रहने लगेगा...

वह अभी अपने कमरे में पहुँचा भी नहीं था कि तेरेन्ती वहाँ आ गया। उसकी आँखें चमक रही थीं और चेहरा खिला हुआ था।

"तो मैं जा रहा हूँ," अपना कूबड़ झिटकते हुए वह बोला। "जय हो देवी-माँ की, ऐसा लग रहा है कि मैं किसी क़ैद से निकलकर खुली रोशनी में जा रहा हूँ!"

"याकोव ने पी-पीकर अपना बुरा हाल कर लिया है मालूम है तुम्हें?" इल्या ने रूखेपन से कहा।

"सचमुच? यह तो बहुत बुरी बात है!"

"तुम थे वहाँ जब उसके बाप ने उसे मारा था?"

"था तो... क्यों?"

"इसलिए वह पी कर धुत्त हो गया है, तुम समझ रहे हो न?" इल्या ने कठोर स्वर में कहा।

"सचमुच इसीलिए? ज़रा सोचो तो!"

इल्या को साफ़ दिखायी दे रहा था कि उसके चाचा को इसकी कोई चिन्ता नहीं थी कि याकोव का क्या हो रहा है, और इसकी वजह से उसका मन चाचा की तरफ़ से और भी हट गया। उसने इससे पहले कभी तेरेन्ती को इतना खुश नहीं देखा था, और याकोव की घोर निराशा के बाद उसकी इस ख़ुशी को देखकर इल्या का मन और भी ज़्यादा कटुता से भर गया।

"शराबख़ाने में वापस जाओ," इल्या ने खिड़की के पास बैठते हुए कहा।

"पेत्रूख़ा वहाँ है... मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूँ," चाचा ने कहा।

"काहे के बारे में?"

कुबड़ा चलकर उसके पास आ गया :

"मुझे तैयार होने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगेगा," उसने धीमे स्वर में रहस्यमय ढंग से कहा। "तुम यहाँ अकेले रह जाओगे... और इसीलिए... मतलब है..."

"सीधे-सीधे साफ़ बात कहो," इल्या ने कहा।

"साफ़ बात कहूँ?" तेरेन्ती आँखें झपकाने लगा। "इतना आसान नहीं है कहना... देखो... मैंने कुछ पैसा बचाया है..."

इल्या ने एक नज़र उसे देखा और कर्कश स्वर में हँस दिया। तेरेन्ती चौंक पड़ा और उसने पूछा :

"क्या बात है?"

"तो तुमने कुछ पैसा बचाया है..." इल्या ने "बचाया" शब्द पर ख़ास तौर पर

ज़ोर दिया।

"हाँ..." तेरेन्ती ने उसकी ओर देखे बिना कहा। "और अब... हाँ, मैंने फ़ैसला किया है कि दो सौ मठ को दे दूँगा और सौ तुम्हें दे दूँगा..."

"सौ?" इल्या ने जल्दी पूछा। अब जाकर उसने महसूस किया कि दिल ही दिल में वह अपने चाचा से सौ रूबल नहीं बल्कि ज़्यादा बड़ी रक़म पाने की उम्मीद लगाये था। उसे अपने आप पर ग़ुस्सा आया वह जानता था कि इस तरह की बात सोचना उसे शोभा नहीं देता था; इसके साथ ही उसे चाचा पर भी ग़ुस्सा आ रहा था कि उसने इतनी थोड़ी रक़म उसे देने की बात कही। वह उठकर खड़ा हो गया, उसने अपने कन्धे तान लिए और ग़ुस्से से चाचा से कहा :

"मैं तुम्हारा चोरी का पैसा नहीं लूँगा..."

तेरेन्ती पीछे हटा और चारपाई पर गिर पड़ा उसके चेहरे का रंग उड़ गया था; वह बड़े दयनीय ढंग से इल्या को देख रहा था; वह सिमट गया था, उसका मुँह खुला हुआ था, जबड़ा नीचे को लटका हुआ था और आँखों में भय दिखाई दे रहा था।

"क्या देख रहे हो? मुझे नहीं चाहिए तुम्हारा पैसा..."

"दुहाई है भगवान की!" कुबड़ा भर्राये हुए स्वर में फुसफुसाकर बोला। "तुम्हें मैंने बेटे की तरह माना है, इल्या। तुम्हारे लिए... तुम्हारी ज़िन्दगी सुधारने के लिए मैंने वह पाप किया था। अगर तुम पैसा नहीं लोगे तो भगवान मुझे कभी माफ़ नहीं करेगा..."

"तो यह बात है, क्यों?" इल्या ने तिरस्कार से हँसकर कहा। "तो तुम भगवान के सामने अपने हाथ में दूसरों की दस्तखत की हुई रसीदें लेकर जाना चाहते हो, क्यों? मैंने कभी कहा था तुमसे दादा का पैसा चुराने को? ज़रा सोचो, कैसे आदमी से चुराया था तुम लोगों ने वह पैसा!..."

"इल्या, कहा तो तुमने पैदा होने को भी नहीं था," उसके चाचा ने बड़े मसख़रेपन से इल्या की ओर हाथ बढ़ाकर कहा। "पैसा ले लो ले लो, भगवान की ख़ातिर, मेरी आत्मा के उद्धार के लिए... नहीं लोगे तो भगवान मुझे मेरा पाप कभी माफ़ नहीं करेगा..."

उससे गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करते समय उसके होंठ काँप रहे थे और उसकी आँखों में भय समाया हुआ था। इल्या उसे देख रहा था और उसको ठीक से यह भी मालूम नहीं था कि उसे चाचा पर तरस आ रहा था कि नहीं।

"अच्छी बात है, मैं ले लूँगा..." उसने आख़िरकार कहा और कमरे से बाहर चला गया। उसे पैसा लेने के अपने फ़ैसले से घृणा हो रही थी : इसकी वजह से ख़ुद अपनी नज़रों में उसकी साख कम हो गयी थी। उसे सौ रूबल की क्या ज़रूरत थी? वह उनका

क्या करेगा? अगर हज़ार होते तब कुछ बात भी थी   अरे, तब तो वह फ़ौरन इस नीरस मुसीबत-भरी ज़िन्दगी से छुटकारा पाकर सबसे दूर कहीं जाकर शान्तिपूर्ण एकान्त में ख़ुशी की साफ़-सुथरी ज़िन्दगी बिताने लगता... क्यों न चाचा से पूछ ही ले कि उस कबाड़ी के पैसे में से उसे कितना हिस्सा मिला था? लेकिन इस विचार से ही उसे नफ़रत होने लगी...

ओलिम्पियादा से परिचय होने के बाद से इल्या को पेत्रूख़ा का घर और भी गन्दा लगने लगा था। वहाँ की गन्दगी और घुटन से उसका सारा शरीर सिहर उठता था। आज वह इन बातों के प्रति ख़ास तौर पर संवेदनशील हो उठा था, जैसे किसी ने उसे ठण्डी चिपचिपी उँगलियों से छू लिया हो। अपने आप को सन्तुलित रख पाने में असमर्थ रहकर वह मुटल्ली के कमरे में गया और उसे बड़े-से पलंग के पास एक कुर्सी पर बैठा हुआ पाया। उसके अन्दर जाते ही मुटल्ली ने नज़रें उठाकर उसकी ओर देखा और उंगली उठाकर उसे सतर्क किया।

"शिः! वह सो रही है..." उसका यह कानाफूसी का स्वर हवा के झोंके की तरह सुनायी दिया।

माशा सिकुड़कर गठरी बनी हुई पलंग पर लेटी हुई थी।

"अब क्या होने को रह गया है?" मुटल्ली अपनी बड़ी-बड़ी आँखें रोष से नचाकर कहती रही। "अब उन्होंने बच्चों को भी मारना-पीटना शुरू कर दिया है, राक्षस कहीं के! उनके पाँव तले धरती फट जाये..."

चूल्हे के पास खड़े होकर कानाफूसी के स्वर में उसकी बातें सुनते हुए इल्या सुरमई रंग के एक चीथड़े में लिपटी हुई माशा की आकृति को एकटक देखता रहा और मन ही मन सोचता रहा : इसका क्या होगा?

"उसने बाल पकड़कर इसे घसीटा, चोर कहीं का, जिसकी रूह तक में शराबख़ाना बसा हुआ है! अपने बेटे को भी मारा और इसे भी और इन्हें घर से निकाल देने की धमकी दी! और कुछ होने को रह क्या गया है? यह कहाँ जायेगी, बताओ मुझे?"

"शायद मैं इसके लिए कोई जगह ढूँढ़ दूँगा," कुछ सोचकर इल्या ने कहा, उसे याद आया कि ओलिम्पियादा ने कहा था कि उसे एक नौकरानी की ज़रूरत थी।

"तुम भी!" मुटल्ली निन्दा के साथ फुसफुसा रही थी। "नाक उठाए यहाँ घूमते रहते हो... शाहबलूत के उस कम-उम्र पेड़ की तरह पनप रहे हो, जिससे न किसी को छाया मिल सकती है न बीज..."

"ठहरो, मेरे ऊपर फुफकारो नही," इल्या बोला, ओलिम्पियादा के यहाँ जाने का बहाना पाकर वह बहुत ख़ुश था। "कितनी उम्र है माशा की?"

"पन्द्रह... तुम क्या समझते थे कितने साल की है वह? लेकिन पन्द्रह की है

तो क्या हुआ? कोई बारह से ज़्यादा नहीं मानेगा, इतनी छोटी-सी और दुबली-पतली है वह... बिल्कुल बच्ची है! इस दुनिया के काम की नहीं है, किसी काम की नहीं यह लड़की! वह ज़िन्दा काहे के लिए रहे? अच्छा हो कि ऐसे ही सोती रहे..."

घण्टे-भर बाद इल्या ओलिम्पियादा के दरवाज़े पर खड़ा उसके खुलने की राह देख रहा था। वह बहुत देर तक इन्तज़ार करता रहा; आख़िरकार उसने किसी को असन्तुष्ट महीन आवाज़ में कहते सुना :

"कौन है?"

"मैं हूँ," लुन्योव ने कहा; वह समझ नहीं पाया कि दरवाज़े के पार कौन पूछ रहा है ओलिम्पियादा की बेडौल चेचकरू नौकरानी की आवाज़ तो भारी और कर्कश थी और वह हमेशा कोई सवाल पूछे बिना ही दरवाज़ा खोल देती थी।

"किससे मिलना है?"

"ओलिम्पियादा दनीलोव्ना हैं?"

दरवाज़ा अचानक खुला और रोशनी की धारा आकर इल्या के चेहरे पर पड़ी। वह तिलमिलाकर पीछे हट गया, उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

उसके सामने एक छोटा-सा बूढ़ा आदमी हाथ में लैम्प लिए खड़ा था। वह उन्नावी रंग के किसी भारी कपड़ें का ढीला-ढाला ड्रेसिंग गाउन पहने था। उसका सिर लगभग बिल्कुल गंजा था और उसकी ठोड़ी के सिरे पर एक छिदरी सफ़ेद दाढ़ी हिल रही थी। इल्या को घूरते समय उसकी छोटी-छोटी पैनी कंजी आँखें द्वेष से चमक रही थीं और उसके ऊपर वाले होंठ पर उगे हुए तार जैसे कड़े बाल हिल रहे थे। उसके काले सूखे हुए हाथ में लैम्प काँप रहा था।

"कौन हो तुम? ख़ैर, अन्दर आ जाओ..." बूढ़ा बोला। "कौन हो तुम?"

इल्या समझ गया कि यह आदमी कौन था। उसने महसूस किया कि उसके गालों में अचानक ख़ून दौड़ आया और उसे ग़ुस्सा चढ़ने लगा। तो यह था वह आदमी जिसके साथ वह उस साफ़-सुथरी तनदुरुस्त औरत के आलिंगनों का साझेदार था!

"मैं एक फेरीवाला हूँ..." उसने चौखट लाँघते हुए धीरे से कहा।

बूढ़े ने अपनी बायीं आँख झपकायी और एक दबी हुई हँसी हँस दिया। उसके पपोटे लाल थे और पलकों के बाल नहीं थे और उसके मसूड़ों में कुछ पीले-पीले खूँटियों जैसे दाँत बाहर निकले हुए थे।

"हेरा-फेरीवाला, क्यों? किसी चीज़ की फेरी लगाते हो?" अब भी चालाकी से मुस्कराते हुए लैम्प ऊँचा करके इल्या के चेहरे के सामने लाकर उसने पूछा।

"सभी तरह की चीज़ों की... फ़ीते, सेंट और इसी तरह की छोटी-मोटी चीज़ें ..." इल्या ने सिर झुकाकर कहा। उसका सिर चकरा रहा था और उसकी आँखों के

सामने लाल धब्बे नाच रहे थे।

"मैं समझा, मैं समझा   सुन्दर फ़ीते-लेस के टुकड़े, जिनमें दमकें सुन्दर मुखड़ें क्यों?.. तो क्या चाहते हो तुम, फेरीवाले?"

"ओलिम्पियादा दनीलोव्ना..."

"उनसे क्या काम है तुम्हें?"

"कुछ पैसा बाक़ी है उनकी तरफ़," इल्या ने अपने आप को मजबूर करते हुए कहा।

उस घिनौने बूढ़े आदमी को देखकर उसके दिल में न जाने क्यों डर समा गया था और उसे उससे नफ़रत हो रही थी। उसकी महीन धीमी आवाज़ और मक्कारी-भरी नज़र में कोई ऐसी बात थी जो इल्या के हृदय को बेधती चली गयी थी, और वह अपमानित और तिरस्कृत अनुभव कर रहा था।

"पैसे? तुम्हारे पैसे उनकी तरफ़ बाक़ी हैं न? अच्छी बात है..." अचानक बूढ़े ने लैम्प उसके चेहरे के सामने से हटा लिया और पंजों के बल खड़े होकर वह अपना पीला चेहरा इल्या के चेहरे के सामने ले आया।

"पर्चा कहाँ है?" उसने कटु व्यंग्य से फुसफुसाकर कहा। "लाओ, पर्चा दिखाओ!"

"कैसा पर्चा?" इल्या ने डरकर पीछे हटते हुए पूछा।

"तुम्हारे मालिक का। ओलिम्पियादा दनीलोव्ना के नाम... लाओ, दो मुझे। मैं ले जाकर उन्हें दे दूँगा... लाओ, जल्दी करो!" बूढ़ा उसकी ओर बढ़ रहा था : डर के मारे इल्या का मुँह सूख गया।

"मेरे पास कोई पर्चा-वर्चा नहीं है!" उसने घोर निराशा से ऊँची आवाज़ में कहा, उसे लग रहा था कि कोई बहुत भयानक अनहोनी बात होने वाली है।

पर उसी क्षण दरवाज़े में ओलिम्पियादा की लम्बी सुडौल आकृति दिखाई दी। बड़े निश्चिन्त भाव से पलक तक झपकाये बिना उसने बूढ़े के कन्धे के ऊपर से इल्या के चेहरे पर नज़रें जमाकर उसे देखा और बिल्कुल शान्त स्वर में कहा :

"क्या बात है, वसीली गव्रीलोविच?"

"फेरीवाला आया है! कहता है, आपकी तरफ़ कुछ पैसे बाक़ी हैं उसके। फ़ीते ख़रीदे थे आपने? और पैसे नहीं दिये थे? वही आया है... अपने पैसे लेने..."

बूढ़ा ओलिम्पियादा के सामने फुदक-फुदककर कहता रहा; उसकी नज़रें तीर की तरह कभी इल्या के चेहरे की ओर जातीं और कभी ओलिम्पियादा के। अभिमान से अपना दाहिना हाथ घुमाकर ओलिम्पियादा ने बूढ़े को अपने पास से हटा दिया और फिर अपना हाथ ड्रेसिंग गाउन की जेब में डाला।

"अपने पैसे लेने के लिए तुम्हें कोई और वक़्त नहीं मिला था?" उसने कठोरता से इल्या से कहा।

"बिल्कुल ठीक!" बूढ़ा महीन आवाज़ में चीख़कर बोला। "बुद्धू, बिल्कुल बुद्धू हो तुम बेवक़्त जब चाहा चले आये। गदहा कहीं का!"

इल्या पत्थर की तरह खड़ा रहा।

"चिल्लाओ नहीं, वसीली गव्रीलोविच अच्छा नहीं लगता है," ओलिम्पियादा ने कहा; फिर इल्या से बोली, "कितने पैसे बाक़ी हैं मेरी तरफ़? तीन रूबल चालीस कोपेक? यह लो..."

"और दफ़ा हो जाओ यहाँ से!" बूढ़ा फिर चिल्लाया। "मुझे दरवाज़ा बन्द करने दीजिए... मैं ख़ुद, मैं ख़ुद..."

उसने अपना गाउन चारों ओर लपेटा और दरवाज़ा खोल दिया।

"निकल जाओ यहाँ से!..." वह चिल्लाया।

इल्या बाहर सर्दी में खड़ा स्तंभित होकर बन्द दरवाज़े को घूर रहा था; उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह जाग रहा है या कोई बुरा स्वप्न देख रहा है। एक हाथ में वह अपनी टोपी लिये था और दूसरे में ओलिम्पियादा का दिया हुआ पैसा कसकर पकड़े था। वह इसी तरह वहाँ खड़ा रहा, यहाँ तक कि उसने महसूस किया कि उसकी खोपड़ी पाले के शिकंजे में जकड़ती जा रही है और ठिठुरन से उसके पाँवों में चुभन हो रही है। तभी उसने टोपी अपने सिर पर रखी और पैसे जेब में, अपने दोनों हाथ कोट की आस्तीनों में घुसेड़ लिये और कन्धे ऊँचे करके, नज़रें झुकाये हुए धीरे-धीरे सड़क पर चल दिया; उसका दिल बिल्कुल बर्फ़ का डला बन चुका था और उसकी कनपटियों में ऐसी धमक हो रही थी जैसे उसके सिर में भारी गेंद एक-दूसरे से टकरा रहे हों। उसकी आँखों के सामने उस बूढ़े की काली आकृति तैर रही थी, जिसकी पीली चाँद लैम्प की ठण्डी रोशनी में चमक रही थी।

पोलुएक्तोव उस पर मुस्करा रहा था विजय-गर्व से, तिरस्कार के साथ और मक्कारी से मुस्करा रहा था...

अगले दिन इल्या शहर की बड़ी सड़क पर धीरे-धीरे ख़ामोशी से चक्कर काट रहा था। बूढ़े की तिरस्कार-भरी नज़रों, ओलिम्पियादा की शान्त नीली आँखों और उसे पैसे देते हुए उसके हाथ की गति की याद इल्या को रह-रहकर आ रही थी। बर्फ़ के पैने गाले हवा में उड़ते हुए आकर उसके चेहरे पर डंक-से मार रहे थे...

वह अभी एक छोटी-सी दुकान के सामने से गुजरा था जो एक छोटे-से गिरजाघर और व्यापारी लूकिन की हवेली के बीच छिपी हुई थी। दुकान पर जंग लगा हुआ एक पुराना साइनबोर्ड लटका था जिस पर लिखा था :

'वा.ग. पोलुएक्तोव। महाजन। सोना-चाँदी, देव-प्रतिमाओं की सजावट, ज़ेवर-गहने, कीमती चीज़ें और पुराने सिक्के तोल के हिसाब से ख़रीदे जाते हैं।'

इल्या को ऐसा लगा कि जब उसने दुकान के दरवाज़े पर नज़र डाली तो दरवाज़े के काँच के पार बूढ़ा खड़ा हुआ था; वह उसकी ओर खीसें निकालकर हँस रहा था और अपना गंजा सिर हिला रहा था। लुन्योव के दिल में अन्दर जाकर उसे पास से देखने की अदम्य इच्छा उत्पन्न हुई। इसके लिए उसे एक बहाना भी तुरन्त मिल गया। दूसरे फेरीवालों की तरह इल्या के हाथ में पुराने सिक्के आ जाते थे उन्हें वह बचाकर रख लेता था और उन्हें रूबल पीछे बीस कोपेक के मुनाफ़े पर बदल लेता था। उस वक़्त उसके बटुए में कुछ सिक्के भी थे।

वह पीछे वापस गया, हिम्मत के साथ दुकान का दरवाज़ा खोला और बक्से समेत अन्दर घुस गया।

"सलाम," उसने टोपी उतारकर कहा।

बूढ़ा पतले-से काउण्टर के पीछे बैठा छोटे-से पेंचकश से किसी पुरानी देव-प्रतिमा से चाँदी की सजावट उतार रहा था। लड़के पर एक सरसरी-सी नज़र डालकर वह फ़ौरन सिर झुकाकर फिर अपना काम करने लगा।

"क्या चाहिए?" उसने बड़ी रुखाई से कहा।

"मुझे पहचाना?" जाने क्यों इल्या ने पूछा।

बूढ़े ने एक बार फिर नज़र उठाकर उसे देखा।

"शायद पहचाना। तो क्या?.. तुम्हें चाहिए क्या?"

"मेरे पास कुछ पुराने सिक्के हैं।"

"लाओ, देखें..."

इल्या ने अपना बटुआ निकालने के लिए जेब की ओर हाथ बढ़ाया लेकिन दिल की तरह ही, जो बूढ़े के प्रति डर और नफ़रत से काँप रहा था, उसका हाथ भी काँप रहा था और उसे अपनी जेब किसी तरह मिल ही नहीं रही थी। ओवरकोट के अन्दर बहकते हाथ से जेब ढूँढ़ते हुए वह फ़ौरन अपनी नज़रें उस छोटी-छोटी गंजी चाँद पर जमाये रहा, और उसकी पीठ पर सिहरन की ठण्डी लहरें ऊपर-नीचे दौड़ती रहीं...

"क्या हुआ? इतनी देर क्यों लग रही है?" बूढ़े ने झल्लाकर पूछा।

"बस एक मिनट!..." इल्या बोला।

आख़िरकार बटुआ उसे मिल गया। काउण्टर के पीछे जाकर उसने बटुआ उलटकर सारे सिक्के झाड़ दिये। बूढ़े ने उन पर नज़र डाली।

"बस, कुल इतने ही हैं?"

और चाँदी के सिक्कों की अपनी पतली-पतली उँगलियों से पकड़कर उसने उन्हें

जाँचना शुरू किया।

"यह तो कैथरीन महान का है... यह आन्ना का... यह भी कैथरीन महान का... यह पावेल का," उसने नाक के सुर में बुदबुदाकर कहा। "यह... क्या लिखा है, बत्तीस?.. न जाने किसका सिक्का है। लो, इसे रखो तुम यह तो घिस-घिसकर बिल्कुल चिकना हो गया है।"

"देखने से ही मालूम होता है पच्चीस कोपेक का होगा," इल्या ने झुंझलाकर कहा।

बूढ़े ने सिक्का उसकी ओर फेंक दिया और जल्दी से तिज़ोरी की दराज खोलकर उसमें कुछ खोजने लगा।

इल्या ने बाँह घुमाकर बूढ़े की कनपटी पर ज़ोर से एक घूँसा मारा। सूदख़ोर पीछे की ओर गिरा और उसका सिर दीवार से टकराया, लेकिन दूसरे ही क्षण वह आगे झपटा और आकर काउण्टर पर टिक गया और उसने अपनी सूखी हुई गर्दन इल्या की ओर बढ़ायी। लुन्योव को उसके छोटे-से काले चेहरे पर चमकती हुई आँखें दिखाई दे रही थीं, उसे उसके होंठ हिलते हुए दिखाई दे रहे थे, उसे उसकी भर्रायी हुई ऊँची फुसफुसाहट सुनायी दे रही थी :

"दया करो... मुझ पर दया करो..."

"कुत्ते का पिल्ला!" इल्या ने कहा और बेहद नफ़रत से वह बूढ़े का गला घोंटने लगा। वह उसकी गर्दन कसकर पकड़े था और उसे झँझोड़ रहा था; बूढ़े ने उसके सीने पर दोनों हाथ टिका लिए और हाँफती हुई आवाज़ निकालने लगा। उसकी आँखें फैल गयीं और उनमें ख़ून उतर आया, उनमें से आँसू बहने लगे; काले मुँह में से उसकी जीभ बाहर लटक आयी थी और इस तरह हिल रही थी मानो हत्या करने वाले को मुँह चिढ़ा रही हो। इल्या ने अपने हाथों पर गरम-गरम राल टपकती हुई महसूस की। बूढ़े के गले में किसी चीज़ की ख़र-ख़र की आवाज़ हुई और वह घरघराहट के साथ साँस लेने लगा; उसकी सर्द मुड़ी हुई उँगलियाँ लुन्योव की गर्दन को छू रही थीं। इल्या ने दाँत भींचकर अपना सिर जितना भी हो सका पीछे हटा लिया और बूढ़े के हल्के-फुल्के शरीर को हवा में उठाकर ज़्यादा से ज़्यादा ज़ोर से झँझोड़ने लगा। अगर उस क्षण पीछे से इल्या के सिर पर वार भी किया जाता तब भी वह उस गर्दन पर, जो उसकी उँगलियों में चरमरा रही थी, अपनी पकड़ ढीली न करता। बेहद डर और नफ़रत से वह देख रहा था कि बूढ़े की धुँधली-सी आँखें लगातार बड़ी होती जा रही थीं; उसने उसकी गर्दन को और कसकर मरोड़ा, और जैसे-जैसे बूढ़े का शरीर भारी होता गया, वैसे-वैसे उसके दिल का बोझ हल्का होता गया। आख़िरकार उसने बूढ़े को दूर झटक दिया, और उसका निर्जीव शरीर हल्की-सी थप की आवाज़ के साथ काउण्टर के पीछे जा गिरा।

लुन्योव ने चारों ओर नज़र डाली : दुकान खाली थी और हर तरफ़ सन्नाटा था; बाहर बर्फ़ ज़ोर से गिर रही थी। फर्श पर इल्या के पाँव के पास साबुन की दो बट्टियाँ, उसका बटुआ और फ़ीते का लच्छा पड़ा हुआ था। वह समझ गया कि ये चीज़ें उसी के बक्से में से गिरी होंगी और उसने उन्हें उठाकर वापस रख लिया। फिर उसने काउण्टर के ऊपर झुककर एक नज़र बूढ़े को देखा : वह काउण्टर और दीवार के बीच की संकरी जगह में पड़ा हुआ था; उसका सिर सीने पर लुढ़क गया था, इसलिए सिर्फ़ उसकी गुद्दी पर की पीली खाल दिखाई दे रही थी। उसी वक़्त इल्या की नज़र तिज़ोरी की खुली हुई दराज़ पर पड़ी : उसमें चाँदी और सोने के चमचमाते हुए सिक्के और नोटों की कुछ गड्डियाँ भरी हुई थीं। जल्दी से झपटकर उसने एक गड्डी उठाई, फिर दूसरी, फिर एक और, और उन्हें अपनी क़मीज़ में ठूँस लिया...

वह बड़े इतमीनान से दुकान के बाहर निकला और कोई तीन क़दम जाकर रुक गया और उसने अपना बक्सा मोमजामे से अच्छी तरह ढक लिया; फिर वह अदृश्य ऊँचाईयों में से गिरती हुई बर्फ़ के घने बवण्डर में चलता चला गया। उसके बाहर और उसके अन्दर एक ठण्डा और चिपचिपा धुँधलका चुपके-चुपके हिल-डुल रहा था। उस धुँधलके में घूरते हुए उसे अपनी आँखों में अचानक हल्का-हल्का दर्द महसूस हुआ। उसने अपनी आँखों को दाहिने हाथ से छुआ और सहमकर रुक गया जैसे उसके पाँव वहीं जमकर रह गये हों। उसे ऐसा लगा कि उसकी आँखें बूढ़े पोलुएक्तोव की आँखों की तरह अपने कोटरों में से बाहर निकल आयी हैं; उसे महसूस हो रहा था कि जब तक वह ज़िन्दा रहेगा तब तक उसकी आँखें ऐसी ही रहेंगी, बाहर की ओर निकली हुई और दर्द करती हुई, वे कभी बन्द नहीं होंगी और सभी लोग उनमें उसके अपराध की कहानी पढ़ सकेंगे। ऐसा लग रहा था कि जैसे उसकी आँखें मर गयी हों। उसने अपनी उँगलियों से आँख की पुतलियों को छुआ : बहुत दर्द हुआ लेकिन वह अपनी पलकें बन्द नहीं कर सका। उसकी साँस डर के मारे तेज़ चलने लगा। आख़िरकार वह किसी तरह अपनी आँखें बन्द करने में कामयाब हो गया और चारों ओर से अँधेरे में घिर जाने पर उसे इतनी ख़ुशी हुई कि वह आँखें बन्द किये वहीं खड़ा रहा दृष्टिहीन, निश्चल, साँस के साथ हवा के बड़े-बड़े घूँट पीता हुआ... उसे पास से गुजरते हुए किसी आदमी का धक्का लगा। उसने मुड़कर देखा। भेड़ की खाल का कोट पहने हुए कोई लम्बा-सा आदमी था। जब तक वह आदमी बर्फ़ के सफ़ेद गालों के मंडराते हुए ढेर में खो नहीं गया तब तक वह उसे देखता रहा। फिर अपनी टोपी ठीक करके वह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ सड़क की पटरी पर चलने लगा; उसे अपनी आँखों की पीड़ा का और अपने सिर में बोझ का आभास था। उसके कन्धे झटका खा रहे थे, उसके हाथों की उँगलियाँ रह-रहकर अनायास सिकुड़ जाती थीं, उसके दिल में हठधर्मी की

ढिठाई समाती जा रही थी, और उसका सारा डर निकाले दे रही थी।

चौराहे पर पहुँचकर उसे एक पुलिसवाले की भूरी आकृति दिखाई दी। अनचाहे ही वह धीरे-धीरे, बहुत ही धीरे-धीरे सीधा उसके पास चला गया। उसका दिल डूबने लगा...

"बहुत बर्फ़ है!" पुलिसवाले के एकदम पास आकर और उसको ग़ौर से देखते हुए उसने कहा।

"है न! भगवान की कृपा है, अब सर्दी कम हो जायेगी," पुलिसवाले ने बहुत खुश होकर जवाब दिया। उसका चेहरा बड़ा-सा और लाल रंग का था और उसके दाढ़ी थी।

"क्या बजा है?" इल्या ने पूछा।

"एक मिनट रुको!" पुलिसवाले ने अपनी बाँह पर से बर्फ़ झाड़कर कोट के अन्दर हाथ डाला। इल्या को इस आदमी के सामने खड़े रहकर अत्यन्त वीभत्स आनन्द मिल रहा था। अचानक वह अनमनेपन से रूखी हँसी हँस दिया।

"हँस किस बात पर रहे हो?" पुलिसवाले ने उंगली के नाख़ून से घड़ी का ढक्कन खोलते हुए कहा।

"देखो, तुम्हारे ऊपर बर्फ़ कैसी जमा हो गयी है!" इल्या चिल्लाया।

"ऐसे तूफान में यह कोई ऐसी अजीब बात तो है नहीं। डेढ़ बजा है... एक बजकर पच्चीस मिनट हुए हैं। ऐसी बर्फ़ तो किसी पर भी जमा हो सकती है, भाई! लेकिन तुम्हें क्या? तुम तो अभी शराबख़ाने में जाओगे वहाँ गर्मी में बैठे रहोगे। शाम को छह बजे तक यहाँ खड़ा तो मुझे रहना पड़ेगा... देखो तुम्हारे बक्से पर कितनी बर्फ़ जमा हो गयी है..."

आह भरकर पुलिसवाले ने खट से अपनी घड़ी बन्द कर दी।

"यह तो ठीक कहते हो, मैं जाकर शराबख़ाने में बैठ जाऊँगा," इल्या मुँह टेढ़ा करके मुस्कराते हुए बोला। "वहाँ उस वाले में..." उसने जाने क्यों जोड़ दिया।

"मुझे ललचाओ नहीं..." पुलिसवाले ने कहा।

इल्या खिड़की के पास वाली जगह पर जाकर बैठ गया जहाँ से वह जानता था कि वह पोलुएक्तोव की दुकान से मिला हुआ छोटा-सा गिरजाघर देख सकता था। लेकिन इस वक़्त हर चीज़ को बर्फ़ के एक सफ़ेद पर्दे ने ढक रखा था। चक्कर काटकर नीचे ज़मीन पर गिरते बर्फ़ के गाले वह बड़े ग़ौर से देखता रहा, जिनकी वजह से क़दमों के सारे निशानों को जैसे रूई की एक मोटी परत ढके ले रही थी। उसका दिल ज़ोर से और बहुत तेज़ी से धड़क रहा था, लेकिन वह बहुत ख़ुश था। वही बड़ी देर तक कुछ सोचे बिना बैठा इन्तज़ार करता रहा कि आगे क्या हो।

जब वेटर चाय लेकर आया तो वह पूछे बिना रह न सका : "बाहर क्या हो रहा है... कुछ नहीं?"

"गर्मी बढ़ गयी है," वेटर ने उतावलेपन से कहा और तेज़ी से चला गया। इल्या ने अपने लिए गिलास में चाय उड़ेली लेकिन पी नहीं, यहाँ तक कि वह हिला भी नहीं, वह ध्यान केन्द्रित करके इन्तज़ार करता रहा। उसे गर्मी लगी, वह अपने कोट का कॉलर खोलने लगा और ठोड़ी को हाथ लगाते ही वह चौंक पड़ा : उसे लगा कि वे उसके हाथ नहीं थे, किसी और के हाथ थे। ठण्डे, अजनबी हाथ। हाथ अपने चेहरे के सामने करके वह बड़े ध्यान से अपनी उँगलियों को देखना लगा। उन पर कोई धब्बे नहीं थे, फिर भी लुन्योव ने सोचा कि उन्हें साबुन से धो लेना ही अच्छा होगा...

"पोलुएक्तोव का ख़ून हो गया!" किसी ने चिल्लाकर कहा।

इल्या उछलकर खड़ा हो गया, मानो यह जवाब उसके लिए कोई आवाह्न हो। लेकिन शराबख़ाने में खलबली मच गयी; लोग चलते-चलते अपनी टोपियाँ पहनते हुए उठकर दरवाज़े की ओर चल पड़े। उसने वेटर की ट्रे में दस कोपेक का एक सिक्का फेंका, अपने बक्से का तस्मा कन्धे पर सरकाया और दूसरों के साथ वह भी जल्दी-जल्दी बाहर निकल गया।

सूदख़ोर की दुकान के बाहर भीड़ जमा हो गयी थी। दुकान में पुलिसवालों की आवाज़ाही लगी हुई थी और वे चिन्तित स्वर में चिल्ला-चिल्लाकर कुछ कह रहे थे। वह दाढ़ी वाला सिपाही, जिससे इल्या ने बात की थी, यहाँ भी था। वह भीड़ को अन्दर जाने से रोकने के लिए दरवाज़े पर खड़ा था; वह डरी-डरी आँखों से लोगों को देख रहा था और अपना बायाँ गाल मल रहा था, जो अब दाहिने गाल से ज़्यादा लाल था। इल्या ऐसी जगह जाकर खड़ा हो गया जहाँ वह पुलिसवाला उसे देख सके और लोगों की बातें सुनने लगा। उसकी बग़ल में एक लम्बा-सा कठोर मुद्रा वाला व्यापारी खड़ा था जिसके काली दाढ़ी थी; वह भौंहे चढ़ाकर एक बूढ़े की बात सुन रहा था जो लोमड़ी की खाल का कोट पहना था और उत्तेजित स्वर में कुछ कह रहा था।

"तो लड़के ने सोचा कि उसे दौरा पड़ गया है या ऐसा ही कुछ हो गया है और वह प्योत्र स्तेपानोविच को बुला लाने के लिए भागा   'दुकान में चलिए,' वह बोला, 'मालिक बहुत बीमार हैं।' सो प्योत्र भागा हुआ आया और देखा कि वह तो मर चुका है! ज़रा सोचो   कभी कहीं सुना है ऐसा? दिन-दहाड़े, ऐसी चलती हुई सड़क पर! देखो तो क्या हुआ!"

काली दाढ़ी वाला व्यापारी ज़ोर से खाँसा।

"इसमें भगवान की मर्ज़ी का हाथ है!" उसने कठोरता से भारी आवाज़ में कहा। "बात साफ़ है कि भगवान पोलुएक्तोव को उसके पापों के लिए माफ़ नहीं करना

चाहता था...”

लुन्योव बोलने वाले की सूरत ज़्यादा अच्छी तरह देखने के लिए आगे बढ़ा और उसका बक्सा उससे जा टकराया।

“ज़रा देखके!” व्यापारी ने इल्या को अपनी कुहनी से धक्का दिया और उसके चेहरे को पैनी नज़रों से घूरते हुए चिल्लाया। “कहाँ घुस रहा है?”

फिर वह उसी छोटे-से बूढ़े आदमी की ओर मुड़ा। “लिखा है, जब तक भगवान की मर्ज़ी नहीं होगी तब तक आदमी का बाल भी बाँका नहीं हो सकता।”

“बिल्कुल ठीक बात है,” बूढ़े ने सिर हिलाकर कहा और फिर अपनी आवाज़ धीमी करके और आँख मारकर जोड़ दिया, “भगवान बदमाशों पर नज़र रखता है... भगवान मुझे माफ़ करे! इस तरह कहना पाप है, पर चुप नहीं रह सकता हूँ... यही बात है!”

इल्या दबी हुई हँसी हँस दिया। ये बातें सुनते हुए उसने अपने अन्दर कोई ताक़त और ऐसी हिम्मत उमड़ती हुई महसूस की जो भयानक भी थी और सुखद भी। अगर उस वक़्त किसी ने उससे पूछा होता, “क्या तुमने उसका ख़ून किया है?” तो वह यक़ीनन निडर होकर जवाब देता, “हाँ, मैंने किया है।”

दिल में यही भावना लेकर वह भीड़ को चीरता हुआ दुकान के दरवाज़े तक पहुँच गया।

“कहाँ जा रहे हो?” पुलिसवाले ने उसका कन्धा झँझोड़कर कहा। “यहाँ तुम्हारा क्या काम है? भागो यहाँ से!”

इल्या लड़खड़ाकर एक तमाशबीन से जा टकराया। उसे फिर धक्का दिया गया।

“दो इसे एक ज़ोर का हाथ! पिये होगा!”

लुन्योव भीड़ से बाहर निकलकर गिरजाघर की सीढ़ियों पर जा बैठा और मन ही मन इन सब लोगों पर हँसने लगा। धीमी आवाज़ों और पाँवों तले बर्फ़ की चरमराहट को चीरती हुई अलग-अलग लोगों की बातें उसके कान तक आ रही थीं :

“और उस बदमाश को भी यह काम उसी वक़्त करना था जब मैं ड्यूटी पर था!”

“कुछ भी हो, शहर में उसका कारोबार सबसे बड़ा था...”

“इतनी बर्फ़ में मुझे कुछ भी नहीं दिखाई देता...”

“वह पलक झपकाये बिना लोगों की खाल तक खींच लेता था...”

“देखो, उसकी बीवी आ गयी...”

“बेचारी!” चीथड़ों में लिपटे हुए एक आदमी ने कहा।

लुन्योव ने उठकर देखा कि भारी बदन की एक बूढ़ी औरत ढीली-ढाला ओवरकोट

पहने और सिर पर काली शाल डाले हुए बहुत कोशिश करके चौड़ी-सी बर्फ़गाड़ी पर से उतर रही है, जिसमें चारों ओर ओढ़ने के लिए रीछ की खाल लगी हुई थी। एक ओर से पुलिसवाला उसे सहारा दे रहा था और दूसरी ओर से लाल मूँछों वाला एक आदमी।

"हे दयालु भगवन!..." इल्या ने उसे भयभीत आवाज़ से कहते सुना। भीड़ में ख़ामोशी छा गयी। उसे देखते हुए इल्या को ओलिम्पियादा का खयाल आया...

"उसका बेटा है यहाँ?" किसी ने धीरे से पूछा।

"नहीं, वह मास्को में है।"

"शायद वह इसी दिन की राह देख रहा होगा..."

"बेशक!"

लुन्योव बहुत ख़ुश था कि किसी को पोलुएक्तोव के मरने का अफ़सोस नहीं था, इसके साथ ही काली दाढ़ी वाले उस व्यापारी को छोड़कर ये बाक़ी सारे लोग उसे बुद्धिहीन और यहाँ तक कि घिनौने लगते थे। उस व्यापारी में एक तरह की कठोरता और सच्चाई थी, लेकिन बाक़ी सब लोग जंगल में खड़े हुए ठूँठों की तरह थे जो इल्या को धक्का देकर अपनी गन्दी ज़बान से द्वेष-भरी बातें कर रहे थे।

जब सूदख़ोर की छोटी-सी लाश बाहर निकाल लायी गयी तो इल्या सर्दी से ठिठुरता और थका हुआ घर लौट आया, लेकिन उसका मन शान्त था। अपना कमरा बन्द करके वह पैसा गिनने लगा : छोटे नोटों की दो मोटी गड्डियों में पाँच-पाँच सौ रूबल थे और तीसरी गड्डी में साढ़े आठ सौ। कूपनों की एक गड्डी और थी, लेकिन उसने उन्हें गिनने की फिक्र नहीं की। उसने सारा पैसा एक काग़ज़ में लपेटा और मेज़ पर कुहनिया टिकाये सोचने लगा कि उसे कहाँ छिपाये। उसी समय उसने महसूस किया कि उसे नींद-सी आने लगी है। उसने सारा पैसा अटारी में छिपा देने का फ़ैसला किया और उसे हाथ में लिए हुए बाहर निकला; उसने उसे किसी की नज़रों से बचाने की कोई कोशिश नहीं की। ड्योढ़ी में उसकी मुठभेड़ याकोव से हो गयी।

"इतनी जल्दी घर आ गये?" याकोव ने कहा। "वह हाथ में क्या है?"

"यह?" इल्या ने पैसे की ओर देखते हुए कहा। उसके शरीर में सच बोलने के भय की एक हल्की लहर-सी दौड़ गयी, लेकिन उसने बड़ी लापरवाही से पैकेट हिलाते हुए जल्दी से कहा, "यह... फ़ीता है..."

"हम लोगों के साथ चाय पीने आते हो?" याकोव ने पूछा।

"अभी एक मिनट में।"

वह जल्दी से वहाँ से चल दिया; उसके क़दम डगमगा रहे थे और उसका सिर ऐसा भारी-भारी और धुँधला-धुँधला लग रहा था जैसे उसने शराब पी रखी हो। बड़ी

सावधानी से वह अटारी की सीढ़ियाँ चढ़ा; उसे डर लग रहा था कि कहीं कोई शोर न मचाए, कहीं उसे कोई मिल न जाये। जब वह धुआँरे के पास ज़मीन खोदकर उसमें पैसा गाड़ रहा था उसे अचानक ऐसा लगा कि कोई कोने में छिपा बैठा है और उसे देख रहा है। सबसे पहले तो उसके जी में आया कि कोने में एक पत्थर फेंककर मारे, लेकिन सचेत होकर वह चुपचाप नीचे उतर गया। उसे अब बिल्कुल डर नहीं लग रहा था; उसने पैसे के साथ ही मानो अपना डर भी गाड़ दिया था। लेकिन अब शंकाओं ने उसे आ घेरा था।

"मैंने उसका ख़ून क्यों किया?" वह अपने आप से पूछता रहा। जब वह तहख़ाने वाले कमरे में घुसा तो माशा, जो चूल्हे के पास समोवार गर्म करने में व्यस्त थी, ख़ुश होकर चिल्ला पड़ी :

"आज कितनी जल्दी आ गये!"

"बर्फ़ की वजह से," उसने कहा, लेकिन अगले ही क्षण वह चिड़चिड़ाकर चिल्लाया, "जल्दी क्यों? मैं तो हमेशा इसी वक़्त घर आता हूँ। दिखायी नहीं देता तुम्हें? अँधेरा हो गया है।"

"यहाँ तहख़ाने में तो हमेशा ही अँधेरा रहता है। मगर तुम चिल्ला क्यों रहे हो?"

"क्योंकि तुम सब लोग जासूसों की तरह बातें करते हो : 'कहाँ जा रहे हो?,' 'घर इतनी जल्दी क्यों आ गये?,' 'तुम्हारे हाथ में क्या है?' तुमसे मतलब!"

माशा ने उसे ग़ौर से देखा।

"तुम अपने आप को बहुत समझने लगे हो, इल्या," उसने झिड़ककर कहा।

"भाड़ में जाओ तुम सब!" और यह कहकर लुन्योव मेज़ पर बैठ गया। अपमानित होकर माशा ने मुँह फेर लिया और समोवार फूँकने लगी। वह छोटी-सी दुबली-पतली लड़की वहाँ खड़ी अपनी काली लटें बार-बार पीछे हटा रही थी, खाँस रही थी और धुएँ के मारे उसकी आँखें बन्द हुई जा रही थीं। उसका चेहरा दुबला-पतला था और उसकी आँखों के नीचे के काले-काले घेरों की वजह से उसकी आँखें ज़्यादा चमकदार लग रही थीं। देखने में वह बाग़ के किसी दूर कोने में झाड़-झंखाड़ के बीच उगे हुई फूल जैसी लगती थी। इल्या बैठा उसे देखता रहा और मन ही मन सोचता रहा   यह लड़की बिल्कुल अकेली इस बिल में रहती है और बड़ों की तरह काम करती है; इसकी ज़िन्दगी में न कोई सुख इस वक़्त है न आगे चलकर मिलने की कोई उम्मीद है। दूसरी तरफ़,   ख़ुद वह जल्दी ही उस क़िस्म की ज़िन्दगी बसर करने लगेगा जिसकी वह अर्से से तमन्ना रखता था : शान्त और साफ़-सुथरे वातावरण में। यह विचार बहुत सुखद था और माशा के सामने अपने आप को अपराधी महसूस करके उसने धीरे से उसे पुकारा।

"क्या चाहिए, लड़ाकू मुर्गे?" वह बोली।

"तुम्हें मालूम है न कि मैं... ए... दुष्ट हूँ," लुन्योव बोला। उसकी आवाज़ लड़खड़ायी : वह दुविधा में पड़ा हुआ था कि उसे बता दे कि नहीं। वह सीधी खड़ी हो गयी और उसकी ओर देखकर मुस्करा दी।

"कोई तुम्हारी वैसी पिटाई करने वाला नहीं है जैसी कि तुम्हारी होनी चाहिए, यही मामला है!"

वह जल्दी से उसके पास चली गयी और उतावलेपन से बोली, "सुनो, इल्या, अपने चाचा से कहो कि मुझे अपने साथ लेते जायें! कहो न! मैं जनम-भर तुम्हारा उपकार मानूँगी!"

"तुम्हें कहाँ ले जायें?" लुन्योव ने थके हुए स्वर में कहा जाये; वह अपने विचारों में इतना खोया हुआ था कि उसे बहुत धुँधला-धुँधला ही अन्दाज़ा था कि वह क्या कह रही है।

"अपने साथ! उनसे कहो तो, कहो न!"

उसने अपने दोनों हाथ इस तरह जोड़ लिए मानो प्रार्थना कर रही हो और उसकी आँखों में आँसू डबडबा आये।

"अरे, कितना अच्छा होगा!" वह आह भरकर बोल रही थी। "हम लोग वसन्त में चल देंगे। मैं रोज़ यही सोचती रहती हूँ। रात को भी मैं इसी के सपने देखती हूँ मैं देखती हूँ कि मैं चली जा रही हूँ, चली जा रही हूँ... उनसे कहो न मुझे ले जाने को! मेहरबानी करके! वह तुम्हारी बात मान लेंगे। कहो कि उन्हें ले ही जाना पड़ेगा। मैं उनकी रोटी नहीं खाऊँगी। ख़ुद अपने लिए भीख माँगकर ले आया करूँगी। लोग मुझे दे देंगे, मैं इतनी छोटी जो हूँ... मेरे अच्छे इल्या, कहो न उनसे! चाहो तो मैं तुम्हारा हाथ चूम लूँगी?"

सहसा वह उसका हाथ पकड़कर उस पर झुक गयी। उसे ढकेलकर इल्या उछलकर खड़ा हो गया।

"बेवकू फ़ कहीं की!" वह चिल्लाकर बोला। "ऐसा न करो! इन हाथों से मैंने एक आदमी का गला घोंटा है।"

पर अपने ही शब्दों से भयभीत होकर उसने जल्दी से बात बनाते हुए जोड़ दिया :

"हो सकता है... मैंने, हो सकता है, कोई ऐसा काम किया हो... और तुम चूम रही हो।"

"कोई बात नहीं," माशा ने उसके पास आते हुए कहा। "मैं फिर भी चूमूँगी, उससे क्या फ़र्क पड़ने वाला है? पेत्रूख़ा तो तुमसे भी बुरा है, लेकिन मैं तो खाने के हर टुकड़े के लिए उसका हाथ चूमती हूँ। मुझे इससे नफ़रत होती है, लेकिन वह मुझे

इसके लिए मजबूर करता है। 'चूमो!' वह कहता है और वह मेरा बदन भी टटोलता है, गाल नोचता है और मुझे सहलाता भी है, दरिन्दा बेशर्म आदमी।"

किसी वजह से   शायद इसलिए कि इल्या ने वे भयानक शब्द कह दिये थे, या शायद इसलिए कि उसने सचमुच उन्हें कहा नहीं था   अचानक उसके दिल का बोझ हल्का हो गया और वह ख़ुश हो गया।

"अच्छी बात है, तुम्हारी ख़ातिर मैं यह काम कर दूँगा," उसने बड़े प्यार से माशा की ओर देखकर मुस्कराते हुए नरमी से कहा। "मैं सचमुच कर दूँगा। तुम उसके साथ जाओगी... और मैं तुम्हें कुछ पैसा भी दूँगा।"

"कितने प्यारे हो तुम!" उछलकर उसके गले में बाँहें डालते हुए माशा ने चिल्लाकर कहा।

"ठहरो!" इल्या ने गम्भीर होकर कहा। "मैंने कह दिया जाओगी, तो जाओगी! और मेरे लिए प्रार्थना करना, माशा..."

"तेरे लिए? अरे भगवान!"

उसी वक़्त दरवाज़े पर याकोव दिखाई दिया।

"चीख़ किस बात पर रही हो?" उसने माशा से आश्चर्य से पूछा। "बाहर आँगन तक तुम्हारी आवाज़ सुनायी दे रही थी!"

"याकोव!" वह ख़ुशी के मारे हाँफते हुए चिल्लायी और याकोव को सुनाने लगी : "मैं जा रही हूँ। मैं इस जगह से हमेशा के लिए जा रही हूँ! अलविदा! इसने कुबड़े से कहने का वादा किया है!"

"तो यह बात है!" याकोव ने धीमे से सीटी बजाते हुए कहा।

"ख़ैर, मेरा तो ख़ात्मा समझो। अब मैं बिल्कुल अकेला रहूँगा, जैसे आसमान में चाँद अकेला होता है..."

"साथ रहने के लिए कोई आया नौकर रख लेना," इल्या ने हँसकर कहा।

"मैं वोद्का पीने लगूँगा," सिर हिलाकर याकोव बोला।

माशा ने एक नज़र उसे देखा और सिर झुकाये दरवाज़े की ओर चली गयी।

"तुम भी कैसे कमज़ोर आदमी हो, याकोव," बड़े उदास भाव से माशा की निन्दा-भरी आवाज़ सुनायी दी।

"और तुम दोनों बहुत ताक़तवर हो! आदमी को इस तरह छोड़े जा रहे हो..."

उदास होकर वह इल्या के सामने एक कुर्सी पर बैठ गया।

"मैं भी क्यों न तेरेन्ती के साथ ही चुपके से खिसक जाऊँ?" उसने कहा।

"ज़रूर चले जाओ। तुम्हारी जगह मैं होता तो यही करता..."

"तुम करते! मेरा बाप मेरे पीछे पुलिस लगवा देगा..."

इसके बाद कुछ देर चुप्पी रही, जिसे सबसे पहले याकोव ने तोड़ा।

"शराब पीकर मदहोश हो जाना भी कितनी अच्छी बात है, भाइयो!" उसने बनावटी ख़ुशी के साथ कहा। "न कुछ जानना... न किसी चीज़ के बारे में सोचना..."

"लानत है तुम्हारे ऊपर!" माशा ने समोवार मेज़ पर रखते हुए कहा।

"ज़बान बन्द करो!" याकोव ने चिढ़कर कहा। "तुम्हारे लिए तो बाप का होना न होना बराबर है। वह तो तुम्हारी ज़िन्दगी में कोई रोड़ा नहीं अटकाता।"

"अरे, हाँ! मैं तो बड़े चैन की ज़िन्दगी बिता रही हूँ! मेरा बस चलता तो मैं तो भाग जाती और कभी पलटकर देखती भी नहीं।"

"हममें से सभी का बुरा हाल है!" इल्या ने धीमे स्वर में कहा फिर विचारमग्न हो गया।

याकोव स्वप्नमय-सा खिड़की के बाहर देखता रहा।

"कितना अच्छा हो अगर हम सब कुछ छोड़कर कहीं दूर जा सकें!" वह बोला। "जंगल के छोर पर, नदी के किनारे जा बैठें और सभी चीज़ों के बारे में सोचते रहें..."

"बेवकू फ़ी है ज़िन्दगी से दूर भाग जाना," इल्या ने चिढ़कर कहा।

याकोव ने उसे ज़ोर से घूरा और कुछ डर से कहा :

"सुनो, मुझे एक किताब मिलने में कामयाबी तो हुई है..."

"कैसी किताब?"

"पुरानी किताब है... चमड़े की जिल्द की, जैसी भजनों की किताब होती है। उसे किसी विधर्मी ने लिखा होगा। मैंने उसे एक तातार से सत्तर कोपेक में ख़रीदा था।"

"क्या नाम है?" इल्या ने लापरवाही से पूछा। उसकी बात करने की कोई इच्छा नहीं हो रही थी, लेकिन वह महसूस कर रहा था कि बात न करना ख़तरनाक था।

"नाम तो फट गया है, लेकिन सारी किताब इसके बारे में है कि यह दुनिया शुरू कैसे हुई।" आवाज़ धीमी करके याकोव सुना रहा था। "पढ़ने में बहुत कठिन है. .. उसमें कहा गया है कि सबसे पहले मिलेतस के थेल्स ने सारी चीज़ों की शुरुआत के बारे में पूछा था : 'और उसका नाम जल है, और जल ही से सारी चीज़ें पैदा हुई हैं और पैदा हो रही हैं, लेकिन थेल्स ने कहा था कि ईश्वर का नाम है विचार, जिससे जल और उससे उत्पन्न होने वाली सारी चीज़ें उत्पन्न होती हैं।' और फिर एक और विधर्मी हुआ, जिसका नाम था डायागोरस, जिसने कहा, 'बुद्धि ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करती है।' दूसरे शब्दों में, वह ईश्वर में विश्वास नहीं रखता था। एक और आदमी था जिसका नाम था एपीक्यूरस, जिसने कहा, 'ईश्वर का अस्तित्व तो है लेकिन

वह न तो किसी को कुछ देता है, न किसी के साथ कोई उपकार करता है, न ही उसे इस संसार की बातों की कोई चिन्ता है।' दूसरे शब्दों में, ईश्वर है तो लेकिन उसे इन्सानों की रत्ती-भर परवाह नहीं है मैं तो उसका मतलब यही समझता हूँ। जैसे भी बन पड़े वे अपना काम चलायें। इनसे उसे कोई सरोकार नहीं।"

इल्या भवें चढ़ाये हुए उठा और उसने अपने दोस्त के विचारों के मन्द प्रवाह को बीच में ही काट दिया।

"मेरा जी चाहता है कि वह किताब लेकर तुम्हारे सिर पर दे मारूँ," वह बोला।

"लेकिन क्यों?" याकोव ने पूछा; उसके दिल को ठेस लगी थी और वह भौचक्का रह गया था।

"इसलिए कि तुम फिर कभी उसे न देखो। तुम तो निरे बुद्धू हो ही, लेकिन जिसने यह किताब लिखी थी वह तुमसे बड़ा बुद्धू था।"

लुन्योव मेज़ का चक्कर काटकर याकोव के पास आया और उसके ऊपर झुककर खड़ा हो गया।

"भगवान है! वह सब कुछ देखता है! वह सब कुछ जानता है! और भगवान के अलावा किसी की कोई हैसियत नहीं है!" उसने ये शब्द बड़ी कटुता से आवेश के साथ कहे, और एक-एक शब्द याकोव के बड़े से सिर पर हथौड़ें की चोटों की तरह लगा। "यह जीवन तो हमारी परीक्षा लेने के लिए दिया गया था। पाप एक प्रलोभन है हम उसका मुकाबला कर सकते हैं या नहीं? अगर नहीं कर सकते तो हमें दण्ड दिया जायेगा। ज़रूर दण्ड दिया जायेगा। लोग दण्ड नहीं देंगे, दण्ड भगवान देगा। यह बात पक्की है।"

"रुको!" याकोव ऊँचे स्वर में बोला। "मैं इसकी बात नहीं कर रहा था।"

"उससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता! तुम मेरा इंसाफ़ कैसे कर सकते हो?" लुन्योव क्रोध और उत्तेजना से पीला होकर चिल्लाया। "जब तक भगवान की मर्ज़ी नहीं होगी तब तक आदमी का बाल भी बाँका नहीं हो सकता। यह बात तुमने सुनी है? इसका मतलब है कि जो अपराध मैंने किया है वह उसकी जानकारी में किया गया है और उसकी इच्छा से किया गया है! बुद्धू!"

"तुम पागल तो नहीं हो गये हो?" भयभीत याकोव दीवार पर पीठ टिकाकर चिल्लाया। "कौन-सा पाप किया है तुमने?"

लुन्योव के कानों में जो गूँज हो रही थी उसे बेधकर यह सवाल उसे सुनायी दिया, और ऐसा लगा कि जैसे किसी ने उस पर ठण्डा पानी डाल दिया हो। उसने याकोव पर सन्देह भरी दृष्टि डाली, फिर माशा पर; वह भी उसकी चिल्लाहट और उत्तेजना से उतनी ही भयभीत हो गयी थी।

"वह तो मैंने एक मिसाल दी थी," इल्या ने धीमे स्वर में कहा।

"तुम्हें ज़रूर कुछ हो गया है," माशा ने डरते-डरते कहा।

"तुम्हारी आँखें भी कुछ धुँधली दिखाई देती हैं," याकोव ने इल्या के चेहरे को देखते हुए जोड़ दिया।

इल्या ने अनायास ही अपनी आँखों पर हाथ फेरा।

"कोई बात नहीं है... यह तो आनी-जानी बात है!" उसने क्षीण स्वर में कहा।

लेकिन दूसरे लोगों के बीच रहना उसके लिए असह्य होता जा रहा था, इसलिए चाय पीने से इनकार करके वह अपने कमरे में चला आया।

वह अभी चारपाई पर लेटा ही था कि तेरेन्ती अन्दर आ गया। जब से उस कुबड़े ने अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए तीर्थ यात्रा करने का फ़ैसला किया था तब से उसकी आँखों में एक आनन्दमय चमक आ गयी थी, मानो अपने मोक्ष का आनन्द उसे अभी से मिलने लगा हो। अपने होंठों पर मुस्कराहट लिए वह चुपचाप अपने भतीजे की चारपाई के पास जाकर खड़ा हो गया और अपनी दाढ़ी नोचते हुए बड़ी नरमी से बोला :

"मैंने तुम्हारे अन्दर आने की आहट सुनी तो सोचा कि तुमसे कुछ बातें कर लूँ अब हम लोगों को बहुत देर साथ नहीं रहना है।"

"तुम जा रहे हो?" इल्या ने रूखेपन से पूछा।

"जैसे ही सर्दी कुछ कम होगी। मैं ईस्टर तक कीव पहुँच जाना चाहता हूँ..."

"बात यह है, माशा को अपने साथ लेते जाओ..."

"माशा!" कुबड़े ने चौंककर हाथ हिलाते हुए ऊँचे स्वर में कहा।

"सुनो," इल्या ने दृढ़ता से कहा। "यहाँ उसके रहने से कोई फ़ायदा नहीं है। और फिर उसकी उम्र भी ऐसी है... तुम तो जानते ही हो... याकोव है... और पेत्रूख़ा है... मेरा मतलब समझ रहे हो न? इस घर पर श्राप है, यह घर एक फन्दा है! उसे यहाँ से निकाल ले जाना होगा, और फिर वह शायद यहाँ कभी वापस न आये।"

"लेकिन मैं उसका करूँगा क्या?" कुबड़े ने दुखी होकर कहा।

"ले जाओ। ले जाओ उसे!" इल्या ने आग्रह किया। "और वे सौ रूबल भी ले जाओ उसके लिए... मुझे तुम्हारा पैसा नहीं चाहिए... वह तुम्हारे लिए दुआ माँगेगी और उसकी दुआओं में बहुत असर है..."

कुबड़ा सोच में पड़ गया और उसने दोहराया : "बहुत असर है... यह तो सच है... मैं तुम्हारा पैसा तो नहीं ले सकता उसे तो वैसे ही रहने देते हैं। रही माशा की बात तो उसके बारे में मैं सोचूँगा..."

उसी क्षण तेरेन्ती की आँखें उल्लास से चमक उठीं और वह झुककर इल्या के कान में उत्साह के साथ फुसफुसाने लगा :

"कल कैसे कमाल के आदमी से मिला मैं! बहुत मशहूर आदमी है प्योत्र वसील्येविच सिज़ोव कभी सुना है उसके बारे में? बड़ा विद्वान है। कैसी ज्ञान की बातें भरी हुई हैं उसके दिमाग़ में! मेरे मन को शान्ति देने के लिए मानो भगवान ने ख़ुद उसे मेरे पास भेजा हो मुझ पापी को अपने प्रति भगवान की कृपा में शंका से बचाने के लिए..."

इल्या चुपचाप लेटा रहा, कुछ बोला नहीं। वह चाहता था कि चाचा वहाँ से चला जाये। अधखुली आँखों से वह खिड़की के पार ऊँची काली दीवार को घूरता रहा।

"हम लोगों ने पाप और आत्मा के उद्धार के बारे में बातें की," तेरेन्ती उत्सुकता से कहता रहा। "वह बोला, 'जिस तरह रुखानी पर धार रखने के लिए सिल्ली की ज़रूरत होती है, उसी तरह मनुष्य की आत्मा को तोड़ने-मरोड़ने के लिए पाप की ज़रूरत होती है, ताकि उसे दयालु ईश्वर के चरणों में राख में फेंका जा सके।'"

इल्या ने चाचा की ओर देखा।

"क्या उसकी सूरत शैतान जैसी थी, तुम्हारे उस विद्वान आदमी की?" उसने कटुता-भरी मुस्कराहट के साथ पूछा।

"कैसी बात करते हो तुम!" तेरेन्ती भतीजे से पीछे हटते हुए चिल्लाया। "वह बहुत धर्मात्मा आदमी है... अरे, उसने जितना नाम कमाया है उतना तो तुम्हारे दादा ने भी कभी नहीं कमाया... अरे, इल्या, इल्या!" और इतना कहकर कुबड़ा अपना सिर निन्दा से हिलाने लगा और अपने होंठ चबाने लगा।

"अच्छी बात है!" इल्या ने रूखेपन से और द्वेष की भावना से कहा। "और क्या कहा उसने?"

इल्या अरुचि के भाव से हँसा जिसे देखकर उसके चाचा के चेहरे पर आश्चर्य का भाव झलक उठा।

"तुम्हें क्या हो गया है?" तेरेन्ती ने पीछे हटते हुए पूछा।

"कुछ भी नहीं। बहुत ही बढ़िया बात कही उस विद्वान आदमी ने... मुझे अच्छी लगी। सच तो यह है कि मैं भी यही सोचता हूँ!"

एक सेकण्ड तक कुछ बोले बिना वह अपने चाचा को घूरता रहा, और फिर उसने अपना मुँह दीवार की ओर फेर लिया।

"और इसके अलावा," तेरेन्ती ने बड़ी सतर्कता से कहना शुरू किया, "उसने कहा कि पाप आत्मा को पश्चाताप से उत्तेजित करता है, ताकि वह सर्वशक्तिमान के सिंहासन तक पहुँच सके..."

"तुम खुद कुछ-कुछ शैतान जैसे लगते हो, चाचा," इल्या ने बात काटते हुए कहा और फिर हँसा।

कुबड़े ने बड़ी लाचारी से अपने हाथ हिलाये जैसे कोई बड़ी-सी चिड़िया अपने पंख फड़फड़ा रही हो; फिर वह निश्चल हो गया, डरा हुआ और आहत-सा। लुन्योव अचानक अपने पाँव चारपाई के नीचे उतारकर बैठ गया और उसने चाचा को बग़ल की ओर से धीरे से धक्का दिया।

"ज़रा खिसको," उसने तीखे स्वर में कहा।

तेरेन्ती उछलकर कमरे के बीच में जाकर खड़ा हो गया, उसने अपना कूबड़ झिटका और कुछ न समझती हुई आँखों से अपने भतीजे को देखने लगा, जो सिर झुकाये, कन्धों को ऊपर किये अपनी उँगलियों से चारपाई का कगर पकड़े बैठा था।

"और अगर मैं प्रायश्चित न करना चाहूँ, तो?" इल्या ने दृढ़ स्वर में पूछा। "अगर मैं इस तरह तर्क दूँ : मेरे मन में पाप करने का कोई विचार नहीं था अपने आप ही हो गया... सब कुछ भगवान की इच्छा से किया जाता है... तो मैं चिन्ता क्यों करूँ? वह सब कुछ जानता है और हर बात का निर्देश देता है... अगर वह न चाहता होता कि मैं ऐसा करूँ तो वह मुझे रोकता। पर उसने मुझे नहीं रोका; इसलिए मेरा यह काम करना ठीक था। सभी लोग पाप का जीवन बिताते हैं, लेकिन क्या उनमें से कभी कोई प्रायश्चित करता है?"

"मेरी समझ में तो तुम्हारी बात तनिक भी नहीं आती," तेरेन्ती ने उदास भाव से आह भरकर कहा।

इल्या हँस दिया।

"अगर तुम्हारी समझ में नहीं आती तो मुझसे बात न करो..."

वह फिर चारपाई पर लेट गया।

"मेरा जी अच्छा नहीं है..." उसने चाचा से कहा।

"सो तो देख रहा हूँ मैं..."

"मुझे नींद आ रही है। तुम जाओ यहाँ से!"

जब इल्या अकेला रह गया तो उसे लगा कि उसका सिर चकरा रहा है। पिछले कुछ घण्टों के अनुभवों ने अजीब ढंग से मिलकर कुछ भारी, गर्म भाप का रूप धारण कर लिया था और वह उसके दिमाग़ को दहका रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह न जाने कब से यह यातना झेल रहा था, मानो जब उसने उस बूढ़े की हत्या की थी तब से केवल कुछ घण्टे नहीं बल्कि न जाने कितने युग बीत गये थे।

उसने अपनी आँखें मूँद लीं और निश्चल पड़ा रहा; उसके कानों में बूढ़े का क्षीण स्वर गूँजता रहा :

"क्या हुआ? इतनी देर क्यों लग रही है?"

उसके दिमाग़ में काली दाढ़ी वाले व्यापारी की कठोर आवाज़ माशा के विनय-भरे आग्रह के साथ, और याकोव की धर्मद्रोही किताब के प्राचीन शब्द उस विद्वान आदमी की बातों के साथ गड्ड-मड्ड हुए जा रहे थे। हर चीज़ झोंके खा रही थी और हिल रही थी और उसे निरन्तर घसीटकर नीचे लिए जा रही थी। काश उसे नींद आ जाती और वह सब कुछ भूल जाता! वह सो गया...

सुबह जब वह सोकर उठा तो दीवार पर पड़ती हुई छाया से उसे पता चला कि मौसम अच्छा था और सर्दी पड़ रही थी। उसने पिछले दिन की घटनाओं को याद किया और उसके मन में यह विश्वास पैदा हुआ कि वह जानता था कि उसे क्या आचरण अपनाना चाहिए। घण्टे भर बाद वह अपना बक्सा सीने पर लटकाये सड़क पर चला जा रहा था; सूरज की चमक से बचने के लिए अपनी आँखें सिकोड़कर वह गुजरते हुए राहगीरों को घूर रहा था। जब वह गिरजाघर के पास पहुँचा तो हमेशा की तरह उसने अपनी टोपी उतारकर सीने पर सलीब का निशान बनाया। पोलुएक्तोव की बन्द दुकान से मिले हुए गिरजाघर के पास पहुँचकर उसने फिर अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया और शान्त भाव से अपने रास्ते चल दिया। उसके मन में न भय था न करुणा और न ही वह किसी दूसरी परेशान करने वाली भावना का अनुभव कर रहा था। दोपहर को शराबख़ाने में खाना खाते समय उसने अख़बार में सूदख़ोर की दुस्साहसिक हत्या का विवरण पढ़ा। जब वह इन शब्दों पर पहुँचा कि "पुलिस हत्यारे का पता लगाने की भरपूर कोशिश कर रही है," तो वह मुस्करा दिया और उसने अपना सिर हिलाया। उसे पूरा यक़ीन था कि जब तक वह ख़ुद ही न चाहे, वे उसका पता कभी न लगा पायेंगे...

उसी दिन शाम को ओलिम्पियादा की नौकरानी उसके पास उसका एक पर्चा लेकर आयी।

"कुज़्नेत्स्काया स्ट्रीट के नुक्कड़ पर हम्माम के पास आकर नौ बजे मुझसे मिलो।"

यह पढ़कर उसका अन्तरतम तक इस तरह काँपने और सिकुड़ने लगा जैसे उसे सर्दी लग रही हो। उसे अपनी रखैल के चेहरे की उस समय की तिरस्कार भरी मुद्रा याद आयी जब उसने ये चुभते हुए दिल दुखाने वाले शब्द कहे थे :

"अपने पैसे लेने के लिए तुम्हें कोई और वक़्त नहीं मिला था?"

वह पर्चे को घूरता रहा और सोचता रहा कि ओलिम्पियादा ने उसे क्यों बुलाया होगा। सम्भावित कारण का अनुमान लगाकर उसका दिल डूबने लगा। नौ बजे वह

बताई हुई जगह पर पहुँच गया और जब उसने हम्माम के सामने अकेली और जोड़ों में टहलती हुई औरतों के बीच ओलिम्पियादा की लम्बे डील-डौल वाली आकृति को देखा तो उसका भय और भी बढ़ गया। वह एक पुराना और फटा हुआ फ़र का कोट पहने थी और उसने अपने सिर पर एक शाल लपेट रखी थी जिसकी वजह से आँखों को छोड़कर उसका सारा चेहरा ढक गया था। वह कुछ कहे बिना क़दम आगे बढ़ाकर उसके सामने आ गया।

"चले आओ!" उसने कहा और दबे स्वर में जोड़ दिया, "चेहरा छिपाने के लिए कोट का कालर खड़ा कर लो..."

वे हम्माम के गलियारे में से होकर आगे बढ़े और एक प्राइवेट कमरे में खो गये; दोनों ने अपने चेहरे इस तरह छिपा रखे थे जैसे लज्जित हों। वहाँ पहुँचकर ओलिम्पियादा ने अपनी शाल फ़ौरन उतार फेंकी, और इल्या उसके शान्त चेहरे को, जिस पर सर्दी से लाली दौड़ गयी थी, देखकर आश्वस्त हो गया। लेकिन साथ ही उसने यह भी महसूस किया कि उसे शान्त देखकर वह ख़ुश नहीं था। ओलिम्पियादा कोच पर उसकी बग़ल में बैठ गयी और बड़े प्यार से उसकी आँखों में आँखें डालकर देखने लगी।

"तो, मेरे सपनों के राजा, जल्दी ही तुम्हें और मुझे छानबीन करने वाला बुलवायेगा," वह बोली।

"क्यों?" इल्या ने अपनी मूँछ पर से पिघलती हुई बर्फ़ पोंछते हुए कहा।

"अरे, तुम भी कैसी नासमझों जैसी बातें करते हो!" उसने हल्के-से व्यंग्य से कहा।

अचानक उसकी त्योरियों पर बल पड़ गये और उसने कानाफूसी के स्वर में कहा :

"आज एक जासूस मेरे यहाँ आया था।"

इल्या ने उसकी ओर देखकर रूखेपन से कहा :

"उनसे मुझे क्या लेना-देना, तुम्हारे जासूसों और तुम्हारे मामलों से! सीधी बात बताओ : तुमने मुझे बुलवाया क्यों था?"

ओलिम्पियादा ने उसे तिरस्कार-भरी मुस्कराहट से देखा।

"अच्छा तो रूठ गये तुम!" वह बोली। "ख़ैर, मेरे पास अभी इन बातों के लिए वक़्त नहीं है। मैं तुमसे यह कहना चाहती थी : अगर छानबीन करने वाला तुम्हें बुलवाये और तुमसे पूछे कि पहली बार तुम मुझसे कब मिले थे, क्या तुम अक्सर मुझसे मिलते थे, और बाक़ी सारी बातें, तो सब कुछ सच-सच बता देना; जो कुछ जैसा था सब बता देना, सच-सच... पूरे ब्यौरे के साथ, समझ गये?"

"समझ गया," इल्या हँसकर बोला।

"अगर वह तुमसे बूढ़े के बारे में पूछे तो कह देना कि तुमने उसे कभी नहीं देखा। कभी नहीं। तुम्हें उसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम। तुम्हें यह भी नहीं मालूम था कि मुझे किसी ने रख छोड़ा है। सुना?"

उसकी दृष्टि में कठोरता थी और वह उस पर उसका प्रभाव डालना चाहती थी; उससे एक हल्की-हल्की गुदगुदी पैदा हो रही थी जो इल्या को सुखद लग रही थी। वह महसूस कर रहा था कि ओलिम्पियादा उससे डर रही थी। वह उसे छेड़ना चाहता था, और इसलिए वह आँखें सिकोड़कर उसे देख रहा था और एक शब्द भी कहे बिना मुस्करा रहा था। ओलिम्पियादा का चेहरा पीला पड़ गया और उसके शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ गयी।

"इल्या! तुम मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो?" उसने उससे पीछे हटते हुए क्षीण स्वर में कहा।

"मैं झूठ क्यों बोलूँ?" उसने खीसें निकालकर कहा। "मैंने बूढ़े को तुम्हारे यहाँ देखा था।"

संगमरमर की मेज़ पर अपनी कुहनियाँ टिकाकर वह धीरे-धीरे और मंद स्वर में बोलता रहा, उसके बोलने के ढंग में उदासी और उग्रता थी जो अचानक उसके दिल में उभर आयी थी।

"उसे देखते ही मैंने अपने मन में कहा था, 'यही आदमी है जो मेरे रास्ते में रुकावट बना खड़ा है; इसी आदमी ने मेरी ज़िन्दगी तबाह कर दी है।' और अगर मैंने उसी वक़्त उसका ख़ून नहीं कर दिया, तो..."

"यह झूठ है!" ओलिम्पियादा ने मेज़ पर ज़ोर से हथेली पटकते हुए चिल्लाकर कहा। "यह झूठ है! वह तुम्हारे रास्ते में कभी नहीं आया।"

"वह नहीं आया, नहीं आया वह?" इल्या ने कठोर स्वर में कहा।

"नहीं, वह नहीं आया। अगर तुम चाहते तो मैं उससे पीछा छुड़ा लेती... मैंने तुमसे कहा नहीं था, इशारा नहीं किया था कि किसी भी वक़्त मैं उसे निकाल सकती हूँ? लेकिन तुमने कहा ही नहीं। तुम बस हँसते रहे। तुम्हें मुझसे सचमुच कभी प्यार था ही नहीं... तुमने अपनी मर्ज़ी से मेरे मामले में उसके साथ साझा बनाये रखा।"

"चुप रहो! ज़बान बन्द करो अपनी!" इल्या उछलकर चिल्लाया। लेकिन वह फ़ौरन ही बैठ गया, क्योंकि ओलिम्पियादा ने अपने उलाहने से उसे मानो धक्का दे दिया था।

"मैं चुप रहना नहीं चाहती!" वह बोली। "इतने जवान हो तुम, इतने ताक़तवर... और मैं तुमसे इतना प्यार करती हूँ... और तुमने मेरे लिए क्या किया है? क्या तुमने

मुझसे यह बात कभी कही, 'एक को चुन लो, ओलिम्पियादा : वह या मैं?' क्या यह बात कही तुमने? नहीं कही। तुम भी बाक़ी मर्दों की तरह भाड़े के प्रेमी हो...''

इल्या तिलमिला उठा।

"ख़बरदार, तुम्हारी यह मजाल!" वह एक बार फिर उछलकर चिल्लाया। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया और उसने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं।

"शायद तुम मुझे मारना चाहोगे?" ओलिम्पियादा ने जलकर कहा; उसकी आँखें अचानक चमक उठीं। "मारो! मारो, मैं भी दरवाज़ा खोलकर चिल्लाऊँगी कि तुमने उसका ख़ून किया है और मेरे कहने पर तुमने ऐसा किया है! मारो, मारते क्यों नहीं!"

एक क्षण के लिए इल्या सहम गया। पर डर उसके दिल में चुभकर ही गायब हो गया।

फिर वह कोच पर बैठ गया और कुछ देर बाद फीकी-सी हँसी हँस दिया। उसने देखा कि ओलिम्पियादा अपना होंठ काट रही थी और साबुन और गीली छाल की बू से बसे हुए उस गन्दे कमरे में अपनी आँखों से मानो कुछ ढूँढ़ रही थी। अब वह दरवाज़े के पास एक दूसरी कोच पर सिर झुकाये बैठी थी।

"हँसो, ख़ूब हँसो, शैतान कहीं के!"

"ज़रूर मैं ऐसा ही करूँगा..."

"पहली बार जब मैंने तुम्हें देखा था तो मैंने सोचा था 'यही तो है वह जिसकी मैं राह देख रही थी, वह जो मुझे मदद देगा...'"

"ओलिम्पियादा!" इल्या ने बड़ी नरमी से कहा।

वह चुप बैठी रही, हिली तक नहीं।

"ओलिम्पियादा!" इल्या ने दोहराया; फिर अथाह गर्त में छलाँग लगाते हुए आदमी की संवेदना के साथ बोला, "बूढ़े का ख़ून मैंने किया है... सचमुच।"

वह चौंक पड़ी, उसने अपना सिर उठाया और आँखें फाड़े उसे घूरती रही। उसके होंठ काँपने लगे और बहुत कोशिश करके मानो हाँफते हुए उसने कहा :

"मू-रख..."

इल्या देख रहा था कि वह सहम गयी थी, लेकिन उसकी बात पर उसे यक़ीन नहीं आया था। अपने होंठों पर घबराहट-भरी मुस्कराहट लिए वह जाकर उसकी बग़ल में बैठ गया। अचानक ओलिम्पियादा ने उसका सिर दोनों हाथों से पकड़कर अपनी छातियों से सटा लिया और पागलों की तरह उसके बालों को चूमने लगी।

"तुम मेरा बना-बनाया खेल क्यों बिगाड़ना चाहते हो?" उसने कानाफूसी के स्वर में रुखाई से कहा। "मैं ख़ुश थी कि उसका ख़ून हो गया..."

"मैंने ही किया था," इल्या ने सिर हिलाकर फिर कहा।

"चुप!" वह आतंकित होकर चिल्लायी। "मैं ख़ुश हूँ कि उसका ख़ून कर दिया गया। मैं तो चाहती हूँ कि उन सबका ख़ून कर दिया जाये   उन सबका जिन्होंने कभी मुझे हाथ लगाया है! बस एक तुमको छोड़कर। मैं जितने लोगों से भी मिली हूँ उनमें तुम्हीं अकेले ऐसे हो जिसके अन्दर आत्मा है!"

उसके शब्द इल्या को उसके और निकट खींच रहे थे; उसने अपना चेहरा उसकी छातियों से और कसकर सटा लिया और बड़ी देर तक उसे इसी तरह सटाये रहा, हालाँकि उसे साँस लेने में भी कठिनाई हो रही थी। वह समझ गया कि वह उसके सबसे निकट थी और यह कि उसकी ज़रूरत उसे जितनी इस वक़्त थी उतनी इससे पहले कभी नहीं थी।

"जब मुझे त्योरियाँ चढ़ाकर देखते हो, मेरे राजा बाबू, तब मुझे अन्दाज़ा होता है कि मेरी अपनी ज़िन्दगी कितनी घिनौनी है, और इसीलिए मैं तुमसे प्यार करती हूँ   तुम्हारे इसी अभिमान की वजह से..."

इल्या के सिर पर आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें टप-टप गिरने लगीं, और उनका स्पर्श अनुभव करके वह भी रोने लगा   सारे बन्धन तोड़कर, बेझिझक रोने लगा।

ओलिम्पियादा उसका सिर ऊपर उठाकर उसकी गीली आँखों, होंठों और गालों को चूमते हुए बोली :

"तुम्हें मेरे रूप से प्यार है, यह मैं जानती हूँ। लेकिन तुम दिल से मुझे प्यार नहीं करते और मेरी बुराई करते हो। मैं जिस तरह की ज़िन्दगी बसर करती हूँ उसके लिए तुम मुझे माफ़ नहीं कर सकते... और उस बूढ़े की वजह से..."

"उसकी बात मत करो," इल्या ने कहा। उसने उसके रुमाल के छोर से अपना मुँह पोंछा और उठकर खड़ा हो गया।

"जो होना है सो हो," उसने धीरे से दृढ़तापूर्वक कहा। "अगर भगवान किसी को सज़ा देना चाहेगा, तो वह उसे कहीं से भी खोज निकालेगा। तुमने जो कुछ कहा, ओलिम्पियादा, उसके लिए तुम्हारा शुक्रिया। तुम ठीक कहती हो, मैं तुम्हारे सामने दोषी हूँ... मैं समझता था कि तुम ऐसी नहीं हो... लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम हो... अच्छा, मैं तुम्हारे सामने दोषी हूँ..."

उसकी आवाज़ उखड़ गयी, उसके होंठ काँपने लगे, उसकी आँखें लाल हो गयीं। वह धीरे-धीरे अपने काँपते हाथ से बिखरे हुए बालों को सहलाने लगा; फिर अचानक उसने अपने हाथ हिलाये और रुआँसी आवाज़ में बोला :

"सारा क़सूर मेरा है! लेकिन क्यों? आख़िर क्यों?"

ओलिम्पियादा ने उसका हाथ थाम लिया और वह कोच पर उसकी बग़ल में बैठ गया और उसकी बात अनसुनी करके बोला :

“तुम्हारी समझ में नहीं आता, मैंने उसका ख़ून किया है! मैंने!”

“शिः!” ओलिम्पियादा ने भयभीत होकर कहा।

ओलिम्पियादा ने उसे कसकर अपनी बाँहों में भींच लिया और अपनी आँखों में भय लिए उसे देखती रही।

“सुनो सब कुछ अचानक ही हो गया,” वह बोला। “भगवान ही जानता है मेरा कोई इरादा नहीं था। मैं तो बस एक बार फिर उसका थोबड़ा देखना चाहता था... मैं बस दुकान में गया था। मैंने कभी सपने में भी ऐसा काम करने की बात नहीं सोची थी। और फिर अचानक यह हो गया। शैतान मुझे ऐसा करने के लिए उकसाता रहा और भगवान ने मुझे रोका नहीं... लेकिन पैसा लेने का मुझे अफ़सोस है। मुझे यह नहीं करना चाहिए था... हाय!”

उसने सन्तोष की गहरी साँस ली, मानो उसके दिल पर से कोई पपड़ी उतर गयी हो। काँपती हुई औरत उसे और कसकर अपनी बाँहों में जकड़ती जा रही थी और उसके कान में जल्दी-जल्दी कुछ उखड़े-उखड़े शब्द कह रही थी :

“पैसा लेकर तुमने अच्छा ही किया। अब इसे डाका समझा जायेगा, वरना वे इसे जलन समझते...”

“मैं अपना अपराध मानूँगा नहीं,” इल्या ने विचारमग्न होकर कहा। “भगवान मुझे सज़ा देना चाहे तो दे... ये लोग मेरा इन्साफ़ नहीं कर सकते। उन्हें अधिकार क्या है? मुझे आज तक कोई आदमी ऐसा नहीं मिला जिसने पाप न किया हो...”

“हे भगवान!” ओलिम्पियादा ने गहरी साँस लेकर कहा। “अब क्या होने वाला है? मेरी जान! मैं कुछ भी नहीं कर सकती... न सोच सकती हूँ... न बोल सकती हूँ... लेकिन अब हम लोगों को यहाँ से चलना चाहिए।”

वह उठ खड़ी हुई और इस तरह झूमी जैसे शराब पिये हो लेकिन अपनी शाल सिर पर लपेटकर वह शान्त स्वर में बोली :

“अब हम करेंगे क्या, इल्या? क्या यही हमारा अन्त है?”

इल्या ने इनकार में अपना सिर हिलाया।

“तो,” वह बोली, “तुम छानबीन करने वाले को सब कुछ सच-सच बता देना...”

“मैं बता दूँगा...” वह बोला। “तुम समझती हो कि मैं अपना बचाव नहीं कर सकता? तुम समझती हो कि मैं उस बूढ़े के लिए यह होने दूँगा कि मुझे क़ैदी बनाकर यहाँ से दूर भेज दिया जाये? अरे नहीं! यह मेरा अन्त नहीं है, कत्तई नहीं, समझ गयीं?”

उत्तेजना से उसका चेहरा लाल हो गया और उसकी आँखें चमकने लगीं।

"क्या पैसा दो हज़ार लिया था तुमने?" ओलिम्पियादा ने उसकी ओर झुककर चुपके से पूछा।

"दो से कुछ ऊपर..."

"बेचारा मेरा! वहाँ भी भाग्य ने साथ नहीं दिया!"

इल्या ने उस पर एक नज़र डाली और निराशा से बोला :

"तुम समझती हो कि मैंने यह काम पैसे के लिए किया था? तुम्हारी समझ में नहीं आता?.. रुको, पहले मैं जाऊँगा। मर्द हमेशा पहले जाते हैं..."

"जल्दी ही आकर मुझसे मिलना... कोई वजह नहीं है कि हम लोग मुँह छिपाये फिरें। जल्दी!" उसने घबराते हुए कहा।

उन्होंने बड़ी देर तक ज़ोर से एक-दूसरे को चूमा, और फिर लुन्योव बाहर चला गया। सड़क पर निकलकर उसने एक गाड़ी वाले को बुलाया और गाड़ी पर बैठकर जाते हुए वह बराबर पीछे मुड़-मुड़कर देखता रहा कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा है। ओलिम्पियादा से बातें करके उसके दिल पर से बोझ उतर गया था और उस औरत के प्रति सद्भावना पैदा हुई थी। जब उसने ख़ून करने का अपराध मान लिया था तो एक बार भी उसने उसका दिल नहीं दुखाया था, न अपने शब्दों से और न अपने देखने के अन्दाज़ से, और न ही उसने उसकी ओर से मुँह फेरा था, बल्कि उसने मानो अपराध का कुछ हिस्सा अपने जिम्मे ले लिया था। उससे कुछ ही मिनट पहले तक, जब तक उसे कुछ भी पता नहीं था, वह उसे नष्ट कर देने वाली थी। और वह ऐसा कर भी देती उसके चेहरे के भाव में इल्या ने यह बात साफ़ देख ली थी... उसके बारे में सोचते हुए इल्या बड़े प्यार से मुस्करा दिया। लेकिन अगले ही दिन उसे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे वह कोई जंगली जानवर है जिसके पीछे शिकारी कुत्ते पड़े हुए हैं।

पेत्रूख़ा ने, जिससे वह बहुत सवेरे शराबख़ाने में मिला था, उसके सलाम के जवाब में सिर थोड़ा-सा हिला दिया था और ख़ास ध्यान से उसे देखा था। तेरेन्ती भी उसे टकटकी बाँधकर देखते हुए बस आह भरकर रह गया था। याकोव ने उसे माशा के कमरे में चलने को कहा, जहाँ उसने उसे भयभीत स्वर में बताया :

"कल रात एक पुलिसवाला यहाँ आया था और मेरे बाप से तुम्हारे बारे में तरह-तरह के सवाल पूछ रहा था। क्यों?"

"किस तरह के सवाल?" इल्या ने निश्चिन्त भाव से पूछा।

"किस तरह के आदमी हो तुम, शराब पीते हो कि नहीं... और औरतों के बारे में... उसने किसी ओलिम्पियादा का नाम भी लिया था पूछ रहा था कि हमें उसके बारे में कुछ मालूम है। इसका मतलब क्या है?"

"मुझे क्या मालूम?" इल्या ने कहा और बाहर चला गया।

उसी दिन शाम को उसके नाम ओलिम्पियादा का एक और पर्चा आया। उसमें लिखा था :

"उन लोगों ने मुझसे तुम्हारे बारे में पूछताछ की थी। मैंने उन्हें सब कुछ विस्तार से बता दिया है। सारा मामला बिल्कुल सीधा-सादा है और तनिक भी डरने की बात नहीं है। घबराओ नहीं। ढेरों प्यार, मेरे राजा।"

इल्या ने पर्चा आग में डाल दिया। पेत्रूख़ा के घर में और शराबख़ाने में सभी लोग उस सूदख़ोर की हत्या की चर्चा कर रहे थे। जो क़िस्से सुनाये जाते थे उन्हें सुनने में इल्या को बड़ा मज़ा आता था। इन लोगों ने जो परिस्थितियाँ अपने मन से गढ़ ली थीं उनका विवरण उनसे पूछकर उसे बहुत ख़ुशी होती थी, और यह महसूस करके कि अगर वह चाहता तो बस इतना कहकर उन सबको स्तब्ध कर सकता था :

"हत्यारा मैं हूँ!"

कुछ चर्चाओं में उसकी चालाकी और हिम्मत को सराहा जाता था, कुछ में इस बात पर खेद प्रकट किया जाता था कि उसे सारा पैसा ले जाने का समय नहीं मिला, कुछ दूसरी चर्चाओं में यह आशा प्रकट की जाती थी कि वह पकड़ा नहीं जायेगा। लेकिन किसी एक आदमी को भी उस सूदख़ोर के मरने का अफ़सोस नहीं था और न ही किसी ने उसकी प्रशंसा में कोई शब्द कहा था। मारे गये आदमी के प्रति उनके हृदय में कोई दया न होने की वजह से सभी लोगों के प्रति इल्या की तिरस्कार की भावना और पक्की हो गयी। वह पोलुएक्तोव के बारे में नहीं सोचता था, बल्कि इस बात के बारे में सोचता था कि उसने बहुत बड़ा अपराध किया था और उसे उसका जवाब देना होगा। लेकिन यह अनुभूति उसे विचलित नहीं करती थी; वह उसकी चेतना में स्थिर पड़ी थी, वह उसके अस्तित्व का एक अंग बन गयी थी। चोट की सूजन की तरह, जब तक वह उसे छूता नहीं था तब तक कोई पीड़ा नहीं होती थी। उसे पक्का विश्वास था कि वह घड़ी आयेगी जब भगवान, जो सब कुछ जानता था और जो अपने नियम भंग करने के लिए कभी किसी को क्षमा नहीं कर सकता था, उसे दण्ड देगा। किसी भी क्षण अपने उचित दण्ड को स्वीकार करने के लिए अपनी इस विरक्त तत्परता की वजह से वह लगभग बिल्कुल शान्त रहता था। लेकिन अब वह दूसरों की बुराईयों को ज़्यादा कड़ी आलोचना की दृष्टि से देखने लगा था।

वह अधिक उदास और खोया-खोया रहने लगा था, लेकिन पहले की तरह सुबह से शाम तक शहर की सड़कों पर वह अब भी फेरी लगाता था, शराबख़ानों में बैठता था, लोगों को ध्यान से देखता था, और वे जो कुछ भी कहते थे उसे कान लगाकर सुनता था। एक दिन जब उसे अटारी में छिपाकर रखी गयी रक़म की याद आयी तो

उसने सोचा कि उसके लिए कोई दूसरी जगह खोजनी चाहिए, लेकिन फिर उसने अपने मन में कहा, "नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा। जहाँ है वहीं रहने दो... अगर तलाशी होगी तो रक़म बरामद हो जायेगी और तब मैं अपना अपराध मान लूँगा!"

लेकिन न तलाशी हुई और न ही छानबीन करने वाले ने उसे बुलवाया। मतलब यह कि छठे दिन तक नहीं। जाँच के दफ़्तर जाने से पहले इल्या ने नीचे पहनने के कपड़े बदले, अपना सबसे अच्छा सूट पहना और अपने जूतों पर पालिश की। उसने वहाँ जाने के लिए किराये की एक बर्फ़गाड़ी ली और सड़क की गहरी लीकों पर उछलती हुई गाड़ी पर वह निश्चल और सीधा बैठा रहा, क्योंकि उसके अन्दर की हर चीज़ कसे हुए तार की तरह ऐसी तनी हुई थी कि उसे लगता था कि ज़रा-सा भी झटका लगने से कुछ टूट जायेगा। इसी वजह से वह दफ़्तर की सीढ़ियाँ भी धीरे-धीरे और बड़ी सावधानी से चढ़ा, मानो वह शीशे के खोल में बन्द हो।

छानबीन करने वाले ने, जो सुनहरे फ्रेम का चश्मा लगाये घुँघराले बालों और चोंचदार नाक वाला एक नौजवान आदमी था, इल्या को देखकर पहले अपने पतले-पतले सफ़ेद हाथ ज़ोर से आपस में रगड़े, फिर अपना चश्मा उतारा, उसे रूमाल से पोंछने लगा और अपनी बड़ी-बड़ी काली आँखों से इल्या के चेहरे का निरीक्षण करने लगा। इल्या ने कुछ कहे बिना झुककर सलाम किया।

"आइये, कैसे हैं? बैठिए... यहाँ..."

उसने बड़ी-सी मेज़ के पास, जिस पर उन्नाबी रंग की बनात का मेज़पोश बिछा हुआ था, पड़ी हुई एक कुर्सी की तरफ़ इशारा किया। बैठते-बैठते इल्या ने अपनी कुहनी से हल्का-सा धक्का देकर मेज़ के सिरे पर रखे हुए कुछ काग़ज़ों को एक तरफ़ खिसका दिया। यह देखकर छानबीन करने वाले ने बड़ी शिष्टता से उन काग़ज़ों को वहाँ से हटा दिया। फिर वह इल्या के सामने मेज़ के पास बैठ गया और कुछ बोले बिना एक किताब के पन्ने पलटने लगा; बीच-बीच में वह अपनी झुकी हुई भवों के नीचे से आँखें उठाकर इल्या पर एक नज़र डाल लेता था। इस ख़ामोशी को एक बोझ बनता देखकर इल्या ने छानबीन करने वाले से मुँह फेरकर चारों ओर कमरे में नज़र दौड़ाई; ऐसा ख़ूबसूरत सजा हुआ और साफ़-सुथरा कमरा उसने पहली बार देखा था। दीवार पर कुछ तस्वीरें टंगी थीं, जिनमें से एक तस्वीर में ईसा मसीह उदास, विचारमग्न और अकेले खण्डहरों के बीच सिर झुकाये चलते हुए दिखाये गये थे; उनके पाँव के पास ज़मीन पर हथियार और लाशें बिखरी हुई थीं, और पीछे पृष्ठभूमि में धधकती हुई आग से धुआँ लहराता हुआ ऊपर उठ रहा था। इल्या बड़ी देर तक उस तस्वीर को घूरता रहा और उसका अर्थ समझने की कोशिश करता रहा। वह कुछ पूछने ही जा रहा था कि छानबीन करने वाले ने किताब धड़ से बन्द कर दी। इल्या ने चौंककर उसकी ओर देखा। उस

आदमी की मुद्रा में कठोरता और रूखापन आ गया था और उसने अपने होंठ हास्यास्पद ढंग से आगे निकाल रखे थे मानो कोई बात उसे बुरी लगी हो।

"अच्-छा!" उसने मेज़ पर अपनी उँगलियाँ पटपटाते हुए आवाज़ खींचकर कहा। "इल्या याकोव्लेविच लुन्योव है आपका नाम, अगर मैं ग़लती नहीं कर रहा हूँ?"

"जी हाँ..."

"कुछ आपको अन्दाज़ा है कि मैंने आपको क्यों बुलाया है?"

"नहीं," इल्या ने कहा और चुपके से एक नज़र फिर तस्वीर पर डाली। कमरा साफ़-सुथरा और शान्त और आकर्षक था। इल्या ने इससे पहले कभी इतनी सफाई और इतनी सुन्दर चीज़ें नहीं देखी थीं। और छानबीन करने वाले के चारों ओर एक सुखद सुगन्ध फैली हुई थी। इन सब बातों की वजह से उसका जी बहल रहा था, उसके दिमाग़ को शान्ति मिल रही थी और उसके मन में ईर्ष्या के विचार उठ रहे थे :

"देखो तो, कैसे रहता है! चोरों और खूनियों को पकड़ने वाले की भी अच्छी आमदनी होती होगी... इसे इस काम का कितना मिलता होगा?"

"कुछ भी अन्दाज़ा नहीं है?" छानबीन करने वाले ने आश्चर्य से फिर दोहराया। "ओलिम्पियादा दनीलोव्ना ने बताया नहीं आपको?"

"जी नहीं। मैं उनसे बहुत दिन से नहीं मिला..."

छानबीन करने वाला झटके के साथ पीछे कुर्सी पर टेक लगाकर बैठ गया और उसने फिर अपने होंठ हास्यास्पद ढंग से आगे निकाल लिये।

"कब से?"

"याद नहीं... मैं समझता हूँ... आठ-नौ दिन हुए होंगे..."

"मैं समझा! उसके घर पर पोलुएक्तोव से आपकी मुलाकात अक्सर होती थी?"

"उस बूढ़े से जिसका ख़ून हुआ था?" इल्या ने छानबीन करने वाले की आँखों में आँखें डालकर कहा।

"हाँ! वही बूढ़ा जिसका ख़ून हुआ था।"

"मैं उससे कभी नहीं मिला..."

"कभी नहीं?! हुँह..."

"कभी नहीं..."

इसके बाद छानबीन करने वाले ने ताबड़तोड़ कई सवाल किये, और जब इल्या, जो बड़े इतमीनान से उनका जवाब दे रहा था, किसी सवाल का जवाब देने में बहुत समय लगाता था तो वह अधीरता से अपनी उँगलियों से मेज़ को पटपटाने लगता था।

"क्या आप जानते थे कि ओलिम्पियादा दनीलोव्ना को पोलुएक्तोव ने रख छोड़ा था?" उसने अपने चश्मे के पीछे से इल्या को ज़ोर से घूरते हुए अचानक पूछा।

उसके इस तरह घूरने पर इल्या का चेहरा लाल हो उठा और वह अपमानित अनुभव करने लगा।

"नहीं," उसने खोखले स्वर में जवाब दिया।

"हाँ, उसने उसे रख छोड़ा था," छानबीन करने वाले ने झुँझलाये हुए स्वर में दोहराया, और जब उसने देखा कि इल्या इस पर कोई टिप्पणी करने वाला नहीं है तो उसने फिर कहा, "मेरी राय में यह बुरी बात थी!"

"बहुत अच्छी तो नहीं थी!" इल्या ने धीमे स्वर में कहा।

"तो आप मेरी बात मानते हैं?"

इल्या ने फिर कोई जवाब नहीं दिया।

"उसके साथ आपकी जान-पहचान बहुत दिन से है?"

"कोई साल-भर से ऊपर से..."

"मतलब यह है कि आप उसे पोलुएक्तोव से उसकी मुलाकात होने से पहले से जानते थे?"

"बड़े सयाने कुत्ते हो तुम," इल्या ने सोचा, लेकिन उसने बड़े शान्त भाव से जवाब दिया :

"जब मैं मारे गये आदमी से उसके सम्बन्ध के बारे में कुछ जानता ही नहीं हूँ तो यह बात मुझे कैसे मालूम हो सकती है?"

छानबीन करने वाले ने अपने होंठ भींचकर धीरे से सीटी बजाई और मेज़ पर रखा हुआ काग़ज़ देखने लगा। लुन्योव फिर तस्वीर को देखने लगा; वह महसूस कर रहा था कि उसे ध्यान से देखने से उसे अपना चित्त शान्त रखने में मदद मिलती है। दूसरे कमरे से किसी बच्चे के खिलखिलाकर हँसने की आवाज़ आ रही थी; फिर ख़ुशी और प्यार में डूबी हुई किसी औरत के अलापने की आवाज़ सुनायी दी :

नन्हीं-मुन्नी मिश्री की डली,
प्यारी-प्यारी, सुन्दर-सी कली!

"यह तस्वीर आपका ध्यान आकर्षित कर रही है, है न?" छानबीन करने वाले ने पूछा।

"ईसा मसीह कहाँ जा रहे हैं?" इल्या ने धीरे से पूछा।

छानबीन करने वाला एक क्षण तक बुझी-बुझी निराश आँखों से उसे देखता रहा।

"वह इस धरती पर उतरे हैं यह देखने के लिए कि लोग उनके आदेशों का पालन किस तरह कर रहे हैं। इस तस्वीर में उन्हें लड़ाई के एक मैदान में चलते हुए दिखाया गया है, जहाँ आग लगी हुई है, लूट-मार हो चुकी है, ख़ून-खराबा हो चुका है, घरों के

खण्डहर हैं...”

“यह सब कुछ वह वहाँ ऊपर आसमान से नहीं देख सकते थे?” इल्या ने पूछा।

“यह तस्वीर तो बस एक प्रतीक की तरह बनायी गयी है, यह दिखाने के लिए कि ईसा के उपदेश में और जीवन की वास्तविकता में कितना अन्तर है।”

इसके बाद फिर लगातार कई छोटे-मोटे इधर-उधर के सवाल पूछे गये, जो मच्छरों के झुण्ड की तरह इल्या को परेशान करते रहे। वह उनसे उकता गया; उनसे उसकी ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति कमज़ोर हो गयी और इस निरर्थक नीरस बकवास से उसकी सतर्कता की धार कुन्द हो गयी; उसे इस तरह के सवाल पूछने पर छानबीन करने वाले पर ग़ुस्सा आ रहा था, क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि वह यह सब कुछ जान-बूझकर कर रहा है।

“अच्छा, यह बताइये, भला आपको कुछ याद है,” उस आदमी ने जल्दी से लगे हाथ पूछा, “गुरुवार को दो और तीन बजे के बीच आप कहाँ थे?”

“शराबख़ाने में चाय पी रहा था,” इल्या ने कहा।

“अच्छा। किस शराबख़ाने में?”

“‘प्लेव्ना’ में।”

“इसकी क्या वजह है कि आप मुझे इतना सही-सही बता पा रहे हैं कि ठीक उस समय आप कहाँ थे?”

उस आदमी के चेहरे की बोटियाँ फड़कने लगीं; वह इतना आगे झुक आया कि उसका सीना मेज़ से लग गया और उसकी दहकती हुई आँखें इल्या की आँखों को बेधने लगीं। इल्या ने फ़ौरन जवाब नहीं दिया।

“शराबख़ाने में जाने से पहले मैंने एक पुलिसवाले से वक़्त पूछा था,” उसने साँस लेकर शान्त भाव से उत्तर दिया।

छानबीन करने वाला फिर पीछे हटकर पेंसिल उठाकर उसे अपनी उँगलियों के नाख़ूनों पर पटपटाने लगा।

“पुलिसवाले ने मुझे बताया था कि दो बजने वाले हैं एक बजकर बीस मिनट या कुछ ऐसा ही वक़्त बताया था उसने,” इल्या ने धीरे से कहा।

“वह आपको जानता है?”

“हाँ...”

“आपके पास अपनी घड़ी नहीं है?”

“नहीं...”

“पहले भी कभी आपने उससे वक़्त पूछा था?”

“अक्सर...”

"आप 'प्लेव्ना' में बहुत देर बैठे थे?"

"उस वक़्त तक जब किसी ने चिल्लाकर क़त्ल की ख़बर सुनायी थी।"

"फिर आप कहाँ गये थे?"

"लाश देखने।"

"किसी ने आपको वहाँ देखा था   मेरा मतलब है दुकान पर?"

"उसी पुलिसवाले ने... उसने मुझे वहाँ से खदेड़ा भी था... मुझे धक्का दिया था..."

"बहुत अच्छा!" छानबीन करने वाले ने सन्तोष से कहा; फिर लगे हाथ, इल्या की ओर देखे बिना, उसने पूछा, "आपने पुलिसवाले से वक़्त क़त्ल से पहले पूछा था या बाद में?"

इल्या चाल समझ गया। उस आदमी के प्रति जो सफ़ेद क़मीज़ पहने हुए बैठा था, उसकी पतली-पतली उँगलियों के प्रति, जिनके नाख़ून बहुत सुथरे कटे हुए थे, उसके सुनहरे चश्मे के प्रति और उसकी पैनी काली आँखों के प्रति ग़ुस्से के मारे पागल होकर इल्या उसकी ओर झटके से मुड़ा।

"मुझे क्या मालूम?" इल्या ने कहा।

छानबीन करने वाला धीरे से खाँसा और उसने अपने हाथ इस तरह रगड़े कि उसकी उँगलियाँ चिटकने लगी।

"अच्छी बात है!" उसने खींचकर कहा। "बहुत अच्-छी बात है। बस थोड़े-से सवाल और हैं..."

अब वह अपने सवाल सपाट स्वर में पूछ रहा था; उसे न कोई जल्दी थी और न ही मतलब की जानकारी हासिल करने की कोई उम्मीद; लेकिन जवाब देते समय इल्या बराबर सतर्क रहा। हर शब्द जो वह बोलता था उसके खोखले सीने में एक कसे हुए तार पर टंकार करता हुआ मालूम होता था। लेकिन छानबीन करने वाले ने उसे फिर किसी फन्दे में फँसाने की कोशिश नहीं की।

"उस दिन जब आप सड़क पर जा रहे थे, तो आपको कुछ याद है कि आपने भेड़ की खाल का कोट पहने और काली टोपी लगाये किसी लम्बे-से आदमी को देखा था?"

"नहीं..." इल्या ने कड़े स्वर में कहा।

"अच्छी बात है, अभी जो गवाही आपने दी है उसे ध्यान से सुन लीजिये; मैं आपसे इस पर दस्तख़त करने को कहूँगा।" काग़ज़ अपने चेहरे के सामने रखकर, छानबीन करने वाले ने उसे जल्दी-जल्दी सपाट स्वर में पढ़ना शुरू किया, और पढ़ना ख़त्म करके इल्या के हाथ में एक क़लम थमा दिया। इल्या ने मेज़ के ऊपर झुककर

काग़ज़ पर दस्तख़त किये, फिर धीरे-धीरे उठ खड़ा हुआ और छानबीन करने वाले को देखकर धीमे दृढ़ स्वर में कहा :

"अच्छा मैं चला!"

उस आदमी ने लापरवाही से और मानो एहसान करते हुए सिर हिलाकर सलाम का जवाब दिया और मेज़ पर झुककर कुछ लिखने लगा। लेकिन इल्या कमरे के बाहर नहीं गया। वह इस आदमी से कुछ और कहना चाहता था जिसने उसे इतनी देर तक सताया था। कमरे के सन्नाटे में उसे कलम के खरोचने की आवाज़ साफ़ सुनायी दे रही थी और दूसरे कमरे से आवाज़ आ रही थी :

छोटी-सी गुड़िया, नाच दिखा दे,
ता-ता थैया, नाच दिखा दे...

"क्या बात है?" छानबीन करने वाले ने अचानक नज़र ऊपर उठाकर पूछा।

"कुछ भी नहीं..." इल्या ने उदास भाव से कहा।

"मैंने कहा न कि अब आप जा सकते हैं..."

"जा रहा हूँ..."

दोनों एक-दूसरे को घूरते रहे, और इल्या ने महसूस किया कि कोई बहुत बड़ी और भयानक चीज़ उसके अन्दर उमड़ रही है। वह जल्दी से मुड़ा और बाहर निकल गया; बाहर सड़क पर निकलकर जब ठण्डी हवा का एक तेज़ झोंका उसके लगा तब उसे पता चला कि उसका सारा शरीर पसीने में नहाया हुआ था। आधे घण्टे में वह ओलिम्पियादा के यहाँ पहुँच चुका था। उसने खिड़की से उसे गाड़ी पर आते देख लिया था और ख़ुद आकर दरवाज़ा खोला; उसने ऐसे ख़ुश होकर उसका स्वागत किया जैसे माँ अपने बेटे का करती है। उसका चेहरा उतरा हुआ था, आँखें फटी-फटी थीं और उनमें बेचैनी का भाव था।

जब इल्या ने उसे बताया कि वह छानबीन करने वाले के यहाँ से सीधा उसके पास आया था तो वह बोली, "शाबाश! यही करना चाहिए था तुम्हें। ख़ैर, कैसा लगा वह तुम्हें?"

"बड़ा घाघ है वह!" इल्या ने बड़ी कटुता से कहा। "वह बराबर मुझे पकड़ने की कोशिश करता रहा।"

"इसके अलावा वह कुछ और कर ही नहीं सकता है। यही तो उसका काम है," ओलिम्पियादा ने समझदारी से कहा।

"आख़िर उसने सीधे क्यों नहीं पूछा कि 'तुम्हारे ऊपर इन-इन बातों का शक किया जाता है।'"

"लेकिन तुमने भी तो सीधे नहीं बताया था!" ओलिम्पियादा ने मुस्कराकर कहा।

"मैंने?" इल्या ने आश्चर्य से कहा। "हाँ... सचमुच!" ऐसा लगा कि जैसे उसके मन में कोई नया विचार उठा हो और क्षण-भर सोचने के बाद उसने कहा, "अजीब बात है जब मैं वहाँ उसके दफ़्तर में बैठा था तो मुझे... ऐसा महसूस हो रहा था कि मैंने ठीक काम किया है, क़सम से।"

"चलो, अच्छा हुआ!" ओलिम्पियादा ने ख़ुश होकर कहा। "सब कुछ ठीक हो गया..."

इल्या ने मुस्कराकर उसे देखा और धीरे से बोला :

"मुझे बहुत ज़्यादा झूठ नहीं बोलना पड़ा। मैं भी बड़ा तक़दीर का सिकन्दर हूँ, ओलिम्पियादा!"

यह कहकर वह विचित्र ढंग से धीरे से हँसा।

"जासूस मेरे पीछे लगे हैं," वह दबी ज़बान से बोली। "और शायद वे तुम्हारा भी पीछा कर रहे होंगे।"

"अरे, इसमें तो कोई शक नहीं!" उसने मज़ाक़ उड़ाते हुए जलकर कहा। "मेरे क़दमों के निशानों को सूँघ रहे होंगे इस तरह मेरा पीछा कर रहे होंगे वे लोग जैसे मैं जंगली भेड़िया हूँ। लेकिन वे मुझे पकड़ नहीं पायेंगे। उनके बस का रोग नहीं है! और मैं कोई भेड़िया तो हूँ नहीं मैं तो एक मुसीबत का मारा इन्सान हूँ... मेरा किसी भी आदमी का गला घोंटने का कोई इरादा नहीं था... ज़िन्दगी ख़ुद मेरा गला घोंटे दे रही है, जैसा कि पावेल ने अपनी कविता में लिखा था। और वह पावेल का भी गला घोंट रही है, और याकोव का भी, और... और सभी का!"

"छोड़ो, इल्या," ओलिम्पियादा ने चाय बनाते हुए कहा, "सब कुछ ठीक हो जायेगा!"

इल्या कोच पर से उठकर खिड़की के पास चला गया, जहाँ से वह बाहर सड़क की ओर घूरते हुए उदास भाव से झुँझलाकर कहता रहा :

"ज़िन्दगी भर मुझे गन्दगी में रगड़ा गया है। जिस चीज़ से भी मुझे नफ़रत थी, जिस चीज़ से भी मैं दूर भागना चाहता था उसी में मुझे ढकेला गया है। आज तक मुझे कोई आदमी ऐसा नहीं मिला जिसकी ओर मैं ख़ुशी से देख सकता। क्या इस दुनिया में सचमुच कुछ भी साफ़-सुथरा नहीं है, कुछ भी अच्छा नहीं है? अब मुझे ही देखो क्यों मैंने उसका गला घोंट दिया? क्यों? मैंने बेकार अपने हाथ गन्दे किये और अपनी आत्मा पर धब्बा लगाया। और पैसा लिया... वह लेना चाहिए नहीं था!"

"इसके बारे में इतना परेशान न हो, वह इस लायक़ नहीं था कि उसके बारे में आत्मा को इतना क्लेश दिया जाये," ओलिम्पियादा ने तसल्ली देते हुए कहा।

“मैं आत्मा को क्लेश नहीं दे रहा हूँ, मैं तो बस अपने किये को ठीक साबित करने की कोशिश कर रहा हूँ। हर आदमी जो कुछ भी करता है उसे ठीक साबित करने की कोशिश करता है, क्योंकि हर आदमी को ज़िन्दा रहना होता है! उस छानबीन करने वाले को ले लो उसकी ज़िन्दगी तो पन्नी में लिपटी हुई चाकलेट जैसी है। उसे किसी का गला घोंटने की ज़रूरत नहीं है। वह कोई पाप किये बिना ज़िन्दगी बसर कर सकता है उसके चारों ओर हर चीज़ साफ़-सुथरी है...”

“सुनो, हम यह शहर छोड़कर कहीं और चले जायेंगे...”

“अरे नहीं, मैं कहीं नहीं जाऊँगा!” इल्या ने उसकी ओर मुड़कर दृढ़ता से कहा। “मैं तो यहीं रहकर देखूँगा कि क्या होता है...” उसके ये शब्द किसी को दी गयी धमकी जैसे लग रहे थे।

ओलिम्पियादा विचारों में डूब गयी। समोवार के पास सफ़ेद ड्रेसिंग-गाउन पहने हुए बैठी वह बहुत सुन्दर और गदरायी हुई लग रही थी।

“देखेंगे, कौन जीतता है,” इल्या ने कमरे में इधर से उधर टहलते हुए अपने सिर को अर्थपूर्ण ढंग से हिलाकर कहा।

“मैं जानती हूँ, तुम इसलिए नहीं जाना चाहते कि तुम मुझसे डरते हो?” ओलिम्पियादा ने आहत स्वर में कहा। “तुम्हें यह डर है कि मैं अब तुम्हें अपने शिकंजे में कसकर रखूँगी? कि अब तुम्हारा भेद जान लेने के बाद मैं उसका फ़ायदा उठाती रहूँगी? यह तुम्हारी भूल है, मेरे प्यारे। तुम्हारी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ मैं तुम्हें कहीं अपने साथ घसीटकर नहीं ले जाऊँगी।”

उसका स्वर शान्त था, लेकिन उसके होंठ मानो पीड़ा से काँप रहे थे।

“तुम कह क्या रही हो?” इल्या आश्चर्य से उसकी बात सुनकर बोला।

“डरो नहीं, मैं तुम्हें कभी मजबूर नहीं करूँगी! जहाँ तुम्हारा जी चाहे जाओ, मेरी बला से!”

“ऐसा न कहो,” इल्या ने उसके पास बैठकर उसका हाथ थामते हुए कहा। “मेरी समझ में नहीं आता कि तुम ऐसी बात क्यों कह रही हो।”

“बनो नहीं!” वह दुखी होकर चिल्लायी और उसने अपना हाथ छुड़ा लिया। “मैं तुम्हें जानती हूँ। तुम बहुत अभिमानी हो, तुम निर्दयी हो! तुम मुझे उस बूढ़े के साथ रहने के लिए कभी माफ़ नहीं कर सकते और जिस तरह की ज़िन्दगी मैं बसर करती हूँ उसकी वजह से तुम मुझसे नफ़रत करते हो... तुम समझते हो कि यह सब कुछ मेरी वजह से हुआ। तुम मुझसे नफ़रत करते हो!”

“यह झूठ है!” इल्या ने बड़े गर्व से कहा। “झूठ है, मैं तुमसे कहता हूँ। मैं तुम्हें रत्ती-भर दोष नहीं देता। मैं जानता हूँ कि साफ़-सुथरी और निष्कलंक औरतें मुझ जैसे

लोगों के लिए नहीं होतीं। वे हमारे जैसे लोगों के लिए बहुत महँगी होती हैं। ऐसी औरतों से शादी करने की उम्मीद की जाती है। और उनसे बच्चे होते हैं... साफ़-सुथरी चीज़ें सिर्फ़ अमीरों के लिए होती हैं... हमें तो जूठन मिलती है, दूसरों की उतरन, दूसरों की चिचोरी हुई हड्डी, वह, जिस पर थूका गया हो, जो गन्दे हाथों से मसला हुआ हो।"

"मैं गन्दे हाथों से मसली हुई हूँ तो मुझे छोड़ दो!" ओलिम्पियादा उछलकर खड़े होते हुए चिल्लायी। "निकल जाओ यहाँ से!" उसकी आँखों में आँसू छलक आये और वह अपने शब्द दहकते हुए अंगारों की तरह उस पर बरसाने लगी। "मैं इस नाली में अपनी मर्ज़ी से आयी थी; क्योंकि यहाँ पैसा है। और अब मैं उसी पैसे के सहारे, उसे सीढ़ी की तरह इस्तेमाल करके बाहर निकलकर आ रही हूँ, और मैं फिर अच्छी ज़िन्दगी बसर करने का पूरा इरादा रखती हूँ... इस काम में तुमने मेरी मदद की है... यह मैं जानती हूँ। और मैं तुमसे प्यार करती हूँ अगर तुमने एक दर्जन लोगों की भी जान ली हो तो मुझे उसकी कोई परवाह नहीं है। और मैं तुम्हें प्यार इसलिए नहीं करती हूँ कि तुमने मेरी मदद की है, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ उस अभिमान की वजह से जो तुम्हारे अन्दर है, उस जवानी की वजह से जो तुम्हारे अन्दर है   तुम्हारे घुँघराले बालों की वजह से और तुम्हारे मज़बूत हाथों की वजह से और तुम्हारी कठोर नज़रों की वजह से   और तुम्हारी उन झिड़कियों की वजह से जिनमें से हर एक मेरे दिल में छुरी की तरह उतर जाती है   मैं मरते दम तक तुम्हारा उपकार मानूँगी। मैं घुटने टेककर तुम्हारे पाँव चूमूँगी   ऐसे!"

और यह कहकर वह इल्या के सामने गिरकर उसके घुटनों को चूमते हुए चिल्ला पड़ी :

"भगवान साक्षी है कि मैंने वह पाप अपनी आत्मा का उद्धार करने के लिए किया था; और भगवान यही चाहता होगा कि मैं इस कीचड़ को पार करके बाहर स्वच्छता में निकल आऊँ, बजाय इसके कि ज़िन्दगी-भर इसी कीचड़ में पड़ी सड़ती रहूँ। बाहर निकलकर मैं क्षमा माँगूँगी... ज़िन्दगी-भर इसी तरह सड़ते रहना मैं नहीं चाहती! मैं कलंकित हूँ, सिर से पाँव तक मैं गन्दी हूँ। मैं चाहे जितने आँसू बहाऊँ वे मुझे कभी धोकर साफ़ नहीं कर सकते।"

इल्या उसे अपने से दूर ढकेल रहा था और फर्श पर से उठाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन ओलिम्पियादा ने उसे कसकर पकड़ लिया और अपना सिर उसके घुटनों में गड़ा दिया और उन पर अपना चेहरा रगड़-रगड़कर हाँफते हुए, खोखले स्वर में कुछ कहती रही। तभी इल्या ने काँपते हाथों से उसको सहलाना शुरू किया, और आख़िरकार उसे फर्श पर से उठाकर अपनी बाँहों में समेट लिया और उसका सिर अपने कन्धे पर रख लिया। ओलिम्पियादा का दहकता हुआ गाल उसके गाल से सटा हुआ

था, और उसकी मज़बूत बाँहों में जकड़ी हुई, उसके सामने घुटनों के बल बैठी वह दबे-दबे स्वर में कहती रही :

"अगर किसी आदमी ने एक बार पाप किया हो और बाक़ी ज़िन्दगी वह सिर नीचा करके रहे तो इससे किसी का क्या भला होगा? जब मैं छोटी-सी बच्ची थी और मेरा सौतेला बाप अपनी गन्दी वासना लिए मेरा पीछा करता था तो मैंने एक बार चिमटा फेंककर उसे मारा था... लेकिन फिर मुझे क़ाबू में कर लिया गया, मुझे ख़ूब शराब पिलायी गयी... मैं बिल्कुल छोटी बच्ची थी फूल जैसी साफ़-सुथरी और ताजा... मैं रोती रही, मुझे अपनी इस दशा पर बड़ा दुख था... मैं नहीं चाहती थी मैं बिल्कुल नहीं चाहती थी... लेकिन फिर मैंने देखा कि वापस लौटकर जाना नामुमकिन था... तो, मैंने सोचा, कम से कम मैं उनसे कसकर पैसा वसूल करूँगी। मुझे सब से नफ़रत थी। मैं उनके पैसे चुराती थी, शराब पीती थी... मैं किसी को जो चुम्बन देती थी उनमें एक बार भी मेरा दिल नहीं होता था एक बार भी नहीं! जब तक तुमसे मेरी मुलाकात नहीं हुई..."

उसके शब्द क्षीण होते-होते अस्फुट स्वर में बदल गये; फिर, अचानक अपने आपको उससे छुड़ाते हुए वह ज़ोर से चिल्लायी :

"छोड़ दो मुझे!"

इल्या ने उसे और भी कसकर दबोच लिया और उद्विग्न होकर उसके चेहरे को चूमने लगा।

"मेरे पास तुमसे कहने को कुछ भी नहीं है," उसने जोश से कहा। "मुझे बस इतना ही कहना है : हमारी परवाह किसी को नहीं है... इसलिए हम भी किसी की परवाह नहीं करेंगे!... तुमने जो कुछ कहा उसकी मुझे बहुत ख़ुशी है... वह बहुत अच्छी बात थी। और तुम ख़ुद बहुत अच्छी हो। और मैं तुम्हें इतना प्यार करता हूँ जितना... जितना... मैं बता नहीं सकता कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ।"

ओलिम्पियादा के विलाप ने इल्या के मने में उस औरत के प्रति एक शुद्ध और तीव्र भावना जागृत कर दी थी। उसकी व्यथा इल्या की विपदा के साथ घुल-मिलकर मानो एक हो गयी थी और वे एक-दूसरे के निकटतर हो गये थे। बहुत देर तक वे एक-दूसरे से चिपटे बैठे कानाफूसी के स्वर में शिकवे-शिकायतें करते रहे।

"हमें सुख कभी नसीब नहीं होगा, तुम्हें और मुझे," ओलिम्पियादा ने घोर निराशा से सिर हिलाकर कहा।

"तो हम आपस में अपना दुख बाँटेंगे। अगर हमें कालेपानी भेज दिया गया तो हम दोनों साथ जायेंगे, है न? लेकिन जब तक वह वक़्त नहीं आता, तब तक हम अपनी मुसीबतों को अपने प्यार में डुबो देंगे... इस वक़्त तो वे अगर चाहें तो मुझे

ज़िन्दा जला दें... मेरा मन बिल्कुल हल्का है..."

एक-दूसरे के शब्दों से अभिभूत होकर, एक-दूसरे के स्पर्श से रोमाँचित होकर वे दोनों आँखों में आँखें डालकर धुँधली-धुँधली नज़रों से एक-दूसरे को देखते रहे। उनके आलिंगनों से उनके अंग-अंग में गर्मी पैदा हो रही थी; उनके कपड़े कसते जा रहे थे...

बाहर आकाश धुँधला और नीरस था। धरती पर ठण्डा कुहरा छाया हुआ था, जिसने पेड़ों को बर्फ़ की चादर उढ़ा दी थी। सामने वाले बाग़ में बर्च-वृक्षों की पतली-पतली टहनियाँ हिल-हिलकर बर्फ़ के छोटे-छोटे गाले झिटककर गिरा रही थीं। जाड़े की शाम शुरू हो चुकी थी...

कुछ दिन बाद इल्या को पता चला कि पुलिस भेड़ की खाल की काली टोपी पहने हुए लम्बे क़द के किसी आदमी को खोज रही थी, जिस पर पोलुएक्तोव की हत्या करने का शक था। दुकान की छानबीन करने पर दो देव-प्रतिमाओं की चाँदी की सजावटों का पता चला था; बाद में पता यह चला था कि ये देव-प्रतिमाएँ चोरी की थीं। दुकान में काम करने वाले लड़के ने बताया था कि वे हत्या से दो-तीन दिन पहले लम्बे क़द के एक आदमी से ख़रीदी गयी थीं जो भेड़ की खाल का कोट पहने था और जिसका नाम अन्द्रेई था, और यह कि पोलुएक्तोव अक्सर उससे सोने-चाँदी की चीज़ें ख़रीदता रहता था और उसे पैसा उधार देता रहता था। बाद में यह पता चल गया कि क़त्ल से पहले वाली शाम को और क़त्ल के दिन भी, बिल्कुल उसी हुलिया का आदमी, जैसा कि लड़के ने बताया था, शहर के चकलों में रंगरेलियाँ करता हुआ पाया गया था।

रोज़ इल्या को नयी-नयी अफ़वाहें सुनने को मिलतीं। इतनी ढिठाई से किये गये इस क़त्ल से सारे शहर में सनसनी फैल गयी थी; हर जगह उसकी चर्चा हो रही थी गली-कूचों में, शराबख़ानों में और घर-घर में। लेकिन लुन्योव को इन बातों में कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं थी। ख़तरे का डर उसके दिल से वैसे ही उतर गया था जैसे घाव पर से पपड़ी उतर जाती है, और उसकी जगह वह सिर्फ़ एक तरह की बेचैनी महसूस कर रहा था। वह बस एक ही बात के बारे में सोचता रहता था : अब वह अपनी ज़िन्दगी कैसे बसर करेगा?

उसकी भावनाएँ रंगरूट की या उस आदमी की भावनाओं जैसी थीं जो किसी अज्ञात स्थान की लम्बी यात्रा पर जाने वाले हो। इधर कुछ दिनों से याकोव उसका पीछा करने लगा था। बाल बिखरे उल्टे-सीधे कपड़े पहने वह शराबख़ाने में निरुद्देश्य इधर-उधर मँडराता रहता था, उसकी बड़ी-बड़ी आँखें एक चीज़ से दूसरी चीज़ पर भटकती रहती थीं जिसकी वजह से उसकी मुद्रा किसी गहरी समस्या में डूबे हुए आदमी जैसी हो गयी थी। जैसे ही वह इल्या को देखता वह उसे जल्दी से रहस्यमय स्वर में, शायद कानाफूसी के स्वर में भी बुलाता। एक बार उसने कहा :

"तुम्हारे पास एक मिनट का वक़्त है मुझसे बातें करने का?"

"थोड़ी देर में, अभी नहीं..."

"खेद की बात है! बेहद ज़रूरी काम है।"

"क्या है?"

"वह किताब काश तुम्हें मालूम होता कि उसमें कैसी-कैसी बातें कही गयीं हैं! बस, कमाल है!" याकोव ने डर के साथ कहा।

"भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारी किताबें! मुझे यह बताओ : तुम्हारा बाप मुझे त्योरियाँ चढ़ाकर क्यों देखता रहता है?"

लेकिन याकोव को ज़िन्दगी की हक़ीक़तों में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी। इल्या के सवाल के जवाब में उसने अपनी आँखें हैरत से फाड़कर बस इतना कहा :

"ऐसी बात है? मुझे कुछ भी मालूम नहीं। अलबत्ता, एक बार मैंने उसे तुम्हारे चाचा से कुछ कहते सुना था, कुछ इस तरह की बात कि तुम जाली सिक्कों का धन्धा करते हो... लेकिन वह सब बकवास है..."

"तुम्हें कैसे मालूम?" इल्या ने मुस्कराकर कहा।

"और हो ही क्या सकता है! जाली सिक्के! बकवास है!" वह अपने हाथ को झटके के साथ हिलाकर विचारमग्न हो गया। "तो तुम्हारे पास सचमुच मुझसे बात करने के लिए वक़्त नहीं है?"

"उस किताब के बारे में?"

"हाँ... उसमें एक जगह मैं समझ पाया हूँ क्या बताऊँ! बस कमाल है, भाई!"

और यह कहकर उस दार्शनिक ने ऐसी मुद्रा बना ली जैसे वह किसी गरम चीज़ से जल गया हो।

लुन्योव उसे इस तरह घूरता रहा जैसे वह कोई सनकी या मूरख हो। कभी-कभी उसे ऐसा लगता कि याकोव अन्धा है, और वह उसे हमेशा अभागा समझता रहा, जिसमें ज़िन्दगी से निबटने की क्षमता नहीं थी। घर में सब लोग कहते थे और सारी गली में हर आदमी इस बात को जानता था कि पेत्रूख़ा अपनी रखैल से शादी करने वाला था, उस औरत से जो शहर में ज़्यादा पैसे वालों के लिए एक चकला चलाती थी। लेकिन याकोव ने इस समाचार को पूर्ण उदासीनता के भाव से स्वीकार कर लिया था। जब इल्या ने उससे पूछा था कि क्या शादी जल्दी ही होने वाली थी, तो उसने कहा था :

"किसकी शादी?"

"तुम्हारे बाप की।"

"अच्छा, वह कौन जाने? बड़ी बदनामी की बात है। ऐसी औरत से शादी करना! छिः!"

"जानते हो, उसके एक बेटा भी है। काफ़ी बड़ा है   स्कूल में पढ़ता है।"

"मुझे मालूम नहीं था। तो क्या हुआ?"

"तुम्हारे बाप की सारी जायदाद उसको जायेगी।"

"हाँ," याकोव ने निश्चिन्त भाव से कहा। अचानक जैसे उसमें नयी फुर्ती आ गयी, वह बोला, "बेटा? उससे तो मुझे फ़ायदा ही होगा। है न? अगर मेरा बाप उसे शराब बेचने के काम पर लगा दे तो मैं जहाँ जी चाहेगा जा सकूँगा! अच्छी बात होगी..."

और इस आजादी की कल्पना करके उसने चटखारा मारा। लुन्योव ने तरस खाते हुए मुस्कराकर उसे एक नज़र देखा।

"सच कहा है, 'मूरख तो बस वह कहलावे, रोटी छोड़ जो गाजर खावे।' अरे, याकोव! मेरी समझ में नहीं आता कि इस दुनिया में तुम्हारा निबाह कैसे होगा।"

याकोव अचानक चौकन्ना हो गया और अपनी आँखें फाड़कर देखने लगा।

"इसके बारे में मैंने सोच लिया है!" उसने जल्दी से फुसफुसाकर कहा। "सबसे पहले आदमी को अपनी आत्मा में सुलझाव पैदा करना चाहिए, उसे यह मालूम होना चाहिए कि भगवान उससे क्या चाहता है। अब तक एक ही बात मुझे साफ़ तौर पर समझ में आयी है : लोग धागे की तरह उलझे हुए हैं, हर आदमी एक अलग दिशा में खींच रहा है, और कोई भी यह नहीं जानता कि उसे किस चीज़ से बँध जाना चाहिए! आदमी पैदा होता है, किसी को यह मालूम नहीं किसलिए; वह जीता चला जाता है, कोई भी नहीं जानता कि किसलिए; वह मर जाता है, और सारा खेल ख़त्म हो जाता है। इसलिए सबसे पहले मुझे इस बात को समझना चाहिए कि मैं यहाँ हूँ किसलिए, समझे?"

"तुम ऐसी बातों के बारे में सोचने के अलावा कुछ नहीं करते," लुन्योव ने तनाव के साथ कहा। "इससे फ़ायदा क्या है?"

उसे इस बात का आभास था कि याकोव की गोलमोल बातों का उस पर अब जितना प्रभाव पड़ रहा था उतना इससे पहले कभी नहीं पड़ा था, और वे उसके मन में कुछ विशेष प्रकार के विचारों को जन्म दे रहे थे। जब याकोव बोलता था तो ऐसा लगता था कि इल्या के अन्दर छिपा हुआ कोई मनहूस अस्तित्व, कोई ऐसा अस्तित्व जो हमेशा साफ़-सुथरा और स्वस्थ जीवन व्यतीत करने के उसके सीधे और साफ़ स्वप्नों का विरोध करता था, उसकी आत्मा में ऐसे कुनमुनाता था जैसे गर्भ में बच्चा कुनमुनाता है, और अब ख़ास जिज्ञासा से वह याकोव के एक-एक शब्द को पीता रहता था। वह यह नहीं चाहता था, इस बात से उसे झुँझलाहट होती थी, उसे इसकी ज़रूरत नहीं थी, और इसलिए वह याकोव से बात करने से कतराता था। लेकिन उसके लिए अपने

दोस्त से पीछा छुड़ाना मुश्किल था।

"इससे क्या फ़ायदा है? अरे, यह तो बिल्कुल साफ़ बात है। इसके बिना तो तुम्हारा काम चल ही नहीं सकता, वैसे ही जैसे हवा के बिना नहीं चल सकता।"

"तुम बूढ़ों जैसी बातें करते हो, याकोव; तुम बहुत बड़े बोर हो गये हो। जैसी कि मसल मशहूर है अच्छा सबको चाहिए।"

इस तरह की बातों के बाद इल्या को ऐसा लगता जैसे उसने कोई नमक लगा हुआ खाना ठूँस-ठूँसकर खा लिया हो : उसे एक तरह की प्यास सताने लगती, लेकिन वह बता नहीं सकता था कि किस चीज़ की प्यास। ईश्वर के बारे में उसके अस्पष्ट और दम घोंटने वाले विचारों में कोई ऐसी चीज़ जुड़ जाती जो कठोर और दुराग्रही थी।

"भगवान देखता सब कुछ है, लेकिन उसके बारे में करता कुछ नहीं है," वह उदास होकर सोचता था; उसे आभास था कि उसकी आत्मा ऐसे अन्तरविरोधों में उलझी हुई थी जिनका कोई समाधान नहीं था। वह अपने इन विचारों और अपनी इन आशंकाओं से भागकर ओलिम्पियादा की बाँहों में शरण लेता।

कभी-कभी वह वेरा से मिलने जाता। धीरे-धीरे वह रंगारंग ज़िन्दगी के भँवर में खिंचती चली जा रही थी। वह इल्या को उन सैर-सपाटों के उल्लासभरे क़िस्से सुनाती थी जिन पर वह सौदागरों, सरकारी ओहदेदारों और फ़ौजी अफ़सरों के साथ जाती थी; वह आलीशान रेस्त्रां की दावतों का और तीन घोड़े वाली गाड़ियों की सैर का वर्णन करती और उसे वे कपड़े और जेवर दिखाती जो उसे उपहार में मिलते थे। उसका शरीर बहुत सुडौल, मज़बूत और गठा हुआ था, जिसकी गोलाइयाँ बहुत आकर्षक थीं, और वह डींग मार-मारकर बताती थी कि किस तरह उसके चाहने वाले उसे हथियाने के लिए आपस में लड़ते थे। लुन्योव उसकी सुन्दरता को और ताक़त को और मस्ती को सराहता था, लेकिन कितनी ही बार उसने उससे सतर्कता से कहा था :

"सँभल के, वेरा; ये सब चीज़ें तुम्हें नरक में घसीट ले जायेंगी।"

"तो क्या हुआ? इसके अलावा मैं हूँ ही किस लायक़? कम से कम मैं ठाठ से तो नरक में जाऊँगी। मैं जी भरकर आनन्द लूटूँगी और फिर अलविदा!"

"पावेल का क्या होगा?"

वेरा की भवें काँप उठतीं और उसकी ख़ुशी पर पानी पड़ जाता।

"उसे चाहिए कि मुझको छोड़ दे... मेरे साथ चिपके रहना उसके लिए मुश्किल है... वह अपने आपको क्यों तड़पाता है? मैं इस ज़िन्दगी को कभी छोड़ नहीं पाऊँगी एक बार जो मक्खी शीरे में गिर जाती है..."

"क्या तुम्हें उससे प्यार नहीं है?" एक बार इल्या ने पूछा।

"पावेल से प्यार किये बिना कौन रह सकता है," उसने गम्भीर भाव से कहा।

"वह... वह बेहद अच्छा है!"

"तो फिर तुम उसके साथ रहती क्यों नहीं?"

"उसके गले का पत्थर बनकर? वह कितनी मुश्किल से तो अपना ही पेट पाल पाता है, मेरी तो बात दूर रही। अरे नहीं, मुझे उससे हमदर्दी है।"

"सँभल के चलो, नहीं तो इसका अंजाम बुरा होगा," दूसरी बार इल्या ने उसे चेतावनी दी।

"भगवान के लिए," उसने चिढ़कर कहा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं क्या करूँ? क्या तुम समझते हो कि मैं बस एक आदमी के लिए बनायी गयी थी? हर आदमी ज़िन्दगी का मज़ा लूटना चाहता है। हर आदमी अपनी मनचाही ज़िन्दगी बसर करता है   तुम भी, मैं भी, हर आदमी।"

"तुम्हारा ऐसा सोचना ग़लत है!" इल्या ने उदास होकर गम्भीर भाव से कहा। "हम ज़िन्दा रहते हैं... पर अपने लिए नहीं..."

"फिर किसके लिए?"

"अपने को ही ले लो   तुम सौदागरों के लिए, हर तरह के बदचलन लोगों के लिए ज़िन्दा रहती हो..."

"मैं ख़ुद बदचलन हूँ!" और यह कहकर उसकी हँसी फूट पड़ी।

इल्या भारी मन से उसके पास से चला आया। वह पावेल से दो बार मिला था, लेकिन दोनों बार बस क्षण-भर के लिए। उसे वेरा के यहाँ देखकर पावेल भवें चढ़ाकर खिसिया जाता था। वह अपने होंठ सिये बैठा रहता था, एक शब्द भी नहीं बोलता था, और उसके दुबले-पतले गालों पर गहरे लाल रंग के दो धब्बे उभर आते थे। इल्या समझता था कि उसके दोस्त को उससे जलन होती थी, और इस बात से उसे कुछ सन्तोष मिलता था। लेकिन साफ़ दिखाई दे रहा था कि पावेल ने अपनी गर्दन एक ऐसे फन्दे में डाल रखी थी जिससे वह अपने आपको नुक़सान पहुँचाये बिना नहीं निकल सकता था। उस पर तरस खाकर, और उससे भी ज़्यादा वेरा पर तरस खाकर, इल्या वेरा से दूर रहता था।

वह और ओलिम्पियादा एक बार फिर सुहागरात मना रहे थे। फिर भी उन दोनों के बीच कहीं कोई ऐसी चीज़ थी जो ठण्डी हवा के तेज़ झोंके की तरह काम करती थी, जिसकी वजह से इल्या के दिल में ठेस लगती थी। कभी-कभी बातें करते-करते इल्या उदास और विचारग्रस्त हो जाता था। तभी ओलिम्पियादा उससे नरमी से फुसफुसाकर कहती थी :

"जाने भी दो, मेरी जान, इस तरह सोच में डूबे रहना अच्छा नहीं होता। इस दुनिया में कितने लोग हैं जिनके हाथों पर कोई धब्बा न हो..."

"सुनो," इल्या गम्भीर कठोर स्वर में कहता। "इस मामले के बारे में एक बात भी न कहना। मैं हाथों की बात नहीं सोच रहा था... तुम बहुत होशियार सही, लेकिन मेरे विचारों को नहीं समझ सकती... मुझे एक बात बताओ : कोई आदमी ईमानदारी की ज़िन्दगी कैसे बसर कर सकता है, ऐसी ज़िन्दगी जिससे किसी को कोई नुक़सान न पहुँचे? और बूढ़े के बारे में एक शब्द भी न कहना!"

लेकिन उससे बूढ़े की चर्चा किये बिना नहीं रहा जाता था और वह इल्या से उसे भूल जाने का अनुरोध करती रहती थी। लुन्योव नाराज़ होकर उसके पास से उठकर चला आता था। अगली बार जब वह आता तो वह दीवानों की तरह चिल्ला-चिल्लाकर कहती कि वह उससे सिर्फ़ इसलिए प्यार करता था कि वह उससे डरता था, कि वह यह नहीं चाहती थी और वह उसे छोड़कर शहर से चली जायेगी। वह फूट-फूटकर रोती, उसके चुटकियाँ भरती, उसके कन्धे पर काटती और उसके पाँव चूमती, और आख़िरकार जब वह उन्माद के चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाती तो अपने सारे कपड़े उतारकर उसके सामने नंगी खड़ी हो जाती और कहती :

"क्या मैं देखने में अच्छी नहीं लगती हूँ? क्या मेरा जिस्म ख़ूबसूरत नहीं है? अपने रोम-रोम से, अपने ख़ून की हर बूँद से, अपने अंग-अंग से मैं तुम्हें प्यार करती हूँ! तुम्हारा जी चाहे तो मुझे काट डालो मैं फिर भी हँसती रहूँगी..."

उसकी नीली आँखें गहराने लगतीं, उसके तरसे-तरसे से होंठ फड़कने लगते, और उसकी छातियाँ मानो उससे मिलने के लिए आगे उभर आतीं। वह उसे अपनी बाँहों में समेट लेता और तब तक उसे चूमता रहता जब तक कि वह बिल्कुल थककर चूर न हो जाता, और फिर, घर लौटते हुए वह मन ही मन सोचता रहता :

"यह औरत, जिसमें जीवन की उमंग इतनी कूट-कूटकर भरी थी, इस बात को कैसे बर्दाश्त कर सकी कि उस बूढ़े के घिनौन हाथ उसे छुएं?" उसे ओलिम्पियादा से नफ़रत होने लगती और वह उसके चुम्बनों को याद करके बड़ी कटुता से थूकता।

एक दिन भावावेश के ऐसे ही तूफ़ान के बाद, जब वह उसके आलिंगनों से बिल्कुल छक गया था, वह बोला :

"जब से मैंने उसे बूढ़े शैतान का सफ़ाया कर दिया है तब से तुम मुझसे ज़्यादा प्यार करने लगी हो..."

"सच बात है। तो क्या हुआ?"

"कुछ नहीं। अजीब बात है : कुछ लोगों को सड़े अण्डों का स्वाद ताजे अण्डों के स्वाद से अच्छा लगता है, और कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें सेब तभी अच्छे लगते हैं जब उन पर धब्बे पड़ जाये... बहुत अज़ीब बात है..."

ओलिम्पियादा ने उसे धुँधली-सी आँखों से देखा और खोयी-खोयी-सी मुस्करा दी,

पर कुछ बोली नहीं।

एक बार जब इल्या काम से लौटने के बाद कपड़े बदल रहा था तो तेरेन्ती कमरे में आया। अन्दर आकर उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया और एक सेकण्ड तक वहाँ खड़ा रहा जैसे किसी की बातों को सुन रहा हो। फिर उसने अपने कूबड़ को झटका देकर दरवाज़े की कुण्डी चढ़ा दी। इल्या तिरस्कार-भरी मुस्कराहट से उसे देखता रहा।

"इल्या," तेरेन्ती ने कुर्सी पर बैठते हुए दबी ज़बान से कहा।

"क्या है?"

"तुम्हारे बारे में अफवाहें फैलायी जा रही हैं... गन्दी-गन्दी अफवाहें..."

कुबड़े ने एक गहरी आह भरकर नज़रें झुका लीं।

"क्या अफवाहें, मिसाल के लिए?" इल्या ने अपने जूते उतारते हुए पूछा।

"तरह-तरह की... कुछ लोग कहते हैं कि तुम्हारा भी हाथ उसमें था... उसमें... तुम तो जानते हो, वह बूढ़ा जो गला घोंटकर मार डाला गया था... कुछ लोग कहते हैं कि तुम जाली सिक्के बनाते हो..."

"जलते हैं, क्यों?" इल्या ने पूछा।

"और फिर शराबख़ाने के आस-पास भी कुछ लोग मंडराते हुए देखे गये हैं जासूस क़िस्म के लोग... वे पेत्रूख़ा से तुम्हारे बारे में पूछते रहते हैं..."

"पूछने दो," इल्या निरीह स्वर में बोला।

"हाँ, ज़ाहिर है   पूछने दो। जब हमने कोई ग़लत काम किया ही नहीं है तो फिर हमें किस बात का डर।"

इल्या हँस दिया और चारपाई पर लेट गया।

"उन लोगों ने आना तो बन्द कर दिया है! लेकिन अब पेत्रूख़ा ने शुरू किया है..." तेरेन्ती झिझकते हुए और सकपकाते हुए बोल रहा था। "अच्छा हो कि तुम अपने रहने के लिए कोई दूसरी जगह, कोई कमरा ढूँढ़ लो, इल्या। पेत्रूख़ा कहता है कि मैं अपने घर में किसी ऐसे-वैसे आदमी को नहीं रहने दूँगा। वह कहता है कि मैं नगर-परिषद का सदस्य हूँ..."

इल्या ने ग़ुस्से से बिफरा हुआ अपना चेहरा चाचा की ओर फेरा और ऊँचे स्वर में कहा :

"अगर उसे अपने चमकते हुए थोबड़े से प्यार है तो चुप रहे! यह बात उससे कह देना... अगर मैंने फिर कभी उसे मेरे बारे में कोई बेहूदा बात कहते सुना तो मैं उसकी खोपड़ी खोल दूँगा। मैं चाहे जो कुछ हूँ, उस बदमाश को मेरे बारे में फ़ैसला करने का कोई हक़ नहीं है। जब मेरा जी चाहेगा तब मैं यहाँ से चला जाऊँगा। लेकिन अभी कुछ दिन तो मैं धर्मात्मा-पुण्यात्मा लोगों के बीच रहना चाहता हूँ।"

इल्या के इस तरह भड़क उठने से कुबड़ा डर गया। एक क्षण तक कुछ बोले बिना वह बैठा अपना कूबड़ा खुजाता रहा और सहमा हुआ अपने भतीजे को घूरता रहा, जो चारपाई पर लेटा एकटक छत को देखे जा रहा था और उसके होंठ कठोर मुद्रा में भिंचे हुए थे। तेरेन्ती की नज़रें लड़के के घुँघराले बालों वाले सिर, छोटी-सी मूँछ वाले उसके कठोर और ख़ूबसूरत चेहरे और आगे को निकली हुई उसकी ठोड़ी, उसके चौड़े सीने और उसके गठे हुए शरीर को इस तरह घूरती रहीं जैसे टटोल-टटोलकर थाह लेने की कोशिश कर रही हों।

"क्या कड़ियल जवान निकले हो तुम!" उसने बुदबुदाकर कहा। "अगर तुम गाँव में रहते तो लड़कियाँ तुम्हें एक पल चैन न लेने देतीं... हुँह... चाँदी होती तुम्हारी वहाँ! मैं तुम्हें पैसे देता। तुम वहाँ अपनी एक दुकान खोल लेते और किसी पैसे वाली लड़की से शादी कर लेते। ज़िन्दगी ढलान पर फिसलती हुई बर्फ़गाड़ी की तरह बिना किसी विघ्न-बाधा के गुजरती रहती।"

"हो सकता है मैं ऊपर चढ़ना चाहता हूँ," इल्या ने गम्भीरता से कहा।

"अरे, हाँ! ज़ाहिर है कि तुम ऊपर ही चढ़ते जाओगे," तेरेन्ती ने जल्दी से कहा। "वही मेरा मतलब है। ज़िन्दगी बिना किसी विघ्न-बाधा के गुजरती रहेगी और तुम ऊपर चढ़ते जाओगे।"

"और जब मैं ऊपर चोटी पर पहुँच जाऊँगा तब कहाँ?" इल्या ने पूछा।

कुबड़े ने उसे एक नज़र देखा और बत्तख़ की तरह हँस दिया। उसने कुछ और भी कहा, लेकिन इल्या ने उसकी बात सुनी नहीं। वह अपनी सारी ज़िन्दगी को याद कर रहा था और सोच रहा था कि घटनाएँ कितने सुथरे ढंग से और अनजाने ही जाल के चारखानों की तरह एक व्यवस्थित रूप धारण करती जाती हैं। वे किसी आदमी के चारों ओर गिरोहबन्द हो जाती हैं और जहाँ जी चाहता है उसे ले जाती हैं, जैसे पुलिसवाला किसी चोर को पकड़कर ले जाता है। मुझी को ले लो, उसने सोचा, मैं इस घर से छुटकारा पाकर अकेले जाकर कहीं रहना चाहता हूँ, और वह देखो। मौक़ा मेरे सामने आ गया। उसने एक भयभीत और खोजती हुई नज़र अपने चाचा पर डाली, लेकिन उसी वक़्त किसी ने दरवाज़ा खटखटाया और तेरेन्ती उछलकर खड़ा हो गया।

"अरे, खोल दो," इल्या ने चिड़चिड़ाकर और ऊँचे स्वर में कहा।

जब कुबड़े ने कुण्डा सरकाकर दरवाज़ा खोला तो याकोव को अपने हाथ में बादामी रंग की की एक बड़ी-सी किताब लिए बाहर खड़ा देखा।

"आओ, माशा के यहाँ चलें, इल्या," उसने चारपाई के पास जाते हुए उत्साह से कहा।

"क्यों, उसे क्या हो गया है?" इल्या ने जल्दी से पूछा।

"हो गया है? कुछ भी नहीं... वह घर पर नहीं है..."

"वह अपनी शामें कहाँ बिताती है?" कुबड़े ने परोक्ष संकेत करते हुए कहा।

"वह मुटल्ली के साथ जाती है," याकोव ने कहा।

"इसका नतीजा अच्छा होने वाला नहीं है," तेरेन्ती ने अलसाये हुए स्वर में कहा।

याकोव ने इल्या का हाथ पकड़कर झटका दिया।

"तुम सिड़ी हो गये हो," इल्या बोला।

"यह सरासर जादू है और कुछ हो ही नहीं सकता," याकोव ने चुपके से कहा।

"क्या चीज़ जादू है?" इल्या ने अपना जूता पहनते हुए कहा।

"यह किताब... जल्दी करो! कमाल की चीज़ है!" यह कहते हुए याकोव अपने दोस्त का हाथ पकड़कर उसे अपने पीछे-पीछे घसीटता हुआ अँधेरे गलियारे में ले चला। "इसे पढ़ते समय ख़ून सर्द होने लगता है। लेकिन यह अथाह तालाब की तरह अपनी तरफ़ खींचती रहती है।"

इल्या को अपने दोस्त की उत्तेजना का, उसकी काँपती हुई आवाज़ का आभास था, और जब उन्होंने मोची के कमरे में पहुँचकर लैम्प जलाया तो उसने देखा कि याकोव का चेहरा सफ़ेद था और उसकी आँखें धुँधली और मस्ती-भरी थीं, जैसी शराबी की होती हैं।

"कुछ पी है?" उसने तीखी नज़र से उसे देखते हुए पूछा।

"मैंने? आज तो नहीं एक बूँद नहीं पी। अब मैं नहीं पीता बस जब मेरा बाप घर पर होता है तो कभी-कभार अपनी हिम्मत बढ़ाये रखने के लिए एक-दो चुसकियाँ लगा लेता हूँ! मुझे अपने बाप से डर लगता है... और मैं वोद्का तो पीता ही नहीं उसमें बू आती है... अच्छा, यह सुनो!"

वह धम से कुर्सी पर बैठ गया, किताब खोलकर उस पर झुका और पीले पड़ गये मोटे काग़ज़ पर छपी हुई लाइनों पर उंगली चलाते हुए उसने काँपते स्वर में पढ़ना शुरू किया :

"'अध्याय तीन। मनुष्य की उत्पत्ति के विषय में।' सुनो।"

गहरी साँस लेकर उसने अपना बाँया हाथ ऊपर उठाया और दाहिने हाथ की उंगली लाइनों पर चलाता हुआ पढ़ने लगा :

"डियोडोरस कहता है : वस्तुओं की प्रकृति के विषय में जिन विद्वान लोगों ने लिखा है, उनके मनुष्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में दो मत हैं, क्योंकि कुछ विद्वानों का विचार है कि संसार की रचना नहीं की गयी थी, और न ही युगों के बीतने के साथ उसका विघटन होता है, और मनुष्य-जाति का अस्तित्व अनादि है..."

याकोव ने सिर उठाकर हवा में अपना हाथ घुमाया।

"सुना यह?" उसने दबे स्वर में कहा। "अनादि है!"

"आगे पढ़ो," इल्या ने किताब की पुरानी चमड़े की जिल्द पर सन्दिग्ध दृष्टि डालते हुए कहा। तब याकोव की धीमी और उत्साह भरी आवाज़ सुनायी दी :

"सिसेरो कहता है कि इस मत के समर्थक थे सामोस के पायथागोरस, अर्ख़ीता तेरेन्तीन, एथेंस के प्लेटो, ज़ीनोक्रेटीस, स्टागेइरा के अरस्तू, और बहुत से दूसरे विद्वान, जो इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अपने शाश्वत रूप में यह संसार अनादि है और अनन्त है। सुना यह? फिर वही अनादि!"

इल्या ने हाथ बढ़ाकर किताब धड़ से बन्द कर दी।

"बस करो, बहुत हो गया!" उसने गुर्राकर कहा। "भाड़ में जाये यह सब! जर्मन कहीं के! दिमाग़ को उलझाने के लिए ये सब गुत्थियाँ सोचते रहते हैं। कुछ सिर-पैर का पता ही नहीं चलता।"

"ठहरो!" याकोव डर से अपने चारों ओर नज़र डालकर चिल्ला उठा; फिर आँखें फाड़कर अपने दोस्त को घूरते हुए बोला, "तुम्हें अपनी उत्पत्ति के बारे में कुछ मालूम है?"

"कैसी उत्पत्ति?" इल्या अधीर होकर चिल्लाया।

"चिल्लाओ मत... आत्मा को ले लो। आदमी पैदा होता है तो उसकी आत्मा होती है, होती है न?"

"तो?"

"तो उसे यह जानना चाहिए कि वह कहाँ से आयी और कैसे। कहा जाता है कि आत्मा अमर है, कि उसका अस्तित्व सदा से रहा है, कहा जाता है न? महत्त्वपूर्ण बात यह जानना नहीं है कि तुम पैदा कैसे हुए, बल्कि यह कि तुम्हें पता कैसे चला कि तुम्हारा अस्तित्व है। तुम जीवित पैदा हुए थे। तुम जीवित कब हुए? अपनी माँ के पेट में? अच्छी बात है! तो तुम्हें यह क्यों नहीं याद है कि तुम्हारे पैदा होने से पहले और लगभग पाँच वर्ष तक उसके बाद क्या हुआ था? और अगर तुम्हारी आत्मा है तो वह तुम्हारे शरीर में कहाँ प्रवेश करती है? बता सकते हो मुझे?"

याकोव की आँखों में विजय की चमक थी और उसका चेहरा ऐसे उल्लास और सन्तोष से खिला हुआ था जो इल्या की समझ के बाहर थे।

"यह है आत्मा! समझा है न?" याकोव ख़ुशी से चिल्लाया।

"अरे, बेवकू फ़," इल्या ने कठोर स्वर में कहा। "इसमें इतना ख़ुश होने की क्या बात है?"

"मैं ख़ुश नहीं हो रहा हूँ, बस यह बात है कि मैं... बस मैं..."

"बस मैं..." इल्या ने चिढ़ाते हुए कहा। "महत्त्व इस बात का नहीं है कि मैं

ज़िन्दा क्यों हूँ, बल्कि इस बात का है कि मुझे कैसे जीना चाहिए? किस तरह मुझे साफ़-सुथरी और शराफ़त की ज़िन्दगी बसर करनी चाहिए, जिसमें न मैं किसी को नुक़सान पहुँचाऊँ और न कोई मुझे नुक़सान पहुँचाये। मुझे तो ऐसी किताब लाकर दो जिसमें यह बताया गया हो..."

याकोव निरूत्तर हो गया। वह विचारमग्न-सा सिर लटकाये बैठा रहा। अपने दोस्त के दिल में जोश न पैदा कर सकने की वजह से ख़ुद उसका जोश ठण्डा हो गया। एक क्षण बाद उसने कहा :

"मैं तुम्हें देख रहा हूँ और तुम्हारे अन्दर कुछ ऐसा है जो मुझे अच्छा नहीं लगता... मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हारे दिमाग़ में क्या बात है... ऐसा लगता है कि कुछ दिन से तुम किसी बात पर इतरा रहे हो... जैसे तुम अपने आपको कोई बहुत बड़ा सन्त समझ रहे हो..."

इल्या हँस दिया।

"हँस किस बात पर रहे हो? मैं तुमसे सच बात कह रहा हूँ। तुम हमेशा दूसरों की कड़ी निन्दा करते हो... ऐसा लगता है कि जैसे तुम्हें किसी से प्यार ही न हो।"

"सो तो मुझे नहीं है," इल्या ने निश्चयपूर्वक कहा। "किससे प्यार करूँ मैं, और क्यों करूँ? किसी ने कभी मेरे लिए किया ही क्या है? लोग तो सब यही चाहते हैं कि किसी दूसरे के बिरते बस उनका पेट भरता रहे, और फिर वे चाहते हैं कि दूसरे लोग उनसे प्यार करें और उनकी इज़्ज़त करें। मैं बुद्धू नहीं हूँ! मेरी इज़्ज़त करो, तभी मैं तुम्हारी इज़्ज़त करूँगा; मेरा हिस्सा मुझे दे दो, तभी मैं शायद तुमसे प्यार करूँगा! हर आदमी उतना ही भूखा है जितना कि दूसरा आदमी..."

"इन्सान सिर्फ़ रोटी के सहारे ज़िन्दा नहीं रहता..." याकोव ने रूखेपन से कहा।

"मैं जानता हूँ। हर आदमी अपने को किसी न किसी चीज़ से संवारता है, लेकिन वह मुखौटा होता है! मुझे सारी पोल दिखाई देती है। मेरा चाचा भगवान से हिसाब चुकता कर लेना चाहता है, जैसे दुकान का गुमाश्ता अपने मालिक को बिक्री का हिसाब देता है। तुम्हारे बाप ने गिरजाघर के साथ एक नया उपकार किया है; इसका मतलब है कि उसने या तो किसी को धोखा दिया या वह किसी को धोखा देने वाला है... और कहीं भी जाओ, यही हालत है पाँच दो, दस लो... हर आदमी धोखा दे रहा है, हर आदमी अपने लिए बहाने ढूँढ़ रहा है। लेकिन मैं कहता हूँ : कोई पाप किया हो तुमने, इत्तफ़ाक़ से या जान-बूझकर तो वार सहने के लिए सिर झुका दो।"

"तुम जो कहते हो वह सच है," याकोव ने विचारमग्न होकर कहा। "मेरे बाप वाली बात भी सच है, और कुबड़े वाली बात भी... हाय रे! इल्या, हम दोनों ग़लत जगह पैदा हुए हैं! तुम तो कम से कम भड़क सकते हो और दूसरों को बुरा-भला कहकर

अपना गुबार निकाल सकते हो। उससे कुछ तो राहत मिलती है। मेरे पास तो यह भी चारा नहीं है... काश मैं यहाँ से छुटकारा पाकर कहीं जा सकता!" उसने उदास होकर कहा।

"जाओगे कहाँ?" इल्या ने हल्का-सा व्यंग्य करते हुए कहा। इस पर दोनों चुप हो गये। एक मेज़ के इस तरफ़ और दूसरा उस तरफ़ बैठे हुए थे; उन दोनों के बीच चमड़े की बादामी जिल्द और पीतल के बकसुओं वाली वह मोटी-सी किताब रखी थी...

सीढ़ियों पर से पैर घसीटकर चलने और बुदबुदाकर बोलने की आवाज़ें सुनायी दीं। कोई हाथ से टटोलकर दरवाज़े का हैण्डिल ढूँढ़ने की कोशिश कर रहा था। दोनों लड़के कुछ बोले बिना इन्तज़ार करते रहे; थोड़ी देर बाद दरवाज़ा धीरे-धीरे खुला और पेफ़ीश्का अन्दर आया। उसने चौखट से ठोकर खायी, झूमा और घुटनों के बल गिर पड़ा; वह अपना अकार्डियन दाहिने हाथ में सिर के ऊपर उठाये था।

"हि-ऊँ!" वह नशे में डूबी हुई हँसी हँसा। उसके पीछे-पीछे मुटल्ली किसी तरह बड़ी कोशिश करके अन्दर आयी। उसने फ़ौरन झुककर पेफ़ीश्का की दोनों बग़लों में हाथ डालकर उसे उठाने की कोशिश की।

"कितनी चढ़ाये हुए है, बूढ़ा शराबी कहीं का!" वह लड़खड़ाती ज़बान से बुड़बुड़ायी।

"हाथ हटा अपने, कुटनी! मैं ख़ुद उठ जाऊँगा... ख़ुद..." वह ज़ोर लगाकर उठ खड़ा हुआ और लड़कों के पास चला गया।

"कहो!" उसने अपना बायाँ हाथ बढ़ाकर कहा। "क्या हाल-चाल है!"

मुटल्ली बेवकू फ़ों की तरह ठहाका मारकर हँसने लगी।

"कहाँ से आ रहे हो तुम लोग?" इल्या ने पूछा।

याकोव उस शराबी जोड़े को देखकर मुस्करा दिया और कुछ बोला नहीं।

"कहाँ से आ रहे हैं हम लोग? अरे, लड़को! अरे, छोकरो!" और यह कहकर पेफ़ीश्का फर्श पर पाँव पटकने और गाने लगा :

कच्ची हड्डी, बच्ची हड्डी!
हड्डी पर जब बोटी आयी
बेच आया बेरहम कसाई!

"ऐ कुटनी!" उसने मुटल्ली से कहा। "आओ, वह गाना गायें जो तुमने मुझे अभी सिखाया था। आओ!"

वह मुटल्ली की बग़ल में चूल्हे का सहारा लेकर खड़ा हो गया और अपने अकार्डियन के परदों पर उँगलियाँ फेरते हुए उसने कुहनी से उसे टहोका दिया।

"माशा कहाँ है?" इल्या ने कठोर स्वर में पूछा।

"ऐ! तुम दोनों!" याकोव उछलकर खड़े होते हुए चिल्लाया।

"बताओ, माशा कहाँ है?"

लेकिन शराबियों ने उनकी बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। मुटल्ली एक ओर को सिर झुकाकर गाने लगी :

> आओ पड़ोसिन, दारू लाओ,
> जिससे यह इतवार कटे...

पेफ़ींश्का ने अकार्डियन की धौंकनी चलाकर उसकी आवाज़ में आवाज़ मिलाकर ऊँचे स्वर में गाना शुरू किया :

> सोम-सुरा कुछ इतनी पी लें,
> कल का भी सोमवार कटे...

इल्या ने उठकर पेफ़ींश्का को इतनी बुरी तरह झिंझोड़ा कि मोची का सिर जाकर चूल्हे से टकरा गया।

"कहाँ है तेरी बेटी?"

"खो-ओ गयी बिटिया भोली-भाली, रैन अँधेरी काली-काली," पेफ़ींश्का अपना सिर पकड़कर ऊटपटाँग बुदबुदाया।

याकोव मुटल्ली से पूछ-ताछ कर रहा था। लेकिन वह खीसें निकालकर बोली :

"मैं नहीं बताऊँगी तुम्हें, नहीं बताऊँगी, नहीं बताऊँगी!"

"इन लोगों ने शायद उसे बेच दिया है, जल्लाद कहीं के," इल्या ने धीरे से कठोर हँसी हँसकर कहा। याकोव ने सहमकर उसे एक नज़र देखा।

"सुनो, पेफ़ींश्का, मुझे बता दो माशा कहाँ है?" उसने बड़े दयनीय स्वर में गिड़गिड़ाकर कहा।

"मा-शा!..." मुटल्ली व्यंग्य करते हुए धीरे-धीरे बोली, "अब याद आयी माशा की..."

"इल्या! सुना तुमने? अब हम क्या करें?" याकोव ने परेशान होकर पूछा।

इल्या कोई जवाब दिये बिना कठोर दृष्टि से उन शराबियों को घूरता रहा।

मुटल्ली मनहूस स्वर में रिरियाकर अपना गाना गाती रही और अपनी बड़ी-बड़ी आँखें नचाकर बारी-बारी से याकोव और इल्या को देखती रही। अचानक वह अपनी बाँहें बेतुके ढंग से घुमाकर चिल्लायी :

“निकल जाओ यहाँ से! मेरे घर से! यह घर अब मेरा है! हम दोनों भी ब्याह करने वाले हैं यह और मैं...”

मोची पेट पकड़े ठहाका मारकर हँसता रहा।

“चलो, याकोव,” इल्या बोला। “इन दोनों से कुछ पता नहीं चलने का।”

“रुको!” घबराया हुआ और भयभीत याकोव बोला। “पेर्फ़ीश्का, बताओ, कहाँ है माशा?”

“लेना तो इनको, मुटल्ली, मेरी प्यारी घरवाली! लेना इनको! लेना इनको! कच्चा चबा जाओ इन्हें!... कहाँ है माशा?”

पेर्फ़ीश्का ने सीटी बजाने के इरादे से अपने होंठ सिकोड़े और जब उनमें से कोई आवाज़ नहीं निकली तो उसने याकोव को चिढ़ाते हुए ज़बान निकालकर दिखायी और ठहाका मारकर हँस पड़ा। मुटल्ली सीना तानकर इल्या की ओर चलते हुए अपने फेफड़े का पूरा ज़ोर लगाकर गरजी :

“तुम कौन हो? तुम समझते हो कि मैं जानती नहीं?”

इल्या उसे हटाकर बाहर चला गया। सीढ़ियों पर याकोव भी उसके पास आ पहुँचा, उसने उसके कन्धे पकड़ लिए और अँधेरे में उसे रोककर बोला :

“क्या यह हो सकता है? क्या ऐसा करना ठीक है? वह अभी इतनी छोटी-सी तो है, इल्या! क्या इन लोगों ने सचमुच उसकी शादी कर दी है?”

“झींखना बन्द करो!” इल्या ने झिड़ककर उसे टोका। “उससे कोई फ़ायदा नहीं होगा। तुम्हें पहले से ही उन पर नज़र रखनी चाहिए थी। जब तुम शुरूआत का पता लगाने में इतना उलझे हुए थे, तब तक उन्होंने उसका ख़ात्मा कर दिया...”

याकोव चुप हो गया, लेकिन एक मिनट बाद आँगन में इल्या के पीछे चलते हुए वह फिर बोला :

“इसमें मेरा क़सूर नहीं है। मैं जानता था कि वह कहीं झाड़ू-बुहारी करती है...”

“मुझे इससे कोई मतलब नहीं है कि इसमें तुम्हारा क़सूर है कि नहीं,” इल्या ने आँगन के बीच में रुकते हुए रुखाई से कहा। “इस घर को छोड़ देना चाहिए... इस घर को तो फूँक देना चाहिए।”

“हे भगवान! हे भगवान!” याकोव बुदबुदाया; वह इल्या के पीछे खड़ा था और उसकी बाँहें शिथिल होकर दोनों ओर झूल रही थीं; उसने अपना सिर ऐसे झुका रखा था जैसे वार सहने के लिए तैयार हो।

“जाओ, अब जाकर रोओ,” इल्या ने उससे व्यंग्य से कहा और अँधेरे आँगन में अपने दोस्त को अकेला छोड़कर वह वहाँ से चला गया।

अगले दिन सुबह उसे पेर्फ़ीश्का से पता चला कि माशा को ख्रेनोव नामक एक दुकानदार के साथ ब्याह दिया गया था, जो लगभग पचास साल का बूढ़ा था और जिसकी बीवी अभी हाल ही में मरी थी।

पेर्फ़ीश्का चूल्हे के चबूतरे पर लेटा था, और अपना सिर, जो नशे के उतार की वजह से दर्द कर रहा था, बीच-बीच में झटकते हुए बहक-बहककर यह क़िस्सा सुना रहा था :

"तो उसने मुझसे कहा, 'मेरे दो बच्चे हैं, दोनों लड़के हैं। उनकी देखभाल करने के लिए किसी आया की ज़रूरत है, लेकिन आया तो अपने परिवार का हिस्सा होती नहीं, वह ज़रूर कुछ न कुछ चुरायेगी और दूसरी बहुत-सी बातें होंगी... तुम अपनी बेटी को राज़ी करने की कोशिश करो...' तो मैंने उससे बात की... और मुटल्ली ने भी उससे बात की... माशा बड़ी तेज़ है वह फ़ौरन समझ गयी। उसे क्या इससे बेहतर किसी चीज़ की उम्मीद हो सकती है? बिल्कुल नहीं। बदतर भले ही हो, लेकिन बेहतर तो नहीं हो सकती। 'कोई फ़र्क नहीं पड़ता, मैं जाऊँगी,' वह बोली। और वह चली गयी। सारा मामला तीन दिन में निबट गया... मुटल्ली को और मुझे तीन-तीन रूबल मिले वह हम पी भी गये। क्या शराब पीती है वह औरत भी! घोड़ा भी उसकी बराबरी नहीं कर सकता!"

इल्या चुपचाप सुनता रहा। वह समझ गया कि माशा का बन्दोबस्त उम्मीद से बेहतर हो गया था, फिर भी उसे उसके लिए अफ़सोस था। इधर कुछ दिन से वह उससे बहुत कम मिला था और उसके बारे में उसने सोचा भी नहीं था, और अब उसे अचानक ऐसा लगा कि उसके चले जाने के बाद पेत्रूख़ा का घर हमेशा से ज़्यादा घिनौना हो गया था।

पेर्फ़ीश्का चूल्हे के चबूतरे से इल्या की ओर देख रहा था, उसका सूजा हुआ पीला चेहरा नीचे लटका हुआ था और उसकी आवाज़ खिड़की के काँच पर टूटी हुई टहनी की खरोंच जैसी लग रही थी।

"ख्रेनोव की शर्त यह है कि मैं उसके घर में कभी क़दम न रखूँ! वह कहता है : कभी-कभी दुकान पर भले ही आओ, हलक़ तर कर लेने के लिए कुछ पैसा मिल जायेगा, लेकिन मेरे घर के दरवाज़े तुम्हारे लिए स्वर्ग के दरवाज़ों की तरह बन्द हैं। इल्या याकोव्लेविच, तुम मुझे ख़ुमार तोड़ने के लिए पाँच कोपेक नहीं दे सकते? मेहरबानी करके!"

"तुम अब क्या करोगे माशा के बिना?" इल्या ने पूछा।

मोची ने फर्श पर थूका और जवाब दिया :

"अब तो मैं पक्का पियक्कड़ बन जाऊँगा। माशा की वजह से कुछ रोक रहती

थी... कभी-कभी मैं उसकी ख़ातिर भी दिहाड़ी कर लेता था... वह जैसे मेरे अन्तःकरण पर सवार रहती थी। लेकिन अब मैं जानता हूँ कि उसे पेट भर खाना मिलता है, और पहनने को कपड़े हैं और उसके सिर के ऊपर छत है   वह मानो सँभालकर सन्दूक़ में रख दी गयी है   इसलिए अब मैं हरदम पीने के लिए आजाद हूँ..."

"तुम वोद्का पीना नहीं छोड़ सकते?"

"बिल्कुल नहीं!" पेर्फ़ीश्का ने अपना उलझे बालों वाला सिर निर्णयात्मक ढंग से हिलाकर कहा। "और क्यों छोड़ दूँ? आदमी जो कुछ चाहता है उसका बन्दोबस्त मुक़द्दर करता है। यही बात है! और अगर किसी आदमी के दिमाग़ में कोई बात घुसे ही नहीं तो उसका मुक़द्दर भी उसकी परवाह नहीं करता। यह सच है कि एक वक़्त था जब मेरे दिमाग़ में भी एक मंसूबा था   यह उस वक़्त की बात है जब मेरी बीवी ज़िन्दा थी। मैं उम्मीद करता था कि येरेमेई दादा के यहाँ से थोड़ा-बहुत मैं भी नोच लूँगा। मैं इसे इस तरह देखता था, कोई न कोई तो उसके पैसे को चुरा ही लेगा, तो मैं ही क्यों न यह काम कर लूँ? ख़ैर, भगवान की कृपा से कोई और मुझसे भी पहले वहाँ पहुँच गया। मुझे इसका अफ़सोस नहीं है। लेकिन मैंने इतना ज़रूर सीख लिया कि कुछ चाहना ही काफ़ी नहीं है, आदमी में उसे हासिल करने की अक़ल भी होनी चाहिए।"

मोची हँसा और चबूतरे पर से नीचे उतरने लगा।

"अच्छा, पाँच कोपेक तो दो... मेरी आँतें सूखी जा रही हैं!"

"यह लो, एक चुसकी लगाओ," इल्या ने कहा।

फिर उसकी ओर देखकर मुस्कराते हुए इतना और जोड़ दिया :

"तुम लतिया शराबी भी हो और मक्कार भी हो, फिर भी कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि जितने लोगों को मैं जानता हूँ उनमें तुम सबसे अच्छे हो।"

पेर्फ़ीश्का ने लुन्योव के गम्भीर मगर प्यार-भरे चेहरे को सन्देह से देखा।

"मेरी खिल्ली उड़ा रहे हो?"

"मानो या न मानो, तुम्हारी मर्ज़ी। ऐसा नहीं है कि मैं तुम्हें कोई बहुत अच्छा समझता हूँ, बल्कि बात यह है कि मैं दूसरों को बहुत घटिया समझता हूँ।"

"यह बात मेरे लिए बहुत गहरी है!... मेरी खोपड़ी ऐसी सख़्त चट्टानों को तोड़ने के लिए नहीं बनायी गयी थी... समझ नहीं पाया... मैं तो जाकर एक चुसकी लगाता हूँ, शायद उससे मेरा दिमाग़ कुछ बढ़े..."

"ठहरो!" इल्या ने उसकी बाँह पकड़ते हुए कहा। "तुम भगवान से डरते हो?"

पेर्फ़ीश्का ने बेचैन होकर एक पाँव से दूसरे पर अपना बोझ बदलते हुए लगभग आहत स्वर में कहा :

"क्यों डरूँ मैं? मैंने किसी का कुछ बिगाड़ा तो है नहीं..."

"प्रार्थना करते हो?" इल्या ने और भी धीमे स्वर में पूछा।

"करता तो हूँ... कभी-कभी!..."

इल्या समझ गया कि मोची को शराबख़ाने में पहुँचने की इतनी जल्दी पड़ी थी कि वह उससे बात भी करने को तैयार नहीं था।

"अच्छा, जाओ," उसने विचारमग्न होकर कहा, "लेकिन न भूलना : जब तुम मर जाओगे तो भगवान तुमसे पूछेगा, 'ए बन्दे, तूने किस तरह की ज़िन्दगी बसर की?'"

"और मैं जवाब दूँगा, 'मैं छोटा पैदा हुआ था; मैं शराबी मरा; मुझे कुछ याद नहीं, प्रभु।' और भगवान बस हँसेगा और मुझे माफ़ कर देगा..."

मोची ख़ुश होकर हँसता हुआ बाहर चला गया।

लुन्योव तहख़ाने में अकेला रह गया। यह सोचकर उसे अजीब लग रहा था कि माशा अब इस घुटन-भरे, गन्दे बिल में फिर कभी दिखायी नहीं देगी, और यह कि पेर्फ़ीश्का भी जल्दी ही यहाँ से निकाल दिया जायेगा।

अप्रैल के सूरज की किरणें खिड़की के अन्दर आकर बिना बुहारे हुए फर्श पर अपनी रोशनी बिखेर रही थीं। सभी चीज़ें अव्यवस्थित थीं, वातावरण उदास लग रहा था, जैसे अभी वहाँ से किसी की मैयत उठी हो।

निराशाजनक विचार एक के बाद एक इल्या पर लुढ़कते हुए गुजर रहे थे; वह कुर्सी पर निश्चल बैठा भारी-भरकम चूल्हे को देख रहा था जिस पर से जगह-जगह सफ़ेदी उखड़ने लगी थी।

अचानक एक विचार बिल्कुल स्पष्ट रूप में उसके दिमाग़ में बिजली की तरह कौंध गया :

"मुझे जाकर अपना अपराध मान लेना चाहिए।"

पर उसने ग़ुस्से से उस विचार को दूर हटा दिया...

उसी दिन शाम को इल्या को पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव का घर छोड़ देने को बाध्य किया गया। यह घटना इस तरह हुई।

दिन-भर काम करके जब वह घर लौटा तो उसने अपने चाचा को बहुत दुखी होकर आँगन में उसका इन्तज़ार करते हुए पाया। वह इल्या को लकड़ी के ढेर के पीछे ले गया और वहाँ जाकर बोला :

"सुनो, इल्या, इस बार तो तुम्हें यहाँ से जाना ही पड़ेगा... तुम सुनते हो कैसा हंगामा हुआ यहाँ!" कुबड़े ने आँखें कसकर बन्द करके और कूल्हे पीटते हुए अपना

त्रास व्यक्त किया। "याकोव पीकर धुत्त हो गया और उसने अपने बाप को उसके मुँह पर चोर कहा! उसने और भी बहुत कुछ कहा निर्दयी दरिन्दा, घिनौना व्यभिचारी और ख़ूब जी भरकर चिल्लाया!... और पेत्रूख़ा भी उस पर टूट ही तो पड़ा! उसके दाँतों पर घूँसा मारा, उसे बाल पकड़कर घसीटा, उसे अपने पाँवों से रौंदा, उसे इतनी बुरी तरह पीटा कि वह ख़ून में लथपथ हो गया! याकोव अब वहाँ पड़ा कराह रहा है... उसके बाद पेत्रूख़ा मुझ पर झपट पड़ा। 'अपने भतीजे को यहाँ से निकाल दो,' वह दहाड़ा। 'यह सब उसी का किया-धरा है,' उसने कहा। कैसा भूँका है वह! इसलिए होशियार रहना..."

इल्या ने तसमा गर्दन पर से उतारा और बक्सा अपने चाचा को थमा दिया।

"लो, ज़रा इसे पकड़ो।"

"ठहरो! कहाँ जा रहे हो तुम?"

इल्या के हाथ करुणा और क्रोध से काँप रहे थे : करुणा याकोव के लिए, और क्रोध पेत्रूख़ा पर।

"इसे पकड़ो, मैंने कहा न," वह दाँत पीसकर बुदबुदाया और शराबख़ाने में चला गया। उसने अपने जबड़े इतने कसकर भींच रखे थे कि उनमें दर्द होने लगा था और उसके कानों में एक तूफान गरज रहा था। इस गरज के बीच उसे सुनायी दिया कि चाचा चिल्लाकर पुलिस, जेल और तबाही के बारे में कुछ कह रहा था, लेकिन वह रुक न सका।

पेत्रूख़ा काउण्टर के पास किसी ऐसे आदमी से बात कर रहा था जो देखने में बहुत शरीफ नहीं लग रहा था। वह मुस्करा-मुस्कराकर बातें कर रहा था। उसकी गंजी खोपड़ी पर रोशनी पड़ रही थी और ऐसा लग रहा था जैसे उसके पूरे सिर पर एक सन्तोषपूर्ण मुस्कराहट बिखरी हुई हो।

"अच्छा, सौदागर साहब!" वह इल्या को देखकर उपहास के भाव से हँसा और उसकी भवें धमकी के अन्दाज़ से फड़कने लगीं। "आप ही से तो मैं मिलना चाहता था..."

वह अपने कमरे का दरवाज़ा रोके खड़ा था।

इल्या दृढ़ संकल्प के साथ अपनी आँखों में क्रूर निर्ममता का भाव लिये उसके पास आया और ऊँचे स्वर में बोला :

"हट जाओ रास्ते से!"

"क्या-आ?" पेत्रूख़ा बोला।

"मुझे याकोव को देखने अन्दर जाने दो..."

"बहुत जाने दिया मैंने!"

इल्या ने कोई शब्द कहे बिना अपने पूरे ज़ोर से पेत्रूख़ा के मुँह पर एक मुक्का जड़ दिया। वह कराहता हुआ गिर पड़ा। चारों ओर से वेटर दौड़ पड़े।

"पकड़ लो इसे!" कोई चिल्लाया। "मारो!"

गाहक उछलकर खड़े हो गये जैसे किसी ने उन पर खौलता हुआ पानी उड़ेल दिया हो, लेकिन इल्या शान्त भाव से पेत्रूख़ा को लाँघकर कमरे में चला गया और अन्दर जाकर उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया।

उस छोटी-सी कोठरी में, जिसमें बक्सों और शराब के डिब्बों के ऊँचे-ऊँचे ढेर लगे थे, एक टीन का लैम्प मद्धिम लौ से जल रहा था। अँधेरे में और उस काठ-कबाड़ के बीच इल्या पहले तो अपने दोस्त का पता नहीं लगा पाया लेकिन थोड़ी ही देर में उसने देखा कि याकोव फर्श पर पड़ा था; उसका सिर अँधेरे में था और इसलिए उसका चेहरा काला और विकृत लग रहा था। इल्या ने लैम्प उठा लिया और घुटनों के बल उसके पास बैठ गया। याकोव का पूरा चेहरा एक कटे-फटे बदसूरत मुखौटे जैसा लग रहा था, उसकी आँखें सूजन में खो गयी थीं; उसकी साँस ख़र-ख़र की आवाज़ के साथ चल रही थी और साफ़ ज़ाहिर था कि उसे कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था क्योंकि उसने कराहकर पूछा :

"कौन है?"

"मैं हूँ," लुन्योव ने उठकर खड़े होते हुए धीरे से कहा।

"पानी दो..."

इल्या ने मुड़कर अपने कन्धे के ऊपर से देखा। लोग दरवाज़ा जबर्दस्ती खोलने की कोशिश कर रहे थे।

"पीछे के दरवाज़े से जाओ," किसी ने आदेश दिया।

"मैंने उसे हाथ तक नहीं लगाया था," इस शोर-गुल को चीरती हुई पेत्रूख़ा की दर्द-भरी महीन आवाज़ सुनायी दी।

इल्या ने द्वेष की भावना से किलकारी भरी। दरवाज़े के पास उसने शान्त भाव से उन लोगों से बातचीत शुरू की जो दरवाज़े के दूसरी ओर थे।

"अरे, शोर मचाइये! जबड़े पर मेरे एक हल्का-सा मुक्का मार देने से वह मर नहीं जायेगा, लेकिन इसके लिए मुझे अदालत में घसीटा जायेगा। अपना-अपना काम कीजिये और दरवाज़े को धक्का मत दीजिए, मैं उसे ख़ुद खोल दूँगा..."

उसने दरवाज़े की कुण्डी खोल दी और यह सोचकर कि शायद ज़रूरत पड़े, वह अपनी मुट्ठियाँ भींचे खुले हुए दरवाज़े के चौखटे में आकर खड़ा हो गया। उसके चेहरे से साफ़ ज़ाहिर था कि वह लड़ने के बिल्कुल तैयार था; उसकी यह तैयारी और उसका गठा हुआ शरीर देखकर भीड़ पीछे हट गयी। लेकिन पेत्रूख़ा उन्हें उकसाता रहा।

"यह बिल्कुल दरिन्दा है, बदमाश है!" वह रुआँसी आवाज़ में बोला।

"इसे हटा ले जाईये यहाँ से और अन्दर आकर देखिये कि इसने क्या किया है!" इल्या ने उन्हें अन्दर आने का रास्ता देने के लिए एक तरफ़ हटते हुए कहा। "देखिये कि इसने किस तरह उसकी हड्डी-पसली एक कर दी है..." कुछ गाहक इल्या को कनखियों से देखते हुए उसके पास से गुजरकर चुपके से कमरे में चले गये और झुककर याकोव को देखने लगे।

"कैसी धुनाई की है उसने इसकी!" उनमें से एक ने विस्मित होकर भयभीत स्वर में कहा।

"थोड़ा-सा पानी ले आओ कोई; पुलिस को बुलवाना चाहिए," इल्या ने कहा।

सारे गवाह उसके पक्ष में थे; यह बात वह देख रहा था और महसूस कर रहा था, और इसलिए वह कठोर, ऊँचे स्वर में कहने लगा :

"आप सब लोग पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव को जानते हैं, आप सब लोग जानते हैं कि आस-पास इससे बड़ा धोखाबाज़ कोई नहीं है, लेकिन इसके बेटे की भला किसी को कभी कोई बुराई करते सुना गया है? तो देखिये, वह पड़ा है इसका बेटा, जिसे इतनी बुरी तरह पीटा गया है कि शायद वह उम्रभर के लिए अपाहिज हो जाये, और उसका बाप साफ़ बचकर निकल जायेगा। और मुझे सिर्फ़ इसलिए सज़ा मिलेगी कि मैंने पेत्रूख़ा के मुँह पर एक घूँसा मारा था... क्या यह ठीक बात है? क्या यह इंसाफ़ है? लेकिन हमेशा यही होता है : एक आदमी को पूरी छूट रहती है कि उसका जो जी चाहे करे, और दूसरे आदमी को आँख उठाने तक की इजाज़त नहीं होती।"

सुनने वालों में से कुछ ने हमदर्दी से आह भरी, दूसरे लोग चुपचाप वहाँ से चले गये; पेत्रूख़ा चीख़ने लगा और सब लोगों को वहाँ से भगाने लगा।

"चले जाओ यहाँ से! चले जाओ, मैं कहता हूँ! यह मेरा मामला है, वह मेरा बेटा है। चलो, हटो यहाँ से! मैं पुलिस से डरता नहीं हूँ... और मुझे अदालत का सहारा लेने की भी ज़रूरत नहीं है। मैं तो तुम्हें अदालत के बिना ही चारों खाने चित्त कर दूँगा। खिसको यहाँ से!"

याकोव को पानी पिलाने के लिए इल्या घुटनों के बल झुककर बैठ गया; अपने दोस्त के कटे और सूजे हुए होंठों को देखना उसके लिए असह्य हो गया था।

"साँस लेने में बड़ी तकलीफ़ होती है," पानी पीते हुए याकोव दबे स्वर में कह रहा था। "मुझे यहाँ से कहीं ले चलो, इल्या। मेहरबानी करके ले चलो; भगवान के लिए!"

सूजन के बीच खुली हुई दरारों में से आँसू छलके आ रहे थे...

"इसे अस्पताल में भर्ती कराना चाहिए..." इल्या ने गम्भीर मुद्रा बनाकर पेत्रूख़ा

से कहा।

शराबख़ाने के मालिक ने अपने बेटे की ओर देखा और बुदबुदाकर कुछ कहा जो समझ में नहीं आया। अपनी एक आँख फाड़कर वह घूर रहा था और उसकी दूसरी आँख, जिसपर इल्या ने घूँसा जड़ दिया था, याकोव की दोनों आँखों की तरह ही सूजकर बन्द हो गयी थी।

"सुना तुमने कि मैंने क्या कहा?" इल्या ने चिल्लाकर कहा।

"चिल्लाओ नहीं," पेत्रूख़ा ने आशा के विपरीत बड़ी नरमी और धीरे से कहा। "मैं इसे अस्पताल में नहीं भर्ती करा सकता   लोग चर्चा करेंगे... उससे काम नहीं चलने का!"

"बदमाश हो तुम!" और यह कहकर इल्या ने बड़े तिरस्कार से पेत्रूख़ा के पाँव पर थूका। "मैं कहता हूँ कि तुम्हें इसको अस्पताल में भर्ती कराना होगा! नहीं कराओगे तो मैं बखेड़ा खड़ा कर दूँगा!..."

"छोड़ो, जाने दो। बहुत गुस्सा न करो... शायद वह बन रहा है..."

इल्या उछलकर खड़ा हो गया और यह देखकर पेत्रूख़ा दरवाज़े की ओर लपका।

"इवान!" उसने पुकारकर कहा। "एक गाड़ी ले आओ   अस्पताल तक, पन्द्रह कोपेक दे दूँगा... कपड़े पहन लो, याकोव। बनो नहीं। ऐसा तो है नहीं कि किसी अजनबी ने तुम्हारी पिटाई की है   तुम्हारे अपने बाप ने तुम्हें मारा है। अपने जमाने में मेरी तो इससे भी बुरी तरह पिटाई हो चुकी है..."

वह कमरे में इधर से उधर भाग-भागकर खूँटी पर से कपड़े उतारने लगा और इल्या की ओर फेंकने लगा और साथ ही यह भी बयान करता रहा कि जवानी में उसकी कैसी पिटाई हुई थी...

तेरेन्ती काउण्टर पर खड़ा था और इल्या को उसकी ताबेदारी की आवाज़ सुनायी दे रही थी :

"तीन कोपेक का बनाऊँ या पाँच कोपेक का? केवियार? माफ़ कीजिएगा, केवियार तो बस ख़त्म हो गया... थोड़ी-सी हेरिंग मछली लेंगे?"

अगले दिन इल्या ने अपने रहने के लिए जगह ढूँढ़ ली। रसोई के पास का जो छोटा-सा कमरा लेने का उसने फ़ैसला किया था वह उसे एक नौजवान लड़की ने दिखाया जो लाल ब्लाउज़ पहने थी। उसके गाल गुलाबी थी, छोटी-सी नुकीली नाक, छोटा-सा मुँह, और काले बाल जिनके घुँघराले छल्ले उसके पतले-से माथे पर पड़े हुए बहुत सुन्दर लगते थे। बीच-बीच में वह अपने छोटे-से नाज़ुक हाथ से जल्दी से झटका देकर उन्हें फुला लेती थी।

"पाँच रूबल में ऐसा ख़ूबसूरत छोटा-सा कमरा सस्ता है," वह चहककर कह रही

थी और उसे और यह देखते हुए कि चौड़े कन्धे वाला यह नौजवान उसकी चंचल काली आँखों को देखकर बेचैन हो उठा था मुस्करा रही थी। "दीवारों पर काग़ज़ बिल्कुल नया है... खिड़की बाग़ में खुलती है। और क्या चाहिए आपको? सवेरे मैं आपके लिए समोवार गरम कर दिया करूँगी, लेकिन उसे आपको ख़ुद अपने कमरे में ले जाना पड़ेगा..."

"क्या आप यहाँ की नौकरानी हैं?" इल्या ने कौतुहल से पूछा।

मुस्कराहट की जगह फ़ौरन उसकी त्योरियों पर बल पड़ गये और वह बड़े घमण्ड से तनकर खड़ी हो गयी।

"नौकरानी नहीं, मैं मकान-मालकिन हूँ," वह बोली। "यह मेरा फ़्लैट है, और मेरा पति..."

"आपका मतलब है कि आपकी शादी हो चुकी है?" इल्या ने आश्चर्य से पूछा और उसके नाज़ुक-से शरीर पर ऊपर से नीचे तक एक अविश्वासपूर्ण नज़र डाली। उसका ग़ुस्सा फ़ौरन ठण्डा पड़ गया और वह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"आप भी कैसे अजीब आदमी हैं! पहले तो मुझे नौकरानी समझ लिया, फिर आपको यक़ीन नहीं आता कि मेरी शादी हो चुकी है!"

"कैसे आये यक़ीन? बिल्कुल बच्ची जैसी तो लगती हैं आप," इल्या ने हँसकर जवाब दिया।

"अरे, मेरी शादी को तो तीन साल होने को आये। मेरा पति इस इलाके का पुलिसवाला है।"

इल्या ने एक नज़र उसके चेहरे को देखा और न जाने क्यों किलकारी मारकर हँस पड़ा।

"आप हैं बड़े अजीब आदमी!" लड़की उसे बड़े कौतूहल से देखते हुए कन्धे बिचकाकर चिल्ला उठी। "तो कमरा ले रहे हैं न?"

"ले रहा हूँ। कुछ पेशगी देना होगा?"

"ज़रूर!"

"तो मैं घण्टे दो घण्टे में अपना सामान ले आऊँगा..."

"अच्छी बात है। आपका जैसा किराएदार मिल जाने की मुझे बड़ी ख़ुशी है आप बहुत ख़ुशमिज़ाज क़िस्म के आदमी मालूम होते हैं।"

"कोई ख़ास नहीं..." इल्या ने धीरे से हँसकर कहा।

वह अपने होंठों पर मुस्कराहट और अपने मन में एक सुखद भावना लिए हुए बाहर चला गया। वह दीवारों पर नीले काग़ज़ वाले उस कमरे से भी ख़ुश था, और उस चुलबुली नाज़ुक-सी औरत से भी जो मालकिन थी। लेकिन उसे सबसे ज़्यादा ख़ुशी

इस बात की थी कि वह एक पुलिसवाले के फ़्लैट में रहने जा रहा था। उसे यह बात बहुत दिलचस्प, ढिठाई की और ख़तरनाक भी लगी।

वह जाकर याकोव को देखना चाहता था। उसने किराये की एक गाड़ी ली और उस पर बैठकर यह सोचने लगा कि अब वह पैसे का क्या करे, उसे कहाँ छिपाये?

अस्पताल पहुँचने पर उसे बताया गया कि याकोव को अभी नहलाकर सुला दिया गया है। इल्या गलियारे में एक खिड़की के पास रुककर यह फ़ैसला करने की कोशिश करने लगा कि वह घर चला जाये या अपने दोस्त के जागने का इन्तज़ार करे। मरीज स्लीपरें और अस्पताल के पीले गाउन पहने बरामदे में इधर से उधर टहल रहे थे और उसके पास से होकर गुजरते वक़्त उस पर एक उचकती हुई नज़र डाल लेते थे। दूर से आती हुई कराहने की आवाज़ें उनकी दबी-दबी आवाज़ों के साथ घुल-मिल रही थीं. .. ये मिली-जुली आवाज़ें गलियारे की लम्बी सुरंग में खोखली ध्वनि से गूँज रही थीं. .. ऐसा लग रहा था कि हवा में बसी हुई अस्पताल की ख़ास बू के बीच कोई अदृश्य जीव आवाज़ किये बिना उड़ रहा था और हृदय-विदारक आहें भर रहा था... अचानक इल्या का जी चाहा कि वह इन पीली दीवारों के घेरे से निकलकर कहीं भाग जाये, लेकिन उसी वक़्त एक मरीज उसके पास आया और उसकी ओर हाथ बढ़ाकर धीमी आवाज़ में बोला :

“कहाँ, यहाँ कैसे?”

इल्या ने नज़र उठाकर देखा और आश्चर्य से चौंक पड़ा...

“पावेल! तुम भी यहाँ हो?”

“क्यों, और कौन है?” पावेल ने झट से पूछा।

उसका चेहरा बुझा-बुझा-सा था और वह घबराहट और बेचैनी से अपनी पलकें झपका रहा था... इल्या ने संक्षेप में बताया कि याकोव पर क्या बीती थी और अन्त में कहा :

“लेकिन तुम कितने बदल गये हो!”

पावेल ने लम्बी साँस ली और उसके होंठ काँपने लगे।

“हाँ, बदल तो गया हूँ,” उसने भर्राये हुए स्वर में धीरे से कहा; उसने अपना सिर इस तरह झुका रखा था जैसे उसने कोई अपराध किया हो।

“तुम्हें हुआ क्या है?” इल्या ने हमदर्दी से पूछा।

“हुँह! जैसे तुम अन्दाज़ा नहीं लगा सकते...” पावेल ने जल्दी से एक नज़र अपने दोस्त पर डाली और फिर अपना सिर झुका लिया।

“कोई बीमारी लग गयी है?”

“ज़ाहिर है।”

"वेरा से तो नहीं लगी?"

"और किससे लगती?" पावेल ने मुँह लटकाकर कहा।

इल्या ने सिर झिटक दिया।

"किसी दिन मुझे भी लग जायेगी," वह बोला।

"मैं समझा था कि तुम मुझ पर नाक-भौं सिकोड़ोगे," पावेल ने बड़े विश्वास से कहा। "मैं तो यहाँ टहल रहा था कि अचानक मुझे तुम दिखायी पड़ गये। मैं शर्मिन्दा... मैंने मुँह फेर लिया... कुछ कहे बिना तुम्हारे पास से होकर निकल गया..."

"बड़ी होशियारी की!" इल्या ने निन्दा के भाव से कहा।

"न जाने तुम क्या समझते? घिनौनी बीमारी है... कोई दो हफ़्ते हो गये यहाँ आये... बिल्कुल जी ऊब गया है, और तकलीफ़ इतनी होती है कि जान निकल जाती है! रात को सबसे बुरा हाल होता है   जैसे कोई तवे पर सेंक रहा हो। और घण्टे खिंचते चले जाते हैं   ख़त्म ही नहीं होने आते किसी तरह। ऐसा लगता है कि मैं दलदल में धँसता जा रहा हूँ और आस-पास कोई भी नहीं है जिसे मैं मदद के लिए पुकार सकूँ..."

वह लगभग बिल्कुल कानाफूसी के स्वर में बोल रहा था, उसके चेहरे की बोटियाँ फड़क रही थीं और वह अपनी उँगलियों से अपने गाउन का छोर उमेठ रहा था।

"वेरा कहाँ है?" इल्या ने चिन्तित होकर पूछा।

"कौन जाने?" पावेल ने दुखी मुस्कराहट के साथ कहा।

"वह तुमसे मिलने नहीं आती?"

"एक बार आयी थी। मैंने उसे बाहर निकाल दिया... मैं उसकी सूरत नहीं देखना चाहता!" वह जलकर बुदबुदाया।

इल्या ने उसके ऐंठे हुए चेहरे की ओर देखा और उसे झिड़कते हुए कहा :

"यह सब बकवास है! अगर तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ इन्साफ़ का बर्ताव रखें तो तुम्हें ख़ुद इन्साफ़ का बर्ताव करना होगा। उसे क्यों दोष देते हो तुम?"

"फिर किसे दोष दूँ?" पावेल ने उग्रता से धीमे स्वर में कहा। "किसे दोष दूँ, मैं पूछता हूँ? मैं रातों को जागकर पड़ा सोचता रहता हूँ कि मेरी ज़िन्दगी इस तरह तबाह क्यों हुई? वेरा के प्यार के चक्कर में पड़ने की वजह से? मैं उससे कितना प्यार करता था! मेरे दिल में उसके लिए जो प्यार था उसकी चमक तो कभी किसी सितारे को भी नसीब नहीं हुई!..."

पावेल की आँखें लाल हो गयीं और उनमें से दो बड़े-बड़े आँसू उसके गालों पर ढलक आये। उसने अपनी आस्तीन से उन्हें पोंछ डाला।

"बकवास!" लुन्योव ने कहा; वह महसूस कर रहा था कि उसे पावेल से ज़्यादा वेरा के लिए अफ़सोस हो रहा था। "एक घूँट पी लेते हो तो सब कुछ अच्छा लगने

लगता है, शेर हो जाते हो! दस घूँट पी लेते हो तो तबीयत खराब हो जाती है : अपने को शहीद समझने लगते हो! लेकिन उसकी सोचो? उसे भी तो यह बीमारी लगी ही है न?"

"उसे भी। तुम समझते हो कि उसके लिए मेरा दिल नहीं दुखता?" पावेल ने काँपते हुए स्वर में पूछा। "जब मैंने उससे यहाँ से चले जाने को कहा तो वह चली तो गयी... मगर रो पड़ी... इतने धीरे-धीरे और इतना फूट-फूटकर! मुझसे देखा नहीं गया। मैं भी रोना चाहता था, लेकिन उस वक़्त मेरा दिल पत्थर हो गया था। उसके बाद ही मैं सोच में डूब गया। क्या बताऊँ, इल्या, इस दुनिया में हम जैसे लोगों की ज़िन्दगी कोई ज़िन्दगी नहीं है!"

"कोई गड़बड़ी ज़रूर मालूम होती है..." इल्या ने धीरे से विचित्र ढंग से मुस्कराकर सहमति प्रकट की। "ज़िन्दगी में बस धक्के ही मिलते हैं। याकोव के बाप ने उसका जीना दूभर कर रखा है; माशा को एक घिनौने बूढ़े के साथ ब्याह दिया गया है, और तुम्हारा यह हाल है..."

अचानक ही चुपके से थोड़ा-सा हँसा और अपनी आवाज़ धीमी करके बोला :

"अकेला मैं ही हूँ जिसकी क़िस्मत कुछ साथ देती है! मेरे लिए तो किसी चीज़ को चाहने भर की देर होती है, और बस! वह सामने आ जाती है।"

"तुम्हारी यह बात अच्छी नहीं है," पावेल ने उसके चेहरे को ध्यान से देखते हुए कहा। "क्या तुम मज़ाक़ करने की कोशिश कर रहे हो?"

"मज़ाक़? मैं तो नहीं कर रहा हूँ कोई और मज़ाक़ करने की कोशिश कर रहा है। हम सबके साथ मज़ाक़ कर रहे हैं... जहाँ तक मैं समझता हूँ, इस दुनिया में इन्साफ़ का तो नाम भी नहीं है।"

"मैं भी यही देखता हूँ," पावेल धीरे से, लेकिन अपने दिल की पूरी गहराई से चिल्ला उठा।

उसके गालों पर लाल धब्बे दहक उठे और उसकी आँखों में आग धधकने लगी, जैसा कि उस समय हमेशा होता था जब वह स्वस्थ था।

लड़के बरामदे के छायादार कोने में एक खिड़की के पास, जिसके काँच पर पीला रंग लगा था, दीवार का सहारा लेकर खड़े थे; दोनों आवेश के साथ बड़ी उत्सुकता से बातें कर रहे थे, एक-दूसरे की बातें बड़ी आसानी से समझ रहे थे। कहीं दूर से लम्बी कराहों की आवाज़ें आ रही थीं, जो सुनने में किसी अज्ञात हाथों से छेड़े गये तार की झनझनाहट जैसी लग रही थीं, उस तार के करुण क्रन्दन जैसी जो यह जानता हो कि उसके कम्पन की पीड़ा को समझने वाला कोई हृदय नहीं है। पावेल उन आघातों की चेतना से तिलमिला रहा था जो नियति के क्रूर हाथों से उसे पहुँचाये गये थे; उस तार

की तरह उसका सारा अस्तित्व भी पीड़ा के साथ काँप रहा था, और उतावलेपन से वह अपनी बिखरी हुई शिकायतें अपने दोस्त के कानों में उँडेल रहा था। उसके शब्द इल्या के हृदय में चिंगारियाँ-सी पैदा कर रहे थे जो उस पर लगातार एक बोझ बने हुए सन्देहों और उलझनों के कोयलों को सुलगाये दे रही थीं। और उसे ऐसा लग रहा था कि ज़िन्दगी से घबराहट की उसकी भावना का स्थान कोई ऐसी दूसरी चीज़ लेती जा रही है जो अभी थोड़ी ही देर में उसकी आत्मा के अन्धकार को दूर कर देगी और उसे हमेशा के लिए शान्ति दिला देगी।

"इसकी क्या वजह है कि अगर किसी के पास पैसा हो तो उसकी इज़्ज़त ज़रूर की जायेगी, और अगर कोई विद्वान हो उसकी बात ज़रूर सही होगी?" पावेल ने इल्या के पास खड़े होकर दबे स्वर में अपने दिल की बात कही। बोलते समय वह चारों ओर इस तरह नज़र डालता जा रहा था जैसे उसे उस दुश्मन के मौजूद होने का आभास हो जिसने उसकी ज़िन्दगी को तहस-नहस कर दिया था।

"हम लोग जो बातें कहते हैं वे किसकी समझ में आ सकती हैं?" इल्या ने कठोर, ऊँचे स्वर में कहा।

"सच कहते हो! है ही कौन जिससे हम बातें करें?"

पावेल ने और कुछ नहीं कहा; लुन्योव विचारों में डूबा हुआ गलियारे की गहराइयों में घूरता रहा; और इस सन्नाटे में कराहने की आवाज़ और भी साफ़ सुनायी देने लगी। जिस सीने से ये कराहें निकल रही थीं वह सचमुच बहुत विशाल होगा, और उसकी पीड़ा भी अथाह होगी...

"तुम अब भी ओलिम्पियादा के साथ रहते हो?" पावेल ने आख़िरकार इल्या से पूछा।

"हाँ!" इल्या ने व्यंग्य से मुस्कराकर कहा; फिर अपनी आवाज़ धीमी करके बोला, "याकोव इतना पढ़ता है कि उसे अब ईश्वर के बारे में शंका होने लगी है.. ."

पावेल ने नज़र उठाकर उसे देखा।

"तो?" उसने अनिश्चित रूप से पूछा।

"उसे कोई किताब मिल गयी है... लेकिन तुम्हारा क्या खयाल है इसके बारे में?"

"मेरा?" पावेल सोच में पड़ गया। "मैं... कैसे बताऊँ... मैं गिरजा नहीं जाता।"

"और मैंने इसके बारे में बहुत सोचा है... मेरी समझ में नहीं आता कि जो कुछ हो रहा है उसे भगवान बर्दाश्त कैसे करता है।"

फिर वे दोनों जोश में आकर बातचीत करने लगे, जिसमें वे उस समय तक डूबे रहे जब तक कि अस्पताल के एक चौकीदार ने आकर लुन्योव से सख़्ती से पूछा नहीं

:

"यहाँ छिपे क्यों खड़े हो तुम?"

"मैं छिपा तो नहीं हूँ," इल्या ने कहा।

"तुम्हें दिखायी नहीं देता कि बाक़ी सब मिलने वाले चले गये हैं?"

"मैंने नहीं देखा... अच्छा, मैं चला, पावेल। याकोव को देख आना..."

"भाग जाओ यहाँ से!" चौकीदार चिल्लाया।

"जल्दी आना!" पावेल ने अनुरोध किया।

बाहर निकलकर इल्या अपने दोस्तों के अंजाम के बारे में सोचने लगा। यक़ीनन वह उनसे ज़्यादा ख़ुशनसीब था, लेकिन इस बात के आभास से उसे कोई सन्तोष नहीं मिला। वह बड़ी कटुता से मुस्कराया और उसने अपने चारों ओर सन्देह-भरी दृष्टि से देखा।

वह शान्तिपूर्वक अपने नये घर में रहने लगा और अपने मकान-मालिकों में बड़ी दिलचस्पी लेने लगा। मालकिन का नाम तात्याना व्लास्येव्ना था। वह बहुत हँसमुख और बातूनी क़िस्म की औरत थी, और अभी दो दिन भी नहीं बीते थे कि उसने इल्या को अपनी ज़िन्दगी का पूरा ढाँचा बता दिया था।

जब इल्या सवेरे अपने कमरे में चाय पी रहा होता, तब वह कुहनी तक आस्तीनें चढ़ाये ऐप्रन बाँधे रसोई में कुछ न कुछ करती रहती और बीच-बीच में खुले दरवाज़े से उस पर एक नज़र डालकर बता देती :

"भले ही हम पैसे वाले न हों, मेरा पति और मैं, लेकिन हम पढ़े-लिखे हैं। मैंने प्राईमरी स्कूल में पढ़ा है और उसने सैनिक स्कूल में, हालाँकि उसने अपनी पढ़ाई पूरी नहीं की... लेकिन हम अमीर बन जाना चाहते हैं, और हम बन भी जायेंगे... हमारे बच्चे नहीं हैं और ज़्यादातर खर्च बच्चों का ही होता है। खाने पकाने और बाज़ार से सौदा-सुलफ़ ले आने का काम मैं ख़ुद करती हूँ, और जहाँ तक सफाई वग़ैरह करने के काम का सवाल है तो मैंने उसके लिए डेढ़ रूबल महीने पर एक नौकरानी रख छोड़ी है, जो अपने घर रहती है। कुछ अन्दाज़ा है आपको कि उससे हमें कितनी बचत होती है?"

वह दरवाज़े पर खड़ी रहती और अपनी घुँघराली लटें पीछे की ओर झटकते हुए उँगलियों पर हिसाब जोड़ती रहती :

"खाना पकाने वाली को तीन रूबल महीना देना पड़ता, और उसे खाना देना पड़ता सात उसके; कुल हुए दस। कम से कम तीन रूबल महीने का सामान वह चुराती हुए तेरह। जिस कमरे में वह रहती वह मैंने आपको किराये पर उठा दिया

है   अठारह! अब सोचिये खाना पकाने वाली हमें कितने की पड़ती!... इसके अलावा मैं हर चीज़ थोक में ख़रीदती हूँ : मक्खन का पूरा बड़ा चौका, आटे का पूरा बोरा, और शक्कर का पूरा थैला, वग़ैरह-वग़ैरह। इसका मतलब हुआ कम से कम बारह रूबल महीने की बचत, और इस तरह हो गये तीस! अगर मैं नौकरी करती   पुलिस के थाने में या तारघर में क्लर्की का कोई काम   तो जितना मैं कमाती वह सारा खाना पकाने वाली को दे देती... इस हालत में मेरे ऊपर मेरे पति को एक कोपेक का भी खर्च नहीं करना पड़ता है और मुझे इस बात पर गर्व है! ज़िन्दगी बिताने का यही तरीक़ा होना चाहिए, नौजवान! मुझसे सीखो!"

वह अपनी चमकीली आँखों से चुलबुलेपन से इल्या को देखती और इसके जवाब में वह उसकी ओर देखकर मुस्करा देता। वह उसे अच्छी लगती थी और वह उसकी इज़्ज़त करता था। सवेरे जब वह सोकर उठता तो वह रसोई के कामों में अपनी नौकरानी के साथ व्यस्त होती   उसकी नौकरानी पन्द्रह-सोलह साल की एक चेचकरू लड़की थी, जो बहुत कम बोलती थी और हर चीज़ को डरी-डरी निस्तेज आँखों से देखती थी। शाम को जब वह घर लौटता तो तात्याना व्लास्येव्ना मुस्कराकर उसके लिए दरवाज़ा खोलती; वह हमेशा साफ़-सुथरी और आकर्षक दिखाई देती और उसके चारों ओर हमेशा भीनी-भीनी ख़ुशबू बसी रहती। जब उसका पति घर पर होता तो वह गिटार बजाता और वह खुले गले से ऊँची आवाज़ में गाती, या फिर दोनों बैठकर ताश खेलते   वे 'गुलामचोर' खेलते थे और हारने वाले को एक प्यार देना पड़ता था। इल्या को अपने कमरे से सब कुछ सुनायी देता रहता : तारों की झनझनाहट   कभी मस्ती-भरी, कभी भावुक; ताश के पत्तों का पटकना; होंठों के चटख़ारे। पति-पत्नी दो कमरों में रहते थे   एक सोने का कमरा था और दूसरा, जो इल्या के कमरे से मिला हुआ था, खाना खाने के काम भी आता था और बैठक के भी, जहाँ वे अपनी शामें बिताते थे। रोज़ सवेरे वह कमरा चिड़ियों की चहचहाहट से भर जाता था : कभी कोई टिटमस लहककर गाती; कभी सिसकिन और गोल्डफ़िंच बारी-बारी से ऐसे चहकतीं जैसे उनके बीच कोई झगड़ा हो रहा हो, कोई बुलफ़िंच किसी गम्भीर बूढ़े की तरह बुदबुदाती रहती, कभी-कभी किसी लिनेट का शान्त, उदास गीत इन ऊँचे स्वरों में मिल जाता।

तात्याना का पति कीरिक निकोदीमोविच अव्तोनोमोव, कोई छब्बीस साल का था। लम्बा क़द और गठा हुआ शरीर था उसका और उसकी नाक बड़ी-सी और दाँत बदरंग थे। उसके सुशील चेहरे पर ढेरों मुँहासे थे और उसकी निस्तेज आँखें हर चीज़ को बड़ी शान्ति से घूरती रहती थीं। उसकी सिर पर खशखशी बाल ब्रश के रेशों की तरह खड़े रहते थे। उसका सारा भारी-भरकम शरीर कुछ हास्यास्पद और अटपटा-सा

लगता था। पहली बार इल्या से मिलने पर उसने न जाने क्यों पूछा :

“गाने वाली चिड़ियाँ तुम्हें अच्छी लगती हैं?”

“हाँ...”

“तुम उन्हें पकड़ते हो?”

“नहीं...” इल्या ने पुलिसवाले को कुछ आश्चर्य से देखते हुए कहा।

कीरिक अव्तोनोमोव ने अपनी नाक सिकोड़ी और दूसरा सवाल पूछने से पहले एक क्षण कुछ सोचा।

“कभी पकड़ी हैं तुमने?”

“नहीं...”

“कभी नहीं?”

“कभी नहीं...”

“तब वे तुम्हें सचमुच अच्छी नहीं लगतीं,” उसने तिरस्कार-भरी मुस्कराहट से कहा। “मैं उन्हें पकड़ा करता था; उन्हें पकड़ने की वजह से मुझे सैनिक स्कूल से निकाल तक दिया गया था... और आज भी मैं उन्हें पकड़ता, लेकिन मैं अपने बड़े साहब की नज़रों में अपने आपको गिराना नहीं चाहता क्योंकि गाने वाली चिड़ियों को पसन्द करना तो उदात्त भावना है, लेकिन उन्हें पकड़ना मेरे जैसे रोबदार आदमी को शोभा नहीं देता। लेकिन अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो सिस्किन ज़रूर पकड़ता! ऐसी मस्त चिड़ियाँ होती है! सिस्किनों को ही तो ‘भगवान की चिरैयाँ’ कहते हैं...”

बातें करते समय वह इल्या को स्वप्निल दृष्टि से घूरता रहा जिसकी वजह से लुन्योव घबरा उठा। उसे ऐसा लगा कि पुलिसवाला चिड़िया पकड़ने की बात प्रतीकात्मक ढंग से कर रहा था, और यह कि उसका इशारा किसी दूसरी ही चीज़ की ओर था। लेकिन पुलिसवाले की पनियाई आँखें को एक नज़र देख लेने के बाद वह आश्वस्त हो गया, और यह फ़ैसला करके कि उस आदमी में कोई छल-कपट नहीं था, इल्या बड़ी शिष्टता से मुस्करा दिया और कुछ भी न बोला। उसके विनम्र संकोच और उसकी गम्भीर मुद्रा से कीरिक नीकोदीमोविच स्पष्टतः ख़ुश हो गया, क्योंकि उसने मुस्कराकर कहा :

“आज शाम आकर हम लोगों के साथ चाय पीना... शर्माओ नहीं हम लोग ‘गुलामचोर’ खेलेंगे... हम लोग मेहमानों को बहुत ज़्यादा अपने यहाँ नहीं बुलाते। लोगों के साथ उठने-बैठने में तो बहुत मज़ा आता है लेकिन उन्हें खिलाना मुसीबत हो जाता है बहुत महंगा पड़ता है।”

इल्या इस जोड़े की ज़िन्दगी को जितना ज़्यादा देखता था, उतने ही वे उसे ज़्यादा अच्छे लगते थे। उनके चारों ओर का वातावरण साफ़-सुथरा और टिकाऊ था, उनका

जीवन शान्त और सुख-चैन का था, और ऐसा लगता था कि उन्हें एक-दूसरे से प्यार भी था। छोटी-सी फुर्तीली तात्याना देखने में बिल्कुल फुदकती हुई टिटमस चिड़िया जैसी लगती थी; उसका पति भारी-भरकम बुलफ़िंच जैसा। कभी-कभी शाम को इल्या अपने कमरे में बैठा दीवार के उस पार की बातें सुनता रहता और मन ही मन सोचता : आदमी को इस तरह रहना चाहिए। इर्ष्या से आह भरकर वह उस दिन के सपने देखने लगता जब उसकी अपनी दुकान होगी और एक साफ़-सुथरा कमरा होगा, जिसमें वह गाने वाली चिड़ियाँ रखेगा और अकेला रहा करेगा, शोर-गुल से दूर और शान्तिपूर्वक जैसे किसी सपने में रह रहा हो... बग़ल वाले कमरे में तात्याना अपने पति को बताती होती कि उसने बाज़ार से क्या-क्या ख़रीदा था, उसने कितना खर्च किया था और कितने की उसने बचत की थी, और उसका पति हँसता और पत्नी को सराहता :

"कैसा सुलझा हुआ दिमाग़ है तुम्हारा! लाओ, इसी बात पर तुम्हें एक प्यार कर लूँ।"

फिर अपनी बारी आने पर वह उसे दिन-भर की घटनाएँ बताता, उन दस्तावेज़ों के बारे में बताता जो उसने तैयार की थीं, और पुलिस के सबसे बड़े हाकिम ने या उससे ऊपर के किसी दूसरे अफ़सर ने उससे क्या कहा था... वे दोनों उसकी तरक्की की सम्भावना के बारे में बातें करते और इस बात पर सोच-विचार करते रहते कि तरक्की मिल जाने पर उन्हें अपना फ़्लैट बदल लेना चाहिए कि नहीं।

अचानक यह बात सुनकर न जाने क्यों इल्या पर उदासी छा जाती। ऐसे क्षणों में उसे उस छोटे-से नीले कमरे में घुटन महसूस होने लगती और वह अपने चारों ओर इस तरह घूरने लगता जैसे इस उदासी का कारण ढूँढ़ रहा हो; जब उससे और ज़्यादा बर्दाश्त न होता तो वह उठकर बाहर चला जाता कभी ओलिम्पियादा के यहाँ और कभी यों ही सड़क पर घूमने के लिए।

ओलिम्पियादा ज़्यादा ईर्ष्यालु हो गयी थी और उससे बहुत ज़्यादा माँग करने लगी थी और उनके बीच झगड़े भी ज़्यादा जल्दी-जल्दी होने लगे थे। झगड़े के दौरान वह कभी पोलुएक्तोव की हत्या का जिक्र नहीं छेड़ती थी, लेकिन मेल-जोल के क्षणों में वह पहले की तरह उससे उस बात को भूल जाने का अनुरोध करती थी। इस मामले में उसका संयम लुन्योव को आश्चर्य में डाल देता था। एक बार झगड़े के बाद उसने उससे पूछा :

"ओलिम्पियादा, जब हम दोनों का झगड़ा होता है तो तुम कभी मुझे बूढ़े की बात को लेकर झिड़कती क्यों नहीं?"

"क्योंकि उसका तुमसे और मुझसे कुछ लेना-देना नहीं है," उसने कुछ सोचे बिना जवाब दिया। "अगर पुलिस ने तुमको नहीं पकड़ा है तो इसका मतलब यह है

कि बूढ़े को अपने किये का फल मिल गया है। तुम्हारे लिए उसका ख़ून करने की कोई वजह तो थी नहीं यह बात तुमने ख़ुद कही थी। तुम तो बस एक जरिया थे उसे सज़ा देने का...”

इल्या अविश्वासपूर्ण हँसी हँस दिया।

“क्या बात है?” ओलिम्पियादा ने पूछा।

“कुछ नहीं... मैंने बस यह सोचा कि अगर आदमी में ज़रा-सी भी अक़ल हो तो वह ज़रूर ठग है... वह किसी भी चीज़ को सही ठहराने के लिए बहाना ढूँढ़ सकता है... और किसी भी चीज़ में ऐब निकाल सकता है...”

“मैं तुम्हारी बात नहीं समझ पाती,” ओलिम्पियादा ने सिर हिलाकर कहा।

“क्यों नहीं समझ पाती?” इल्या ने आह भरकर और कन्धे बिचकाकर कहा। “बिल्कुल सीधी-सी बात है। मुझे तो बस किसी ऐसी चीज़ की मिसाल दो जो चट्टान की तरह अटल हो; किसी ऐसी चीज़ की जिसमें दुनिया का चालाक से चालाक आदमी कोई ऐब न निकाल सके या जिसके लिए वह कोई बहाना न ढूँढ़ सके। मुझे तो वह चीज़ बताओ! लेकिन तुम नहीं बता सकती... ऐसी कोई चीज़ है ही नहीं...”

एक झगड़े के बाद इल्या चार दिन तक उससे मिलने नहीं गया, और इस अर्से के बाद उसे उसका एक पत्र मिला जिसमें लिखा था :

“विदा, मेरे जान से प्यारे इल्या, हमेशा के लिए विदा, अब हम एक-दूसरे को कभी नहीं मिलेंगे। मुझे ढूँढ़ने की कोशिश न करना क्योंकि तुम मुझे खोज नहीं पाओगे। मैं अगले जहाज से इस मनहूस शहर को छोड़कर जा रही हूँ। इस जगह रहते-रहते मेरी आत्मा हमेशा के लिए अपाहिज़ हो गयी है। मैं बहुत दूर जा रही हूँ और कभी लौटकर नहीं आऊँगी। मेरे वापस आने की उम्मीद भी न रखना। तुमने मेरे साथ जो भी नेकियाँ की हैं उनके लिए मैं अपने दिल की गहराई से तुम्हारा शुक्रिया अदा करती हूँ, और जो बुरी बातें हैं उन्हें मैं भुला दूँगी। मैं तुम्हें सच-सच बता दूँ कि मैं अकेली नहीं जा रही हूँ मैं नौजवान अनान्यिन के साथ जा रही हूँ जो बहुत दिन से मेरे पीछे पड़ा हुआ है और क़समें खा-खाकर कहता है कि अगर मैं उसके साथ नहीं रहूँगी तो उसकी ज़िन्दगी तबाह हो जायेगी। तो मैं राज़ी हो गयी हूँ : मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। हम लोग समुद्र के किनारे एक गाँव में जा रहे हैं जहाँ अनान्यिन के परिवार का मछलियों का कारोबार है। वह बहुत सीधा-सादा आदमी है और मुझसे तक शादी करना करना चाहता है, बेवकू फ़ कहीं का। मैं तुमसे विदा लेती हूँ। ऐसा लगता कि मैंने तुम्हें बस सपने में देखा था और जब मेरी आँख खुली तो तुम जा चुके थे। काश तुम्हें पता होता कि मेरा दिल कितना दुखी है। मैं तुम्हें चूमती हूँ, मेरी जान, मेरे अकेले। अपने आप पर बहुत घमण्ड न करना हम सब

लाचार बदनसीब लोग हैं। तुम्हारी ओलिम्पियादा इधर बहुत दिनों से बिल्कुल दब्बू हो गयी है, और ऐसा लगता है कि वह अपना सिर कुल्हाड़े के नीचे दिये दे रही है, इतनी बुरी तरह उसका टूटा हुआ लाचार दिल रोता है। ओलिम्पियादा शिलकोवा। मैंने डाक से तुम्हारे नाम एक छोटा-सा पार्सल भेजा है   अपनी निशानी की एक अंगूठी। मेहरबानी करके उसे पहन लेना। ओ. शिल.।"

जब इल्या पत्र पढ़ चुका तो उसने अपना होंठ इतने ज़ोर से काटा कि उसकी आँखों में आँसू छलक आये। उसने पत्र को बार-बार पढ़ा, और हर बार उसे ज़्यादा सन्तोष मिला   बड़े-बड़े टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में लिखे उन सीधे-सादे शब्दों को पढ़कर उसे पीढ़ा भी होती थी और साथ ही अपनी तारीफ़ पर ख़ुशी भी। इससे पहले कभी उसने यह सोचा भी नहीं था कि वह औरत उससे कितना प्यार करती थी, लेकिन अब उसकी समझ में आ रहा था कि ओलिम्पियादा को उससे बहुत गहरा प्यार था, और उसका पत्र पढ़कर उसका दिल गर्वोल्लास से भर उठा। लेकिन यह उल्लास इस चेतना के नीचे दबकर रह गया कि कोई जो उसको बेहद प्यारा था उससे छिन गया था, और वह उदास होकर सोचने लगा कि अब अपने निराशा के क्षणों में वह किसके पास जायेगा। उसके दिमाग़ में उसकी आकृति उभर आयी। उसके आवेशपूर्ण आलिंगनों, उसकी समझदारी की बातों और मज़ाक़ों को याद करके उसके हृदय को गहरे विषाद ने आ दबोचा। वह खिड़की के पास खड़ा आँखें सिकोड़कर बाहर बाग़ में देखता रहता जहाँ एल्डर की झाड़ियाँ शाम के झुटपुटे में हौले-हौले डोल रही थीं और बेद वृक्ष की रस्सियों जैसी पतली टहनियाँ हवा के हल्के-हल्के झोंकों में झूम रही थीं। दीवार के उस पार से गिटार का उदासी-भरा स्वर सुनायी दे रहा था, और तात्याना व्लास्येव्ना ऊँचे स्वर में गा रही थी :

ना मैं चाहूँगी हीरे-मोती,
ना मन चाहे चीज़ अनूठी...

इल्या ने पत्र अपने हाथ में कसकर दबोच लिया। वह महसूस कर रहा था कि वह ओलिम्पियादा के सामने दोषी था; उसका सीना उदासी और ओलिम्पियादा के प्रति वेदना के भाव से भर उठा और उसका गला रुँधने लगा। गीत जारी था :

मुझको तो बस ला दो मेरी
सागर-तल में खोयी अंगूठी।

पुलिसवाला ज़ोर से ठहाका मारकर हँसा और गायिका भी हँसती हुई रसोई में भाग गयी। वहाँ पहुँचते ही उसकी हँसी बन्द हो गयी। इल्या को उसके सामीप्य का

आभास हो रहा था लेकिन वह मुड़कर उसकी ओर देखना नहीं चाहता था, हालाँकि वह जानता था कि उसके कमरे में आने का दरवाज़ा खुला था। वह अपने विचारों में खोया हुआ, अपने अकेलेपन में डूबा हुआ, वहीं निश्चल खड़ा रहा। बाहर बाग़ में पेड़ों की टहनियाँ झूम रही थीं और उसे लग रहा था कि वह धरती से ऊपर उठ गया है और ठण्डे धुँधलके में तैरता चला जा रहा है...

"इल्या याकोव्लेविच, चाय पियेंगे?" उसकी मकान-मालकिन ने पूछा।

"नहीं, शुक्रिया..."

बाहर से ज़ोर से गिरजाघर का घण्टा बजने की आवाज़ आयी; आवाज़ खिड़की के काँच से टकराई, काँच झनझना उठा... इल्या ने अपनी उँगलियों से सीने पर सलीब का निशान बनाया और उसे याद आया कि बहुत दिन से वह गिरजाघर नहीं गया था। घर से चले जाने का यह अवसर पाकर वह बहुत ख़ुश हुआ...

"मैं प्रार्थना करने गिरजाघर जा रहा हूँ," उसने दरवाज़े की ओर मुड़कर कहा। मालकिन चौखट पर हाथ रखे खड़ी थी और बड़े कौतूहल से उसे देख रही थी। उसकी घूरती हुई नज़रों ने इल्या को विचलित कर दिया और वह मानो किसी बात की माफ़ी माँगते हुए बोला :

"बहुत दिन से गिरजाघर नहीं गया हूँ..."

"अच्छी बात है, मैं नौ बजे समोवार तैयार रखूँगी।"

गिरजाघर जाते हुए इल्या नौजवान अनान्यिन के बारे में सोचता रहा। उससे उसकी जान-पहचान थी। अनान्यिन एक अमीर सौदागर था, मछली के कारोबार की 'अनान्यिन ब्रदर्स' कम्पनी का सबसे कम उम्र साझेदार; वह दुबला-पतला सुनहले बालों वाला लड़का था जिसके चेहरे का रंग पीला और आँखें नीली थीं। वह हाल में ही इस शहर में आया था और आते ही उसने एय्याशी की ज़िन्दगी शुरू कर दी थी।

इल्या बड़ी कटुता से सोचता रहा : "इस तरह रहते हैं कुछ लोग शिकरों की तरह : ठीक से पंख भी नहीं निकलते कि फ़ाख़्ता को झपट ले जाते हैं..."

वह अपने विचारों की पैदा की हुई झुँझलाहट लिये गिरजाघर में पहुँचा और एक अँधेरे कोने में खड़ा हो गया जहाँ शमादान जलाने की सीढ़ियाँ रखी थी।

बायीं ओर गायक-मण्डली 'परमपिता, दया करो' गा रही थी। एक लड़का कर्णकटु तीव्र स्वर में गा रहा था जो पादरी के खोखले, खुरदरे स्वर से मेल नहीं खाता था। उसके बेसुरेपन से इल्या को बेहद चिड़चिड़ाहट हो रही थी और उसका जी चाह रहा था कि जाकर उस छोकरे के कान ऐंठ दे। आतिशदान की वजह से वह कोना बहुत गरम था और वहाँ जले हुए कपड़े की बू आ रही थी। बहुत ढीला-ढाला लबादा पहने एक बूढ़ी औरत उसके पास आकर कुछ खिसियाकर बोली :

"यह आपकी जगह नहीं है, साहब..."

इल्या ने उसके ख़ूबसूरत लबादे के कॉलर पर सजावट के लिए लगी हुई चितराले की दुमें देखी और कुछ कहे बिना वहाँ से हट आया और उसने मन ही मन सोचा :

"गिरजाघर में भी सबको अपनी हैसियत के हिसाब से ही जगह दी जाती है..."

पोलुएक्तोव की हत्या के बाद से इल्या पहली बार गिरजाघर आया था, और अचानक इस बात को याद करके वह काँप उठा।

"क्षमा करना, प्रभु," वह बुदबुदाया और उसने उँगलियों से अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया।

गायक-मण्डली का गाना सुरीला और मधुर था। स्तुति के शब्दों का साफ़-साफ़ उच्चारण करती हुई सबसे ऊँचे सुर में गाने वाले लड़कों की आवाज़ें, छोटी-छोटी घण्टियों की झनकार की तरह ऊपर गुम्बद में गूँज रही थी। पाटदार आवाज़ें तने हुए तारों की तरह काँप रही थीं। उनकी ध्वनि के अबाध प्रवाह की पृष्ठभूमि में ऊँचे स्वर स्वच्छ निर्मल जल पर धूप की किरणों की झिलमिलाहट जैसे लग रहे थे। लड़कों की आवाज़ों को सहारा देते हुए नीचे सुर में गाने वालों के गम्भीर और भारी सुर हवा में बड़ी गरिमा से लटके हुए थे; बीच-बीच में धेवत में गाने वाले के मंझे हुए सशक्त स्वर बाक़ी सब स्वरों से ऊँचे सुनायी देते थे, लेकिन कुछ ही देर बाद वे उस छायादार गुम्बद में ऊँचे उठते हुए युवा स्वरों के झिलमिलाते हुए झुण्ड में खोकर रह जाते थे जहाँ से सफ़ेद लिबास पहने सर्वशक्तिमान ईश्वर आशीर्वाद देने की मुद्रा में अपने दोनों हाथ फैलाये अपने उपासकों को विचारमग्न होकर घूरता रहता था। अब गायक-मण्डली की आवाज़ें आपस में घुल-मिलकर सूर्यास्त के समय के बादल जैसी हो गयी थीं, जब वह सूरज की किरणों में गुलाबी, गहरे लाल और जामुनी रंग के भरपूर वैभव के साथ दहक उठता है और अन्ततः अपने सौन्दर्य से उत्पन्न होने वाले हर्षातिरेक में विलीन हो जाता है।

गाने की आवाज़ धीरे-धीरे डूब गयी। इल्या ने गहरी साँस ली और उसके दिल पर से बोझ सा उतर गया। जो झुँझलाहट लेकर वह गिरजाघर में आया था वह दूर हो चुकी थी और अब उसके दिमाग़ में अपने अपराध का विचार भी नहीं रहा था। इस संगीत से उसकी आत्मा को शान्ति मिली थी और वह शुद्ध हो गयी थी। इस कल्याणकारी स्थिति के अप्रत्याशित आभास ने उसे चक्कर में डाल दिया था; उसे सहज ही उस पर विश्वास नहीं हो पा रहा था, फिर भी जब उसने अपने हृदय में टटोलकर देखा तो उसमें उसने कोई पश्चाताप नहीं पाया।

अचानक, जैसे कोई सुई चुभ गयी हो, यह विचार उसके मन में उठा :

"अगर मेरे पीछे मकान-मालकिन ने मेरे कमरे में इधर-उधर टटोलकर देखा हो और वह पैसा उसके हाथ लग गया हो तो क्या होगा?"

पलक झपकते ही वह गिरजाघर के बाहर निकल आया और किराये की गाड़ी करके घर की ओर चल दिया। रास्ते में उसकी आशंकाएँ और भी विस्तृत रूप धारण करती गयीं। उसकी उद्विग्नता बहुत बढ़ गयी।

"अगर पैसा उसके हाथ लग गया तो? तो क्या हुआ? वे मेरी शिकायत तो नहीं करेंगे। बस, पैसा अपने पास रख लेंगे..."

यह विचार आते ही कि वे उसकी शिकायत किये बिना ही पैसा रख लेंगे उसकी उद्विग्नता और बढ़ गयी। उसने फ़ैसला किया कि उस हालत में वह सीधा उसी गाड़ी पर पुलिस के थाने में जायेगा और कह देगा कि उसने पोलुएक्तोव का ख़ून किया था। आख़िर वह क्यों यातना सहता रहे और दुविधा में अपनी ज़िन्दगी बिताये जबकि दूसरे लोग इतने भयानक पाप की कीमत चुकाकर हासिल किये गये उसके पैसे के बल पर साफ़-सुथरी, आरामदेह और चिन्ता मुक्त ज़िन्दगी बसर करें? यह विचार आते ही उसका क्रोध निर्ममता की हद तक भड़क उठा। घर पहुँचकर उसने घण्टी को ज़ोर से झटका दिया और अपने होंठ बन्द किये और मुट्ठियाँ भींचे खड़ा दरवाज़ा खुलने का इन्तज़ार करता रहा।

दरवाज़ा तात्याना व्लास्येव्ना ने खोला।

"अरे, कितने ज़ोर से झटका दिया आपने घण्टी को! क्या बात है? क्या कुछ हो गया है?" उसने उसकी सूरत देखकर भयभीत होकर कहा।

इल्या ने एक शब्द भी कहे बिना उसे परे ढकेल दिया और सीधा अपने कमरे में चला गया, लेकिन नज़र डालते ही आश्वस्त हो गया कि उसकी आशंकाएँ निराधार थीं। पैसा खिड़की के ऊपर फ्रेम के पीछे छिपाकर रखा गया था और उसने फ्रेम में एक छोटा-सा पर खोंस दिया था ताकि अगर किसी का हाथ पैसे तक पहुँचे तो वह पर अपनी जगह से गिर जाये। लेकिन पर अपनी जगह मौजूद था, फ्रेम के कत्थई रंग पर एक सफ़ेद धब्बे की तरह।

"कुछ तबीयत ख़राब है?" मकान-मालकिन ने उसके कमरे के दरवाज़े पर आकर कहा।

"तबीयत कुछ ठीक नहीं है। माफ़ कीजियेगा   मैंने अन्दर आते हुए आपको धक्का दे दिया था..."

"अरे, वह कोई बात नहीं है... अच्छा, गाड़ी वाले को कितना देना है आपको?"

"अगर आप इतनी मेहरबानी करें..."

वह दौड़कर बाहर निकल गयी, और उसके जाते ही इल्या उछलकर कुर्सी पर चढ़

गया; पैसे निकालकर उसने अपनी जेब में डाल लिये और सन्तोष की साँस ली। वह अपनी आशंकाओं पर लज्जित था और पर वह उसे अपने आचरण जैसा ही मूर्खतापूर्ण और हास्यास्पद लग रहा था।

मन ही मन अपने आप पर हँसते हुए उसने सोचा, "मैं बौखला गया था!" थोड़ी ही देर में तात्याना व्लास्येव्ना फिर दरवाज़े पर खड़ी थी।

"गाड़ी वाले ने बीस कोपेक लिये," वह जल्दी से बोली। "बात क्या हुई? क्या चक्कर आ गया था?"

"थोड़ा-सा... मैं गिरजाघर में खड़ा था, और अचानक..."

"आप लेट जाइये," वह उसके कमरे में आते हुए बोली। "लेट जाइये, मेरी फिक्र न कीजिये। मैं यहाँ आपके पास बैठ जाऊँगी। मैं अकेली ही हूँ, वह क्लब में ड्यूटी पर हैं..."

इल्या उठकर पलंग पर बैठ गया और वह कमरे की अकेली कुर्सी पर बैठ गयी।

"इतनी तकलीफ़ दे रहा हूँ आपको," इल्या ने खिसियाकर मुस्कराते हुए कहा।

"कोई बात नहीं," वह खुली जिज्ञासा और बेतकल्लुफ़ी से उसके चेहरे को देखते हुए बोली। कुछ देर ख़ामोशी रही। इल्या की समझ में नहीं आ रहा था कि उससे क्या कहे; तात्याना उसे ध्यान से देखते हुए अचानक अजीब ढंग से मुस्कराने लगी।

"क्या बात है?" इल्या ने आँखें झुकाकर पूछा।

"बताऊँ आपको?" उसने शरारत-भरे स्वर में कहा।

"बताइये..."

"आपको बहाना बनाना नहीं आता।"

इल्या चौंक पड़ा और सहमकर उसने एक नज़र उस पर डाली।

"आपको सचमुच नहीं आता। बीमार! आप बिल्कुल बीमार नहीं हैं, बस इतनी बात है कि आपके पास दिल दुखाने वाला खत आया है। मैंने देखा, मैंने देखा है।"

"आप ठीक कहती हैं, मुझे ऐसा खत मिला है..." इल्या ने सतर्क रहकर धीरे से कहा।

बाग़ से डालों की सरसराहट की आवाज़ आयी। तात्याना व्लास्येव्ना ने एक तेज़ नज़र खिड़की के बाहर डाली, और फिर मुड़कर इल्या को देखने लगी।

"कोई नहीं, बस हवा का झोंका है, या कोई चिड़िया होगी। सुनिये, क्या आप समझदार औरत की एक बात सुनेंगे? मैं उम्र में छोटी ज़रूर हूँ, लेकिन मैं नादान नहीं हूँ।"

"मेहरबानी करके बताइये, क्या बात है," इल्या ने दिलचस्पी से उसकी ओर

देखते हुए कहा।

"उस खत को फाड़कर फेंक दीजिये," उसने गम्भीर स्वर में कहा। "अगर उसने आपको ठुकरा दिया, तो उसने वही किया जो हर अच्छी लड़की को करना चाहिए। आपका शादी करने का समय नहीं आया है; अभी तक ज़िन्दगी में आपके पाँव ठीक से जम नहीं पाये हैं, और जब तक ऐसा न हो जाये लोगों को शादी नहीं करनी चाहिए। आप अच्छे ख़ासे तगड़े नौजवान आदमी हैं, मेहनत से काम कर सकते हैं, और देखने में ख़ूबसूरत भी हैं   सारी लड़कियाँ आप पर मर मिटेंगी... लेकिन आप ख़ुद उनके चक्कर में न पड़ियेगा। काम कीजिए, अपना माल बेचिये, कुछ पैसा बचा लीजिये, किसी ऐसे कारोबार में लग जाइये जिसके आगे चलकर पनपने की उम्मीद हो, ख़ुद अपनी दुकान खोल लीजिये, और जब काम चल निकले तब शादी कर लीजियेगा। उससे पहले नहीं। आप ज़रूर कामयाब होंगे। आप शराब पीते नहीं हैं, आपके व्यवहार में सन्तुलन है, आपको किसी का पेट पालना नहीं है।"

इल्या सिर झुकाये सुनता रहा, और मन ही मन हँसता रहा। वह ज़ोर से हँसना चाहता था, मस्त होकर जी खोलकर हँसना चाहता था।

"आपको सिर थामकर बैठने की कोई ज़रूरत नहीं है," तात्याना व्लास्येव्ना उस आदमी के अन्दाज़ से कहती रही जिसे इस दुनिया का बहुत तजुर्बा हो। "सब ठीक हो जायेगा। मुहब्बत ऐसी बीमारी है जो बहुत जल्दी अच्छी हो जाती है। शादी होने से पहले मैं तीन बार मुहब्बत कर चुकी थी, और हर बार इतनी बुरी तरह कि डूब मरने को तैयार रहती थी। लेकिन वह सब आयी-गयी बात हो गयी! और जब मैंने देखा कि मेरा शादी कर लेने का वक़्त आ गया है तो मैंने कोई मुहब्बत किये बिना शादी कर ली... और फिर मुझे मोहब्बत हो गयी   अपने पति से... कभी-कभी ऐसा होता है कि औरत को अपने पति से मुहब्बत हो सकती है..."

"क्या मतलब है आपका?" इल्या ने अपनी आँखें फाड़कर पूछा। तात्याना व्लास्येव्ना खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"मैंने तो बस मज़ाक़ किया है... लेकिन मज़ाक़ छोड़कर भी यह कहती हूँ : औरत अपने पति से मुहब्बत के बिना ही शादी कर सकती है और फिर उससे प्यार करने लग सकती है..."

और आँखें नचाते हुए वह फिर चहकने लगी। उसकी बातें सुनते हुए   बड़े ध्यान से, दिलचस्पी और सम्मान की भावना के साथ सुनते हुए   वह अपनी नज़रें उसके नाज़ुक, सुडौल शरीर पर दौड़ा रहा था। वह कितनी छोटी-सी और लचकदार थी, कितनी समझदार और कितनी भरोसे की। यह है ऐसी बीवी, उसने सोचा, जिसके साथ कभी ज़िन्दगी तबाह नहीं हो सकती। उसके साथ यहाँ बैठकर उसे बहुत अच्छा लग रहा

था, इस सुसंस्कृत औरत के साथ, जो बक़ायदा पत्नी थी   रखैल औरतों जैसी नहीं   साफ़-सुथरी, नाज़ुक-सी, जिसमें शालीन महिलाओं जैसी सारी बातें थीं, लेकिन जो उसके जैसे सीधे-सादे आदमी के सामने रोब नहीं जमाती थी और जो उसको "आप" कहकर सम्बोधित करती थी। इस सब से उसके दिल में अपनी मकान-मालकिन के प्रति बहुत आभार की भावना पैदा हुई थी, और जब वह जाने के लिए उठी तो वह भी उछलकर खड़ा हो गया और बड़े सम्मान से झुककर उससे बोला :

"मुझसे दुराव न बरतने के लिए आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। मुझसे बातचीत करके मुझे तसल्ली दी है आपने..."

"सचमुच? अच्छी बात है!" और यह कहकर वह चुपके से थोड़ा-सा हँस दी। उसके गालों पर लाली दौड़ गयी और कुछ सेकण्ड तक उसकी आँखें इल्या की आँखों पर जमी रहीं।

"अच्छा, फिर मिलेंगे..." उसने कुछ अजीब ढंग से कहा, और फिर मुड़कर बहुत नौजवान लड़की जैसे हल्के क़दमों से बाहर चली गयी...

इल्या दिन-ब-दिन अव्तोनोमोव-दम्पति को ज़्यादा पसन्द करने लगा। वह पुलिसवालों की बहुत बुराईयाँ देख चुका था, लेकिन कीरिक उसे मेहनतकश आदमी लगता था, बहुत समझदार भले ही न रहा हो लेकिन दिल का बहुत नेक। उनके घर में वह शरीर था, उसकी पत्नी आत्मा थी। वह वहाँ बहुत थोड़ा समय बिताता था और घर पर उसकी बात का कोई ख़ास महत्त्व नहीं था। इल्या के साथ अपने सम्बन्धों में तात्याना व्लास्येव्ना ज़्यादा बेतकल्लुफ होती गयी। वह उससे लकड़ी चीर देने का अनुरोध करती, उससे पानी भरवाकर मँगवा लेती और कचड़े की बाल्टी बाहर खाली कर आने को कहती। वह ये सारे काम ख़ुशी-ख़ुशी कर देता; उसे पता भी नहीं चलने पाया और ये काम उसकी जिम्मेदारी समझे जाने लगे। जल्दी ही मकान-मालकिन उस चेचकरू नौकरानी को हफ़्ते में सिर्फ़ एक बार, बस शनिवार के दिन बुलाने लगी।

अव्तोनोमोव-परिवार के यहाँ कभी-कभी मेहमान आते थे। उनमें पुलिस का असिस्टेण्ट चीफ़ कोर्साकोव भी होता था, जो बहुत दुबला-पतला आदमी था और जिसकी मूँछें लम्बी-लम्बी थीं। वह काला चश्मा लगाता था, मोटी-मोटी सिगरेटें पीता था, और उसे गाड़ी वालों से ऐसी चिढ़ थी कि वह आपे से बाहर हुए बिना उनके बारे में बात ही नहीं कर सकता था।

"क़ानून और व्यवस्था को ये गाड़ी वाले जितना तोड़ते हैं, उतना कोई और नहीं," वह कहता था। "पैदल चलने वालों को आप हमेशा क़ानून का पाबन्द रहने के लिए राज़ी कर सकते हैं, लेकिन इन्हें नहीं कर सकते, इन सुअरों को! पैदल चलने वालों

की आवाज़ाही को तो ठीक ढर्रे पर लगाने के लिए बस इतना ही काफ़ी है कि जगह-जगह यह नोटिस चिपकवा दिया जाये कि सड़क पर इधर से जाने वाले दाहिनी ओर चलें और उधर से आने वाले बायीं ओर। लेकिन इन गाड़ीवालों से तो आप कोई क़ायदा-क़ानून मनवा ही नहीं सकते, गाड़ी वाले तो... तो... भगवान ही जाने क्या होता है गाड़ी वाला!"

वह सारी शाम गाड़ी वालों को कोसता रह सकता था; लुन्योव ने कभी उसे और किसी बात के बारे में बोलते ही नहीं सुना था। एक और मेहमान होता था ग्रिज़लोव, जो किसी अनाथालय का सुपरिटेण्डेट था; उसके काली दाढ़ी थी और वह बहुत कम बोलता था। उसे भारी आवाज़ में, 'सागर में, गहरे नीले सागर में' गीत गाने का बहुत शौक़ था। उसकी बीवी, जो बड़े-बड़े दाँतों वाली लम्बे क़द की तगड़ी-सी औरत थी, हमेशा सारी मिठाई खा जाती थी, जिस पर तात्याना व्लास्येव्ना को बहुत ताव आता था।

"वह महज मुझे जलाने के लिए ऐसा करती है!" मेहमानों के विदा हो जाने पर वह कहती।

फिर आने वालों में होते थे : अलेक्सान्द्रा विक्तोरोव्ना त्रावकिना और उसका पति। वह लम्बे क़द की दुबली-पतली लाल बालों वाली औरत थी, और कुछ ऐसे अजीब ढंग से नाक छिनकती थी कि लगता था जैसे कोई चीथड़े फाड़ रहा हो। उसका पति हमेशा फुसफुसाकर बोलता था, क्योंकि उसके गले में कोई खराबी थी। लेकिन वह लगातार बोलता रहता था और लगता था कि वह सूखे भूसे की जुगाली कर रहा है। वह खाता-पीता आदमी था, आबकारी के दफ़्तर में किसी ओहदे पर था और किसी धर्मार्थ संस्था के संचालक मण्डल का सदस्य भी था। वह और उसकी पत्नी हमेशा ग़रीबों की निन्दा करते रहते थे, उन पर आरोप लगाते थे कि वे झूठे होते हैं, लालची होते हैं और जो लोग उनके साथ भलाई करने की कोशिश करते हैं उनकी वे कोई इज़्ज़त नहीं करते।

अपने कमरे में बैठे-बैठे इल्या जीवन के बारे में उनके मत बड़े ध्यान से सुनता रहता। जो कुछ वह सुनता वह उसकी समझ के बाहर था। ऐसा लगता था कि इन लोगों को सबकुछ मालूम था और वे सारी समस्याएँ हल कर चुके थे, और उनके दिल में उन लोगों के लिए जिनकी ज़िन्दगी उनके मापदण्डों की कसौटी पर खरी नहीं उतरती थी, तिरस्कार के अलावा और कुछ नहीं था।

कभी-कभी शाम को अव्तोनोमोव-दम्पति इल्या को भी अपने साथ चाय पीने के लिए बुला लेते थे। तात्याना व्लास्येव्ना ख़ूब हँसती थी और मज़ाक़ करती थी और उसका पति कहता था कि कितना अच्छा हो अगर वह अचानक अमीर हो जाये और

एक घर ख़रीद सके।

"मैं मुर्गियाँ पालता," वह अधमुँदी आँखों से स्वप्न-सा देखता हुआ कहता। "हर तरह की मुर्गियाँ : लाल और काली और चित्तीदार। और पीरू भी। और मोर भी! इससे अच्छा और क्या हो सकता है कि तुम ड्रेसिंग-गाउन पहने मुँह में सिगरेट दबाये खिड़की के पास बैठे बाहर लॉन में खुद अपने मोर को पंखे की तरह अपनी दुम फैलाये इठला-इठलाकर इधर से उधर टहलता हुआ देखते हो पुलिस के चीफ़ की तरह इठलाता हुआ और बड़बड़ाता हुआ : ब्रू, ब्रू, ब्रू!"

तात्याना व्लास्येव्ना धीरे से खी-खी करके हँस देती।

"और मैं," इल्या को कनखियों से देखकर वह भी स्वप्न देखती हुई कहती, "गर्मियों में क्रीमिया और काकेशस जाती और जाड़े में दरिद्र कल्याण समिति की मीटिंग में जाती। और मैं अपने लिए काले रंग की एक ऊनी पोशाक बनवाती, बिल्कुल सीधी-सादी और सपाट, और गहनों के नाम पर मैं सिर्फ़ याक़ूत की एक जड़ाऊ पिन लगाती और कानों में मोती के बुन्दे पहनती। मैंने 'नीवा' पत्रिका में एक कविता पढ़ी थी जिसमें कहा गया था कि ग़रीबों के ख़ून और आँसुओं की बूँदें स्वर्ग में जाकर याकू त और मोती बन जाती हैं।" और हल्की-सी आह भरकर अपनी बात ख़त्म करते हुए वह कहती, "काले बालों पर याक़ूत बहुत फबता है।"

इल्या मुस्करा देता और कुछ भी न कहता। कमरा गरम और साफ़-सुथरा होता था। और उसमें चाय की सुगन्ध बसी होती थी और किसी और चीज़ की भी जो उतनी ही मज़ेदार होती थी। चिड़ियाँ छोटे-छोटे रोएँदार गेंदों की शक्ल में दब-सिकुड़कर पिंजरों में सो चुकी होती थी; दीवारों पर चटकीले रंगों की तस्वीरें लगी होती थीं। दोनों खिड़कियों के बीच रखी हुई शैल्फ़ दवाओं के ख़ूबसूरत डिब्बों, चीनी मिट्टी के चूजों, और शक्कर और काँच के बने हुए रंग-बिरंगे ईस्टर के अण्डों से भरी होती थी। इल्या को यह सब बहुत आकर्षक लगता था, और उसका मन शान्त उदासी से भर उठता था।

लेकिन कभी-कभी, ख़ास तौर पर ऐसे दिन जब उसे कामयाबी नहीं मिलती थी, यह उदासी चिड़चिड़ाहट का रूप धारण कर लेती थी। चूजों, डिब्बों और अण्डों को देखकर उसे इतनी झुँझलाहट होती थी कि अगर वह उन सबको ज़मीन पर फेंककर रौंद पाता तो उसे बहुत ख़ुशी होती। जब उसकी ऐसी मनोदशा होती तो वह चुपचाप बैठा खिड़की के बाहर एकटक देखता रहता; वह कुछ कहते डरता था कि उसकी कोई बात इन नेक लोगों को कहीं ठेस न पहुँचाए। एक बार जब वह उन दोनों के साथ ताश खेल रहा तो उसने कीरिक की आँखों में आँखें डालकर कहा :

"कीरिक निकोदीमोविच, भला उस आदमी का कुछ पता चला जिसने द्वोर्यांस्काया स्ट्रीट में उस सूदख़ोर का गला घोंट दिया था?"

ये शब्द मुँह से निकलते ही उसे अपने सीने में एक सुखद गुदगुदी-सी महसूस हुई।

"तुम्हारा मतलब पोलुएक्तोव से है?" पुलिसवाले ने अपने पत्तों को ध्यान से देखते हुए खोये-खोये स्वर में कहा और फ़ौरन दोहराया :

"तुम्हारा मतलब है पोलुएक्तोव-ओव-ओव-ओव से?.. नहीं, कोई पता नहीं चला पोलुएक्तोव-ओव-ओव-ओव का... मेरा मतलब है, पोलुएक्तोव का नहीं बल्कि उस आदमी का जिसने... हुँह। मैंने उसे खोजा ही नहीं है। मेरी बला से? मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है मुझे तो चाहिए हुकुम की बेगम। हुकुम, हुकुम, हुकुम! अच्छा देखते हैं : तुमने, तात्याना, पहले मुझे तिग्गी दी, फिर फूल की बेगम, फिर ईंट की बेगम, और... और क्या फेंका?"

"ईंट का सत्ता। चलो, जल्दी से फ़ैसला करो..."

"बस ऐसे ही आदमी का सफाया कर दिया!" इल्या ने धीरे से हँसकर कहा।

लेकिन पुलिसवाला अपने पत्तों में इतना डूबा हुआ था कि उसने उसकी ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया।

"बस ऐसे ही," कीरिक ने उसके शब्द दोहराए। "ठिकाने लगा दिया पोलुएक्तोव-ओव-ओव-ओव को..."

"यह मसख़रापन बन्द करो, कीरिक," उसकी पत्नी ने कहा। "नाहक़ खेल रोके बैठे हो..."

"बहुत ही चलता पुर्ज़ा आदमी होगा जिसने उसका ख़ून किया," इल्या अपना ही राग अलापता रहा। उसकी बात की तरफ़ जो उदासीनता बरती जा रही थी उसकी वजह से उस हत्या के बारे में बात करने की उसकी इच्छा और प्रबल हो उठी।

"चलता पुर्ज़ा?" पुलिसवाला शब्दों को खींचकर बोला। "वह नहीं। मैं हूँ चलता पुर्ज़ा। यह लो!" और यह कहकर उसने एक ऐसा पत्ता मेज़ पर पटका जिससे इल्या गुलामचोर फँस गया। कीरिक और उसकी पत्नी ठहाका मारकर हँस पड़े, और इससे इल्या की चिड़चिड़ाहट और बढ़ गयी।

"दिन-दहाड़े शहर की सबसे बड़ी सड़क पर इस तरह किसी का ख़ून कर देने बड़े जिगरे का काम है.." नयी बाजी बाँटते हुए उसने कहा।

"जिगरे का नहीं, तक़दीर का," तात्याना व्लास्येव्ना ने उसकी बात को ठीक करते हुए कहा।

इल्या ने एक नज़र उस पर डाली, फिर उसके पति पर, और धीरे से हँसकर पूछा :

"आप ख़ून करने को तक़दीर की बात कहती हैं?"

"ख़ून करने को नहीं, ख़ून करके बच निकलने को।"

"तुमने यह कमबख़्त ईंट का इक्का फिर मेरे मत्थे मढ़ दिया," पुलिसवाले ने कहा।

"वह मिलना तो मुझे चाहिए था!"* इल्या ने गम्भीर होकर कहा।

"किसी सूदख़ोर का ख़ून कर डालिये तो आपको मिल जायेगा!" तात्याना व्लास्येव्ना ने अपने पत्तों को ध्यान से देखते हुए कहा।

"सूदख़ोर का ख़ून करने से मिलेगा ठेंगा, अभी तो लो यह तुरुप," कीरिक ने इल्या के पत्ते पर तुरुप मारते हुए ठहाका मारकर कहा।

लुन्योव ने उनके खिले हुए चेहरों की ओर फिर देखा और हत्या के बारे में बातें करने की उसकी इच्छा बिल्कुल मर गयी।

इन लोगों की साफ़-सुथरी, सुलझी हुई ज़िन्दगी से बस एक पतली-सी दीवार से अलगाकर रहते हुए उसे जैसे-जैसे ज़्यादा दिन होते जा रहे थे, वैसे-वैसे उस पर उदासी के दौरे भी ज़्यादा जल्दी-जल्दी पड़ने लगे थे। जीवन की असंगतियों के और उस ईश्वर के विचार फिर उसे सताने लगे थे, जो सब कुछ जानते हुए भी दुष्टों को कोई दण्ड नहीं देता था। वह किस बात की राह देखता रहता है?

उदासी के इस वातावरण में वह फिर किताबें पढ़ने लगा था। उसकी मकान-मालकिन के पास 'नीवा' 'सचित्र जगत' पत्रिकाओं की कुछ प्रतियाँ और कुछ पुरानी फटी हुई किताबें थीं।

अपने बचपन की तरह ही इल्या को अब भी उन्हीं किताबों में दिलचस्पी थी जिनमें उसकी अब तक की जानी-पहचानी ज़िन्दगी से बिल्कुल ही दूसरी क़िस्म की ज़िन्दगी बयान की जाती थी। उसे वास्तविकता की कहानियाँ, मामूली लोगों की रोजमर्रा की ज़िन्दगी बयान करने वाली कहानियाँ नीरस और झूठी लगती थीं। कभी-कभी इन्हें पढ़कर उसका मन बहलता था, लेकिन ज़्यादातर वह यही महसूस करता था कि इस तरह की कहानियाँ वे चालाक लेखक लिखते थे जो उस कठिन और भयानक ज़िन्दगी पर, जिसे इल्या इतनी अच्छी तरह जानता था, मुलम्मा चढ़ाकर उसे आकर्षक बनाना चाहते थे। हाँ, वह उस ज़िन्दगी को अच्छी तरह जानता था और लगातार वह उसे और अच्छी तरह जानता जा रहा था। रोज़ सड़क पर चक्कर लगाते हुए उसे ऐसी नयी सामग्री मिलती रहती थी जो उसकी निन्दा की भावना को और बढ़ा देती थी। पावेल से मिलने के लिए अस्पताल जाकर वह उसके साथ अपने नवीनतम अनुभवों के बारे में चर्चा करता था।

"व्यवस्था! आज ही मैंने देखा कि कुछ बढ़ई और पलस्तर करने वाले सड़क की पटरी पर चले जा रहे थे। इतने में एक पुलिसवाला उधर आ निकला और उन्हें देखकर चिल्लाया, 'ऐ, सुअरो! हटो पटरी पर से!' मतलब है जाओ उधर घोड़ों के बीच, नहीं

तो शरीफ लोगों के कपड़े गन्दे करोगे! और यह कहकर उन्हें खदेड़ दिया।"

पावेल भी बौखला उठता और आग को और हवा देता। अस्पताल में वह इतना दुखी था जैसे किसी क़ैदख़ाने में हो। उसकी आँखें क्रोध और व्यथा से दहकती रहती थीं, उसके शरीर का माँस घुलता जा रहा था। याकोव फ़िलिमोनोव उसे अच्छा नहीं लगता था; उसे वह पागल समझता था।

लेकिन याकोव, जिसके बारे में यह पता चला था कि उसे तपेदिक़ थी, अस्पताल में बहुत मज़े में था। उसने अपने बग़ल वाले पलंग के मरीज से दोस्ती कर ली थी, जिसकी एक टाँग काट दी गयी थी। वह किसी गिरजाघर का रखवाला था; वह नाटे क़द का एक मोटा-सा आदमी था, जिसकी गंजी खोपड़ी बहुत बड़ी थी और जिसकी काली दाढ़ी उसके पूरे सीने पर फैली रहती थी। उसकी भवें मूंछों जैसी घनी थीं और वह उन्हें लगातार ऊपर-नीचे हिलाता-डुलाता रहता था। उसकी आवाज़ खोखली थी और आँतों में से निकलती हुई मालूम होती थी। जब भी लुन्योव अस्पताल आता, वह याकोव को गिरजाघर के उस रखवाले के पलंग पर बैठा हुआ पाता।

वह आदमी चुपचाप लेटा अपनी भवें फड़का रहा था और याकोव धीमी आवाज़ में बाइबिल से कुछ पढ़कर उसे सुना रहा था; बाइबिल भी गिरजाघर के रखवाले की तरह ही छोटे आकार की और मोटी-सी थी।

"निश्चय मोआब का आर नगर एक ही रात में बर्बाद कर दिया गया और उसका नाम-निशान तक बाक़ी नहीं रहा; निश्चय मोआब का कीर नगर एक ही रात में बर्बाद कर दिया गया और उसका नाम-निशान तक बाक़ी नहीं रहा।"

याकोव की आवाज़ इतनी कमज़ोर हो गयी थी कि वह लकड़ी पर आरी चलने की आवाज़ जैसी लगती थी। पढ़ते वक़्त उसने अपना बायाँ हाथ इस तरह ऊपर उठाया जैसे वह दूसरे मरीजों को यशायाह की अशुभसूचक भविष्यवाणी सुनने का निमन्त्रण दे रहा हो। उसकी बड़ी-बड़ी स्वप्निल आँखों की वजह से उसका पीला चेहरा डरावना लगने लगा था। इल्या को देखते ही उसने किताब रख दी और अपने दोस्त से बड़ी परेशानी से वही पुराना सवाल पूछा :

"माशा से मिले?"

इल्या नहीं मिला था।

"हे भगवान, हे भगवान," याकोव बहुत उदास होकर कराहते हुए बोला। "जैसा कहानियों में होता है : अचानक चली गयी, कोई दुष्ट चुड़ैल उसे उठा ले गयी।"

"तुम्हारा बाप तुम्हें देखने आया था?"

याकोव की मुद्रा अचानक बदल गयी और वह सहमकर अपनी पलकें झपकाने लगा।

"आया था। उसने मुझसे कहा कि तुम यहाँ बहुत दिन पड़े-पड़े आराम कर चुके हो, अब घर लौट जाने का वक़्त आ गया है। मैंने डॉक्टर की बहुत ख़ुशामद की कि मुझे किसी तरह यहीं रहने दे... यहाँ कितना अच्छा है   कितनी शान्ति है, कितना चैन है... यह है निकीता येगोरोविच   यह और मैं मिलकर बाइबिल पढ़ते रहते हैं। यह सात साल से बाइबिल पढ़ता रहा है   हर चीज़ ज़बानी याद है इसे और यह बता सकता है कि हर भविष्यवाणी का क्या मतलब है। जब मैं अच्छा हो जाऊँगा तो अपने बाप को छोड़ दूँगा और जाकर निकीता येगोरोविच के साथ रहने लगूँगा। गिरजाघर में इसकी मदद किया करूँगा और गायक-मण्डली में गाया करूँगा..."

गिरजाघर के रखवाले ने धीरे-धीरे अपनी भवें ऊपर उठायीं; उनके नीचे उसकी गोल-गोल काली आँखें अपने गहरे कोटरों में बड़ी मुश्किल से हिल-डुल पाती थीं। उनमें कोई चमक नहीं थी। वे शान्त निश्चल भाव से इल्या पर जमी हुई थीं।

"कमाल की किताब है यह बाइबिल भी!" याकोव खाँसते-खाँसते ज़ोर से चिल्लाया। "और हमें वह बात भी मिल गयी   याद है उस विद्वान आदमी ने, जो शराबख़ाने में आया था, क्या कहा था? 'डाकुओं के डेरों में ख़ुशहाली रहती है...' किताब में है यह। मुझे मिल गया! और इससे भी बुरी-बुरी बातें कही गयी हैं!"

अपनी आँखें बन्द करके और हाथ उठाकर उसने गम्भीर स्वर में पढ़ना शुरू किया :

"'कितनी बार दुष्टों का दीपक बुझ जाता है, और उन पर विपत्ति आ पड़ती है, और ईश्वर क्रोध करके उनके हिस्से में शोक देता है?' सुना यह? और सुनो : 'तुम कहते हो, ईश्वर उसके अन्याय का फल उसकी सन्तान को देता है। उसे अपने किये का फल स्वयं भोगने दो, ताकि उसे पता चले।'"

"क्या सचमुच यही कहा गया है?" इल्या ने सन्देह करते हुए पूछा।

"एक-एक शब्द यही है!"

"मुझे तो ऐसा लगता है कि... कि यह ठीक नहीं है। यह पाप है!" इल्या ने कहा।

गिरजाघर के रखवाले ने अपनी भवें अपनी आँखों पर झुका लीं और उसकी दाढ़ी हिलने लगी।

"सत्य की खोज करने वाले के साहसपूर्ण कर्म कभी पापमय नहीं होते," उसने अजीब-से खोखले स्वर में कहा, "क्योंकि वे सर्वोच्च शक्ति की प्रेरणा पर किये जाते हैं।"

इल्या चौंक पड़ा। गिरजाघर के रखवाले ने गहरी साँस ली और उसी मन्द स्वर में शब्दों का साफ़-साफ़ उच्चारण करते हुए कहता गया :

"सत्य आदमी को प्रेरित करता है कि वह उसे खोजे! क्योंकि सत्य ईश्वर है! और कहा गया है, 'प्रभु के आदेश का पालन करना बड़े सम्मान की बात है।'"

गिरजाघर के रखवाले का दाढ़ी वाला चेहरा देखकर इल्या के मन में श्रद्धा और विनम्रता जागृत हो रही थी : उस चेहरे में कोई कठोर, महत्त्वपूर्ण चीज़ थी।

अब उसकी भवें ऊपर तनी हुई थीं, नज़रें छत पर जमी हुई थीं और दाढ़ी हिल रही थी।

"इसे जॉब की पुस्तक दसवें अध्याय के शुरू से पढ़कर सुनाओ, याकोव," वह बोला।

कुछ कहे बिना याकोव पन्ने पलटने लगा और कोमल, काँपते हुए स्वर में पढ़ने लगा :

"'मेरी आत्मा मेरे जीवन से उकता चुकी है; मैं खुलकर शिकायत करूँगा; मैं अपनी आत्मा की सारी कटुता के साथ बोलूँगा। मैं ईश्वर से कहूँगा, मेरी निन्दा न कर; मुझे बता कि मुझसे तेरा क्या झगड़ा है। क्या तुझे यह शोभा देता है कि तू किसी का उत्पीड़न करे, कि तू अपने ही हाथों की बनायी हुई चीज़ से घृणा करे?...'"

इल्या ने आगे झुककर पन्ने की एक झलक देखने की कोशिश की।

"क्या तुम्हें इस पर विश्वास नहीं आता?" याकोव बोला। "तुम भी अजीब आदमी हो!"

"अजीब नहीं, बल्कि बुजदिल," गिरजाघर के रखवाले ने शान्त भाव से कहा।

बड़ी कोशिश से वह अपनी निस्तेज दृष्टि छत पर से हटाकर इल्या के चेहरे तक लाया और भारी-भरकम अन्दाज़ में प्रवचन करने लगा, मानो इल्या को अपने शब्दों से कुचलकर रख देना चाहता हो :

"तुमने जो बातें सुनी हैं उनसे भी सख़्त बातें कही गयी हैं। बाईसवें अध्याय का तीसरा अनुवाक्य ले लो : उसमें साफ़-साफ़ कहा गया है : 'क्या सर्वशक्तिमान को इससे कोई ख़ुशी होती है कि तुम सदाचारी हो? या इसमें उसका कोई फ़ायदा है कि तुम निष्कलंक आचरण को अपनाते हो?' इस तरह के कथनों का ग़लत अर्थ लगाने से बचने के लिए बहुत ज़्यादा समझ-बूझ की ज़रूरत होती है।"

"क्या आप इन सारी बातों को समझते हैं?" इल्या ने संकोच से पूछा।

"यह?" याकोव चिल्लाकर बोला। "अरे, निकीता येगोरोविच सब कुछ समझता है!"

लेकिन गिरजाघर के रखवाले ने और धीमे स्वर में कहा :

"अब मेरे लिए इसे समझने की कोशिश करने का वक़्त बहुत पहले निकल चुका

है... मुझे तो अब मौत को समझना है... मेरी एक टाँग तो काट दी गयी है, लेकिन सूजन और ऊपर तक पहुँच गयी है... और दूसरी टाँग भी सूजने लगी है... और मेरा सीना भी... मैं बहुत जल्दी मर जाऊँगा।" वह इल्या के चेहरे पर नज़रें जमाये धीरे-धीरे और शान्त भाव से कहता रहा, "और मरने की मेरी कोई इच्छा नहीं है, क्योंकि मेरी ज़िन्दगी बहुत कठिनाइयों में गुजरी है, कभी कोई सुख नहीं मिला पीड़ा और अपमान के अलावा कुछ भी नहीं। अपनी जवानी में मैं याकोव की तरह रहता था अपने बाप के शिकंजे में। वह बला का शराबी और बिल्कुल दरिन्दा था। तीन बार उसने मेरी खोपड़ी तोड़ दी और एक बार उसने मेरी टाँग खौलते पानी से झुलस दी। मेरी माँ नहीं थी : मेरे पैदा होते ही वह मर गयी थी। मेरी शादी हुई। मेरी बीवी मुझसे प्यार नहीं करती थी उसे मुझसे शादी करने के लिए मजबूर किया गया था। हमारी शादी के बाद तीसरे दिन उसने फाँसी लगा ली। मेरा एक बहनोई था। उसने मुझे ख़ूब लूटा। मेरी बहन ने कहा कि मेरी वजह से मेरी बीवी फाँसी लगाकर मर गयी। बाक़ी सारे लोग भी यही कहते थे, हालाँकि वे अच्छी तरह जानते थे कि मैंने उसे कभी हाथ तक नहीं लगाया था और वह वैसी ही अछूती मर गयी जैसी वह मेरे पास आयी थी। उसके बाद मैं नौ साल जिया हूँ। अकेले रहना भी बड़ी भयानक बात है!... मैं राह देखता रहा कि मुझे कोई सुख तो मिले। और अब यह है मेरी हालत मरने को पड़ा हूँ यहाँ। यह है मेरी सारी कहानी!"

उसने अपनी आँखें मूँद लीं और कुछ देर चुप रहा। फिर उसने पूछा :

"मैं किसलिये जिया हूँ?"

उसकी निराशा-भरी बातें सुनते हुए इल्या के हृदय को भय ने आ दबोचा। याकोव का चेहरा उतर गया और उसकी आँखों में आँसू झलकने लगे।

"मैं किसलिये जिया हूँ, मैं तुमसे पूछता हूँ? मैं यहाँ लेटे-लेटे रोज़ अपने आपसे यही सवाल पूछता हूँ मैं किसलिये जिया हूँ?"

उसने बोलना बन्द कर दिया। उसकी आवाज़ अचानक वैसे ही डूब गयी जैसे कलकल ध्वनि से बहती हुई जल-धारा अचानक भूगर्भ में जाकर खो जाती है।

एक मिनट बाद उसने अपनी आँखें खोलीं और फिर कहने लगा :

"'क्योंकि उसके लिए, जो ज़िन्दा है, उम्मीद बाक़ी है : क्योंकि ज़िन्दा कुत्ता मरे हुए शेर से बेहतर है।'" उसकी दाढ़ी फिर हिलने लगी। "उसी एक्लिज़ियास्टीस की पुस्तक के एक अध्याय में लिखा है : 'सौभाग्य के दिनों में ख़ुश रहो, और जब विपत्ति का दिन आये तो विचार करो : ईश्वर ने एक को दूसरे के साथ ही बनाया है, इस उद्देश्य से कि मनुष्य उसके ख़िलाफ़ कुछ न कह सके।'"

इल्या का मन भर चुका था। वह चुपके से उठा, याकोव से हाथ मिलाया, और

गिरजाघर के रखवाले की ओर झुककर उससे विदा ली। बिल्कुल अनजाने ही वह उसके सामने इस तरह बहुत ज़्यादा झुका था जैसे मरे हुए आदमी से विदा लेते समय झुका जाता है।

जब वह अस्पताल से निकला तो उसके दिल के बोझ पर एक और बोझ लद गया था। इस आदमी को वह बहुत समय तक नहीं भुला सका। उसके साथ मुलाकात होने के बाद उन लोगों की लम्बी सूची में एक और नाम जुड़ गया जिन्हें ज़िन्दगी ने धोखा दिया था। उसे उस आदमी की कही हुई बातें अच्छी तरह याद रहीं और उनके अर्थ की थाह पाने की कोशिश में वह उन्हें अपने दिमाग़ में उलट-पुलटकर हर पहलू से देखता रहता। वे उसे विचलित कर देती थीं क्योंकि वे उसकी आत्मा की उन गहराइयों को छू लेती थीं जहाँ ईश्वर के न्याय में उसकी आस्था का वास था।

उसने महसूस किया कि किसी समय, बिल्कुल अनजाने ही, ईश्वर के न्याय में उसकी यह आस्था डिग गयी थी। अब वह वैसी अडिग नहीं थी जैसी वह कभी हुआ करती थी। कोई चीज़ उसे धीरे-धीरे खा गयी थी, जैसे ज़ंग लोहे को खा जाता है। उसके अन्दर दो शक्तियों के बीच द्वन्द्व चल रहा था   दो ऐसी शक्तियाँ जो आग और पानी की तरह बेमेल थीं। और उसने अपने अतीत के ख़िलाफ़, सभी लोगों के ख़िलाफ़ और उस दुनिया के ख़िलाफ़, जिसकी व्यवस्था को वह स्वीकार नहीं कर सकता था, झुँझलाहट की एक नयी लहर चढ़ती हुई महससूस की।

इसी बीच उसके प्रति अव्तोनोमोव-दम्पति का लगाव बढ़ता जा रहा था। समय-समय पर कीरिक उसके कन्धे पर सरपरस्ती के अन्दाज़ से धप मारते हुए मज़ाक़ उड़ाता और रोब के साथ कहता :

“तुम अपना वक़्त खराब कर रहे हो, नौजवान! तुम्हारे जैसे विनम्र और गम्भीर आदमी को तो कोई बड़ा काम करना चाहिए। यह अच्छी बात नहीं है कि अगर किसी आदमी में पुलिस का सबसे बड़ा हाकिम बनने लायक़ अक़्ल हो तो वह मामूली पुलिसवाला बना रहे।”

तात्याना व्लास्येव्ना विस्तार से उसके कारोबार के बारे में पूछने लगी   हर महीने वह कितने का माल बेचता था और खर्चा निकालकर कितना मुनाफ़ा कमाता था। वह ख़ुशी-ख़ुशी उसे सब कुछ बता देता : दिन-ब-दिन उसके दिल में इस औरत की इज़्ज़त बढ़ती जाती थी, जो इतने कम साधनों से ज़िन्दगी को इतना साफ़-सुथरा और आकर्षक बना सकती थी।

एक दिन शाम को वह अपने कमरे में खुली खिड़की के पास बैठा निराश भाव से, ओलिम्पियादा के विचारों में डूबा हुआ, बाहर अँधेरे बाग़ को घूर रहा था। तात्याना व्लास्येव्ना रसोई में आयी और उसे अपने साथ चाय पीने के लिए बुलाया। वह

अनमनेपन से चला गया : उसे अपने विचारों का क्रम भंग होने का खेद था और बातें करने को उसका जी नहीं चाह रहा था। उदास भाव से वह चुपचाप चाय की मेज़ पर जाकर बैठ गया। इसके विपरीत, उसके मेजबान बहुत जोश में थे, जैसा कि उनके चेहरों पर एक सरसरी-सी नज़र डालने से ही उसे पता चल गया। समोवार से सनसनाहट की सुखद आवाज़ आ रही थी; एक चिड़िया जाग गयी थी और अपने पिंजरे में फुदक रही थी; कमरे में भुने हुए प्याज़ और ओडिकोलोन की ख़ुशबू बसी हुई थी। कीरिक अपनी कुर्सी पर घूमकर थोड़ा-सा तिरछा बैठ गया और चाय की ट्रे को उँगलियों से बजाकर गाने लगा :

"बूम, बूम, बूमिटी बूम! बूम, बूम..."

"इल्या याकोव्लेविच!" तात्याना ने गम्भीर होकर कहा, "मेरे पति के और मेरे पास एक ऐसा विचार है जिस पर हमने बहुत ग़ौर किया है और हम उसके बारे में आपसे संजीदगी से बात करना चाहते हैं..."

"हो, हो, हो!" पुलिसवाला अपने लाल-लाल हाथों को ज़ोर से आपस में रगड़ते हुए ठहाका मारकर हँसा। इल्या चौंक पड़ा और आश्चर्य से उसे देखने लगा।

"'मेरे पति के और मेरे पास,'" कीरिक ने खीसें निकालकर इन शब्दों को दोहराया; फिर अपनी बीवी की ओर आँख मारते हुए कहा, "इसने भी कैसा शानदार दिमाग़ पाया है!"

"हम लोगों ने थोड़ा-सा पैसा बचाया है, इल्या योकोव्लेविच।"

"'हम लोगों ने बचाया है!' हो, हो! वाह, मेरी जान!"

"चुप रहो!" तात्याना व्लास्योव्ना ने सख़्ती से कहा, और उसने ऐसी कठोर मुद्रा धारण कर ली कि उसका नाक-नक्शा और तीखा दिखायी देने लगा।

"हम लोगों ने कोई एक हज़ार रूबल बचाये हैं," उसने धीमे स्वर में कहा, और इल्या की ओर झुककर अपनी पैनी आँखों से उसकी आँखों की थाह लेने लगी। "यह रक़म बैंक में है और उस पर हमें चार फीसदी सूद मिलता है।"

"और वह काफ़ी नहीं है," कीरिक ने मेज़ पर ज़ोर से हाथ मारते हुए चिल्लाकर कहा। "हम लोग..."

उसकी बीवी ने घूरकर उसे चुप कर दिया।

"हमारे लिए इतना बिल्कुल काफ़ी तो है, लेकिन हम लोग आपको अपने पाँवों पर खड़े होने में आपकी मदद करना चाहते हैं..."

मुख्य विषय से हटकर इल्या की प्रशंसा में कुछ बातें कहने के बाद उसने अपनी बात जारी रखी :

"एक बार आपने कहा था कि बिसातख़ाने के कारोबार में लगायी गयी पूँजी पर

बीस फीसदी तक पैसा मिल सकता है या इससे भी ज़्यादा, शर्त सिर्फ़ यह है कि कारोबार किस तरह चलाया जाता है। तो हम लोग पुरनोट पर अपनी यह रक़म आपको उधार देने को तैयार हैं जो उस वक़्त वापस करनी होगी जब हम पुरनोट के भुगतान की माँग करें, वरना नहीं ताकि आप दुकान खोल सकें। आप मेरे इन्तजाम में दुकान चलायेंगे और हम लोग मुनाफ़ा आधा-आधा बाँट लेंगे। आपको अपने सारे माल का बीमा मेरे नाम से कराना होगा, और आपको एक और काग़ज़ पर दस्तख़त करने होंगे बस, एक मामूली-से काग़ज़ पर, लेकिन जो क़ानून की नज़र से ज़रूरी है। सोच लीजिये और हमें बता दीजिये कि यह आपको मंज़ूर है कि नहीं।"

उसकी ऊँची कारोबारी आवाज़ सुनते हुए इल्या अपना माथा बड़े ज़ोर से रगड़ता जा रहा था। उसके बोलने के दौरान एक-दो बार उसने एक नज़र उस कोने की ओर भी डाली जहाँ दो जलती हुई मोमबत्तियों के बीच देव-प्रतिमा की सुनहरी सजावट जगमगा रही थी। उसे हैरत कम हो रही थी, बेचैनी ज़्यादा; वह लगभग डर-सा गया था। उसके चिरपोषित स्वप्न को साकार कर देने वाले इस सुझाव को सुनकर वह स्तब्ध रह गया था। लेकिन उसे ख़ुशी भी हो रही थी। घबरायी हुई मुस्कराहट के साथ वह उस छोटी-सी औरत को एकटक देखता रहा और मन ही मन सोचता रहा : तो यह निकली मेरा उद्धार करने वाली परी।

वह माँ जैसे अन्दाज़ में उससे बातें करती रही :

"इसके बारे में अच्छी तरह सोच लीजिए; हर पहलू से सोच-विचार कर लीजिए। क्या आप ऐसा क़दम उठाने को तैयार हैं? क्या आपके अन्दर उसके लायक़ सूझ-बूझ है? इसकी योग्यता है? और हमें यह भी बताइये कि आप अपनी मेहनत के अलावा इस कारोबार में और क्या लगा सकते हैं। बहरहाल, हमारा पैसा तो काफ़ी नहीं होगा, क्यों है न?"

"मैं कोई एक हज़ार और लगा सकता हूँ उसमें," इल्या ने धीरे से कहा। "मेरा चाचा मुझे दे देगा... हो सकता है ज़्यादा भी दे दे..."

"वह मारा!" कीरिक अव्तोनोमोव ज़ोर से चिल्लाया।

"तो आप राज़ी हैं?" तात्याना व्लास्येव्ना ने पूछा।

"इसमें भी कोई पूछने की बात है, बिल्कुल राज़ी है वह!" पुलिसवाले ने चिल्लाकर कहा; फिर अपना हाथ जेब में डालकर जोश में आकर ऊँची आवाज़ में बोला, "और अब हम शैम्पेन की बोतल खोलकर इसका जशन मनायेंगे। शैम्पेन चाहिए! भागकर नुकक्ड़ तक चले तो जाओ, इल्या, और एक बोतल तो ले आओ। मेरी तरफ़ से! दोन मार्का कहना, नब्बे कोपेक की बोतल मिलेगी। उससे कहना कि मैंने मँगायी है तो पैंसठ में ही दे देगा। भाग के जाना, बच्चू!"

इल्या पति-पत्नी के खिले हुए चेहरों को देखकर मुस्करा दिया और बाहर चला गया।

वह सोचने लगा, तक़दीर ने मुझे तोड़-मरोड़कर रख दिया है, मुझे भयानक पाप के मार्ग पर लगाया है, मेरा दिल तोड़ा है और मेरी आत्मा को छिन्न-भिन्न कर दिया है, और अब, मानो माफ़ी माँगने के लिए, वह मुझ पर मुस्करा रही है और मुझे मेरा मौक़ा दे रही है... अब मेरे सामने साफ़-सुथरी और भलेमानसों जैसी ज़िन्दगी बिताने के लिए रास्ता साफ़ है; मैं अब अकेला रह सकूँगा और अपनी आत्मा को शान्ति पहुँचा सकूँगा। उसके विचार मस्ती-भरे गीत की तरह झूम रहे थे, नाच रहे थे और अपनी ज़िन्दगी में पहली बार उसके दिल में विश्वास की भावना उभर रही थी।

वह असली शैम्पेन की एक बोतल लेकर लौटा जिसके लिए उसने सात रूबल चुकाये थे।

"ओहो!" कीरिक ख़ुश होकर चिल्लाया। "यह तो ठाठ हो गये! बहुत सही खयाल है यह!"

तात्याना व्लास्येव्ना ने इस मामले को दूसरी नज़र से देखा। उसने इस बात को नापसन्द करते हुए सिर हिलाया और बोतल को अच्छी तरह देखभाल लेने के बाद बोली :

"इसमें तो पूरे पाँच रूबल खर्च हो गये होंगे... कैसी फजूलखर्ची है!"

इल्या बहुत ख़ुश था और खड़ा कृतज्ञता के भाव से उसे देखकर मुस्करा रहा था।

"असली माल है!" वह ख़ुश होकर चिल्लाया। "मैंने कभी असली शैम्पेन चखी नहीं है! लेकिन मेरी ज़िन्दगी भी तो किस क़िस्म की रही है! बिल्कुल सड़ी हुई ज़िन्दगी... गन्दी, पाशविक, जिसमें साँस लेने की भी गुंजाइश नहीं थी। हमेशा मेरी भावनाओं को ठेस ही पहुँचायी गयी है। यह भी कोई ज़िन्दगी है?" उसने अपनी आत्मा के दुखते हुए घाव को छू दिया था और अब उसे कुरेदे बिना नहीं रह सकता था। "जब तक की मुझे याद है, मैं हमेशा किसी असली चीज़ की तलाश में रहा हूँ, लेकिन ज़िन्दगी मुझे नदी में बहते हुए तिनके की तरह इधर से उधर ढकेलती रही है, और मेरे चारों ओर हमेशा अँधेरा, गन्दगी और गड़बड़ी ही रही है। कोई भी तो चीज़ ऐसी नहीं थी जिसका मैं सहारा ले सकूँ। और फिर अचानक पानी के एक रेले के साथ मैं आपके पास किनारे आ लगा। ज़िन्दगी में पहली बार मैंने किसी को साफ़-सुथरे ढंग से, शान्ति के साथ और एक-दूसरे को प्यार करते हुए अपनी ज़िन्दगी बिताते देखा।"

खिली हुई मुस्कराहट के साथ उनकी ओर देखकर वह आभार प्रकट करने के लिए झुका।

"आप लोगों का शुक्रिया। आपने मेरे दिल पर से बहुत बड़ा बोझ हटा लिया

है, इतना तो यक़ीनन किया है आपने! आपने बाक़ी सारी ज़िन्दगी के लिए मुझे सहारा दे दिया है! अब मैं इस दुनिया में अपने लिए रास्ता बना सकूँगा! अब मुझे मालूम है कि मुझे किस तरह रहना चाहिए!"

तात्याना व्लास्येव्ना उसे इस तरह देखती रही जैसे बिल्ली किसी चिड़िया के गाने पर रीझकर उसे देखती है। उसकी आँखों में हल्की-सी हरी रोशनी चमक रही थी; उसके होंठ काँपने लगे। कीरिक बोतल को अपने घुटनों में दबाये उस पर झुका हुआ था। उसकी गर्दन लाल हो गयी थी और उसके कान फड़क रहे थे।

बोतल की डाट ज़ोर की आवाज़ करती हुई उड़ी, छत से जाकर टकरायी और वापस मेज़ पर आ गिरी; उसके टकराने से काँच के छनकने की आवाज़ पैदा हुई।

कीरिक होंठों से चटखारा लेकर शराब उड़ेलने लगा।

"पी जाओ!" उसने आदेश दिया।

जब इल्या और तात्याना ने अपने गिलास उठाये तो कीरिक अपना गिलास सिर के ऊपर ऊँचा उठाकर ज़ोर से चिल्लाया :

"तात्याना अव्तोमोनोव और इल्या लुन्योव के कारोबार की कामयाबी के नाम! हुर्रा!"

कई दिन तो लुन्योव और तात्याना व्लास्येव्ना अपने नये कारोबार की योजनाओं के बारे में चर्चा करते रहे। उसे बहुत जानकारी मालूम होती थी और वह ऐसे बात करती थी जैसे ज़िन्दगी भर बिसातख़ाना चलाती रही हो। इल्या मुस्कराते हुए उसकी बातें सुनता रहता; वह इतना विभोर हो गया था कि ख़ुद ज़्यादा कुछ नहीं कह पाता था। कारोबार शुरू कर देने के लिए वह इतना उतावला हो रहा था कि तात्याना के हर सुझाव को, उसे सचमुच समझे बिना ही, मान लेता था।

पता यह चला कि तात्याना व्लास्येव्ना ने दुकान के लिए मुनासिब जगह भी देख रखी थी। वह जगह बिल्कुल वैसी ही थी, जैसी कि इल्या कल्पना करता रहता था : साफ़-सुथरी सड़क पर छोटी-सी दुकान जिसके पिछले हिस्से में एक कमरा था। सब कुछ बिल्कुल ठीक-ठाक चल रहा था छोटी से छोटी बात तक सब कुछ और इल्या ख़ुशी के मारे फूला नहीं समा रहा था।

ख़ुशी और जोश के इस आलम में वह अपने दोस्तों से मिलने अस्पताल गया। वहाँ पावेल से उसकी मुलाकात हुई; वह भी बहुत ख़ुश था।

"मैं कल घर जा रहा हूँ," उसने सलाम करने की फिक्र किये बिना ही ऐलान किया। "वेरा का खत आया है। वह मुझसे नाराज़ है..."

उसकी आँखें चमक रही थीं, उसके गालों पर लाली छा गयी थी, वह भावावेश

से बेक़ाबू होकर अपने पाँव ज़मीन पर रगड़ रहा था और अपने हाथ हवा में हिला रहा था।

"ज़रा सँभल के," इल्या ने उससे कहा। "देखना, फिर न फँस जाना कहीं!"

"उसका कोई डर नहीं है। सवाल बस एक है : मादाम वेरा शादी करना चाहती हैं कि नहीं? अगर करना चाहती हैं, तो अच्छी बात है; अगर नहीं करना चाहतीं, तो मैं छुरा भोंक दूँगा।" उसके चेहरे पर और सारे शरीर में हल्की-सी सिहरन दौड़ गयी।

"तुम भी ख़ूब हो!" इल्या ने मुस्कराते हुए कहा।

"मैं सच कहता हूँ! मैंने बहुत बर्दाश्त किया! मैं उसके बिना रह नहीं सकता। वह मुझे काफ़ी नुक़सान पहुँचा चुकी है। वह भी तंग आ चुकी होगी। बहरहाल, मैं तो आ ही चुका हूँ। कल फ़ैसला हो जायेगा इस पार या उस पार।"

उसे देखकर इल्या के दिमाग़ में एक विचार बिजली की तरह कौंध गया, बिल्कुल साफ़ और सीधा-सादा विचार। उसका चेहरा लाल हो गया और वह मुस्करा पड़ा।

"पावेल," उसने कहा, "मेरी तक़दीर चमक उठी है!"

और उसने जो कुछ हुआ था वह संक्षेप में बता दिया।

"तुम हो मुक़द्दर के सिकन्दर," उसकी बात पूरी होने पर पावेल ने आह भरकर कहा।

"ऐसा सिकन्दर कि तुम्हारे सामने शर्म आती है। सचमुच। मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ।"

"कम से कम इसके लिए तुम्हारा शुक्रिया," पावेल ने व्यंग्य से कहा।

"मैं सिर्फ़ दिखावे के लिए ऐसा नहीं कह रहा हूँ," इल्या ने धीरे से कहा। "सच बात है मुझे शर्म आती है..."

पावेल एक क्षण चुपचाप उसे देखता रहा, फिर विचारमग्न होकर उसने सिर झुका लिया।

"मैं," इल्या बोला, "यह कहना चाहता था कि हमने बदनसीबी के दिन साथ-साथ झेले हैं, अच्छे दिन भी आपस में मिल-बाँटकर बितायें।"

"हुँ," पावेल अस्पष्ट स्वर में बोला। "मैंने तो सुना है कि ख़ुशनसीबी औरत की तरह होती है उसमें कोई साझा नहीं हो सकता।"

"अरे, सब हो सकता है!" इल्या बोला। "तुम पता लगाओ कि प्लम्बर की दुकान खोलने के लिए क्या-क्या चाहिए कौन-से औजार और क्या सामान और बाक़ी सब ताम-झाम और उसकी लागत कितनी होगी, और मैं तुम्हें पैसे दिये देता हूँ..."

"क्या-आ!" पावेल ने अविश्वास से कहा। इल्या ने भावावेश में आकर उसका हाथ पकड़ लिया और ज़ोर से दबा दिया।

"गदहे कहीं के! मैं दे दूँगा, सच कहता हूँ!"

लेकिन पावेल को इस बात का यक़ीन दिलाने के लिए इल्या को उसे बहुत देर तक समझाना-बुझाना पड़ा। पावेल बस अपना सिर हिलाता रहा और कहता रहा :

"ऐसी चीज़ें होती नहीं..."

जब आख़िरकार इल्या ने उसे यक़ीन दिला दिया, तो उसके दोस्त ने उसे अपनी बाँहों में लिपटा लिया और काँपते हुए खोखले स्वर में बोला :

"बहुत-बहुत शुक्रिया, यार। तुमने मुझे बहुत बड़ी मुसीबत से उबार लिया। लेकिन सुनो : मैं प्लम्बर की दुकान नहीं खोलना चाहता   भाड़ में जायें ये दुकानें! उनसे कुछ नहीं होने का... लेकिन तुम मुझे पैसा दे दो, मैं वेरा को लेकर कहीं चला जाऊँगा। मैं इसे तुम्हारे लिए भी बेहतर समझता हूँ कि मैं कम पैसा तुमसे लूँ। और मेरे लिए भी इसी में अधिक सुविधा है। हम लोग किसी दूसरे शहर में चले जायेंगे और मैं किसी और की प्लम्बर की दुकान में काम करने लगूँगा।"

"बकवास है यह," इल्या बोला। "मालिक ख़ुद होना कहीं अच्छा है।"

"अच्छा मालिक बनूँगा मैं भी," पावेल ने चहककर कहा। "अरे, नहीं, मालिक-वालिक बनना मेरे बस का रोग नहीं है... गीदड़ को शेर की खाल उढ़ा देने से वह शेर तो नहीं बन जायेगा..."

पावेल का यह रवैया लुन्योव की समझ में नहीं आया, फिर भी उसमें कोई बात ऐसी थी जो उसे अच्छी लगी।

"यह सच है; तुम लगते भी हो बिल्कुल गीदड़   वैसे ही दुबले-पतले," उसने मज़ाक़ करते हुए बड़े प्यार से कहा। "जानते हो तुम किसके जैसे लगते हो? पेर्फ़ीश्का मोची जैसे। सचमुच! तो कल आकर मुझसे कुछ पैसे ले जाना ताकि कोई नौकरी मिलने तक तुम्हारी गाड़ी चलती रहे... अब मैं याकोव से मिल आऊँ.... तुम्हारी और याकोव की कैसी निभती है?"

"बस ऐसी ही... न जाने क्यों, कुछ बात बनती नहीं!..." पावेल ने मुस्कराकर कहा।

"वह बड़ा अभागा है..." इल्या ने कुछ सोचते हुए कहा।

"कमोबेश हम सभी एक जैसे ही हैं!..." पावेल ने अपने कन्धे बिचकाकर कहा। "मुझे तो ऐसा लगता है कि उसके होश-हवास पूरी तरह ठीक नहीं रहते... कुछ बुद्धू-सा है..."

जब इल्या चल दिया तो पावेल ने पीछे से पुकारकर कहा :

"बहुत-बहुत शुक्रिया, यार!"

इल्या ने मुस्कराकर उसकी ओर सिर हिला दिया।

याकोव को उसने बिल्कुल निढाल और घोर निराशा में डूबा हुआ पाया। वह पीठ के बल लेटा अपनी आँखें फाड़े छत को तक रहा था और उसने इल्या के आने की आहट तक नहीं सुनी थी।

"निकीता येगोरोविच दूसरे वार्ड में भेज दिया गया है," वह बोला।

"अच्छा हुआ!" इल्या ने सन्तोष प्रकट करते हुए कहा। "वह तो बहुत डरावना है..."

याकोव ने खाँसते हुए उसे झिड़की-भरी दृष्टि से देखा।

"तबीयत कुछ बेहतर है?"

"हाँ," याकोव ने आह भरकर कहा। "मैं तो जब तक मेरा जी चाहे, बीमार भी नहीं रह सकता। कल रात मेरा बाप फिर आया था। कहता था कि उसने एक और मकान ख़रीद लिया है। एक और शराबख़ाना खोलना चाहता है। और यह सब मेरे मत्थे मढ़ा जायेगा।"

इल्या अपने दोस्त को ख़ुशख़बरी सुना देना चाहता था, लेकिन अब वह ऐसा नहीं कर सकता था।

खिड़की में से वसन्त का मुस्कराता हुआ सूरज झाँक रहा था, लेकिन उसकी वजह से अस्पताल की पीली दीवारें और भी पीली लगने लगी थीं और पलस्तर के धब्बे और दरारें उभरकर दिखायी देने लगी थीं। दो मरीज पलंग पर बैठे ताश खेल रहे थे, और कुछ बोले बिना पत्ते फेंक रहे थे। एक दुबला-पतला लम्बा-सा आदमी पट्टी में लिपटा हुआ अपना सिर झुकाये चुपचाप इधर से उधर टहल रहा था। चारों ओर ख़ामोशी थी हालाँकि दूसरे कमरे से किसी के जान लड़ाकर खाँसने और बरामदे में किसी के स्लीपरें घसीटकर चलने की आवाज़ें सुनायी दे रही थीं। याकोव के पीले चेहरे में कोई जान नहीं थी और उसकी आँखों में घोर उदासी छायी हुई थी।

"काश मैं मर जाता!" उसने खुरचती हुई आवाज़ में कहा। "यहाँ लेटे-लेटे मैं सोचता रहता हूँ कि मर जाना कितना अच्छा होगा!" उसका स्वर अधिक मृदु हो गया था। "फरिश्ते नेक हैं... वे हर सवाल का जवाब दे सकते हैं... सब कुछ समझा सकते हैं..." आँखें झपकाकर वह चुप हो गया और छत पर खेलती हुई धूप की एक फीकी किरन को एकटक देखता रहा। "माशा से मिले थे?"

"न-हीं। वह मेरे दिमाग़ में नहीं रहती।"

"दिमाग़ में नहीं, बल्कि तुम्हारे दिल में।"

इल्या सिटपिटा गया और कुछ बोला नहीं।

याकोव आह भरकर बेचैनी से तकिये पर अपना सिर पटकने लगा।

"निकीता येगोरोविच मरना नहीं चाहता और उसे मरना पड़ेगा... डाक्टर मुझसे

कहता था कि वह मर जायेगा। और मैं मरना चाहता हूँ लेकिन मर नहीं सकता... मैं अच्छा हो जाऊँगा और मुझे शराबख़ाने में वापस जाना पड़ेगा... किसी को मुझसे कोई फ़ायदा नहीं हो सकता..."

धीरे-धीरे उसके होंठ एक उदास मुस्कराहट में फैल गये। उसने अपने दोस्त को एक ख़ास अन्दाज़ से देखा और फिर बोलने लगा :

"इस दुनिया में ज़िन्दा रहने के लिए फ़ौलाद की हड्डियाँ और फ़ौलाद का दिल चाहिए।"

इल्या की भवें सिकुड़ गयीं; याकोव के शब्दों में उसे किसी कठोर और अरुचिकर भाव का आभास हुआ।

"और मेरी हालत दो पत्थरों के बीच दबे हुए काँच जैसी है   हर बार जब मैं हिलता-डुलता हूँ तो किसी नयी जगह से चिटख जाता हूँ।"

"तुम्हें शिकायत करने में मज़ा आता है," इल्या ने अस्पष्ट भाव से कहा।

"और तुम्हें?" याकोव ने पूछा।

इल्या ने जवाब दिये बिना मुँह फेर लिया; फिर यह महसूस करके कि अब याकोव का और कुछ कहने का इरादा नहीं है, वह विचारमग्न होकर बोला :

"ज़िन्दगी आसान तो किसी की भी नहीं है। पावेल को ही ले लो..."

"वह मुझे अच्छा नहीं लगता," याकोव ने मुँह बनाकर कहा।

"क्यों अच्छा नहीं लगता?"

"मालूम नहीं। बस, नहीं अच्छा लगता।"

"अच्छा, अब मेरे चलने का वक़्त हो गया..."

याकोव ने कुछ कहे बिना अपना हाथ इल्या की ओर बढ़ा दिया, लेकिन अचानक वह रुआँसे स्वर में बोला जैसे भीख माँग रहा हो :

"इल्या, माशा के बारे में पता लगाना। भगवान के लिए!..."

"लगाऊँगा," इल्या बोला।

बाहर निकलकर उसने राहत की साँस ली। याकोव की प्रार्थना पर वह लज्जित अनुभव कर रहा था कि उसने मोची की बेटी की कोई ख़बर नहीं ली थी, और उसने जाकर मुटल्ली से मिलने का फ़ैसला किया, जिसे ज़रूर मालूम होगा कि माशा का क्या हुआ।

पेत्रूख़ा के शराबख़ाने की ओर जाते हुए वह भविष्य के सपनों में खो गया, जो उसे बहुत आशाजनक सम्भावनाओं से परिपूर्ण लग रहे थे। वह अपने सपनों में ऐसा खोया हुआ था कि उसे पता ही नहीं चला कब वह शराबख़ाने के पास से होकर आगे निकल गया। जब उसे इस बात का पता चला तो उसका जी अपने क़दम लौटाने का

नहीं चाह रहा था। चलते-चलते वह शहर के बाहर निकल गया। उसके सामने खेत फैले हुए थे जिनके पार जंगल की दीवार दिखायी दे रही थी। सूरज डूब रहा था और हरी-हरी नयी उगी हुई घास पर अपनी गुलाबी आभा बिखेर रहा था। वह अपना सिर ऊँचा किये, दूर आसमान पर नज़रें टिकाये चला जा रहा था, जहाँ बादलों के निश्चल टुकड़े डूबते सूरज की किरणों में आग की तरह दहक रहे थे। उसे चलने में बड़ा आनन्द आ रहा था : हर क़दम जो वह उठाता था, हर साँस जो वह लेता था, उससे उसमें एक नये स्वप्न का जन्म होता था। वह कल्पना कर रहा था कि वह बहुत धनवान और शक्तिशाली हो गया है और पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव को बर्बाद किये दे रहा है। वह कल्पना कर रहा था कि पेत्रूख़ा उसके सामने खड़ा रो रहा था और वह, इल्या लुन्योव, उससे कह रहा था :

"रहम की भीख माँग रहे हो, और तुम? तुमने कब किसी पर रहम किया है? याद है तुमने अपने बेटे को कितनी बुरी तरह सताया था? याद है तुमने मेरे चाचा को किस तरह पाप के रास्ते पर लगाया था? याद है तुम किस तरह मेरा अपमान करते थे, तुम्हारे उस मनहूस घर में कभी कोई सुखी नहीं रहा; वहाँ कभी किसी ने यह नहीं जाना कि जीवन का सुख किसे कहते हैं। मौत का फन्दा है तुम्हारा वह घर। जेलख़ाना है।"

पेत्रूख़ा उसके डर से काँप रहा था, कराह रहा था और बिल्कुल भिखारी जैसा तुच्छ लग रहा था। और इल्या ज़ोर से चिल्लाकर कह रहा था :

"मैं फूँक दूँगा तुम्हारा घर, क्योंकि जो लोग उसमें रहते हैं उन्हें उससे बदनसीबी के अलावा और कुछ नहीं मिलता। और तुम तुम निकल जाओ यहाँ से और जाकर टुकड़े-टुकड़े के लिए भीख माँगो और उन लोगों से रहम की भीख माँगो जिन्हें तुमने सताया है। ज़िन्दगी भर इस धरती पर मारे-मारे भटकते फिरो और आख़िर में कुत्ते की मौत मर जाओ!"

अब खेतों ने शाम के झुटपुटे की चादर ओढ़ ली थी और दूर खड़ा अँधेरा जंगल पहाड़ की तरह काला हो गया था। हवा में एक छोटे-से काले धब्बे की तरह कोई चमगादड़ आवाज़ किये बिना तेज़ी से उड़ रहा था, मानो अँधेरा बो रहा हो। दूर नदी की ओर से जहाज चलने की आवाज़ आ रही थी, जो ऐसी लग रही थी जैसे कोई विशाल पक्षी अपने चौड़े पंख फड़फड़ा रहा हो। लुन्योव को उन सब लोगों की याद आयी जिनका उसकी ज़िन्दगी को एक बोझ बना देने में हाथ था, और उनमें से हर एक को उसने बड़ी बेरहमी से लताड़ा। इससे उसका टहलने का सुख दुगुना हो गया और वह वहाँ चारों ओर अँधेरे से घिरा हुआ खेतों में अकेला धीमे स्वर में गुनगुनाने लगा...

अचानक हवा के झोंके के साथ सड़ाँध की बदबू उसकी नाक में आयी। उसने

गुनगुनाना बन्द कर दिया : उस बदबू के साथ सुखद स्मृतियाँ जुड़ी हुई थीं। वह खड्ड के किनारे शहर के कचरे के उस ढेर के पास आ गया था, जिसे दादा येरेमेई के साथ अक्सर कुरेद-कुरेदकर वह काम की चीज़ें ढूँढ़ा करता था। बूढ़े कबाड़ी की आकृति उसकी कल्पना की दृष्टि के सामने उभरी। इल्या अँधेरे में वह जगह खोजने लगा जो बूढ़े ने उनके आराम करने के लिए चुनी थी, लेकिन वह जगह उसे मिली नहीं : शायद अब वह कचरे के नीचे दब गयी थी। इल्या ने आह भरी उसे यह आभास हुआ कि उसके दिल में भी कचरे का ढेर बन गया है।

अचानक उसकी समझ में आया कि अगर मैंने उस सूदख़ोर का ख़ून न किया होता तो इस समय मैं पूरी तरह सुखी होता। लेकिन उसके मन में एक दूसरी आवाज़ ने फ़ौरन कहा, उसकी फिक्र क्यों करते हो? जो कुछ तुमने किया वह तुम्हारी बदनसीबी थी, तुम्हारा पाप नहीं...

एक आवाज़ सुनायी दी : एक छोटा-सा कुत्ता दबी आवाज़ से भूँकता हुआ मानो उसके पाँव तले से तेज़ी से भागकर गुजरा और अँधेरे में गायब हो गया। इल्या काँप उठा। उसे ऐसा लगा जैसे अँधेरे का एक टुकड़ा अचानक सप्राण हो उठा हो और कराहकर गायब हो गया हो।

कोई फ़र्क नहीं पड़ता, उसने सोचा। अगर मैंने उसका ख़ून न भी किया होता तब भी मुझे कोई चैन न मिलता। ख़ुद अपने साथ और दूसरों के साथ मैं कितना अन्याय होते देख चुका हूँ! दिल में एक बार घाव लग जाता है तो उसमें हमेशा दर्द होता रहता है।

वह धीरे-धीरे खड्ड के किनारे चलता रहा। उसके पाँव कचरे में धँसे जा रहे थे। उसके क़दमों के नीचे टहनियाँ चटखकर टूट रही थीं और कागज़ के टुकड़ों के चुरमुराने की आवाज़ आ रही थी। अब वह खड्ड के अन्दर आगे को निकली हुई ज़मीन की एक पतली-सी पट्टी पर आ पहुँचा था जिस पर कोई कचरा नहीं था। आगे बढ़कर वह उसके सिरे पर बैठ गया और उसने अपने पाँव खड्ड में लटका लिये। यहाँ की हवा ज़्यादा साफ़ थी; खड्ड की पूरी लम्बाई के पार देखती हुई उसकी नज़रें छोर तक पहुँचीं तो उसे वहाँ दूर नदी की फ़ौलाद की तरह चमकती हुई सतह नज़र आयी। बर्फ़ की तरह निश्चल पानी के धरातल पर अदृश्य जहाजों की रोशनियाँ काँपती हुई प्रतिबिम्बित हो रही थीं। एक रोशनी हवा में लाल चिड़िया की तरह उड़ रही थी, दूसरी स्थिर और किरणहीन हरी रोशनी भयानक रूप धारण करके चमक रही थी। इल्या के पैरों के पास मुँह फाड़े घनी परछाइयों से भरा गहरा खड्ड ऐसा लग रहा था जैसे काली हवा से भरी कोई नदी बह रही हो। इल्या का दिल उदास होता गया; वह खड्ड में आँखें गड़ाये घूरता रहा और सोचता रहा : अभी कुछ ही समय पहले तक मैं कितना ख़ुश था; एक ही

क्षण के लिए... लेकिन अब वह सब गायब हो चुका है। उसे याद आया कि आज याकोव ने कितने द्वेषपूर्ण ढंग से उससे बातचीत की थी और इससे उसकी निराशा और बढ़ गयी... नीचे खड्ड में से मिट्टी का ढूह गिरने जैसी आवाज़ आयी। उसने आगे झुककर अँधेरे में घूरकर देखा... रात की सीलन ने ऊपर उठकर उसके मुँह पर तमाचा-सा मारा। उसने नज़रें उठाकर आसमान की ओर देखा; तारे झिझकते हुए बाहर निकल रहे थे और एक बड़ी-सी आँख जैसा विशाल जंगल के लाल चाँद उधर धीरे-धीरे ऊपर चढ़ रहा था। और अभी कुछ ही मिनट पहले जिस तरह चमगादड़ झुटपुटे को तीर की तरह चीरता हुआ उड़ा था उसी तरह अब काले विचार और काली स्मृतियाँ इल्या की आत्मा में तेज़ी से इधर-उधर उड़ रही थीं। वे आती थीं और किसी जवाब के बिना निकल जाती थीं और अपने पीछे पहले से भी गहरे अँधेरे के अलावा कुछ नहीं छोड़ जाती थीं।

बड़ी देर तक वह विचारों में खोया वहाँ बैठा रहा और नीचे खड्ड में और ऊपर आसमान को घूरता रहा। चाँदनी उस गहरे खड्ड के अँधेरे को बेध रही थी और उसके ढलान पर फटी हुई गहरी दरारों को और उन झाड़ियों को उजागर कर रही थी जो कुरूप आकृतियों की परछाइयाँ चारों ओर डाल रही थीं। चाँद और सितारों को छोड़कर आकाश बिल्कुल सूना था। हवा सर्द होती जा रही थी। इल्या उठा, रात की सीलन से उसे थोड़ी-सी कंपकंपी महसूस हुई, और खेतों को पार करता हुआ वह शहर की रोशनियों की ओर चल दिया। वह अब कुछ भी नहीं सोचना चाहता था। वह भावशून्य होकर हर चीज़ के प्रति उदासीन हो गया था और उसके अन्दर एक अथाह सूनापन भर गया था उस आकाश का सूनापन जहाँ वह कभी ईश्वर का आवास मानता था।

जब वह घर पहुँचा तो बहुत देर हो चुकी थी; वह दरवाज़े के सामने खड़ा सोचता रहा; वह घण्टी बजाने का फ़ैसला नहीं कर पा रहा था। खिड़कियों में कोई रोशनी नहीं थी, जिसका मतलब था कि अव्तोनोमोव-दम्पति सो गये थे। उसे तात्याना व्लास्येव्ना को जगाने में संकोच हो रहा था : हमेशा वही उसके लिए दरवाज़ा खोलती थी... लेकिन अन्दर तो उसे जाना ही था। उसने धीरे से घण्टी बजायी। लगभग तुरन्त ही दरवाज़ा खुल गया और उसे अपने सामने अपनी नाज़ुक-सी मकान-मालकिन सोते वक़्त पहनने के सफ़ेद लिबास में खड़ी दिखायी दी।

"दरवाज़ा बन्द कर दीजिये जल्दी से!" उसने ऐसे स्वर में कहा जिससे इल्या अब तक परिचित नहीं था। "बहुत सर्दी है... मैं कुछ पहने भी नहीं हूँ... पति बाहर गया हुआ है..."

"माफ़ करना," इल्या बुदबुदाकर बोला।

"कितनी देर में आये हैं आप! कहाँ थे अब तक?"

इल्या दरवाज़ा बन्द करके जवाब देने के लिए मुड़ा, और उसने देखा कि औरत की खुली हुई छाती उसके सामने थी। पीछे हटने के बजाय वह उसकी ओर और आगे बढ़ आयी। वह ख़ुद पीछे हट नहीं सकता था क्योंकि उसकी पीठ दरवाज़े से लगी हुई थी। वह हँस पड़ी धीमी-सी खनकती हुई हँसी। इल्या ने अपने हाथ उठाकर धीरे से उसके कन्धों पर रख दिये; उसकी उँगलियाँ काँप रही थीं क्योंकि इस औरत को सामने पाकर उसमें भीरुता आ जाती थी, और इसलिए कि वह उसे अपने बाँहों में समेट लेने के लिए लालायित था। यह देखकर वह ख़ुद एड़ियाँ उठाकर उसके और पास आ गयी और अपने गर्म-गर्म हाथों से उसने उसकी गर्दन को मज़बूती से जकड़ लिया। वह घण्टी जैसी खनकती हुई आवाज़ में बोली :

"रात को इतनी-इतनी देर तक बाहर रहने का क्या मतलब है? तुम्हारे लिए घर पर करने को इससे बेहतर काम है, मेरी जान! कितने ख़ूबसूरत हो तुम, कितनी मज़बूत हैं तुम्हारी बाँहें!"

इल्या को ऐसा लग रहा था कि जैसे सपने में वह उसके तपते हुए चुम्बनों और उसके लचकीले शरीर के आवेशपूर्ण स्पन्दन को अनुभव कर रहा हो। तात्याना बिल्ली की तरह उसके सीने को कसकर पकड़े रही और बार-बार उसे चूमती रही। आख़िरकार वह उसे अपनी मज़बूत बाँहों में उठाकर अपने कमरे में ले गया; उसे उठाये हुए वह बहुत सहज भाव से चल रहा था मानो हवा में तैर रहा हो...

अगले दिन सवेरे जब इल्या सोकर उठा तो उसके दिल में डर समाया हुआ हुआ था।

"अब मैं कीरिक का सामना कैसे कर सकूँगा?" उसने सोचा। और वह जितना डर रहा था उतना ही लज्जित भी था।

"अगर मुझे उससे कोई शिकायत होती तब भी बात थी," उसने दुखी होकर सोचा। "या कम से कम मैं उसे पसन्द न करता होता। लेकिन यों ही ज़रा-से भी बहाने के बिना मैंने उस आदमी का बुरा किया।" उसके दिल में तात्याना व्लास्येव्ना के प्रति द्वेष की भावनाएँ उमड़ने लगीं। उसे यक़ीन था कि कीरिक ताड़ जायेगा कि उसकी बीवी ने उसके साथ बेवफ़ाई की है।

"वह मेरे ऊपर ऐसे टूट पड़ी जैसे न जाने कब की भूखी हो," वह असमंजस में पड़कर सोचने लगा, पर इस विचार ने उसके अहंकार को गुदगुदा दिया और यह गुदगुदी उसे बहुत सुखद लगी। उसने एक सचमुच की औरत का एक साफ़-सुथरी, सुसंस्कृत, ब्याहता औरत का प्यार पा लिया था।

"मुझमें ज़रूर कोई ख़ास बात होगी," उसने गर्व से सोचा। "बड़ी शर्मनाक बात थी शर्मनाक... लेकिन मैं कोई पत्थर का बना हुआ तो हूँ नहीं। मैं क्या करता, उसे

भगा देता?..”

वह नौजवान था : उसे याद आया कि तात्याना ने किस तरह उसे दुलराया था, किस तरह अपनी बाँहों में भरकर उसका लाड़ किया था ख़ास ढंग से, ऐसे ढंग से जिससे वह इससे पहले परिचित नहीं था। और व्यावहारिक स्वभाव का होने के कारण वह अनायास ही यह भी सोचने लगा कि प्यार के इस बन्धन से उसे लाभ भी हो सकता था। इन विचारों के बाद झुण्ड के झुण्ड बहुत-से निराशाजनक विचार भी उसके मन में उठे :

“लो, मैं एक बार फिर फँस गया। क्या मैं इसी चीज़ की तलाश में था? मेरे दिल में उसके लिए इज़्ज़त थी एक बार भी मेरे मन में उसके लिए कोई ऐसी-वैसी बात नहीं आयी फिर भी, देखो तो क्या हो गया...”

लेकिन एक ही क्षण बाद उसकी आत्मा की सारी उलझन, उसमें मचा हुआ सारा द्वन्द्व इस उल्लासप्रद आभास की वजह से मिट गया कि जल्दी ही वह एक नयी, असली, साफ़-सुथरी ज़िन्दगी में क़दम रखने वाला है। और फिर यह विचार भाले की चुभन की तरह उसके मन में उठा :

“फिर भी इसके बिना कहीं अच्छा होता...”

वह जान-बूझकर उस वक़्त तक बिस्तर पर से नहीं उठना चाहता था जब तक कि पुलिसवाला काम पर न चला जाये। उसने कीरिक को अपनी पत्नी से विदा लेते समय बहुत मज़ा लेकर होंठ चटखारकर कहते सुना :

“आज दोपहर को खाने के लिए कोफ्ते बनाओ तो कैसी रहे, तात्याना। सुअर का गोश्त ज़्यादा हो उनमें, और उबाल लेने के बाद उन्हें कढ़ाई में थोड़ा-सा तल लेना तुम तो जानती हो, जब तक कि बिल्कुल गुलाबी न हो जायें! और काली मिर्च डालने में कंजूसी न करना!”

“अच्छा, अब जाओ! जैसे मुझे मालूम नहीं है कि तुम्हें कैसा खाना अच्छा लगता है!” पत्नी ने बड़े प्यार से कहा।

“जाते-जाते एक प्यार तो कर लेने दो, मेरी बिल्ली!”

इल्या चूमने की आवाज़ सुनकर चौंक पड़ा। यह स्थिति उसके लिए घृणास्पद थी, लेकिन साथ ही हास्यास्पद भी थी।

“चटाख, चटाख, चटाख,” अव्तोनोमोव ने तड़ातड़ कई बार अपनी पत्नी को चूमा। वह हँसती रही। और अपने पति के जाने के बाद दरवाज़ा बन्द करते ही वह भागकर इल्या के कमरे में आयी और कूदकर उसके बिस्तर पर चढ़ गयी।

“प्यार करो जल्दी से!” वह खिलकर बोली। “मेरे पास वक़्त नहीं है!”

“लेकिन अभी तो आप अपने पति को चूमकर आयी हैं,” इल्या ने बुझे हुए स्वर

में कहा।

"यह क्या बात हुई? 'आप' कहते हो? अरे, यह लड़का तो जलता है!" वह ख़ुश होकर चिल्लायी, और हँसते हुए उछलकर खड़ी हो गयी और खिड़की पर परदा खींचने लगी। "जलते हो? बहुत अच्छी बात है। जो मर्द जलता है वह प्यार भी भरपूर करता है।"

"मैंने यह बात जलकर नहीं कही थी।"

"चुप रहो!" उसने अपना हाथ उसके मुँह पर रखकर चुलबुलेपन से आदेश दिया।

जब दोनों जी भरकर प्रणय-लीला कर चुके तो इल्या ने उसे मुस्कराकर देखा।

"तुम भी बड़ी हिम्मत वाली हो," वह बोला। "बड़ा जिगरा है तुम्हारा। अपने पति की नाक के नीचे ऐसी हरकत करती हो!..."

तात्याना की कंजी आँखें शरारत से चमक उठीं।

"इसमें कोई ऐसी कमाल की या अनोखी बात तो है नहीं," वह बोली। "तुम समझते हो कि ऐसी औरतें बहुत होती हैं जो किसी दूसरे से इश्क़ न लड़ाती हों? बस, बदसूरत और बीमार औरतें ही ऐसी होती हैं। जो ख़ूबसूरत होती हैं वे हमेशा रोमाँस के चक्कर में रहती हैं।"

सुबह का सारा वक़्त उसने इल्या का ज्ञान बढ़ाने में बिताया और उसे चटपटे क़िस्से सुनाती रही कि औरतें अपने शौहरों को धोखा कैसे देती हैं। फुर्तीली, छोटी-सी वह ऐप्रन और लाल ब्लाउज़ पहने और आस्तीनें ऊपर चढ़ाये रसोई में चिड़िया की तरह इधर से उधर फुदक-फुदककर अपने पति के लिए कोफ़्ते बना रही थी और उसकी गूँजती हुई आवाज़ लगातार इल्या के कमरे में आ रही थी।

"तुम समझते हो कि औरत का पति उसके लिए काफ़ी होता है? हो सकता है कि अगर वह उससे प्यार करती हो तब भी वह उसे न भाये। और फिर यह बात भी न भूलो कि जो पहला फूल उसके हाथ लग जाता है उसका रस चूसने में वह ज़रा भी आनाकानी नहीं करता... औरत भी हर वक़्त अपने पति के बारे में सोचते-सोचते उकता जाती है, हर वक़्त पति, पति, बस और कुछ नहीं! वह दूसरे मर्दों के साथ खेल-कूद कर अपना जी क्यों न बहलाये? इसी तरह तो उसे मर्दों का फ़र्क मालूम होता है। अरे, क्वास भी तो कई तरह का होता है : बवेरिया का क्वास, जुनीपर का क्वास, क्रैनबेरी का क्वास, फिर एक ही तरह का क्वास पीते रहना तो सरासर बेवकूफ़ी है।"

इल्या चुसकियाँ ले-लेकर अपनी चाय पीता रहा और उसकी बातें सुनता रहा; उसे चाय कड़वी लग रही थी। उस औरत की आवाज़ में एक अरुचिकर चीख़ का स्वर था जिसकी ओर उसका ध्यान पहले कभी नहीं गया था। उसे बरबस ओलिम्पियादा

की भारी आवाज़, उसकी गम्भीर मुद्रा और उसके आवेशपूर्ण शब्दों की याद हो आयी जिनमें एक ऐसे आवेग का स्पन्दन रहता था जो हृदय को छू लेता था। यह सच है कि ओलिम्पियादा सीधी-सादी, अनपढ़ औरत थी। शायद इसीलिए अपनी निर्लज्जता में भी वह अधिक सीधी-सादी थी... तात्याना की बातें सुनते हुए इल्या जी न चाहते हुए भी हँस देता था। उसे उसकी बातों में कोई मज़ा नहीं आ रहा था; वह हँस सिर्फ़ इसलिए देता था कि उसकी समझ में नहीं आता था कि इस औरत से क्या और किस तरह कहे। लेकिन वह उसे दिलचस्पी से सुनता रहा, फिर आख़िरकार उसने विचारमग्न होकर कहा :

"मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि आप लोगों की साफ़-सुथरी ज़िन्दगी में इस तरह के क़ानून हैं..."

"क़ानून सभी जगह बराबर हैं, मेरी जान। क़ानून जैसे हैं वैसा उन्हें लोगों ने ही बनाया है, और सभी लोग एक ही चीज़ चाहते हैं : सुख-चैन की ज़िन्दगी जिसमें आराम हो और हर तरह की सुख-सुविधा हो, ढेरों खाने को हो। और उसके लिए ज़रूरत होती है पैसे की। पैसा मिलता है वसीयत में या क़िस्मत से। जिस के पास लॉटरी का टिकट है वह सुखी होने की उम्मीद कर सकता है, और ख़ूबसूरत औरत के पास तो जन्म से ही लॉटरी का टिकट होता है उसकी ख़ूबसूरती। ख़ूबसूरती शक्ति है! जिन लोगों का कोई पैसे वाला रिश्तेदार नहीं होता या जिनके पास लॉटरी का टिकट या ख़ूबसूरती नहीं होती उन्हें काम करना पड़ता है। ज़िन्दगी भर काम करते रहना कितने अफ़सोस की बात है... मुझी को देखो, मैं काम करती हूँ हालाँकि मेरे पास दो लॉटरी के टिकट हैं। लेकिन मैंने उन्हें दुकान खुलवाने में लगा देने का फ़ैसला कर लिया है। दो टिकट काफ़ी नहीं हैं! कोफ्ते पकाना और मुँहासे वाले को चूमना उबा देने वाली बात है! और इसीलिए मैं तुम्हें चूमना चाहती हूँ।"

उसने इल्या को चुलबुली नज़र से देखा और बोली :

"क्या तुम इससे नफ़रत करते हो? मुझे इस तरह ग़ुस्से से घूर क्यों रहे हो?"

उसने इल्या के पास जाकर उसके कन्धों पर हाथ रख दिये और आँखों में आँखें डालकर उसे कौतूहल से घूरने लगी।

"ग़ुस्सा तो नहीं आया है," इल्या ने कहा।

वह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"अच्छा, ग़ुस्सा तो आया है नहीं?" हँसी के ठहाकों के बीच उसने भिंचे हुए स्वर में कहा। "कितने नेक हो तुम!"

"मैं तो बस सोच रहा था," इल्या धीरे-धीरे अपने शब्दों का उच्चारण करते हुए कहता रहा, "तुम जो कहती हो वह सच है, लेकिन... वह अच्छी बात नहीं है, न जाने

क्यों।"

"ओ-हो, तुम भी... डंक मारने में कुछ कम नहीं हो! क्या बात अच्छी नहीं है? ज़रा, मुझे भी तो समझाओ।"

लेकिन इल्या कुछ भी समझा न सका। उसकी समझ में ख़ुद नहीं आ रहा था कि तात्याना की बातों में क्या चीज़ उसे बुरी लगी थी। ओलिम्पियादा इससे भी ज़्यादा भोंडे तरीक़े से बात कहती थी, फिर भी उसकी बात कभी उसे इस तरह नहीं चुभती थी जैसे इस साफ़-सुथरी छोटी-सी चिड़िया की बातें चुभ रही थीं। दिन भर वह उस विरक्ति के बारे में सोचता रहा जो उसके दिल में उस सम्बन्ध की वजह से पैदा हुई थी जो उसके लिए निस्सन्देह गर्व की बात थी। वह इस बात को समझ नहीं पा रहा था।

उस दिन शाम को जब वह काम के बाद घर लौटा तो रसोई में कीरिक से उसकी मुलाकात हो गयी।

"आज मेरी बीवी ने क्या खाना बनाया है!" उसने लहककर कहा। "क्या कोफ्ते हैं! उन्हें खाते हुए अफ़सोस होता है, संकोच होता है मानो ज़िन्दा बुलबुल खा रहे हों... मैंने एक प्लेट तुम्हारे लिए भी रख छोड़ी है, भाई। उस दुकान को गर्दन से उतारो और बैठ जाओ। हर आदमी तुम्हें ऐसी मज़ेदार चीज़ नहीं खिला सकता!"

इल्या ने दोष की भावना से उसे देखा और धीरे से हँस दिया।

"शुक्रिया," वह कुछ देर बाद रुककर बोला, "आप बहुत अच्छे आदमी हैं, सच कहता हूँ।"

"बस रहने भी दो!" कीरिक ने हवा में हाथ घुमाकर कहा। "एक प्लेट कोफ्ते ऐसी कौन-सी बहुत बड़ी बात है? अगर मैं पुलिस का चीफ़ होता तो... हुँः... तो मैं तुम्हें सचमुच शुक्रिया अदा करने का मौक़ा देता। लेकिन मैं पुलिस का चीफ़ कभी बन नहीं पाऊँगा... और मैं पुलिस की नौकरी तो हमेशा के लिए छोड़ रहा हूँ। मैं तो एक व्यापारी का एजेण्ट बन जाने की सोच रहा हूँ। वह इससे कहीं अच्छा काम है। एजेण्ट एजेण्ट की कुछ हैसियत होती है!"

उसकी बीवी चूल्हे के पास कुछ खटर-पटर कर रही थी और साथ ही गुनगुनाती जा रही थी। इल्या ने उसकी ओर देखा और एक बार फिर अटपटा महसूस करने लगा।

लेकिन दूसरे अनुभवों और नयी चिन्ताओं के दबाव के कारण यह भावना धीरे-धीरे मिटती गयी। वह माल ख़रीदने और अपनी दुकान खोलने की तैयारी में इतना व्यस्त था कि अब उसके पास सोचने के लिए समय ही नहीं था। और जैसे-जैसे दिन बीतते गये वह तात्याना व्लास्येव्ना का आदी होता गया, और इसका उसे पता भी नहीं चला। एक रखैल के रूप में वह उसे दिन-ब-दिन ज़्यादा पसन्द करने लगा, हालाँकि

अब उसके आलिंगनों से उसे अक्सर शर्म आने लगी थी और डर भी लगने लगा था। धीरे-धीरे उसकी बातों ने और उसके आलिंगनों ने सम्मान की उस भावना को नष्ट कर दिया जो उसके दिल में तात्याना के लिए थी। जैसे ही उसका पति सुबह अपने काम पर या शाम को ड्यूटी पर चला जाता था, वह इल्या को अपने कमरे में बुलाती या इल्या के कमरे में आ जाती और उसे दुनिया-भर की इधर-उधर की गपशप सुनाती। उसके क़िस्से बहुत घिसे-पिटे होते थे; ऐसा लगता था कि वे सभी एक ऐसे देश में होते थे जिसमें छिनालें और बदचलन लोग रहते थे, जो नंगे घूमते थे और जिनके लिए व्यभिचार एकमात्र मनोरंजन था।

"जो कुछ तुम कहती हो क्या यह सच हो सकता है?" एक बार उसने उदास होकर कहा। वह उसकी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहता था, लेकिन उसकी बातों के आगे वह बेबस हो जाता था और उनका खण्डन नहीं कर पाता था। वह बस हँस देती थी और उसे चूम लेती थी।

"अच्छा हम सबसे ऊपर से शुरू करते हैं," तात्याना ने उसे यक़ीन दिलाने की कोशिश करते हुए कहा। "गवर्नर चांसलर की बीवी के साथ रहता है, और चांसलर ने हाल ही में अपने एक क्लर्क की बीवी छीन ली है उसे सोबाची गली में किराए पर एक मकान ले दिया है और हफ़्ते में दो बार बिल्कुल खुले आम उससे मिलने जाता है। मैं उस औरत को जानती हूँ अभी बिल्कुल बच्ची है शादी हुए अभी एक साल भी तो नहीं हुआ। और उसके पति को टैक्स-इन्सपेक्टर बनाकर बाहर किसी छोटे शहर में भेज दिया गया है। मैं उसे भी जानती हूँ अच्छा टैक्स-इन्सपेक्टर है वह भी! बिल्कुल नासमझ, अनपढ़ जाहिल है वह!"

वह उसे उन व्यापारियों के बारे में बताती जो अपनी वासना को सन्तुष्ट करने के लिए नौजवान लड़कियाँ ख़रीदते थे, और व्यापारियों की उन बीवियों के बारे में बताती जिनके अपने आशिक थे, और ऊँचे समाज की उन शरीफ लड़कियों के बारे में जो गर्भवती हो जाने पर अपनी कोख के फल को ज़हर देकर मार देती थीं।

उसकी बातें सुनकर इल्या को ऐसा लगता कि यह ज़िन्दगी कचरे का बहुत बड़ा ढेर थी जिसमें लोग कीड़ों की तरह बिलबिलाते रहते थे।

"उफ़!" वह उकताकर कहता, "क्या कहीं कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है जो शुद्ध और असली हो?"

"असली?" वह आश्चर्य से दोहराती। "ये सब असली मिसालें हैं। भोले नादान! तुम समझते हो कि ये सारे क़िस्से मैं अपने मन से गढ़ती हूँ?"

"मेरा मतलब यह नहीं था। कहीं तो यक़ीनन कोई चीज़ ऐसी होगी सचमुच अच्छी और शुद्ध हो, है कोई चीज़ ऐसी?"

वह उसकी बात समझे बिना हँस देती। कभी-कभी उसकी बातें बिल्कुल ही दूसरा रुख़ अपना लेतीं। मिसाल के लिए, एक बार उसके चेहरे पर अपनी कंजी आँखों की डरावनी आग बरसाती हुई वह बोली :

"औरत के साथ अपने पहले अनुभव के बारे में मुझे बताओ।"

इल्या को उस घटना को याद करके लज्जा और घृणा-सी महसूस होने लगी, और उसने उसकी पैनी बेधती हुई दृष्टि की ओर से अपना मुँह फेर लिया।

"इस तरह की बातें पूछते हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिए," उसने उसे झिड़कते हुए कहा।

लेकिन वह बस हँस दी और उससे बताने के लिए आग्रह करने लगी। उसकी अश्लील बातें सुनकर कभी-कभी उसे ऐसा लगता जैसे उस पर तारकोल पोत दिया गया हो। जब भी तात्याना को उसके चेहरे पर नाराज़गी और उसकी आँखों में व्यथा दिखाई देती वह बेझिझक उसके पुरुषत्व को जगा देती और प्यार-दुलार करके उसकी द्वेषपूर्ण भावना दूर कर देती...

एक दिन दुकान से, जहाँ बढ़ई अल्मारियाँ लगा रहे थे, घर आने पर इल्या को यह देखकर ताज्जुब हुआ कि मुटल्ली रसोई में बैठी उसका इन्तज़ार कर रही थी। वह अपनी मोटी-मोटी बाँहें मेज़ पर टिकाये तात्याना व्लास्येव्ना से बातें कर रही थी, जो चूल्हे के पास खड़ी थी।

"यह मेम साहब... बहुत देर से तुम्हारा इन्तज़ार कर रही हैं," तात्याना ने मुस्कराकर मुटल्ली की ओर सिर हिलाकर इशारा करते हुए कहा।

"सलाम, इल्या" बड़ी मुश्किल से उठते हुए 'मेम साहब' ने कहा।

"अरे!" इल्या बोला। "तुम अभी तक ज़िन्दा हो?"

"सड़ा हुआ करमकल्ला तो सुअर भी नहीं खाते," मुटल्ली ने मोटी आवाज़ से कहा।

इल्या बहुत दिन से उससे नहीं मिला था, और अब वह हर्ष और दया के मिले-जुले भाव से उसे एकटक देख रहा था। वह फटा हुआ सूती कपड़ा पहने थी, उसके सिर पर एक रूमाल बँधा था जिसका रंग उड़ गया था और उसके पाँवों में जूते नहीं थे। बड़ी मुश्किल से ही उनहें ज़मीन पर से उठा पाते हुए वह दीवार का सहारा लेकर धीरे-धीरे इल्या के कमरे में गयी और एक कुर्सी पर ढेर हो गयी।

"अब कुछ ही दिन में मेरा चल-चलाव है," वह भर्रायी हुई आवाज़ में बोली। "जल्दी ही मेरी यह हालत हो जायेगी कि मुझसे चला भी नहीं जायेगा... और उसका मतलब यह होगा कि मैं अपना पेट भरने को भीख भी नहीं माँग सकूँगी, बस खेल खतम..."

उसका चेहरा बुरी तरह सूजा हुआ था और उस पर जगह-जगह काले धब्बे थे। सूजन की वजह से उसकी आँखें लगभग बन्द हो गयी थीं।

"मेरे थोबड़े को क्या घूर रहे हो?" उसने इल्या से पूछा। "क्या तुम समझते हो कि मेरी पिटाई हुई है? अरे नहीं, बीमारी मुझे खाये जा रही है।"

"तुम अपना पेट कैसे पालती हो?" इल्या ने पूछा।

"गिरजाघर के ओसारे पर खड़े होकर भीख माँगकर कुछ पैसे जुटा लेती हूँ..." उसने भोंपू जैसी गूँजती हुई आवाज़ में कहा। "यहाँ मैं एक ख़ास वजह से आयी थी... पेर्फ़ीश्का ने मुझे बताया था कि तुम यहाँ रहते हो..."

"चाय पियोगी?" इल्या ने पूछा। उसकी आवाज़ सुनकर और उसके विशाल स्थूल शरीर को देखकर, जो उसके मरने से पहले ही सड़ जाने वाला था, इल्या को अरुचि-सी हो रही थी।

"अपनी चाय रखो तुम शैतान को सौंचाने के लिए। मुझे तो उसके बजाय कुछ पैसा दे दो... लेकिन मैं यहाँ आयी हूँ तुम्हारे ख़्याल से मैं यहाँ किसलिये आयी हूँ?"

उसे बोलने में कठिनाई हो रही थी। वह हाँफ-हाँफकर साँस ले रही थी और उससे दम घोंटने वाली बदबू आ रही थी।

"किसलिये आयी हो?" इल्या ने मुँह फेरकर पूछा; उसे याद आया कि एक बार उसने उसका कैसे अपमान किया था।

"माशा की याद है? लेकिन तुम सबको भूल चुके हो! अब पैसे वाले जो हो गये हो।"

"क्या हुआ उसको? कैसी है वह?" इल्या ने जल्दी से पूछा।

मुटल्ली ने धीरे से अपना सिर हिला दिया।

"बस अभी तक फाँसी लगाकर मरी नहीं है..." वह बोली।

"साफ़-साफ़ बात बताओ!" इल्या ने ग़ुस्से से कहा। "मुझे दोष किस बात के लिए दे रही हो? तुम्हीं ने तो उसे तीन रूबल में बेचा था।"

"दोष मैं अपने आपको दे रही हूँ, तुम्हें नहीं," मुटल्ली ने निश्चिन्त भाव से कहा और आह भरकर उसे माशा के बारे में बताने लगी।

"जिस बूढ़े से उसकी शादी हुई थी वह उस पर बेहद शक करता और सताता था। वह उसे कहीं जाने नहीं देता था, दुकान तक नहीं। दिन भर वह घर के अन्दर बैठी रहती थी और अगर वह आँगन में भी जाना चाहती थी तो उसे बूढ़े से इजाज़त लेनी पड़ती थी। उसके पति ने अपने बच्चों को किसी और की निगरानी में छोड़ दिया था और माशा के साथ अकेला रहता था। उसकी पहली बीवी उसे धोखा देती थी दोनों बच्चों में से कोई भी उसका अपना नहीं था और वह सारा ग़ुस्सा अपनी दूसरी बीवी

पर उतार रहा था। दो बार माशा उसके यहाँ से भाग आयी थी लेकिन दोनों बार पुलिस उसे पकड़कर वापस ले आयी थी। सज़ा के तौर पर उसने उसे बहुत तकलीफ़ें दी थीं और भूखा रखा था।"

"अच्छा सौदा किया था तुमने और पेर्फ़ीश्का ने भी!" इल्या ने भवें चढ़ाकर कहा।

"मैंने तो सोचा था कि उसके लिए यही सबसे अच्छा होगा," मुटल्ली भावहीन स्वर में बोली। "मुझे वह करना चाहिए था जो उसके लिए सबसे बुरा होता... मुझे उसको किसी पैसे वाले आदमी के हाथ बेच देना चाहिए था... वह उसे पहनने को अच्छे-अच्छे कपड़े, रहने को फ़्लैट और सब कुछ देता... बाद में वह उससे पिण्ड छुड़ा लेती और अच्छी तरह रहती... बहुत-सी औरतें ऐसा करती हैं बूढ़ों से बचाये हुए पैसों पर अपनी ज़िन्दगी गुजारती हैं।"

"लेकिन तुम यहाँ किसलिये आयी हो?" इल्या ने पूछा।

"इसलिए कि तुम पुलिसवाले के यहाँ रहते हो। यही लोग उसे पकड़ लाते हैं... इस पुलिसवाले से कह दो कि वे लोग ऐसा न किया करें... उसे भाग जाने दें! शायद उसे कोई जगह मिल ही जाये जहाँ वह भागकर शरण ले सके... क्या कोई जगह ऐसी है ही नहीं जहाँ कोई भागकर जा सके?"

इल्या सोचने लगा। वह माशा की क्या मदद कर सकता था?

मुटल्ली बड़ी सतर्कता से अपने पाँव हिलाते हुए उठ पड़ी।

"अच्छा, मैं चलती हूँ। मैं तो अब कुछ ही दिन की मेहमान हूँ..." उसने बुदबुदाकर कहा। "शुक्रिया तुम्हारा, साफ़-सुथरे, पैसे वाले!"

जब वह लड़खड़ाती हुई रसोई के दरवाज़े से बाहर निकल गयी तो तात्याना भागी हुई इल्या के कमरे में आयी और उसने अपनी बाहें उसकी गर्दन में डाल दीं।

"तो यह है तुम्हारी पहली प्रेमिका, है न?" उसने हँसकर पूछा।

इल्या ने उसकी बाँहों से अपनी गर्दन छुड़ा ली और गम्भीरता से बोला :

"वह एक क़दम के बाद दूसरा क़दम भी मुश्किल से रख पाती है, फिर भी उसकी मदद करने की कोशिश करती है, जिससे उसे प्यार है।"

"और किससे प्यार है उसे?" तात्याना ने इल्या के चिन्ताग्रस्त चेहरे को जिज्ञासा और आश्चर्य से घूरते हुए पूछा।

"रहने दो, तात्याना," वह बोला। "रहने भी दो। यह मज़ाक़ करने का वक़्त नहीं है।"

और उसने संक्षेप में उसे माशा के बारे में बताया।

"इस हालत में मुझे क्या करना चाहिए?" अपनी बात पूरी करते हुए उसने पूछा।

"कुछ भी नहीं!" तात्याना कन्धे बिचकाकर बोली। "क़ानून के हिसाब से औरत

अपने पति की होती है और उसे छीनने का अधिकार किसी को नहीं है।"

एक ऐसे आदमी के रोब के साथ जो क़ानून अच्छी तरह जानता हो, और जिसे उसके अटल होने का पूरा विश्वास हो, तात्याना ने इस बात के बारे में लम्बा-सा भाषण दिया कि माशा के लिए यह ज़रूरी था कि वह अपने पति के हर तकाज़े को पूरा करे।

"वह इन्तज़ार करती रहे। वह बूढ़ा है। वह जल्दी ही मर जायेगा और तब वह आजाद हो जायेगी और बूढ़े की सारी जायदाद उसे मिल जायेगी... और तब तुम एक पैसे वाली नौजवान विधवा से शादी कर सकोगे, है न?"

वह हँस दी और फिर उसे उपदेश देती रही :

"सच पूछो तो तुम्हें अपने इन पुराने जान-पहचान वालों से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए। अब वे तुम्हारी क़िस्म के लोग नहीं हैं... उनकी वजह से तुम्हें शर्मिन्दगी भी उठानी पड़ सकती है। वे सब के सब फूहड़ और गन्दे हैं उस आदमी की तरह जिसने तुमसे पैसा उधार लिया था, याद है? वही, दुबला-पतला ग़ुस्सैली आँखों वाला आदमी?"

"पावेल ग्राचोव..."

"हाँ। इन आम लोगों के नाम भी कैसे-कैसे अजीब होते हैं! ग्राचोव, लुन्योव, पेतुखोव, स्क्वोर्तसोव। हमारे तबके के लोगों के नाम कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत होते हैं : अव्तोमोनोव! कोर्साकोव! मेरे बाप फ़्लोरियानोव थे! शादी से पहले एक आदमी मुझसे प्यार करता था जिसका नाम था ग्लोरियान्तोव, जिसे अदालत में कोई ओहदा मिलने वाला था। एक बार स्केटिंग-रिंक में उसने मेरी गेटिस उतार ली थी और कहा था कि अगर मैं ख़ुद उसे लेने के लिए उसके यहाँ नहीं आऊँगी तो वह हंगामा खड़ा कर देगा..."

जिस समय वह बोल रही थी, इल्या का दिमाग़ बीती हुई बातों की ओर गया। उसे उन अदृश्य बन्धनों का आभास था जिन्होंने उसे पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव के मकान के साथ बाँध रखा था, और उसे लगता था कि वह मकान कभी उसे शान्ति से रहने नहीं देगा।

आख़िरकार इल्या लुन्योव का सपना पूरा हो गया।

सुबह से शाम तक वह अपनी निजी दुकान के काउण्टर के पीछे खड़ा रहता और उसे देख-देखकर अपनी आँखें सेंकता रहता; उसके शान्त चेहरे पर उल्लास झलकता रहता। अल्मारियों के पटरों पर दफ़्ती के डिब्बे बड़े सुथरे ढंग से सजे हुए थे; उसने खिड़की में साबुन, बटुए, चमकीले बकसुए और बटन बड़े आकर्षक ढंग से सजा रखे थे, और उनके ऊपर रंग-बिरंगे फ़ीतों और लैस की झालर लगा रखी थी। सारा वातावरण खुला-खुला और आकर्षक लगता था। वह ख़ुद बहुत बना-संवरा ख़ूबसूरत और

प्रतिष्ठित लगता था और अपने गाहकों का बड़ी शिष्टता से झुककर स्वागत करता था और बड़ी दक्षता से काउण्टर पर अपना सारा माल फैलाकर उन्हें दिखाता था। लैस और फ़ीतों की सरसराहट उसके कानों में संगीत जैसी लगती; जो दर्ज़िन-लड़कियाँ दो-एक कोपेक का माल लेने उसकी दुकान में आतीं उसको सुन्दर और नेकदिल लगती थीं। जीवन सुखद और सुगम था और उसमें एक सीधा-सादा और स्पष्ट अर्थ पैदा हो गया था। अतीत पर मानो कुहरे का परदा पड़ा हुआ था। अपने व्यापार, अपने माल और अपने गाहकों के अलावा कोई विचार उसके दिमाग़ में आता ही नहीं था...

उसने अपनी मदद के लिए एक लड़का नौकर रख लिया था; उसे पहनने के लिए स्लेटी रंग की एक जैकेट दे दी थी और वह इस बात का पूरा ख़्याल रखता था कि वह बिल्कुल साफ़-सुथरा रहे।

“हम लोग बहुत नाज़ुक चीज़ों का व्यापार करते हैं, गावरिक,” वह उससे कहता, “इसलिए हमें बेहद साफ़-सुथरा रहना चाहिए।”

गावरिक बारह बरस का लड़का था कचौरी जैसे गाल, मुँह पर हल्के-हल्के चेचक के दाग़, ऊपर उठी हुई नाक, छोटी-छोटी कंजी आँखें और भावपूर्ण चेहरा। उसने प्राथमिक स्कूल की पढ़ाई अभी पूरी की थी और अपने आपको संजीदा नौजवान समझने लगा था। वह भी इस छोटी-सी साफ़-सुथरी दुकान में काम करके बहुत ख़ुश था। उसे डिब्बों और बण्डलों को उठाने-धरने में बहुत मज़ा आता था और वह भी गाहकों के साथ अपने मालिक जैसी ही शिष्टता का व्यवहार करने की कोशिश करता था।

जब भी इल्या उसे देखता उसे उन दिनों की याद आ जाती जब वह ख़ुद लड़कपन में स्त्रोगानी की मछली की दुकान में काम करता था। इस वजह से उसे अपनी दुकान में काम करने वाले लड़के से ख़ास ढंग का लगाव हो गया था, और जब भी दुकान में कोई गाहक नहीं होता था तब वह बड़ी मिलनसारी से उसके साथ बातें और हँसी-मज़ाक़ करता था।

“जब करने को कुछ न हुआ करे, गावरिक, तो कोई किताब लेकर पढ़ा करो,” वह सलाह देता। “किताब पढ़ते वक़्त समय भी जल्दी गुजर जाता है और पढ़ने में तुम्हें मज़ा भी बहुत आयेगा।”

इल्या के तौर-तरीक़ों में नरमी आ गयी थी, वह लोगों की ओर बहुत ध्यान देता था और ऐसा लगता था कि उसकी मुस्कराहट उनसे कह रही है :

“देखो, मेरी तो क़िस्मत खुल गयी है, लेकिन तुम भी धीरज रखो : जल्दी ही तुम्हारी क़िस्मत भी चमक उठेगी।”

वह सवेरे सात बजे दुकान खोल देता था और रात को नौ बजे उसे बन्द करता था। गाहक बहुत ज़्यादा नहीं होते थे इसलिए उसे दरवाज़े के पास बैठकर वसन्त की

धूप का आनन्द लेने के लिए बहुत समय मिल जाता था; उस समय उसके मन में न कोई विचार होता था न कोई इच्छा। गावरिक उसकी बग़ल में बैठा राहगीरों को देखता रहता, उनका मज़ाक़ उड़ाता, आवारा कुत्तों को सीटी बजाकर बुलाता, गौरैयों और कबूतरों पर कंकर फेंकता, या नाक सुड़कते हुए बड़ी उत्सुकता से कोई किताब पढ़ता रहता। कभी-कभी उसका मालिक उससे ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने को कहता, पर किताब में उसे कोई दिलचस्पी नहीं होती थी : उसे स्वयं अपनी आत्मा की नीरवता और शान्ति के स्वर सुनना ज़्यादा अच्छा गता था। इस नीरवता के स्वरों को वह बहुत ख़ुश होकर सुनता था, उनका जी भरकर रस लेता था, क्योंकि वे उसके लिए नये और अकथनीय रूप से प्रिय थे। लेकिन कभी-कभी कोई चीज़ उसकी आत्मा की इस सुखद सम्पूर्णता में विघ्न डाल देती थी। यह कोई चीज़ थी ख़तरे की लगभग अगोचर पूर्वानुभूति; वह उसकी आत्मा की शान्ति को छिन्न-भिन्न नहीं करती थी, बस परछाईं की तरह हौले से उस पर हाथ फेर देती थी।

ऐसे क्षणों में इल्या गावरिक से बातें करने लगता था।

"तुम्हारा बाप क्या करता है, गावरिक?"

"डाकिया है चिट्ठियाँ बाँटता है।"

"तुम्हारा परिवार बहुत बड़ा है?"

"हाँ। बहुत-से लोग हैं। कुछ बड़े हैं, कुछ छोटे हैं।"

"छोटे लोग बहुत-से हैं?"

"पाँच हैं। और तीन बड़े हैं। हम बड़े लोग सब काम करते हैं : मैं यहाँ आपके साथ काम करता हूँ, वसीली साइबेरिया में तारघर में काम करता है, और सोन्या पढ़ाती है। उसका काम सबसे अच्छा है महीने में पूरे बारह रूबल कमा लेती है। और फिर मीशा है। उसकी हालत उतनी अच्छी नही है। मुझसे बड़ा है स्कूल में पढ़ता है।"

"तब तो तुम बड़े लोग चार हुए।"

"नहीं, चार कहाँ हैं," गावरिक ने आपत्ति करते हुए कहा और उपदेश के भाव से जोड़ दिया, "मीशा अभी पढ़ रहा है। बड़े लोग तो वे होते हैं जो काम करते हैं।"

"तुम्हारा परिवार ग़रीब है?"

"ज़ाहिर है," गावरिक ने ज़ोर से नाक सुड़ककर कहा। इसके बाद वह भविष्य के बारे में अपनी योजनाएँ विस्तार से बताने लगा :

"जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो फ़ौज में चला जाऊँगा। लड़ाई होगी, और तब मैं अपने जौहर दिखाऊँगा... मैं बहुत बहादुर हूँ... मैं भागकर सबसे आगे पहुँच जाऊँगा और दुश्मन का झण्डा छीन लूँगा... मेरे चाचा ने एक बार ऐसा ही किया था, और जनरल गुर्को ने इसके लिए उन्हें एक तमग़ा और पाँच रूबल ईनाम में दिये थे..."

उस लड़के के चेचक के दाग़ों वाले चेहरे और उसकी चौड़ी-सी नाक को देखकर, जिसे वह बराबर सुड़कता रहता था, इल्या मुस्करा दिया।

रात को दुकान बन्द करके इल्या पीछे वाले छोटे-से कमरे में चला जाता था। तब तक गावरिक समोवार गरम करके मेज़ पर रख देता था; समोवार से सन-सन की आवाज़ आती रहती थी और उसके पास ही एक प्लेट में रोटी और सॉसेज रखी होती थी। खाने के बाद गावरिक सोने के लिए दुकान में चला जाता था और इल्या समोवार के पास बैठा रहता था, कभी-कभी तो दो-दो घण्टे या उससे भी ज़्यादा।

दो कुर्सियाँ, एक मेज़, एक पलंग और एक अल्मारी   इल्या के नये कमरे में बस यही सामान था। छोटा-सा नीची छत का कमरा था, जिसकी चौकोर खिड़की में से सड़क पर चलते हुए लोगों की टाँगें, सड़क के उस पार वाले घर की छत और उस छत के ऊपर का आसमान दिखाई देता था। उसने खिड़की पर सफ़ेद जाली का परदा डाल रख था; खिड़की में सड़क की ओर लोहे का एक जंगला लगा था जो इल्या को सख़्त नापसन्द था। पलंग के ऊपर दीवार पर उसने एक तस्वीर टाँग रखी थी, जिसका शीर्षक था 'मनुष्य के जीवन की अवस्थाएं'। यह तस्वीर उसे बहुत पसन्द थी और उसने बहुत दिन से उसे ख़रीदने का इरादा कर रखा था; किसी वजह से वह नयी दुकान खुल जाने के वक़्त तक अपने इस इरादे को टालता आया था, हालाँकि उसकी कीमत सिर्फ़ दस कोपेक थी।

मनुष्य के जीवन की अवस्थाओं का चित्रण एक धनुष की शक्ल में किया गया था, जिसके नीचे स्वर्ग की तस्वीर बनायी गयी थी। इस तस्वीर में ख़ुदा को आदम और हव्वा से बातें करते दिखाया गया था; ख़ुदा को फूलों से घेर रखा गया था और उनके चेहरे के चारों ओर प्रभा-मण्डल था। कुल सत्रह अवस्थाएँ चित्रित की गयी थीं। पहली अवस्था में एक छोटे-से बच्चे को दिखाया गया था जिसे उसकी माँ ने सहारा दे रखा था, और उसके नीचे लाल अक्षरों में लिखा था : 'पहले क़दम'। दूसरी में एक बच्चे को नाचते और ढोल बजाते दिखाया गया था, और उसका शीर्षक था : 'पाँच वर्ष का : खेलने के दिन'। सात साल की उम्र में बच्चा 'सीखना शुरू करता है'। दस वर्ष की आयु में वह 'स्कूल जाता है'। इक्कीस वर्ष की आयु में वह हाथ में रायफ़ल लिये खड़ा है और उसके होंठों पर मुस्कराहट है : 'सैनिक सेवा'। अगले चित्र में वह पच्चीस साल का हो जाता है : वह दोपाखा कोट पहने है और एक हाथ में रेशमी हैट और दूसरे में फूलों का गुलदस्ता लिये है : 'मंगेतर'। फिर उसने दाढ़ी रख ली, लम्बा सूट पहना और गुलाबी टाई लगायी और उसे पीला लिबास पहने एक मोटी-सी औरत का हाथ पकड़े दिखाया गया। पैंतीस साल की उम्र में वह आस्तीनें चढ़ाये निहाई के पास खड़ा हथौड़ा चला रहा था। धनुष में सबसे ऊपर वाली तस्वीर में उसे लाल रंग की

आराम-कुर्सी पर बैठकर अपनी बीवी और चार बच्चों को अख़बार पढ़कर सुनाते चित्रित किया गया था। वह ख़ुद और उसके परिवार के सभी लोग अच्छे कपड़े पहने थे और सुखी और स्वस्थ दिखायी दे रहे थे। उस वक़्त वह पचास साल का था। अगली तस्वीर से उतार शुरू होता था। उस आदमी की दाढ़ी अब सफ़ेद हो चुकी थी, वह पीले रंग का लम्बा-सा काफ़्तान पहने था; उसके एक हाथ में मछली और दूसरे में सुराही थी, और उस तस्वीर का शीर्षक था : 'घरेलू काम-काज'। अगली तस्वीर में उसे अपने पोते को सुलाते हुए दिखाया गया था। उसके बाद कोई उसकी बाँह पकड़कर उसे चलने में सहारा दे रहा था, क्योंकि अब वह अस्सी साल का हो चुका था। अन्तिम चित्र में पचानवे साल की उम्र में, उसे ताबूत में पाँव लटकाये एक आराम-कुर्सी पर बैठा दिखाया गया था, और मौत हाथ में दराँती लिये उसकी कुर्सी के पीछे खड़ी थी...

इल्या को मेज़ पर बैठकर चाय पीते हुए इस तस्वीर को देखने में बड़ा मज़ा आता था, मनुष्य के जीवन को इतने स्पष्ट और साफ़-सुथरे ढंग से अलग-अलग अवस्थाओं में बाँट दिया गया था। इस चित्र से शान्ति बरसती थी और ऐसा लगता था कि उसके चटकीले रंग मुस्करा रहे हैं, मानो लोगों को आश्वासन दे रहे हों कि उनके जरिये सच्चे जीवन का चित्रण मनुष्य के सामने आदर्श रखने के उद्देश्य से बहुत बुद्धिमानी से किया गया था। उसे देखकर इल्या सोचता था कि जो कुछ वह चाहता था वह अन्ततः उसे मिल गया है और अब से उसका जीवन इस चित्र में दिखाये गये क्रम के अनुसार बीतना चाहिए। वह निरन्तर ऊपर चढ़ता जायेगा और शिखर पर पहुँचकर जब वह काफ़ी पैसा बचा लेगा तो किसी विनम्र पढ़ी-लिखी लड़की से शादी कर लेगा...

समोवार बड़े उदास भाव से सनसनाता रहता और रह-रहकर भभक उठता। खिड़की के काँच और परदे की जाली के उस पार मैले आसमान से धुँधले सितारे इल्या को घूरते रहते। सितारों की चमक में हमेशा कोई ऐसी बात होती है जो बेचैन कर देती है...

समोवार की सनसनाहट धीरे-धीरे मन्द पड़ती जाती, लेकिन साथ ही अधिक पैनी होती जाती, और उसकी बारीक आवाज़ इल्या के कानों पर लगातार ऐसा प्रहार करती रहती कि उसे झुँझलाहट होने लगती। उसकी आवाज़ मच्छर की भनभनाहट की तरह होती जो उसके विचारों के क्रम को भंग कर देती थी और उन्हें उलझा देती। फिर भी वह उसे बन्द नहीं करना चाहता था, समोवार की आवाज़ के बिना कमरे में बेहद सन्नाटा हो जाता... यहाँ अपने इस नये निवास स्थान में इल्या को एक बिल्कुल ही अनोखे अनुभव का आभास होने लगा था : अब तक वह हमेशा लोगों के बीच रहा था, उनके और उसके बीच लकड़ी की एक बहुत ही पतली-सी दीवार होती थी, अब उसके चारों ओर पत्थर की दीवारें थीं, जिनके उस पार लोगों का अस्तित्व उसके लिए

न होने के बराबर था।

"आदमी के लिए मरना क्यों ज़रूरी है?" वह तस्वीर में उस आदमी को सुख-समृद्धि के शिखर से कब्र में उतरते देखकर अचानक अपने आपसे पूछता... उसे याद आता कि याकोव हरदम मौत के बारे में सोचता रहता था, और उसे उसके ये शब्द याद आ जाते : "मर जाना कितना अच्छा होगा!"

बड़ी अरुचि से वह इस विचार को दूर हटा देता।

"मालूम नहीं कि पावेल और वेरा का क्या हाल है?" यह अगला प्रश्न था जो उसके दिमाग़ में आता।

सड़क पर कोई गाड़ी वाला अपना खटारा तेज़ी से भगाता हुआ निकल जाता। सड़क के ऊबड़-खाबड़ पत्थरों पर पहियों के आघात से खिड़की के काँच खड़खड़ाने लगते और लैम्प की लौ झिलमिला जाती। दुकान में से अजीब टूटी-टूटी-सी आवाज़ें आती रहतीं : गावरिक सोते-सोते बुड़बुड़ाता रहता। कमरे के कोनों में दुबकी हुई गहरी परछाइयाँ काँपती हुई लगने लगतीं। इल्या मेज़ पर कुहनियाँ टिकाये और दोनों हाथों में अपना सिर थामे तस्वीर को ध्यान से देखता रहता। ख़ुदा की बग़ल में एक सजीला शेर खड़ा था, ज़मीन पर एक कछुआ रेंग रहा था, कछुए के पास ही ए बिज्जू चल रहा था और मेढ़क कूद रहा था, और उन सबके ऊपर ज्ञान का वृक्ष उगा हुआ था जो ख़ून जैसे लाल रंग के बड़े-बड़े फूलों से सजा हुआ था। वह बूढ़ा आदमी, जिसने कब्र में अपने पाँव लटका रखे थे, देखने में बिल्कुल पोलुएक्तोव जैसा लगता था दुबला-पतला और गंजा, सूखी हुई सींक जैसी गर्दन वाला... सड़क की पटरी पर किसी के पोले-पोले क़दमों से चलने की आहट सुनायी देती, कोई बड़े इतमीनान से सड़क पर सामने से होकर गुजर जाता। समोवार बुझ जाता और कमरे में इतना सन्नाटा छा जाता कि ऐसा लगने लगता कि हवा जमकर, दीवारों जैसी ठोस हो गयी है।

उस सूदख़ोर के विचारों से इल्या ज़रा भी परेशान न होता, सच तो यह है कि अब वह किसी भी विचार से परेशान नहीं होता था। वे बस उसके चारों ओर बड़ी नरमी से ढीले-ढाले लिपट जाते जैसे बादल चाँद के चारों ओर लिपट जाते हैं। और उनकी वजह से 'मनुष्य के जीवन की अवस्थाएँ' के रंग फीके पड़ने लगते : उस तस्वीर पर धब्बा जैसा उभरने लगता। पोलुएक्तोव की हत्या की याद आने के बाद हर बार लुन्योव शान्त भाव से सोचने लगता कि इस संसार में कहीं न्याय तो होना चाहिए, और उसके अनुसार हर आदमी को कभी न कभी तो अपने पापों का दण्ड मिलना ही चाहिए। जब ये विचार उसके दिमाग़ में आते, वह कमरे के उस कोने में नज़रें गड़ाकर घूरने लगता जहाँ ख़ास तौर पर अँधेरा और ख़ामोशी बहुत ज़्यादा होती थी, और जहाँ परछाइयाँ कोई निश्चित आकृति धारण कर लेने का प्रयत्न करती हुई मालूम होती थीं.

.. आख़िरकार वह कपड़े उतारकर बिस्तर पर लेट जाता और बत्ती बुझा देता। वह बत्ती एकदम से नहीं बुझाता था; पहले बत्ती को बढ़ाता-घटाता, जिसकी वजह से लौ कभी भड़क उठती और कभी मन्द हो जाती और उसके पलंग के चारों ओर परछाइयाँ उछलने-कूदने लगतीं, कभी वे चारों ओर से आकर उसके पलंग पर टूट पड़तीं और कभी फिर भागकर कोने में दुबक जातीं। निश्चल लेटा हुआ वह उन अगोचर अन्धकारमय लहरों को देखता रहता जो उसे अपने अन्दर समो लेने की धमकी देती रहती थीं। कुछ देर तक वह यह खेल खेलता रहता, और फटी-फटी आँखों से अँधेरे को इस तरह टटोलता रहता मानो उस अँधेरे में आँखों से कोई चीज़ पकड़ लेने की आशा कर रहा हो... आख़िरकार रोशनी झिलमिलाकर बुझ जाती। एक क्षण के लिए सारा कमरा ऐसे अँधेरे में डूब जाता जो झूलता हुआ मालूम होता था, मानो वह रोशनी के साथ संघर्ष के बाद अभी तक अपना सन्तुलन न प्राप्त कर सका हो। फिर इस अँधेरे में से खिड़की की नीली-नीली धुँधली आकृति उभरती। अगर चाँदनी रात होती तो फर्श पर खिड़की के जंगले की परछाईं की धारियाँ बिखर जातीं। ऐसा गहरा सन्नाटा होता कि लगता मानो साँस तक लेने से कमरे की हर चीज़ थर्रा उठेगी। इल्या कम्बल अपने चारों ओर अच्छी तरह लपेट लेता, इस बात का पूरा ध्यान रखते हुए कि उसकी गर्दन ढकी रहे, और सिर्फ़ मुँह खुला रखकर, वह तब तक अँधेरे में घूरता रहता जब तक नींद आकर उसे दबोच न लेती। सवेरे जब वह सोकर उठता तो बिल्कुल शान्त और ताज़ादम होता, और रात के मूर्खतापूर्ण आचरण को याद करके वह लगभग शरमा जाता। गावरिक के साथ चाय पीकर वह अपनी दुकान का निरीक्षण करता, और हर बार उसे ऐसा लगता जैसे वह उसे पहली बार देख रहा हो।

कभी-कभी पावेल काम पर से घर लौटते हुए उससे मिलने आ जाता, उसका चेहरा कलौंस से काला होता, उसकी क़मीज़ जगह-जगह कहिये से जली होती और उस पर जहाँ-तहाँ मैल और तेल के धब्बे लगे होते थे। वह फिर किसी प्लम्बर के यहाँ काम करने लगा था और आम तौर पर अपने साथ रांगे का एक बर्तन, सीसे की कुछ नलियाँ और कई कहिये रखता था। उसे हमेशा घर वापस लौटने की जल्दी रहती थी, और अगर इल्या उससे कुछ देर रुक जाने का आग्रह करता तो वह कुछ झेंपी हुई मुस्कराहट से कहता :

"मैं रुक नहीं सकता। मुझे ऐसा लगता है कि मेरे घर पर एक चकोरी मेरा इन्तज़ार कर रही है और उसका पिंजरा बहुत मज़बूत नहीं है। सवेरे से रात तक अकेले घर पर बैठे-बैठे उसके मन में न जाने कैसे-कैसे विचार उठते होंगे? अब उसकी ज़िन्दगी बिल्कुल फीकी हो गयी है यह तो मैं अच्छी तरह जानता हूँ। अगर हम लोगों के एक बच्चा होता!" और यह कहकर वह लम्बी आह भरता।

एक दिन उसने उजड़े हुए स्वर में कहा :

"मेरे पास जितना पानी था वह सारा मैंने अपना बाग़ सींचने में लगा दिया। अगर उससे कीचड़ भी हो गयी तो क्या हुआ?"

एक और मौक़े पर इल्या ने उससे पूछा कि क्या वह अब भी कविताएँ लिखता था।

"आसमान पर खाली उंगली से लिखता हूँ," उसने बड़ी कटुता से हँसकर कहा। "भाड़ में जायें वे! हम कौन हैं कि छाल के जूते पहनकर शाही दावत की मेज़ पर बैठें? अब तो, यार, मैं बिल्कुल दीवाना हो गया हूँ। प्रेरणा की एक चिन्गारी भी बाक़ी नहीं रही रत्ती-भर नहीं। मैं तो हरदम बस उसी के बारे में सोचता रहता हूँ... पाइप की झलाई करने लगता हूँ तो उसके विचार मेरे ऊपर रांगे की तरह फैल जाते हैं... बस यह है तुम्हारी कविता हः, हः! लेकिन उस आदमी को श्रद्धा मिलती है जो किसी भी काम में तन-मन से लग जाता है... उसे बड़ी मुसीबत झेलनी पड़ रही है।"

"और तुम्हें?" इल्या ने पूछा।

"इसी वजह से मुझे भी... वह ऐश-आराम की ज़िन्दगी की आदी है, यह बात है! वह हर वक़्त पैसा होने के सपने देखती रहती है। कहती है कि बस हमारे पास अगर थोड़ा-सा पैसा होता तो सब कुछ बदल जाता... वह कहती है : 'बड़ी बुद्धू थी मैं : किसी पैसे वाले सेठ को अच्छी तरह मूँड़ना चाहिए था।' तरह-तरह की बेवक़ूफ़ी की बातें कहती रहती है वह मुझ पर तरस खाकर, मैं जानता हूँ। बड़ा कठिन समय आ पड़ा है उस पर..."

अचानक वह अपनी चिन्ता से प्रेरित होकर जल्दी से बाहर चला गया।

अक्सर इल्या से मिलने फटे-पुराने कपड़े पहने वह अधनंगा मोची भी आ जाता था, हमेशा अपनी बग़ल में अकार्डियन दबाये। वह उसे याकोव के बारे में और पेत्रूख़ा के मकान में जो कुछ होता था उसके बारे में बताता था।

एक दिन वह मैला-कुचैला, फटे कपड़े पहने वह अधनंगा दुकान के दरवाज़े से चिपककर खड़ा हो गया और मुस्कराकर अपने रोचक और मज़ाकिया शब्दों में इल्या को सारी ख़बरें बताने लगा :

"पेत्रूख़ा ने शादी कर ली है। उसकी बीवी चुकन्दर जैसी है और सौतेला बेटा बिल्कुल गाजर जैसा! सच कहता हूँ, अच्छा ख़ासा सब्ज़ियों का खेत है! उसकी बीवी नाटी और मोटी और लाल चेहरे वाली है और उसके तीन तहों वाला थोबड़ा है। ठोड़ियाँ तो तीन-तीन हैं, लेकिन मुँह फिर भी एक ही है। और आँखें बिल्कुल नस्ली सुअर जैसी हैं छोटी-छोटी जो ज़मीन से ऊपर नहीं देख पातीं। उसका बेटा दुबला-पतला और लम्बा है, उसका रंग पीला है और वह चश्मा लगाता है। पक्का साहब है! उसका नाम

साव्वा है और वह नाक के सुर में बोलता है। जब तक माँ कहीं आस-पास होती है, वह बिल्कुल सन्त बना रहता है, लेकिन जब वह नहीं होती तो बढ़-बढ़कर बातें बघारने लगता है। मानना पड़ेगा, ख़ूब जोड़ी है। और याकोव? वह तो बिल्कुल ऐसा लगता है जैसे कोई डरा-सहमा काक्रोच किसी दरार में घुस जाने की तैयारी कर रहा हो। वह चोरी-छिपे पीता है, बेचारा, और खाँस-खाँसकर अपनी जान निकाले देता है। साफ़ मालूम होता है कि उस बार उसके बाप ने उसकी हड्डी-पसली एक कर दी थी! उसकी माँ ओर उसका बाप उसे ज़िन्दा खाये जा रहे हैं। वह बड़ा नरम लड़का है अब तो वह किसी के गले में अटक भी नहीं सकता... कियेव से तुम्हारे चाचा की चिट्ठी आयी थी... मैं समझता हूँ वह बेकार इतनी मुसीबत उठा रहा है मेरी समझ में तो कोई कुबड़ा कभी स्वर्ग जाने ही नहीं दिया जायेगा!... मुटल्ली से अब बिल्कुल चला-फिरा नहीं जाता; वह एक गाड़ी में बैठकर चलती है : उसमें एक अन्धे को जोत लेती है और उसे घोड़े की तरह हाँकती रहती है। इससे ज़्यादा मज़ेदार तमाशा तुमने कभी देखा नहीं होगा! लेकिन दोनों किसी तरह अपना पेट भर लेते हैं। वह है बड़ी नेकदिल, इतना तो मैं कहूँगा उसके बारे में! अगर मेरी बीवी ख़ुद इतनी अच्छी न होती तो मैं यक़ीनन मुटल्ली से शादी कर लेता, यह बात पक्की है। मैं तुम्हें सीधी बात बताऊँ : इस धरती पर दो ही सचमुच नेक औरतें दिल वाली औरतें हुई हैं : एक मेरी बीवी और दूसरी मुटल्ली... अरे, यह तो मैं जानता हूँ कि वह शराबी है, सो तो है मुटल्ली, लेकिन सभी अच्छे लोग शराबी होते हैं..."

"माशा कैसी है?" इल्या ने पूछा।

माशा की बात छिड़ते ही मोची की बातों से सारा हँसी-मज़ाक़ और उसके चेहरे की मुस्कराहट वैसे ही गायब हो गयी जैसे पतझड़ की हवा का तेज़ झोंका पेड़ों पर से सूखी पत्तियाँ उड़ा ले जाता है। उसका पीला चेहरा फ़ौरन उतर गया और उसने धीमे, झेंपे हुए स्वर में कहा :

"मुझे उसका कुछ भी पता नहीं है... ख़्रेनोव ने मुझे चेतावनी दी है : 'अगर तुम मेरे घर के सामने से गुजरे भी तो मैं तुम्हारी हड्डी-पसली एक कर दूँगा।' इल्या याकोव्लेविच, इतनी तो मेहरबानी करो कि एक पौआ या कम से कम एक गिलास-भर जुटाने के लिए कुछ चन्दा तुम भी दे दो।"

"तुम्हारा अब कोई इलाज नहीं है, पेर्फ़ीश्का," इल्या ने उदास भाव से कहा।

"बिल्कुल ला-इलाज हो गया हूँ, हमेशा के लिए," मोची ने शान्त भाव से हामी भरी। "लेकिन जब मैं मर जाऊँगा तब बहुत-से लोग मेरी वजह से दुखी होंगे क्योंकि मैं हमेशा मस्त रहता हूँ और मुझे लोगों को हँसाना अच्छा लगता है! लोग हमेशा हाय-हाय करते रहते हैं और रोते-झींकते रहते हैं और मैं उन्हें कोई मस्ती-भरा गीत सुना

देता हूँ और हँस देता हूँ। एक कोपेक के लिए पाप करो या एक रूबल के लिए पाप करो   आख़िर में जाओगे एक ही जगह और शैतान सभी को एक तरह से तकलीफ़ें देगा... मस्त आदमी को भी इस दुनिया में रहना चाहिए...”

खिल्ली उड़ाता हुआ और हँसता हुआ वह बाहर चला जाता; देखने में वह बिल्कुल पर-नुचे मुर्गे जैसा लगता और इल्या उसे जाता देखकर मुस्करा देता और अपना सिर हिलाकर रह जाता। उसे पेर्फ़ीश्का पर तरस आता था, लेकिन वह जानता था कि इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी, और तरस खाने से उसकी मन की शान्ति भंग होती थी। अतीत अभी उसके पीछे बहुत दूर नहीं था, और उसकी हर याद से वह बेचैन हो उठता था। उसकी हालत उस आदमी जैसी थी जो थककर चूर हो जाने के बाद आख़िरकार सुख की नींद सो गया हो, और मक्खियाँ उसके कान में भनभना जाती हों और उसे आराम न करने देती हों। पावेल से बातें करते समय या पेर्फ़ीश्का की बातें सुनते समय वह मुस्कराता रहता और हमदर्दी से अपना सिर हिलाता रहता और इन्तज़ार करता रहता कि वे कब जायें। कभी-कभी पावेल उसे जो कुछ बताता उसे सुनकर वह उदास और बेचैन हो जाता, और तब वह उतावलेपन से और आग्रह करके उसे कुछ पैसे दे देता।

“मैं तुम्हारी मदद और किस तरह कर सकता हूँ?” उसने अपने कन्धे बिचकाकर एक दिन कहा। “बस यह सलाह और दे सकता हूँ : तुम्हें वेरा को छोड़ देना चाहिए...”

“नहीं छोड़ सकता,” पावेल ने धीरे से कहा। “आदमी छोड़ तो उस चीज़ को सकता है जिसकी उसे ज़रूरत न हो। मुझे उसकी ज़रूरत है। लेकिन उसे मुझसे छीन ले जाने की कोशिश की जा रही है, मुसीबत तो यही है... हो सकता है कि मेरा दिल उसे प्यार न करता हो   यह बस मेरे अपमान और मेरे गुस्से का नतीजा हो। वही तो अकेला सुख है जो मुझे जीवन में मिला है। और उसे भी मैं छोड़ दूँ? फिर मेरे पास रह ही क्या जायेगा?.. मैं उसे नहीं छोड़ूँगा, उनकी जीत होने नहीं दूँगा! उसे किसी को दे देने के बजाय मैं उसे मार डालूँगा!”

उसके सूखे चेहरे पर लाल धब्बे उभर आये और उसने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं।

“क्या तुमने किसी को देखा है जो उसके फेर में हो?” इल्या ने उससे पूछा।

“नहीं...”

“फिर तुम किसके बारे में कहते हो कि उसे तुमसे छीन लेने की कोशिश की जा रही है?”

“कोई ऐसी ताक़त है जो उसे मेरे हाथों से छीन लेना चाहती है... मेरे बाप को औरत ने ही तबाह किया और ऐसा लगता है कि मेरे नसीब में भी यही लिखा है...”

“तुम्हारी मदद किसी तरह नहीं की जा सकती है!” इल्या ने कहा और इस आभास के साथ ही उसे कुछ राहत भी मिली। उसे पावेल पर पेर्फ़ीश्का से भी ज़्यादा

तरस आता था, और जब पावेल का ग़ुस्सा भड़क उठता था तब वह भी अपने दिल में ग़ुस्सा उमड़ता हुआ महसूस करता था। लेकिन वह दुश्मन जो वार पर वार कर रहा था, वह दुश्मन जो पावेल की ज़िन्दगी को तबाह कर रहा था, कहीं दिखायी नहीं देता था; वह आँख से ओझल दुश्मन था। और लुन्योव के ग़ुस्से की भी उसी तरह कोई ज़रूरत नहीं थी जिस तरह उसके तरस खाने की कोई ज़रूरत नहीं थी या उन तमाम दूसरी भावनाओं की जो लोग उसके हृदय में जागृत करते थे। वे अनावश्यक, निरर्थक और व्यर्थ भावनाएँ थीं।

"मैं जानता हूँ कि मेरी मदद नहीं की जा सकती है..." पावेल ने अपने माथे पर बल डालकर कहा; फिर वह अपने दोस्त के चेहरे को एकटक देखते हुए बड़े आत्मविश्वास के साथ चेतावनी-भरे दृढ़ स्वर में बोला :

"तुमने अपने लिए यह एक छोटा-सा आरामदेह कोना बना लिया है और तुम यहाँ सुख-चैन से बैठे हो... लेकिन मेरी बात याद रखना : कोई रातों को जगाकर लेटे-लेटे तुम्हें यहाँ से उखाड़ फेंकने की तरकीबें सोचता रहता है। और तुम उखाड़कर फेंक दिये जाओगे, देख लेना! या फिर तुम अपने आप ही यह सब कुछ छोड़ दोगे..."

"अरे, बहुत छोड़ा मैंने!" इल्या ने हँसते हुए कहा।

लेकिन पावेल अपनी बात पर अड़ा रहा।

"छोड़ना तो पड़ेगा," वह अपने दोस्त के चेहरे को घूरकर हठ करते हुए बोला। "अँधेरे बिल में चुपचाप बैठे रहकर ज़िन्दगी बिता देना तुम्हारे बस की बात नहीं है। या तुम शराब पीने लगोगे या तुम्हारा दीवाला निकल जायेगा तुम्हें कुछ न कुछ ज़रूर हो जायेगा..."

"लेकिन क्यों?" इल्या चकित होकर चिल्ला उठा।

"बस, हो जायेगा। यह शान्त, ऐश-आराम की ज़िन्दगी तुम्हारे स्वभाव से मेल नहीं खाती... तुम नेक आदमी हो, तुम्हारे दिल है... कुछ लोग होते हैं जो ज़िन्दगी-भर तनदुरुस्त रहते हैं, और फिर अचानक टें हो जाते हैं!"

"क्या मतलब तुम्हारा, टें हो जाते हैं?"

"बस, पट से मर जाते हैं..."

इल्या हँस दिया और अपनी अकड़ी हुई मज़बूत पेशियों को ढीला करने के लिए अंगड़ाई लेकर उसने इतनी लम्बी साँस ली कि उसका पूरा सीना भर गया।

"बकवास है!" उसने कहा।

लेकिन उस दिन रात को समोवार के पास बैठे-बैठे उसे पावेल के शब्द याद आये और वह तात्याना व्लास्येव्ना के साथ अपने व्यापार के सम्बन्धों के बारे में सोचने लगा। ख़ुद अपनी दुकान खोल पाने का मौक़ा पाकर वह ख़ुशी से इतना पागल हो गया था

कि उसकी सारी शर्तें उसने मान ली थीं। और अब अचानक यह बात बिल्कुल साफ़ समझ में आने लगी थी कि उस कारोबार में हालाँकि उसने तात्याना से ज़्यादा पैसा लगाया था लेकिन उसकी हैसियत उसके साझेदार से ज़्यादा उसके कारिन्दे जैसी थी। इस बात का पता लगते ही वह हैरान और आगबबूला हो उठा।

"तो तुम मुझे अपने सीने से कसकर महज इसलिए चिपटाती हो कि मेरे जाने बिना ही तुम मेरी जेब में हाथ डाल सको?" उसने अपनी कल्पना में तात्याना से कहा। और उसी वक़्त उसने फ़ैसला किया कि वह दुकान में तात्याना का हिस्सा ख़रीद लेने के लिए अपना आख़िरी रूबल तक खर्च कर देगा और अपनी प्रेमिका से बिल्कुल नाता तोड़ लेगा। यह फैसला करने के लिए उसे कोई मेहनत नहीं करनी पड़ी। कुछ अर्से से वह महसूस करता रहा था कि उनका सम्बन्ध अनुचित था और इधर कुछ दिनों से तो उसे इस सम्बन्ध से झुँझलाहट भी होने लगी थी। वह उसके लाड़-प्यार का आदी नहीं हो पाया था, और एक बार तो उसने उससे साफ़-साफ़ कह दिया था :

"तुम बड़ी बेहया औरत हो, तात्याना..."

जवाब में वह सिर्फ़ हँस दी थी।

वह अब भी उसे अपने तबके के लोगों के बारे में तरह-तरह के क़िस्से सुनाती रहती थी; एक दिन इल्या ने अपनी राय देते हुए कहा :

"जो कुछ तुम कहती हो अगर वह सच है तो तुम्हारी यह शरीफों वाली ज़िन्दगी दो कौड़ी की भी नहीं है।"

"क्यों नहीं? बड़ा मज़ा आता है!" उसने अपने सुडौल कन्धे उचकाकर कहा।

"बहुत मज़ा तो आता ही होगा। दिन-भर नोचा-खसोटी और रात-भर भोग-विलास और व्यभिचार।"

"तुम भी कैसे भोले हो!" वह हँस दी।

और एक बार फिर जब वह उससे अपनी साफ़-सुथरी, आरामदेह शरीफाना मध्यम वर्ग की ज़िन्दगी की बातें करने लगी तो उस ज़िन्दगी की सारी गन्दगी और क्रूरता उसकी आँखों के सामने आ गयी।

"क्या तुम इसे ठीक समझती हो?" इल्या ने कहा।

"अरे, तुम भी कैसी मज़ेदार बातें करते हो! मैंने यह कब कहा कि यह ठीक है, कहा मैंने? लेकिन अगर ज़िन्दगी में यह सब न हो तो जी ऊब जाये!"

कभी-कभी वह उसे सुधारने की कोशिश करती।

"अब तुम्हें ये मोटी गाढ़े की क़मीज़ें पहनना छोड़ देना चाहिए; शरीफ इज़्ज़तदार लोग लिनेन की क़मीज़ें पहनते हैं। और मेहरबानी करके ध्यान लगाकर सुना करो कि मैं कैसे बोलती हूँ और वैसे ही बोलने की कोशिश किया करो। तुम्हें ऐसे नहीं बोलना

चाहिए कि 'हइयै नईं' और 'ऐसे कि जैसे' और 'उसे चहियेइ चहिये'। ऐसे तो सिर्फ़ गंवार बोलते हैं और तुम अब गंवार नहीं रहे।"

वह फिर वही राग अलापने लगी कि उस जैसे गंवार और उस जैसी पढ़ी-लिखी औरत में कितना अन्तर था; अक्सर वह ऐसी बातें कह देती जो इल्या को बुरी लगतीं। जब वह ओलिम्पियादा के साथ रहता था तो वह उसके प्रति घनिष्ट मित्रता अनुभव करता था। तात्याना व्लास्येव्ना के प्रति उसने ऐसा कभी अनुभव नहीं किया। यह तो वह देखता था कि वह आकर्षक ओलिम्पियादा से ज़्यादा थी, लेकिन उसके दिल में उसके लिए कोई इज़्ज़त नहीं रह गयी थी। अव्तोनोमोव-परिवार के साथ रहते हुए वह अक्सर तात्याना को सोने जाने से पहले प्रार्थना करते सुनता था।

"स्वर्ग में रहने वाले परमपिता..." एक बार पतली-सी दीवार के उस पार से उसके जल्दी-जल्दी फुसफुसाकर बोलने की आवाज़ आयी थी। "हमें आज हमारी रोज़ की रोटी देना... हमारे अपराधों को क्षमा करना... कीरिक! उठकर ज़रा रसोई का दरवाज़ा बन्द कर दो। मेरे पाँवों में ठण्डी हवा लग रही है।"

"तुम खाली फर्श पर घुटनों के बल बैठती ही क्यों हो?" कीरिक ने उनींदे स्वर में पूछा।

"बीच में न बोलो!"

और इल्या को एक बार फिर उसकी जल्दी-जल्दी फुसफुसाकर बोलने की कारोबारी आवाज़ सुनायी दी। "व्लास, निकोलाई, येव्दोकीया और मारीया की आत्माओं को शान्ति देना और तात्याना, कीरिक, सेराफ़ीमा पर अपने वरदानों की वर्षा करना..."

जिस तरह जल्दी-जल्दी वह प्रार्थना कर रही थी वह इल्या को अच्छा नहीं लगा। ज़ाहिर था कि वह सिर्फ़ इसलिए प्रार्थना कर रही थी कि आदत से मजबूर थी और इसलिए नहीं कि वह इसकी ज़रूरत महसूस करती थी।

"तात्याना, तुम ईश्वर पर विश्वास करती हो?" एक बार उसने उससे पूछा।

"यह भी कोई पूछने की बात है!" वह आश्चर्य से बोली। "करती क्यों नहीं हूँ। किसलिए पूछ रहे हो?"

"बस, योंई... हमेशा ऐसा लगता है कि तुम्हें उसे जल्दी से निबटा देने की जल्दी रहती है," इल्या ने मुस्कराकर कहा।

"एक बात तो यह कि 'योंई' नहीं बल्कि 'यों ही' कहते हैं, और दूसरी बात यह कि दिन-भर के बाद मैं इतना थक जाती हूँ कि अगर मैं थोड़ी जल्दी भी करूँ तो भगवान मुझे ज़रूर माफ़ कर देगा..." अपनी अलसायी हुई आँखें ऊपर उठाकर उसने पूरे भरोसे के साथ फिर कहा :

"वह बड़ा दयालु है; वह सब कुछ क्षमा कर देता है।"

"बस इसीलिए तो तुम लोगों को उसकी ज़रूरत है, ताकि कोई तुम्हारे पाप क्षमा कर दे," इल्या ने जलकर सोचा। उसे याद आया कि ओलिम्पियादा हमेशा चुपचाप और बड़ी देर तक प्रार्थना करती थी; वह सिर झुकाये घुटनों के बल देव-प्रतिमा के सामने ऐसे निश्चल बैठी रहती थी जैसे पत्थर की हो गयी हो, और उसके चेहरे पर व्यथा और गम्भीरता का भाव रहता था।

जब इल्या की समझ में यह बात अच्छी तरह आ गयी कि दुकान के मामले में तात्याना ने उसे धोखा दिया था, तो उसका मन उसकी ओर से लगभग बिल्कुल हट गया।

"अगर वह कोई अजनबी होती तब तो उससे ऐसी उम्मीद की जा सकती थी," उसने सोचा। "हर आदमी दूसरे का फ़ायदा उठाने की कोशिश करता है... लेकिन वह तो बिल्कुल... बिल्कुल मेरी बीवी जैसी है   मुझे चूमती है, मेरे साथ रहती है। बिल्कुल घिनौनी बिल्ली की तरह चालाक है! ऐसा तो बस रंडियाँ करती हैं और सो भी सब नहीं।" तात्याना के प्रति उसके व्यवहार में रुखाई और अविश्वास आ गया और वह उससे न मिलने के बहाने खोज निकालने लगा। लगभग इन्हीं दिनों उसकी मुलाकात एक और औरत से हुई   गावरिक की बहन से जो अक्सर अपने भाई से मिलने दुकान पर आती थी। वह लम्बी और सुडौल ज़रूर थी लेकिन खूबसूरत बिल्कुल नहीं थी। गावरिक का कहना था कि वह उन्नीस साल की थी, लेकिन इल्या का ख़्याल था कि वह देखने में इससे कहीं बड़ी लगती थी। उसका चेहरा लम्बा, पतला और पीला था। उसके चौड़े-से माथे के आर-पार महीन-महीन लकीरें पड़ी थीं, उसकी बत्तख जैसी नाक के नथुने गुस्से की वजह से फैले हुए लगते थे, और उसके छोटे-से मुँह के पतले-पतले होंठ हमेशा कसकर भिंचे रहते थे। वह बोलती तो साफ़ उच्चारण से थी, लेकिन ऐसे मानो उसका बोलने को जी न चाह रहा हो। वह तेज़ क़दमों से चलती थी और अपना सिर ऊँचा रखती थी, मानो अपनी लावण्यहीन सूरत पर इतरा रही हो। या शायद काले बालों की लम्बी-सी भारी चोटी उसके सिर को पीछे खींचती रहती थी... उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखों में कठोरता और गम्भीरता थी और कुल मिलाकर उसके नाक-नक्शे और चाल-ढाल से उसके लम्बे डील-डौल में किसी के आगे न झुकने वाले अहंकार का भाव पैदा हो गया था। इल्या उसके सामने शरमाता था; वह उसे स्वाभिमानी लगती थी, लेकिन उसे देखकर उसके मन में आदर की भावना जागृत होती थी। जब भी वह दुकान में आती थी तो वह उसे कुर्सी देकर बैठ जाने को कहता था।

"शुक्रिया," वह संक्षेप में कहती और सिर हिलाकर बैठ जाती। और जितनी देर वह वहाँ बैठी रहती थी इल्या छिपकर उसके चेहरे को (वह जितनी भी औरतों को जानता था उनके चेहरों से कितना भिन्न था उसका चेहरा) और उसके घिसे हुए कत्थई

लिबास को और पैबन्द-लगे जूतों को और पीले रंग की तिनकों की हैट को बड़े ध्यान से देखता रहता था। वहाँ बैठकर अपने भाई से बातें करते हुए वह अपने घुटने पर दाहिने हाथ की लम्बी-लम्बी उँगलियाँ जल्दी-जल्दी न सुनायी देने वाली धुन पर बजाती रहती थी। अपने बायें हाथ से वह तसमे से बँधी हुई कुछ किताबों को झुलाती रहती थी। इल्या को यह बात कुछ अजीब लगती थी कि इतने बुरे कपड़े पहनने वाली युवती इतना गुमान करे। दो-तीन मिनट वहाँ बैठने के बाद वह अपने भाई से कहती :

"अच्छा, मैं चलती हूँ। कोई शरारत न करना..."

और चुपचाप दुकान के मालिक की ओर सिर हिलाकर वह दुकान से इस तरह झपटकर बाहर निकल जाती जैसे कोई सिपाही लड़ाई के मैदान में जा रहा हो।

"तुम्हारी बहन भी बड़ी कठोर लड़की है," इल्या ने एक बार गावरिक से कहा।

गावरिक ने नाक सिकोड़ी, आँखें फाड़कर देखा और अपने होंठ बाहर की ओर निकाल लिए; वह दृढ़ संकल्प की मुद्रा की ऐसी नकल उतारने की कोशिश कर रहा था जिससे स्पष्टतः उसकी बहन के चेहरे के भाव का संकेत मिलता था।

"ऐसी है उसकी सूरत..." वह मुस्कराकर बोला। "वह बस बनती है कि वह ऐसी है।"

"क्यों करती है वह ऐसा?"

"बस, मज़ा लेने के लिए। मैं भी वैसा ही हूँ   मैं भी किसी तरह की सूरत बना सकता हूँ।"

इल्या को उससे गहरी दिलचस्पी हो गयी, और मन ही मन वह वही बात कहने लगा जो उसने कभी तात्याना व्लास्येव्ना के बारे में कही थी :

"ऐसी औरत से शादी करना अच्छा होता।"

एक दिन वह अपने साथ एक मोटी-सी किताब लायी।

"लो, यह पढ़ना," उसने किताब अपने भाई की ओर बढ़ाते हुए कहा।

"मैं देख सकता हूँ?" इल्या ने बड़ी शिष्टता से कहा।

उसने किताब अपने भाई से लेकर उसे दे दी।

"डॉन क्विक्ज़ोट," वह बोली। "यह एक ऐसे सूरमा के बारे में है जो बहुत दयालु था।"

"मैं सूरमाओं के बारे में बहुत-सी किताबें पढ़ चुका हूँ," इल्या ने उसके चेहरे पर एक नज़र डालते हुए सधी हुई मुस्कराहट के साथ कहा।

लड़की की भवें काँपने लगीं। "आपने जो पढ़ीं हैं वे परियों की कहानियाँ थीं," उसने रूखेपन से कहा। "लेकिन यह बहुत गहरी और बहुत अच्छी किताब है। इसके हीरो ने अपनी सारी ज़िन्दगी अभागे लोगों की रक्षा करने में लगा

दी उन लोगों की जो जीवन के अन्यायों के सताये हुए थे... वह हमेशा दूसरों की ख़ातिर अपनी कुर्बानी देने को तैयार रहता था। यह मज़ाकिया अन्दाज़ में लिखी गयी है; लेकिन इसकी वजह सिर्फ़ यह है कि जिस जमाने में यह लिखी गयी थी उस जमाने का तकाज़ा यही था... इसे बड़ी गम्भीरता से पढ़ा जाना चाहिए, बहुत ध्यान देकर..."

"बिल्कुल इसी तरह पढ़ेंगे हम लोग इसे," इल्या ने कहा।

यह पहला मौक़ा था कि वह लड़की उससे कुछ बोली थी। उस बात से उसे बहुत ख़ुशी हुई और वह मुस्करा दिया। लेकिन उसने उस पर एक नज़र डाली और उसी रूखे स्वर में बोली :

"मैं नहीं समझती कि आपको इसमें मज़ा आयेगा।"

और इतना कहकर वह चली गयी। इल्या को ऐसा लगा कि उसने "आपको" पर ख़ास तौर पर ज़ोर दिया था, और यह सोचकर वह चिड़चिड़ा उठा।

"अब पढ़ने का वक़्त नहीं है," उसने झिड़ककर गावरिक से कहा, जो किताब की तस्वीरें देख रहा था।

"क्यों नहीं? कोई गाहक तो है नहीं," गावरिक ने किताब बन्द किये बिना ही कहा। इल्या ने उसकी ओर देखा लेकिन कुछ कहा नहीं। वह अपने दिमाग़ में उसी बात को उलटता-पलटता रहा जो उस लड़की ने किताब के बारे में कही थी। जहाँ तक उस लड़की का सवाल था तो उसके बारे में उसकी पक्की राय बन चुकी थी :

"नकचढ़ी है!"

समय बीतता गया। इल्या काउण्टर के पीछे खड़ा अपनी मूँछें ऐंठता रहता और अपना माल बेचता रहता, लेकिन अब दिन बड़ी मुश्किल से कटने लगा था। कभी-कभी उसका जी चाहता कि दुकान में ताला डालकर कहीं टहलने निकल जाये, लेकिन यह जानते हुए कि इसका कारोबार पर बुरा असर पड़ेगा वह अपनी उमंग को दबा लेता। वह रात को भी दुकान छोड़कर कहीं नहीं जा सकता था। गावरिक को वहाँ अकेले रहते डर लगता था, और अगर न भी लगता तो भी उसे वहाँ छोड़कर जाना ख़तरे से खाली नहीं था : कहीं अचानक उससे आग न लग जाये या वह किसी चोर के लिए दरवाज़ा न खोल दे। कारोबार चल निकला था; इल्या अपनी मदद के लिए एक नौकर रख लेने की बात भी सोचने लगा था। धीरे-धीरे तात्याना व्लास्येव्ना के साथ उसका सम्बन्ध अपने आप ही ख़त्म होता गया; ऐसा लगता था कि तात्याना को भी इससे कोई आपत्ति नहीं थी। वह हँसते-हँसते रोज़ का हिसाब बड़ी संजीदगी से देखती थी।

इल्या जब उसे अपने कमरे में बैठकर गिनतारे पर गोलियाँ सरकाकर हिसाब जोड़ते हुए देखता तो वह महसूस करता कि वह चिड़िया जैसे चेहरे वाली इस औरत को बर्दाश्त नहीं कर सकता था। लेकिन कभी-कभी वह अपना खिला हुआ उल्लास-भरा चेहरा लेकर उसके पास हँसी-मज़ाक़ करती हुई आती और उससे अपना "साझेदार" कहती, और तब वह उसके जादू का शिकार हो जाता और एक बार फिर वही सब कुछ शुरू कर देता जिसे वह "सड़ा-गला सिलसिला" कहता था। कभी-कभी कीरिक वहाँ आ जाता और काउण्टर के पास कुर्सी पर टाँगें फैलाकर बैठ जाता और दुकान में आने वाली दर्ज़िनों के साथ छेड़छाड़ करता रहता। अब वह पुलिस की वर्दी छोड़कर टसर का सूट पहनने लगा था, और व्यापारी के यहाँ अपनी नयी नौकरी के बारे में डींग मारते हुए कहता था :

"साठ रूबल महीना तनख्वाह और इतनी ही ऊपर की आमदनी बुरा नहीं है, क्यों? मैं ऊपर की आमदनी हाथ-पाँव बचाकर ही करता हूँ बस वही लेता हूँ जो क़ानून के ख़िलाफ़ न हो। तुम्हें मालूम है कि हम लोगों ने अपना फ़्लैट बदल लिया है। अब हमारे पास बहुत बढ़िया नया फ़्लैट है। हमने खाना पकाने वाली भी रख ली है क्या बढ़िया खाना पकाती है वह! भगवान क़सम! पतझड़ आने पर हम अपने यहाँ मेहमान बुलाने लगेंगे, ताश खेलेंगे... मज़ा आयेगा, भाई! तफ़रीह की तफ़रीह हो जाती है और इसके अलावा जीत की आमदनी भी होती है। हम लोग दोनों खेलते हैं, मैं और मेरी बीवी, इसलिए एक तो जीतेगा ही! जीत की आमदनी से मेहमानों का खर्च निकल आता है, हः, हः! इसे कहते हैं फोकट का तमाशा।"

उसका भारी-भरकम शरीर पूरी कुर्सी को घेर लेता था; वह सिगरेट जला लेता और कश लेते हुए बीच-बीच में धीमी आवाज़ में कहता रहता :

"जानते हो, मैं अभी देहात का दौरा लगाकर लौटा हूँ। भगवान क़सम, सच कहता हूँ, क्या लड़कियाँ होती हैं वहाँ! ऐसी लाजवाब चीज़ें तो मैंने कभी देखी नहीं! जिसे कहते हैं, प्रकृति की बेटियाँ। ऐसी जानदार और गठी हुई कि चुटकी तक काटना नामुमकिन था। और सस्ती इतनी कि कुछ पूछो मत! एक बोतल शराब और एक पौण्ड का केक बस, माल अपना समझो!"

इल्या चुपचाप सुनता रहता। न जाने क्यों इल्या को कीरिक पर बड़ा तरस आता था, सहज भाव से उसके मन में उसके प्रति दया जागृत होती थी; वह यह भी नहीं जानता था कि इस मोटे, मन्द बुद्धि आदमी में कौन-सी बात ऐसी थी जो उसके मन में दया जागृत करती थी। लेकिन फिर उसका जी उस पर हँसने को भी चाहता था। कीरिक अपनी विजयों के जो क़िस्से उसे सुनाता था उन पर वह विश्वास नहीं करता था। उसे यक़ीन था कि वह कोरी डींग हाँकता था, किसी दूसरे के कहे हुए शब्दों को

अपना लेता था। जब कीरिक अपनी लम्बी-चौड़ी दास्तान शुरू करता उस समय अगर इल्या किसी बात पर चिढ़ा हुआ होता तो वह मन ही मन बुदबुदाकर कहता :

"शेख़ीख़ोर कहीं का!"

"अहा, भाई, प्रकृति की गोद में, जैसा कि कविताओं में लिखा जाता है, चेसनट के छतनार पेड़ तले प्यार करने का अलग ही मज़ा है।"

"अगर तात्याना व्लास्येव्ना को पता चल जाये तो?" इल्या ने पूछा।

"वह पता लगाना ही नहीं चाहेगी," कीरिक ने मक्कारी से आँख मारकर कहा। "वह अच्छी तरह जानती है कि उसके लिए इस बात को न जानना ही अच्छा है। स्वभाव से ही मर्द की हालत मुर्गे जैसी होती है... लेकिन अपनी कहो, मेरे दोस्त? तुम्हारी कोई माशूक़ा नहीं है?"

"है तो," इल्या ने हँसकर कहा।

"कोई दर्ज़िन है, क्यों? ख़ूबसूरत, छोटी-सी, साँवली-सलोनी, भूरे बालों वाली?"

"नहीं, दर्ज़िन नहीं है..."

"खाना पकाने वाली? यह भी बहुत अच्छी बात है कैसी मोटी-मोटी और रसीली होती हैं वे!"

हँसते-हँसते इल्या के गालों पर आँसू ढलकने लगे, और उसके इस तरह हँसने से कीरिक को यक़ीन हो गया कि वह खाना पकाने वाली ही होगी।

"जल्दी-जल्दी बदलते रहा करो उन्हें," कीरिक ने बहुत बड़े पारखी के स्वर में उसे सलाह दी।

"आपको यह क्यों खयाल हुआ कि वह दर्ज़िन या खाना पकाने वाली ही होगी? क्या मैं इससे अच्छी किसी औरत के लायक़ नहीं हूँ?" इल्या ने हँसी के ठहाकों के बीच में पूछा।

"वे तुम्हारी हैसियत के लायक़ हैं, भाई। बहरहाल, तुम यह तो उम्मीद नहीं कर सकते कि किसी शरीफ घराने की लड़की या ब्याहता औरत से तुम्हारा मामला होगा, है न?"

"क्यों नहीं?"

"बिल्कुल साफ़ बात है। मैं तुम्हारा दिल नहीं दुखाना चाहता, लेकिन... बात यह है तुम सीधे-सादे आदमी हो... देहाती..."

"लेकिन मेरी वाली... मेरी वाली तो रईसज़ादी है," इल्या ने कहा; हँसी के मारे उसका गला रुँधा जा रहा था।

"तुम्हें भी मज़ाक़ करने में मज़ा आता है!" कीरिक ने ख़ुश होकर कहा और वह भी हँस पड़ा।

लेकिन उसके चले जाने के बाद इल्या उसकी कही हुई बातों के बारे में सोचने लगा और उसे बहुत बुरा लगा। उसकी समझ में यह बात साफ़-साफ़ आ रही थी कीरिक स्वभाव से कितना ही अच्छा क्यों न हो, वह अपने आपको इल्या के स्तर पर नहीं रखता था; वह अपने आपको ज़्यादा ऊँचा और बेहतर समझता था, फिर भी वह और उसकी बीवी इल्या फ़ायदा उठा रहे थे।

पेर्फ़ीश्का की ज़बानी उसने सुना था कि पेत्रूख़ा उसके कारोबार का मज़ाक़ उड़ाता था और उसे ठग कहता था... याकोव ने भी मोची को बताया था कि इल्या पहले ज़्यादा अच्छा था ज़्यादा हमदर्द था और उसमें इतना घमण्ड नहीं था। गावरिक की बहन भी हरदम यही जताती रहती थी कि वह उसके बराबर का नहीं था। चीथड़ों जैसे कपड़े पहनने वाली वह डाकिये की बेटी उसे ऐसे देखती थी जैसे उसे एक ही धरती पर उसके साथ रहना भी अच्छा न लगता हो। इल्या ने जब से ख़ुद अपनी दुकान खोल ली थी तब से उसका स्वाभिमान बढ़ गया था और उसे इस बात का बहुत खयाल रहने लगा था कि लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं। और इस लड़की में उसकी दिलचस्पी दिन-ब-दिन बढ़ने लगी थी, जो ख़ूबसूरत न होने पर भी दूसरी लड़कियों से इतनी अलग थी; वह यह बात समझना चाहता था कि उसकी जैसी ग़रीब लड़की में इतना अहंकार कैसे पैदा हुआ कि वह तक उसका रोब मानने लगा था। वह कभी उससे बोलने में पहल नहीं करती थी और इस बात से उसे झुँझलाहट होती थी। आख़िर, उसका भाई उसके यहाँ नौकर था, और सिर्फ़ इसी वजह से उसे उसके साथ, अपने भाई के मालिक के साथ ज़्यादा अदब से पेश आना चाहिए।

एक दिन वह उससे बोला, "मैं डॉन क्विक्जोट के बारे में तुम्हारी वह किताब पढ़ रहा हूँ।"

"अच्छी लग रही है?" उसने नज़रें उठाये बिना ही पूछा।

"बहुत ज़्यादा! बहुत ही मज़ेदार है। क्या अजीब आदमी था वह भी!"

इल्या को ऐसा लगा कि उसकी अभिमान-भरी काली-काली आँखों से निकलकर घृणा की एक छुरी उसके कलेजे के पार उतर गयी।

"मैं जानती थी कि आप ऐसी ही कोई बात कहेंगे," उसने धीरे-धीरे और शब्दों का उच्चारण साफ़-साफ़ करते हुए कहा।

उसका स्वर गहरी चोट करने वाला और शत्रुतापूर्ण लग रहा था।

"मैं तो निरा जाहिल ठहरा," उसने अपने कन्धे बिचकाकर कहा।

लड़की ने उसकी इस बात की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

और एक बार फिर इल्या की आत्मा पर वही भावना छा गयी जो बहुत दिन से दबी हुई थी हर इन्सान से नफ़रत की वह भावना। वह जीवन के अन्यायों के बारे

में, अपने अपराध के बारे में, और अपने अंजाम के बारे में देर तक और गहराई से सोचता रहता था। कहीं उसे हमेशा ऐसे ही तो नहीं रहना पड़ेगा : ज़िन्दगी-भर सुबह से रात तक वह दुकान पर खड़ा रहेगा, और फिर सोने के लिए बिस्तर पर लेटने से पहले तक अपने विचारों में डूबा हुआ समोवार के पास बैठा रहेगा, और सुबह उठकर फिर अपनी उसी पुरानी जगह पर पहुँच जायेगा? वह जानता था कि ज़्यादातर दुकानदार, शायद सभी, यही करते थे, लेकिन उसकी अपनी बाहरी और भीतरी ज़िन्दगी के कुछ लक्षण ऐसे थे जिनकी वजह से वह अपने आपको निराला आदमी समझता था, आम क़िस्म के लोगों से अलग। उसको याद था कि याकोव ने उसके बारे में क्या कहा था, "भगवान न करे कि तुम्हारे पास हो। तुम लालची हो।" उसे उसके ये शब्द बहुत बेजा लगते थे। वह लालची नहीं था वह तो बस साफ़-सुथरी और शान्त ज़िन्दगी बिताना चाहता था, बस यह चाहता था कि दूसरे लोग उसकी इज़्ज़त करें, बस इतना चाहता था कि कोई उसे हर क़दम पर यह याद न दिलाये, "मैं तुमसे बेहतर हूँ, इल्या लुन्योव; मैं तुमसे बढ़कर हूँ..."

और एक बार फिर वह सोचने लगा कि उसका अंजाम क्या होगा : क्या उसे अपने अपराध के लिए जवाब देना होगा? कभी-कभी उसे लगता था कि अगर उसे ऐसा करना पड़ा तो वह अनुचित होगा। शहर में कितने हत्यारे, कितने व्यभिचारी और कितने धोखेबाज भरे पड़े हैं; हर आदमी को मालूम है कि वे जान-बूझकर हत्या करते हैं, व्यभिचार करते हैं और धोखा देते हैं, फिर भी वे जीवन के सारे सुख भोगते रहते हैं और उन्हें कभी कोई दण्ड नहीं दिया जाता। न्याय का तकाज़ा तो यह है कि हर अपराधी को उसके अपराध के लिए दण्ड दिया जाये। जैसा कि बाइबिल में कहा गया है : "भगवान उसका दण्ड खुद उसे दे, ताकि उसे मालूम हो।" इन विचारों से उसके दिल के पुराने घाव फिर हरे हो जाते, और वह अपने बिखरते हुए जीवन का बदला लेने की प्रबल इच्छा से भर उठता। कभी-कभी ऐसा भी होता कि उसका बेहद जी चाहता कि कोई भयानक काम कर बैठे : पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव के घर को आग लगा दे, और जब लोग भागे हुए आयें तो वह चिल्लाकर कहे :

"मैंने किया है यह! और पोलुएक्तोव की हत्या भी मैंने ही की थी!"

वह पकड़ लिया जायेगा, उस पर मुकदमा चलेगा, और उसे साइबेरिया भेज दिया जायेगा, जैसे उसके बाप को भेज दिया गया था... इस सम्भावना का ध्यान आते ही वह भड़क उठता और अपने आप पर अंकुश लगाते हुए बदला लेने के अपने सपनों में कुछ परिवर्तन कर लेता : वह सिर्फ़ कीरिक को यह बता देगा कि वह उसकी बीवी के साथ रहता है, या शायद इससे भी अच्छा यह होगा कि माशा को सताने का मज़ा चखाने के लिए वह बूढ़े ख्रेनोव की पिटाई कर दे...

बिस्तर पर लेटे-लेटे जब वह अँधेरे में घूरता रहता और निस्तब्धता के स्वर सुनता रहता, तो उसे ऐसा लगता कि जैसे अचानक हर चीज़ हिल उठेगी और ढह जायेगी और एक तूफानी बवण्डर में चक्कर काटने लगेगी और उससे बेहद शोर और हंगामा पैदा होगा। और इसी बवण्डर में वह ख़ुद भी फँस जायेगा और उसमें चक्कर काटते-काटते मर जायेगा... और वह किसी असाधारण घटना के पूर्वाभास से सिहर उठता...

एक दिन शाम को जब वह दुकान बन्द करने जा रहा था तो पावेल आया और उसने दुआ-सलाम किये बिना ही शान्त भाव से कहा :

“वेरा भाग गयी...”

वह काउण्टर पर अपनी कुहनियाँ टिकाकर कुर्सी पर बैठ गया, और एकटक सड़क की ओर देखते हुए धीरे-धीरे सीटी बजाने लगा। उसका चेहरा भावशून्य होकर बिल्कुल मुखौटे जैसा हो गया था, लेकिन उसकी छोटी-सी भूरी मूँछें बिल्ली की मूँछों की तरह फड़क रही थीं।

“अकेले या किसी के साथ?”

“मालूम नहीं... उसे गये तीन दिन हो गये...”

इल्या चुपचाप उसे देखता रहा। अपने दोस्त के भावशून्य चेहरे और उसकी शान्त आवाज़ से उसके लिए यह अनुमान लगाना असम्भव था कि अपनी बीवी के भाग जाने का उस पर क्या असर हुआ था। लेकिन उसे पावेल की इस शान्त मुद्रा के पीछे किसी अटल निश्चय का आभास मिल रहा था।

“अब तुम क्या करने वाले हो?” जब उसने देखा कि पावेल कुछ भी कहने वाला नहीं है तो उसने शान्त भाव से पूछा। इस पर पावेल ने सीटी बजाना बन्द कर दिया और अपना सिर तक घुमाये बिना संक्षेप में घोषणा की :

“उसे मार डालूँगा।”

“फिर वही पुराना राग अलापने लगे!” इल्या ने बड़ी अरुचि से हाथ हिलाकर कहा।

“उसकी वजह से मैंने अपना दिल छलनी कर डाला है,” पावेल ने धीरे से कहा। “यह रहा चाकू।”

उसने रोटी काटने का एक छोटा-सा चाकू अपनी क़मीज़ के अन्दर से निकाला और उसे अपनी नाक के सामने नचाने लगा।

“मैं उसका गला काट दूँगा...”

इल्या ने चाकू उसके हाथ से छीनकर काउण्टर के पीछे फेंक दिया।

“तलवार से सुई का काम लेने चले हो,” उसने चिढ़कर कहा।

पावेल कुर्सी पर से उछलकर खड़ा हो गया और तेज़ी से पलटकर उसके सामने आ गया। उसकी आँखों से लपटें निकल रही थीं, उसका चेहरा विकृत हो गया था और उसका सारा शरीर थर-थर काँप रहा था। लेकिन अगले ही क्षण वह फिर कुर्सी पर बैठ गया।

"तुम बड़े बेवकू फ़ हो!" वह तिरस्कार से बोला।

"तुम तो बड़े समझदार हो!"

"तलवार क्या चीज़ है मेरे पास अपने हाथ भी तो हैं।"

"हाँ!"

"और अगर मेरे हाथ कटकर गिर भी पड़ें तो मैं अपने दाँतों से उसकी गर्दन दबोच लूँ।"

"कैसा खौफ़नाक जानवर है!"

"रहने दो, इल्या," कुछ देर रुककर पावेल ने फिर शान्त भाव से धीरे से कहा। "तुम मेरी बात का यक़ीन करो न करो, तुम्हारी मर्ज़ी, लेकिन मुझे तंग न करो। मुझे मेरा नसीब काफ़ी तंग कर चुका है..."

"लेकिन, अरे नासमझ, सोचो तो कि तुम कह क्या रहे हो," इल्या ने नरमी से कहा।

"मैंने सोच लिया है। लेकिन अब मुझे चलना चाहिए। तुमसे मैं कह ही क्या सकता हूँ? तुम्हारा पेट भरा हुआ है... तुम मुझे समझ नहीं सकते..."

"यह बकवास अपने दिमाग़ से निकाल दो," इल्या झिड़कते हुए चिल्लाया।

"मैं भूखा हूँ मेरी आत्मा भी और मेरा शरीर भी।"

"कमाल है कि लोग चीज़ों को किस तरह देखते हैं!" इल्या ने कन्धे उचकाकर कहा। "औरत को पालतू जानवर समझते हैं घोड़े जैसी कोई चीज़! ढोकर ले चलेगी? अच्छी बात है, मैं तुझे नहीं मारूँगा। मुझे ढोने से इनकार करती है? तेरे सिर पर ऐसा कोड़ा पड़ेगा धड़! लेकिन औरत भी इन्सान होती है और उसका ख़ुद अपना स्वभाव होता है।"

पावेल ने एक नज़र उसे देखा और भर्राई हुई हँसी हँस दिया।

"और मैं? मैं इन्सान नहीं हूँ?"

"पर क्या तुम्हें इंसाफ़ करना चाहिए या नहीं करना चाहिए?"

"भाड़ में जाये तुम्हारा इंसाफ़!" पावेल ग़ुस्से से चिल्लाया और कुर्सी पर से उछलकर खड़ा हो गया। "तुम्हारे लिए इंसाफ़ से काम लेना बहुत आसान है; तुम्हारा पेट भरा है न... समझे? अच्छा, मैं चला..."

और यह कहकर वह तेज़ी से दुकान के बाहर निकल गया और दरवाज़े के पास

पहुँचकर जाने क्यों उसने अपनी टोपी उठा ली। इल्या झपटकर काउण्टर के पीछे से बाहर आया और उसके पीछे लपका, लेकिन पावेल बड़ी उत्तेजना से अपनी टोपी झुलात हुआ सड़क पर बहुत आगे निकल चुका था।

"पावेल!" इल्या ने पुकारा। "ठहरो!"

लेकिन वह नहीं रुका। उसने पीछे मुड़कर देखा तक नहीं, और मिनट-भर में वह एक नुक्कड़ पर मुड़कर आँखों से ओझल हो चुका था। इल्या धीरे-धीरे चलता हुआ फिर काउण्टर के पीछे पहुँच गया; उसे इस बात का पूरा आभास था कि अपने साथी के शब्द सुनकर उसके गाल इतने तमतमा उठे थे मानो वह दहकती हुई भट्टी में झाँक रहा हो।

"बड़ा ग़ुस्सैल आदमी है, सचमुच!" गावरिक की आवाज़ आयी।

इल्या हँस दिया।

"किसे चाकू मारने वाला हैं?" गावरिक ने काउण्टर के पीछे आकर पूछा। उसने अपने दोनों हाथ पीठ के पीछे बाँध रखे थे, उसका सिर पीछे की ओर झुका हुआ था, और चेचक के दाग़ों से भरा हुआ उसका चेहरा तमतमा उठा था।

"अपनी बीवी को," इल्या ने एक नज़र उस लड़के पर डालकर कहा।

गावरिक एक क्षण तक चुप रहा; फिर मानो बड़ी कोशिश करते हुए उसने अपने मालिक से बहुत धीमे और विचारमग्न स्वर में कहा :

"क्रिसमस के दिन हमारी पड़ोसिन ने अपने पति को सँखिया खिला दी थी... वह दर्ज़ी था..."

"लोग करते हैं, कभी-कभी..." इल्या ने उसकी बात की ओर ध्यान दिये बिना ही कहा; वह पावेल के बारे में सोच रहा था।

"यह आदमी... क्या यह सचमुच उसे चाकू मार देगा?"

"चुप भी रहो, गावरिक!"

लड़का मुड़कर दरवाज़े की ओर चल दिया और चलते-चलते बुड़बुड़ाता रहा :

"ये कमबख़्त शादी ही क्यों करते हैं?"

सड़क पर झुटपुटा फैलता जा रहा था और सामने वाले घर की खिड़कियों में बत्तियाँ जल गयी थीं।

"दुकान बन्द करने का वक़्त हो गया," गावरिक ने धीरे से कहा।

इल्या उन खिड़कियों की ओर घूरने लगा जिनमें रोशनी हो रही थी। उनका निचला हिस्सा पौधों के गमलों और ऊपर का हिस्सा सफ़ेद परदों से ढका हुआ था। पौधों की पत्तियों के बीच से दीवार पर लटकी हुई एक तस्वीर के सुनहरे फ्रेम की झलक दिखाई देती थी। जब खिड़कियाँ खुली होती थीं तो गिटार बजने की, लोगों के गाने

की और ज़ोर से हँसने की आवाज़ें साफ़ सुनायी देती थीं। लगभग रोज़ ही शाम को लोग उस घर में गाते थे, हँसते थे और गिटार बजाते थे। इल्या जानता था कि उस घर में सर्किट कोर्ट का एक जज रहता था जिसका नाम ग्रोमोव था स्थूल शरीर का लाल-लाल गालों वाला आदमी, जिसके काले रंग की बड़ी-बड़ी मूँछें थीं। उसकी बीवी भी गठे हुए शरीर की थी, उसके बाल सुनहरे और आँखें नीली थीं। जब वह सड़क पर चलती थी तो ऐसे इठलाकर कि लगता था कि परियों की कहानी में से कोई रानी निकल आयी है, और लोगों से बात करते वक़्त वह हमेशा मुस्कराती रहती थी। ग्रोमोव की एक शादी करने की उम्र की बहन थी काले बालों और साँवले रंग की एक लम्बी-सी लड़की, जिसे हमेशा नौजवान अफ़सर घेरे रहते थे। यही लोग थे जो लगभग हर शाम को वहाँ हँसते-गाते रहते थे।

"सचमुच दुकान बन्द करने का वक़्त हो गया है," गावरिक ने आग्रह से कहा।

"तो बन्द कर दो।"

लड़के ने दरवाज़ा बन्द कर दिया और ताले में चाभी घुमा दी; दुकान में अँधेरा छा गया।

"बिल्कुल जेल जैसा लगता है," इल्या ने सोचा।

पावेल ने उसका पेट भरा होने की जो बात कही थी वह उसके दिल में नासूर बनकर रह गयी थी। समोवार के पास बैठे-बैठे उसके मन में पावेल के प्रति बहुत द्वेष उमड़ रहा था, और उसे विश्वास नहीं था कि पावेल वेरा को चाकू मार सकता है।

"फिर भी मैंने बेकार उसका पक्ष लिया," उसने कटुता से सोचा। "भाड़ में जायँ वे दोनों! ख़ुद मुसीबत में रहते हैं और दूसरों को मुसीबत में डालते हैं।"

गावरिक तश्तरी में से चाय सुड़प-सुड़प करके पी रहा था और फ़र्श पर अपने पाँव रगड़ रहा था।

"क्या उसने अब तक उसे चाकू मार दिया होगा?" उसने अचानक अपने मालिक से पूछा।

इल्या ने उदास भाव से घूरकर देखा।

"तुम चाय पीकर सो जाओ," वह बोला।

समोवार इस तरह सनसना रहा था और गरज रहा था कि जैसे अभी मेज़ पर से कूद पड़ेगा।

अचानक खिड़की में एक काली छाया दिखाई दी और किसी ने डरी-डरी-काँपती हुई आवाज़ में पूछा :

"इल्या याकोव्लेविच का घर यही है?"

"हाँ," गावरिक ने ज़ोर से कहा, और इससे पहले कि इल्या एक शब्द भी कह

पाता वह कुर्सी पर से उछलकर दरवाज़ा खोलने चल दिया था।

दरवाज़े में सिर पर रूमाल बाँधे एक औरत की दुबली-पतली आकृति दिखाई दी। एक हाथ से वह दरवाज़े की चौखट पकड़े थी और दूसरे हाथ से अपने रूमाल का छोर मरोड़ रही थी। वह बग़ल की ओर मुड़ी खड़ी थी, मानो भाग जाने को तैयार हो।

"अन्दर आ जाइये," इल्या ने सख़्ती से कहा; वह उसे पहचान नहीं सका था।

वह उसकी आवाज़ सुनकर चौंक पड़ी और उसने अपना सिर ऊपर उठाया, और उसके छोटे पीले चेहरे पर मुस्कराहट की चमक दौड़ गयी।

"माशा!" इल्या ने उछलकर खड़े होते हुए कहा।

वह धीरे से हँसकर उसकी ओर बढ़ी।

"तुमने... आपने मुझे पहचाना भी नहीं," उसने कमरे के बीच में ठिठककर कहा।

"हे भगवान! पहचानता भी कैसे! तुम तो देखने में..."

ज़रूरत से ज़्यादा शिष्टता से उसकी बाँह पकड़कर इल्या उसे मेज़ की ओर लाते हुए झुककर उसे अच्छी तरह देखने की कोशिश कर रहा था; उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि उसे बता दे कि वह कैसी लग रही थी। वह बेहद दुबली हो गयी थी और चलती थी तो ऐसा लगता था कि उसकी टाँगें अभी जवाब दे जायेंगी।

"तो यह... तो यह हाल हो गया है तुम्हारा!" उसने बड़े प्यार से उसे कुर्सी पर बिठाकर उसके चेहरे को ध्यान से देखते हुए बुदबुदाकर कहा।

"देखो क्या हो गयी हूँ मैं..." वह इल्या की आँखों में आँखें डालकर बोली।

अब चूँकि उस पर लैम्प की रोशनी पड़ रही थी, इल्या उसे अच्छी तरह देख सकता था। वह पीछे सहारा लगाकर बैठी थी, उसकी पतली-पतली बाँहें दोनों ओर झूल रही थीं, सिर एक ओर को लटक गया था, और उसका सपाट सीना जल्दी-जल्दी उभरता था और फिर बैठ जाता था। उसके शरीर पर कहीं मांस दिखायी भी नहीं देता था, जैसे वह सिर्फ़ हड्डियों की बनी हुई हो। उसके कन्धों, कुहनियों और घुटनों के नुकीले उभार उसकी सूती फ्राक की सिलवटों में साफ़ दिखाई देते थे, और उसका सूखा हुआ दुबला-पतला चेहरा देखकर डर लगता था। उसकी खाल में एक नीलापन आ गया था और उसकी कनपटियों, गालों की हड्डियों और ठोड़ी पर वह बिल्कुल कसकर मढ़ी हुई लगती थी; मुँह बीमारों की तरह खुला रहता था, पतले-पतले होंठ दाँतों को ढक नहीं पाते थे, और उसके छोटे-से लम्बोतरे चेहरे पर निरन्तर व्यथा का भाव बना रहता था। उसकी आँखों में कोई जान या चमक नहीं थी।

"क्या बीमार थीं?" इल्या ने नरमी से पूछा।

"न-हीं," वह बोली। "बिल्कुल ठीक हूँ। यह सब उसका किया-धरा है।"

धीमे स्वर में खींच-खींचकर बोले गये उसके शब्द कराहने की आवाज़ जैसे लगते थे और उसके खुले हुए दाँतों की वजह से उसकी सूरत कुछ-कुछ मछली जैसी लगती थी।

गावरिक उसकी बग़ल में खड़ा अपने होंठ कसकर भींचे भयभीत आँखों से उसे घूर रहा था।

"जाओ, सो जाओ!" इल्या ने उससे कहा।

लड़का दुकान में चला गया, एक-दो मिनट तक वहाँ कुछ करता रहा और फिर दरवाज़े में से सिर निकालकर झाँकने लगा।

माशा बिल्कुल निश्चल बैठी थी, बस उसकी आँखें हिल-डुल रही थीं और बड़ी मुश्किल से एक चीज़ से दूसरी चीज़ तक जा पाती थीं। इल्या ने उसके लिए एक प्याली में चाय उँडेली और उसे ध्यान से देखता रहा, लेकिन उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि कहे क्या।

"वह मुझे सता-सताकर मार डालेगा..." वह बोली। उसके होंठ काँप रहे थे और एक सेकण्ड के लिए उसने अपनी आँखें बन्द कर ली थीं। जब उसने आँखें खोलीं तो पलकों के नीचे से बड़े-बड़े आँसू ढलक आये।

"रोओ नहीं..." इल्या ने अपनी नज़रें दूसरी ओर फेरकर कहा। "थोड़ी-सी चाय पी लो और मुझे सब कुछ बता दो। तुम्हारा जी हल्का हो जायेगा..."

"मुझे डर लगता है कि वह मेरा पता लगा लेगा," वह सिर हिलाते हुए बोली।

"क्या तुम उसे छोड़कर चली आयी हो?"

"हाँ। चौथी बार। जब भी मुझसे और ज़्यादा बर्दाश्त नहीं होता मैं भाग जाती हूँ। पिछली बार मैं कुएँ में कूद जाना चाहती थी... लेकिन उसने मुझे पकड़ लिया... कितना मारा था उसने मुझे! कैसी-कैसी तकलीफ़ें दी थीं!"

उसकी आँखें डर के मारे फट गयीं और उसकी ठोड़ी काँपने लगी।

"वह मेरी टाँगें मरोड़ता रहता है।"

"हाय रे! तुम यह सब कुछ सहती क्यों हो?" इल्या ने चिल्लाकर कहा। "तुम पुलिस में उसकी शिकायत क्यों नहीं कर देतीं कह दो कि वह तुम्हें सताता है! इसकी सज़ा में लोगों को जेल भेज दिया जाता है।"

"उसे नहीं भेजा जायेगा। वह ख़ुद जज है," माशा ने निराश भाव से कहा।

"कौन, ख़्रेनोव? नहीं तो, वह जज तो नहीं है।"

"अरे, है कैसे नहीं। अभी कुछ ही दिन पहले की तो बात है, दो हफ़्ते तक लगातार वह अदालत में बैठा था... न जाने कितने लोगों को उसने सज़ा सुना दी घर आता था तो भूख से बेहाल और सूरत बिगड़ी हुई मेरी छातियों को समोवार के चिमटे

से पकड़कर उन्हें कसकर दबाता था और मरोड़ता था। यह देखो।"

काँपती हुई उँगलियों से उसने अपने बटन खोले और इल्या को अपनी छोटी-छोटी लटकी हुई ढीली छातियाँ दिखाईं जिन पर जगह-जगह काले धब्बे थे जैसे किसी ने उन्हें चबाया हो।

"बटन लगा लो," इल्या ने उदास स्वर में कहा। उसके क्षत-विक्षत कृषकाय शरीर को देखकर अरुचि होती थी। उसे किसी तरह यक़ीन नहीं आता था कि उसके सामने वही हँसमुख माशा बैठी थी, उसकी बचपन की दोस्त।

"और उसने मुझे कन्धों पर इतनी बुरी तरह मारा कि क्या बताऊँ!" वह अपने कन्धों पर से कपड़ा सरकाते हुए सपाट स्वर में कह रही थी। "और मेरे बाक़ी शरीर का भी यही हाल है। उसने मेरे सारे जिस्म पर चुटकियाँ काटीं और मेरी बग़लों के बाल नोच डाले।"

"लेकिन किसलिए?" इल्या ने पूछा।

"'तुम मुझसे प्यार नहीं करतीं?' वह कहता है, और चुटकियाँ काटता है।"

"हो सकता है कि तुम... जब उसके पास गयी थी तब तुम कुँआरी नहीं थीं?"

"तुम ऐसी बात कैसे सोच सकते हो? हर वक़्त तो मैं तुम्हारे और याकोव के साथ रहती थी और कोई आदमी कभी मुझे छू भी नहीं पाता था। और अब तो मैं किसी काम की भी नहीं हूँ... तकलीफ़ होती है और घिन आती है... मतली होने लगती है..."

"चुप रहो, माशा," इल्या ने धीरे से कहा।

वह चुप हो गयी और अपनी छातियाँ खोले चेहरे पर स्तब्धता का भाव लिए बैठी रही।

समोवार के पीछे से इल्या ने उसके क्षीण, क्षत-विक्षत शरीर को देखा और फिर बोला :

"बटन लगा लो..."

"मुझे तुमसे कोई शरम नहीं आती है," उसने काँपती उँगलियों से बटन लगाते हुए इतनी धीमी आवाज़ में कहा कि सुनना भी मुश्किल था।

कमरे में मौत का सा सन्नाटा था। अचानक दुकान में से किसी की ज़ोर-ज़ोर से सूँ-सूँ करने की आवाज़ आयी। इल्या उठकर दरवाज़ा बन्द कर देने के लिए बढ़ा।

"बन्द करो यह, गावरिक," उसने उदास स्वर में कहा।

"क्या वह लड़का था?" माशा ने पूछा। "क्या हुआ है उसे?"

"रो रहा है..."

"डर लगता है?"

"नहीं। मैं समझता हूँ दुखी हो गया है।"

"किसके लिए?"

"तुम्हारे लिए..."

"अच्छा!" माशा ने उदासीन भाव से कहा; उसके मुखौटे जैसे चेहरे के भाव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वह चाय पीने लगी; उसके हाथ काँप रहे थे जिसकी वजह से तश्तरी बार-बार उसके दाँतों से टकरा जाती थी। समोवार के पीछे से उसे ध्यान से देखते हुए इल्या यह फ़ैसला नहीं कर पा रहा था कि उसे माशा पर तरस आ रहा था कि नहीं।

"अब तुम्हारा क्या करने का इरादा है?" बड़ी देर तक चुप रहने के बाद इल्या ने पूछा।

"मालूम नहीं," वह आह भरकर बोली। "मुझे क्या करना चाहिए?"

"शिकायत लिखवा दो," इल्या ने निश्चयपूर्वक कहा।

"वह अपनी पहली बीवी के साथ भी ऐसा ही सलूक करता था," माशा ने कहा। "वह उसे बालों से चारपाई से बाँध देता था और उसके शरीर पर चुटकियाँ काटता था बिल्कुल वैसे ही जैसे मेरे साथ करता है। एक बार मैं सो रही थी कि अचानक मैंने दर्द महसूस किया... मैं जाग पड़ी और चिल्लाने लगी... उसने माचिस जलाकर मेरे पेट पर रख दी थी..."

इल्या उछलकर खड़ा हो गया और बेहद ग़ुस्से से चिल्लाया कि उसे अगले ही दिन पुलिस में जाकर अपने घाव दिखाने चाहिए और माँग करनी चाहिए कि उसके पति पर मुक़दमा चलाया जाये। जब वह बोल रहा था तो माशा तिलमिलाकर अपने चारों ओर सहमी-सहमी नज़रों से देख रही थी।

"मेहरबानी करके चिल्लाओ नहीं!" वह बोली। "कोई तुम्हारी आवाज़ सुन लेगा..."

इल्या ने देखा कि उसके शब्दों का उस पर डरने के अलावा और कोई असर नहीं हो रहा था।

"अच्छी बात है," उसने फिर बैठते हुए कहा। "मैं ख़ुद यह काम करूँगा। माशा, तुम रात को यहीं रहो। तुम मेरे पलंग पर सो जाना, मैं दुकान में सो जाऊँगा।"

"मैं लेटना तो चाहती हूँ... बहुत थक गयी हूँ..." वह बोली।

धीरे से उसने मेज़ पलंग के पास से खिसका दिया। माशा लेट गयी और उसने कम्बल ओढ़ने की कोशिश की, लेकिन इतना भी कर पाना उसके बस के बाहर था।

"मैं अजीब लगती हूँ न, जैसे मैं नशे में हूँ," उसने धीरे से मुस्कराकर कहा।

इल्या ने कम्बल उसे ओढ़ाकर चारों ओर से उसके नीचे दबा दिया और तकिया उसके सिर के नीचे ठीक किया। वह बाहर जाने ही को था कि माशा ने चिन्तित स्वर

में कहा :

"जाओ नहीं। मुझे अकेले डर लगता है... मुझे न जाने क्या-क्या दिखाई देता रहता है।"

वह उसके पास कुर्सी पर बैठ गया, लेकिन माशा के काले घुँघराले बालों के घेरे में उसका सफ़ेद चेहरा देखकर उसने मुँह फेर लिया। उसे इस हालत में देखकर उसका अन्तःकरण कचोट उठा   वह ज़िन्दा से ज़्यादा मुर्दा लग रही थी। उसे यह याद आया कि याकोव ने उससे कुछ प्रार्थना की थी, और उसे यह भी याद आया कि मुटल्ली ने उसे माशा के बारे में क्या बताया था; उसका सिर शर्म से झुक गया।

सड़क के उस पार वाले घर में दो आवाज़ें एकसाथ गा रही थीं, और गीत के शब्द खुली खिड़की से तैरते हुए इल्या के कमरे में आ रहे थे। कोई नीचे सुर की भरपूर आवाज़ में गाना गा रहा था :

हा-य! मेरा दिल टू-ट गया...

"मुझे नींद आ रही है," माशा ने बुदबुदाकर कहा। "यहाँ कितना अच्छा है... कोई गा रहा है... बहुत अच्छी आवाज़ें हैं..."

"हाँ, वहाँ लोग गा रहे हैं," इल्या ने बड़ी कटुता से हँसकर कहा। "कोई गाता है, कोई रोता है।"

मैं अब न करूँगा प्या-र...
ब-स एक बा-र!

रात के सन्नाटे में एक ऊँचा सुर गूँजा और लहराता हुआ ऊपर उठता चला गया।

इल्या उठा और उसने झुँझलाकर खिड़की बन्द कर दी। गाना उसे बेवक़्त की रागिनी जैसा लग रहा था; उससे उसे उलझन हो रही थी। खिड़की बन्द होने की आवाज़ से माशा जाग पड़ी। उसने अपनी आँखें खोलीं और डरकर अपना सिर ऊपर उठाया।

"कौन है?" उसने पूछा।

"मैं हूँ... खिड़की बन्द कर रहा था..."

"हे दयालु भगवन्!... क्या तुम जा रहे हो?"

"नहीं, तुम डरो नहीं।"

माशा ने अपना सिर तकिये पर टिका लिया और जल्दी ही उसे फिर नींद आ गयी। लेकिन हर चीज़ से उसकी नींद उचट जाती थी   इल्या के ज़रा भी हिलने-डुलने से, या बाहर सड़क पर क़दमों की आहट से। वह फ़ौरन आँखें खोलकर आधी नींद

में चिल्ला पड़ती :

“एक मिनट... अरे, रुको!... बस, एक मिनट!”

इल्या ने खिड़की फिर खोल दी और चुपचाप बैठा सोचता रहा कि वह माशा की मदद करने के लिए क्या कर सकता है। उसने तय कर लिया था कि जब तक उसके मामले की शिकायत पुलिस में नहीं कर दी जायेगी तब तक वह उसे वहाँ से जाने नहीं देगा।

“मैं कीरिक के जरिये यह काम करूँगा,” उसने सोचा।

“एक बार फिर! एक बार फिर!” ग्रोमोव के घर से जोश-भरी आवाज़ें आ रही थीं। किसी ने तालियाँ बजायीं। माशा कराह उठी। ग्रोमोव के यहाँ से एक बार फिर गाने की आवाज़ आयी :

गाड़ी में दो घो-ड़े जोते,
भोर पहर की वेला में...

इल्या लाचारी से सिर हिलाने लगा... यह गाना, ये मस्त आवाज़ें, और यह हँसी उसे बेचैन कर रही थी। वह खिड़की की सिल पर कुहनियाँ टिकाये सामने वाली खिड़कियों की रोशनियों को देख रहा था; वह ग़ुस्से से खौल रहा था और सोच रहा था कि बाहर जाकर अगर एक पत्थर किसी खिड़की को तोड़ता हुआ अन्दर फेंक दिया जाये तो कितना मज़ा आये। या रंगरेलियाँ मनाने वाले इन लोगों बीच छर्रों की बौछार कर दी जाये। छर्रों की बौछार उन लोगों तक ज़रूर पहुँच जायेगी। वह ख़ून में सने उनके भयभीत थोबड़ों की और उनकी चीख़-पुकार और बौखलाहट की कल्पना करने लगा; इस चित्र से उसका दिल ख़ुशी से भर उठा और उसके होंठों पर मुस्कराहट आ गयी। गीत के बोल अनायास उसके दिमाग़ पर अंकित हो गये। वह उनको दोहरा रहा था और उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि रंगरेलियाँ मनाने वाले ये लोग एक वेश्या की मौत के बारे में यह गीत गा रहे थे। उसे बहुत धक्का पहुँचा। वह ज़्यादा ध्यान देकर सुनने लगा, और सुनते-सुनते सोचने लगा कि ये लोग ऐसा गीत क्यों गा रहे थे? इसमें उन्हें क्या मज़ा आता होगा? भला कोई बात हुई यह! यहाँ, उनसे कुछ ही क़दम की दूरी पर एक ज़िन्दा औरत पड़ी तड़प रही है, और उसकी हालत किसी को मालूम नहीं...

“वाह-वाह! शाबाश!” लोगों के चिल्लाने की आवाज़ आयी।

इल्या मुस्कराने लगा और बारी-बारी से कभी माशा को और कभी खिड़की को देखता रहा। उसे यह बात अजीब लगी कि लोग अपना मन बहलाने के लिए एक वेश्या की मौत के बारे में भी गीत गा सकते हैं।

"वासीली... वासीलिच..." माशा बुदबुदायी।

वह छटपटाकर करवटें बदलने लगी जैसे जल गयी हो; उसने कम्बल उतारकर फर्श पर फेंक दिया, बाहें फैला दीं और फिर बिल्कुल निश्चल लेटी रही। उसका मुँह आधा खुला हुआ था और वह जल्दी-जल्दी हाँफने की सी आवाज़ निकाल रही थी। लुन्योव जल्दी से झुककर सुनने लगा; उसे यह डर लगा कि शायद वह मर रही है। जब उसकी साँस चलने की आवाज़ से उसे आश्वासन हो गया तो उसने उसे कम्बल ओढ़ा दिया, फिर चढ़कर खिड़की की सिल पर बैठ गया और लोहे के जंगले से अपना चेहरा सटाकर ग्रोमोव के घर की खिड़कियों को एकटक देखने लगा। लोग वहाँ अभी तक गा रहे थे कभी अकेले, कभी दो आदमी एक साथ, और कभी सब मिलकर। संगीत और हँसी। खिड़कियों में उसे गुलाबी और नीली और सफ़ेद फ्राकें पहने औरतों की झलक दिखायी दे जाती थी। कान लगाकर सुनते हुए उसे इस बात पर हैरत हो रही थी कि वे लोग वोल्गा के बारे में, मौत के बारे में और बिना जुते हुए खेतों के बारे में ऐसे उदास और लम्बे-लम्बे गीत गा सकते थे और हर गाने के बाद इस तरह हँस सकते थे जैसे कोई बात ही न हुई हो, जैसे ये गीत उन्होंने न गाये हों... क्या व्यथा से भी उनका मनोरंजन होता होगा?

हर बार जब माशा उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती तो वह उदास नज़रों से उसे देखता और सोचने लगता कि आगे चलकर उसका क्या होगा? अगर तात्याना आ जाये और उसे यहाँ देख ले तो? वह उसका करे भी तो क्या? उसका सिर चकराने लगा। जब उसे नींद आने लगी वह खिड़की से नीचे उतरा और पलंग के पास सिर के नीचे अपना कोट लपेटकर तकिये की तरह रखकर लेट गया। उसने सपना देखा कि माशा मर गयी थी और एक बखार के कच्चे फर्श पर पड़ी हुई थी; उसे चारों ओर से कुछ औरतों ने घेर रखा था जो गुलाबी और नीली और सफ़ेद फ्राकें पहने थीं और उसकी लाश पर गा रही थीं। जब वे कोई करुण गीत गाती थीं तो सबकी सब बेसुरी हँसी हँस देती थीं और जब वे कोई मस्ती-भरे गीत गाती थीं तो वे रोने लगती थीं और अपने सिर हिलाने लगती थीं, और नाज़ुक सफ़ेद रूमालों से अपनी भीगी आँखें पोंछने लगती थीं। बखार में अँधेरा और सीलन थी, और उसके एक कोने में सावेल लोहार लाल दहकते हुए लोहे को हथौड़े से पीटकर खिड़की का जंगला बना रहा था। बखार की छत पर कोई चल रहा था और चिल्ला-चिल्लाकर आवाज़ दे रहा था :

"इल्या! इलू-या-आ-आ!"

लेकिन वह भी इतना कसकर बँधा हुआ बखार में पड़ा था कि वह न बोल सकता था और न हिल-डुल सकता था।

"इल्या! उठो! उठो तो!"

वह जाग पड़ा और उसने देखा कि पावेल ग्राचोव कुर्सी पर बैठा हुआ है और उसकी टाँगों को अपने पाँव से हल्की-हल्की ठोकरें मार रहा है। खिड़की में से धूप की एक चमकदार किरन आकर मेज़ पर खौलते हुए समोवार पर पड़ रही थी। इल्या ने चकाचौंध कर देने वाली रोशनी से अपनी आँखें सिकोड़ लीं।

"सुनो, इल्या..."

पावेल की आवाज़ ऐसी भर्रायी हुई थी जैसे वह बड़ी देर से शराब पी रहा हो, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और बाल उलझे हुए थे। उसकी यह हालत देखकर इल्या उछलकर खड़ा हो गया।

"क्या बात है?" उसने दबी ज़बान से पूछा।

"वह पकड़ ली गयी है," पावेल ने सिर झटककर कहा।

"क्या? कौन? कहाँ है वह?" इल्या ने उसकी ओर झुककर और उसका कन्धा पकड़कर पूछा। पावेल डगमगा गया।

"उसे जेल में डाल दिया गया है," घबराकर उसने कहा।

"किसलिए?" इल्या ने ऊँची फुसफुसाहट में पूछा।

माशा की आँख खुल गयी; पावेल को देखकर वह चौंक पड़ी और डरी-डरी आँखों से उसे एकटक देखती रही। दुकान के दरवाज़े पर खड़ा गावरिक उनकी देख रहा था। उसने अपने होंठ अरुचि के भाव से टेढ़े कर रखे थे।

"कहते हैं कि उसने बटुआ चुराया था... किसी व्यापारी का..."

इल्या अपने दोस्त को हल्का-सा झटका देकर उससे दूर हट गया।

"और उसने एक थानेदार के सहायक को थप्पड़ भी मारा था।"

"हाँ, क्यों नहीं," इल्या ने बड़ी कठोरता से थोड़ा-सा हँसकर कहा। "जब जेल जाना ही ठहरा तो दोनों टाँगों से क्यों न जाना।"

जैसे ही माशा को यक़ीन हो गया कि बातचीत उसके बारे में नहीं हो रही है, वह मुस्करा दी।

"वे लोग मुझे जेल में डाल देते तो कितना अच्छा होता!" उसने धीमी आवाज़ में कहा।

पावेल ने एक नज़र पहले उसको देखा, फिर इल्या को।

"इसकी याद नहीं है तुम्हें?" इल्या ने पूछा। "माशा, पेर्फ़ीश्का की बेटी। भूल गये?"

"अच्छा," पावेल ने लापरवाही से कहा और मुँह फेर लिया, हालाँकि यह पता चलने पर कि वह कौन था माशा मुस्करा दी थी।

"इल्या!" पावेल दुखी होकर बोला, "अगर उसने ऐसा मेरी ख़ातिर किया हो तो?"

लुन्योव मुँह धोये बिना और अपने बाल ठीक किये बिना ही पलंग पर माशा की पाँयती बैठ गया और बारी-बारी से उन दोनों की ओर देखने लगा; इस नयी मुसीबत से वह बेहद परेशान हो उठा था।

"मुझे यक़ीन था कि इस क़िस्से का अंजाम बुरा होगा," वह धीरे-धीरे बोला।

"वह मेरी बात सुनती ही नहीं।" पावेल का स्वर घोर निराशा में डूबा हुआ था।

"क्या कहा?" इल्या ने तिरस्कार से कहा। "तो यह सब कुछ इसलिए हुआ कि उसने तुम्हारी बात नहीं सुनी, क्यों? तुम उससे क्या कह सकते थे?"

"मैं उससे प्यार करता था..."

"तुम्हारा कमबख़्त प्यार किस काम का है?"

उसका दिमाग़ खौलने लगा। इन दोनों के, पावेल और माशा के क़िस्सों से उसे ग़ुस्सा आ रहा था, और चूँकि ग़ुस्सा उतारने के लिए कोई और था नहीं इसलिए उसने सारा ग़ुस्सा दोस्त पर उतारा...

"क्या हर आदमी यह नहीं चाहता कि वह आराम की ज़िन्दगी बसर करे और ख़ुश रहे? वह किसी से अलग तो है नहीं; उससे बस यही कह सकते हो : 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ,' जिसका मतलब है : मेरे साथ रहो और किसी भी चीज़ के बिना काम चलाओ! यह भी अच्छी बात है तुम्हारी!"

"मुझे क्या करना चाहिए?" पावेल ने दबी ज़बान से पूछा।

इस सवाल से इल्या का ताव कुछ ठण्डा पड़ गया। अनायास ही वह कुछ सोचने लगा।

गावरिक ने दरवाज़े में से सिर निकालकर झाँका।

"दुकान खोल दूँ?" वह बोला।

"भाड़ में जाये दुकान!" इल्या अधीर होकर चिल्लाया। "जैसे अब मैं दुकान चला ही तो सकता हूँ!"

"क्या मैं रुकावट बना हुआ हूँ?" पावेल ने पूछा।

वह अपनी कुहनियाँ घुटनों पर टिकाये बैठा फर्श को घूर रहा था। तनाव की वजह से उसकी कनपटी की एक नस फड़क रही थी।

"तुम?" उसने एक नज़र उसे देखकर कहा। "नहीं, तुम मेरे रास्ते में नहीं हो, और माशा भी मेरे रास्ते में नहीं है। लेकिन कोई चीज़ है जो हम सबके रास्ते में है तुम्हारे, मेरे और माशा के... हो सकता है कि मेरी बात नासमझी की हो, लेकिन एक बात पक्की है : हम लोगों में से किसी के लिए वैसी ज़िन्दगी बसर करने की रत्ती-भर भी उम्मीद नहीं है जैसी कि इन्सान को बसर करनी चाहिए! मैं गन्दगी और मुसीबतें अपराध और हर तरह का कचरा देखते-देखते तंग आ गया हूँ, फिर भी..."

बात कहते-कहते वह रुक गया और उसका चेहरा पीला पड़ गया।

"तुम हमेशा अपनी ही बात करते रहते हो," पावेल ने कहा।

"और तुम? तुम किसकी बातें करते रहते हो?" इल्या ने व्यंग्य से पूछा। "हर आदमी को अपने ही घाव की पीड़ा होती है और वह अपनी ही आवाज़ में कराहता है। मैं अपनी नहीं बल्कि सब लोगों की बात करता हूँ, क्योंकि मुझे सब लोगों की चिन्ता लगी रहती है।"

"मैं चलता हूँ," पावेल ने भारी मन से उठते हुए कहा।

"हाय रे!" इल्या बोला। "समझने की कोशिश करो कि मैं क्या कह रहा हूँ, बुरा मानने की यहाँ कोई बात नहीं है।"

"मुझे ऐसा लग रहा है जैसे किसी ने मेरे सिर पर पत्थर दे मारा हो। वेरा पर तरस आ रहा है! क्या करूँ?"

"कुछ भी नहीं करना है!" इल्या ने निर्णायक स्वर में कहा। "तुम तो अब उससे हाथ धो लो। उसे सज़ा ज़रूर दी जायेगी..."

पावेल फिर बैठ गया।

"अगर मैं कहूँ कि उसने पैसा मेरे लिए चुराया था, तो क्या होगा?" उसने पूछा।

"तुम हो कौन कहीं के राजकुमार हो? जाओ, कह दो जाकर। बस होगा यह कि तुम्हें भी जेल में डाल दिया जायेगा... अच्छा, हम लोग हाथ-मुँह धो लें। माशा, सुनो, पावेल और मैं दुकान में जाते हैं, तुम ज़रा उठकर कमरा ठीक-ठाक कर दो... और हमारे लिए थोड़ी-सी चाय बना दो।"

माशा ने कुछ चौंककर तकिये पर से अपना सिर उठाया।

"क्या मुझे घर जाना पड़ेगा?" उसने इल्या से पूछा।

"घर? घर तो वह होता है जहाँ आदमी को कम से कम सताते नहीं..."

इल्या और पावेल दुकान में आ गये।

"वह तुम्हारे यहाँ क्यों है? बिल्कुल अधमरी लगती है," पावेल ने उदास स्वर में कहा।

इल्या ने संक्षेप में सारा क़िस्सा बता दिया। उसे यह देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ कि माशा का क़िस्सा सुनकर पावेल में जैसे नयी जान आ गयी।

"बूढ़ा शैतान कहीं का!" उसने माशा के पति के बारे में कहा, और यह कहकर मुस्करा भी दिया।

इल्या उसके पास खड़ा अपनी दुकान को बड़े ग़ौर से देख रहा था।

"अभी कुछ ही दिन पहले तुमने कहा था कि मुझे इसमें कोई मज़ा नहीं आयेगा," उसने हाथ हिलाकर दुकान की तरफ़ इशारा करते हुए विकृत मुस्कराहट के साथ कहा।

"तो तुम्हारा कहना ठीक ही था!" और यह कहकर उसने कटुता से अपना सिर हिलाया। "दिन-भर यहाँ खड़े-खड़े चीज़ें बेचकर मेरा क्या भला होता है? इसकी वजह से मेरी आजादी छिन गयी है। मैं यह जगह छोड़कर कहीं जा नहीं सकता। एक ज़माना वह था कि जहाँ जी चाहता था चला जाता था, सारे शहर में इधर से उधर तक... अगर रास्ते में कोई जगह अच्छी लगती तो वहीं बैठ जाता था और उसका आनन्द लेता था। अब रोज़ यहाँ रहता हूँ और कुछ नहीं..."

"दुकान में तुम्हारी मदद करने के लिए वेरा बहुत अच्छी होती," पावेल ने कहा।

इल्या ने जल्दी से एक नज़र उसे देखा और कुछ कहा नहीं।

"चाय पीने आओ!" माशा ने पुकारकर कहा।

तीनों कुछ बोले बिना चाय पीते रहे। बाहर सूरज चमक रहा था, खिड़की के पास से सड़क पर घूमने वाले लड़कों के नंगे पाँव फटफट करते हुए गुजर रहे थे, सब्ज़ी वाले इधर-उधर मँडरा रहे थे।

हर चीज़ से वसन्त का, सर्दी से मुक्त सुहावने दिनों का संकेत मिलता था, लेकिन उस छोटे-से कमरे में जिसमें वे बैठे थे सीलन की बू बसी हुई थी, वे लोग आपस में कभी एकाध शब्द बोलते भी थे तो बहुत ही धीमी बुझी हुई आवाज़ में, और समोवार एक ही सुर में सनसना रहा था, और सूरज की किरणों को प्रतिबिम्बित कर रहा था।

"ऐसा लग रहा है जैसे हम लोग अभी किसी के जनाजे से घर लौटे हों," इल्या बोला।

"वेरा के जनाजे से," पावेल ने कहा। "मैं यहाँ बैठा सोच रहा हूँ कि यह कहीं मेरा दोष तो नहीं है कि वह जेल में है?"

"बहुत मुमकिन है ऐसा ही हो," इल्या ने बेरहमी से कहा।

पावेल ने उसे निन्दा के भाव से देखा।

"तुम्हारा दिल भी बिल्कुल पत्थर का है," उसने कहा।

"क्या मेरे दिल को नरम बनाने के लिए कभी कुछ किया गया है?" इल्या चिल्लाकर बोला। "क्या कभी किसी ने मेरे सिर पर प्यार से हाथ फेरा है? अलबत्ता, एक आदमी ऐसा ज़रूर था जो शायद सचमुच मुझे प्यार करता हो, और वह थी एक छिनाल!"

उबलते हुए ग़ुस्से की लहर की वजह से उसके गाल तमतमा उठे और उसकी आँखों में ख़ून उतर अया; वह उछलकर उठ खड़ा हुआ उसका जी चाहा कि वह गालियाँ दे, चिल्लाये और दीवार पर और मेज़ पर ज़ोर-ज़ोर से मुक्के मारे।

माशा सहम गयी और छोटे बच्चे की तरह ज़ोर-ज़ोर से करुण स्वर में रोने लगी।

"मैं चलती हूँ मुझे जाने दो," वह आँखों में आँसू भरकर काँपती हुई आवाज़ में

बोल रही थी और अपना सिर इस तरह हिला रही थी जैसे उसे कहीं छिपा लेना चाहती हो।

इल्या चुप हो गया। उसने देखा कि पावेल भी उसे द्वेष-भरी नज़र से देख रहा था।

"तुम रो किस बात पर रही हो?" इल्या ने चिढ़कर कहा। "मैं तुम्हारे ऊपर तो चिल्ला नहीं रहा था... और तुम्हारे पास जाने को कोई ठिकाना तो है नहीं... जाऊँगा तो मैं... पावेल यहाँ तुम्हारे पास बैठेगा। गावरिक! अगर तात्याना व्लास्येव्ना आयें... यह कौन है?"

कोई आँगन की ओर खुलने वाला दरवाज़ा खटखटा रहा था। गावरिक ने अपने मालिक की ओर इस तरह देखा जैसे पूछ रहा हो कि दरवाजा खोले कि नहीं।

"दरवाज़ा खोल दो!" इल्या ने कहा। गोवरिक की बहन दरवाज़े पर खड़ी थी। कुछ देर वह सीधी तनी हुई अपना सिर पीछे की ओर झुकाये चुपचाप खड़ी रही और आँखें सिकोड़कर उस जमावड़े को देखती रही। थोड़ी देर में उसके भावशून्य असुन्दर चेहरे पर घृणा का भाव आ गया और इल्या के सलाम का जवाब दिये बिना ही वह अपने भाई से बोली :

"गावरिक, मैं एक मिनट तुमसे बात करना चाहती हूँ। यहाँ बाहर आओ..."

इल्या को बेहद ग़ुस्सा आया; उस अपमान की वजह से अचानक उसके भेजे की ओर इतनी तेज़ी से ख़ून दौड़ने लगा कि उसकी आँखों में चुभन होने लगी।

"जब आपको सलाम किया जाता है तो आपको भी जवाब में सलाम करना चाहिए!" उसने अपने ग़ुस्से पर क़ाबू रखते हुए सपाट स्वर में कहा।

गावरिक की बहन ने अपना सिर कुछ और ऊँचा उठा लिया और अपनी भवें सिकोड़कर एक-दूसरे के और करीब कर लीं। होंठ कसकर बन्द किये हुए उसने इल्या पर सिर से पाँव तक नज़र डाली और एक शब्द भी नहीं कहा। गावरिक ने भी अपने मालिक को ग़ुस्से से देखा।

"आप कोई शराबियों और चोरों के बीच नहीं आ गयी हैं," इल्या कहता रहा; तनाव से उसका सारा शरीर काँप रहा था। "आपके साथ इज़्ज़त का बर्ताव किया गया है, और एक पढ़ी-लिखी लड़की होने के नाते आपको उसके जवाब में वैसा ही सलूक करना चाहिए।"

"जाने दो, सोन्या," गावरिक अचानक सुलह-समझौता कराने के अन्दाज़ से बोला और अपनी बहन के पास जाकर उसने उसका हाथ पकड़ लिया।

इसके बाद थोड़ी देर तक तनाव-भरी ख़ामोशी रही। इल्या और वह लड़की चुनौती-सी देते हुए एक-दूसरे को घूरते रहे; ऐसा लग रहा था कि उन्हें किसी चीज़

का इन्तज़ार है। माशा एक कोने में दुबक गयी। पावेल बेवकू फ़ों की तरह आँखें झपकाता रहा।

"बोलो, सोन्या," गावरिक ने अधीर होकर कहा, "क्या तुम समझती हो कि ये लोग तुम्हारा दिल दुखाना चाहते थे? अरे, नहीं!" गावरिक के चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ गयी और उसने इतना और जोड़ दिया, "ये लोग बस अजीब क़िस्म के आदमी हैं!"

उसकी बहन ने उसके हाथ को हल्का-सा झटका दिया।

"आप क्या चाहते हैं मुझसे?" सोन्या ने बड़े रूखेपन से इल्या से पूछा।

"कुछ नहीं... बस"

अचानक उसके दिल में एक नेक विचार आया। वह एक क़दम उसकी ओर बढ़ा और जितनी विनम्रता से हो सकता था बोला :

"बस इतनी मेहरबानी कीजिए... बात यह है... हम तीनों को देखिए... हम ठहरे अनपढ़, जाहिल लोग... और आप... आप हैं पढ़ी-लिखीं..."

उसे अपने विचार को व्यक्त करने की बेहद जल्दी थी और वह कर नहीं पा रहा था। वह लड़की जिस तरह सधी हुई कठोर नज़रों से उसे घूर रही थी उससे उसका ध्यान भटक रहा था... उसकी आँखें मानो इल्या को अपनी ओर से दूर हटा रही थीं। इल्या ने अपनी आँखें झुका लीं।

"मैं सारी बात इस तरह एकदम तो नहीं कह सकता," वह झुँझलाकर कुछ सिटपिटाते हुए बुदबुदाया। "अगर आपके पास एक मिनट का वक़्त है... तो बैठ जाइये..."

वह सोन्या को रास्ता देने के लिए पीछे हट गया।

"तुम वहीं ठहरो, गावरिक," सोन्या ने कहा, और अपने भाई को दरवाज़े पर ही खड़ा छोड़कर कमरे में आ गयी। इल्या ने उसकी तरफ़ एक स्टूल बढ़ा दिया। वह उस पर बैठ गयी। पावेल दुकान में चला गया। माशा चूल्हे के पास कोने में दुबक गयी, इल्या गावरिक की बहन के सामने दो क़दम की दूरी पर खड़ा रहा, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कहाँ से बात शुरू करे।

"तो?" वह बोली।

"तो... बात यह है..." इल्या ने लम्बी साँस लेकर कहना शुरू किया। "इस लड़की को देखा?.. बल्कि, कहना चाहिए, शादीशुदा औरत को... एक बूढ़े को ब्याही है। वह... बिल्कुल दरिन्दा है... और यह भाग आयी है, बुरी तरह पिटी हुई और नोची-खसोटी हुई... भागकर मेरे पास चली आयी है... हो सकता है कि आपको किसी बुरी बात का शक हो? ऐसी कोई बात नहीं है।"

वह उखड़े-उखड़े ढंग से बातें कर रहा था, उसके शब्द आपस में उलझते जा रहे थे; वह माशा का सारा क़िस्सा भी सुना देने को उत्सुक था और इसके साथ ही उस पूरे मामले के बारे में अपनी राय भी दे देना चाहता था। उस लड़की को ख़ुद अपनी राय बता देने के लिए वह ख़ास तौर पर उत्सुक था। इल्या की ओर देखते हुए लड़की की नज़रों में नरमी आती जा रही थी।

"मैं समझ गयी," लड़की बीच में बोल पड़ी। "और आपकी समझ में नहीं आ रहा है कि क्या किया जाये? सबसे पहले तो आपको इसे किसी डाक्टर के पास ले जाना चाहिए। वह अच्छी तरह इसकी जाँच कर ले। मेरी जान-पहचान के एक डाक्टर हैं... क्या आप चाहेंगे कि इसको मैं उनके पास ले जाऊँ? गावरिक, ज़रा देखना तो क्या बजा है। ग्यारह? बहुत अच्छी बात है, वह इस वक़्त मरीजों को देखते हैं... गावरिक, एक गाड़ी तो ले आओ... अच्छा, अब अपनी दोस्त से मेरी जान-पहचान तो करा दीजिये..."

लेकिन इल्या अपनी जगह से हिला नहीं। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि यह कठोर लड़की इतनी नरमी से भी बोल सकती थी। वह उसके चेहरे का भाव देखकर भी आश्चर्यचकित रह गया था : वही लड़की जो हमेशा इतनी घमण्ड में चूर रहती थी, इस समय वह चिन्ता के अलावा और कोई भाव नहीं व्यक्त कर रही थी और हालाँकि उसके नथुने इस वक़्त हमेशा से ज़्यादा फूले हुए थे लेकिन उसके चेहरे पर ऐसी नेकी और सादगी थी जो इल्या ने इससे पहले कभी नहीं देखी थी। उसे देखकर वह एक शब्द भी बोले बिना कुछ अटपटा महसूस करते हुए शरमाकर मुस्करा दिया।

उसकी ओर से मुड़कर वह माशा के पास चली गयी।

"रोओ नहीं..." वह नरमी से बोली, "और डरो नहीं। डाक्टर साहब बहुत नेक आदमी हैं; वह और कुछ नहीं करेंगे, बस तुम्हारी जाँच करके तुम्हें एक काग़ज़ दे देंगे। और मैं तुम्हें यहाँ वापस ले आऊँगी। अच्छा, रोओ नहीं, मेहरबानी करके..."

उसने माशा को अपनी ओर खींचने के लिए अपने हाथ उसके कन्धों पर रख दिये।

"आह, बहुत तकलीफ़ होती है!" माशा ने धीरे से कराहकर कहा।

"किस चीज़ से होती है?"

इल्या उनकी बातें सुनकर मुस्कराता रहा।

"अरे, यह... यह तो सरासर बेहूदगी है!" सोन्या माशा से दूर हटते हुए चिल्लाकर बोली। उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था और उसकी आँखें ग़ुस्से और नफ़रत से चमक उठी थीं।

"कितनी बुरी तरह चोट लगी है इसे!"

"अब देख लिया आपने कि हम लोग किस तरह की ज़िन्दगी बसर करते हैं!" इल्या ने चिल्लाकर कहा; उसका गुस्सा फिर भड़क उठा था। "मैं आपको एक और मिसाल दे सकता हूँ। उसे देखिए! आइये, मैं आपको अपने दोस्त पावेल सावेल्येविच ग्राचोव से मिला दूँ।"

पावेल ने उसकी ओर देखे बिना ही अपना हाथ बढ़ा दिया।

"मेरा नाम है सोफ़िया नीकोनोव्ना मेद्वेदेवा," वह पावेल के उदास चेहरे को ध्यान से देखते हुए बोली; फिर इल्या की ओर मुड़कर उसने कहा, "और आपका नाम है इल्या याकोव्लेविच?"

"जी हाँ," इल्या ने बड़ी उत्सुकता से कहा और अपने हाथ में उसका हाथ कसकर पकड़ लिया; उसका हाथ थामे-थामे ही वह कहता रहा, "सुनिये, अगर आप सचमुच ऐसी ही हैं... मेरा मतलब है... अगर आप इसकी मदद करने को तैयार हैं तो शायद आप उसकी भी कुछ मदद कर सकें। वह भी फन्दे में पड़ा है।"

उसके ख़ूबसूरत उत्तेजित चेहरे को गम्भीर भाव से देखते हुए सोन्या चुपचाप अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश कर रही थी। लेकिन इल्या उसे वेरा और पावेल के बारे में बताने के जोश में ऐसा खो गया था कि वह उसका हाथ ज़ोर से पकड़े रहा और बात करते हुए उसे हिलाता भी रहा।

"यह कविताएँ लिखता था, और कैसी बढ़िया कविताएँ लिखता था! लेकिन अब यह बिल्कुल बुझ गया है। और वह भी... शायद आप सोचेंगी कि वह चूँकि... मेरा मतलब है... उस तरह की औरत है, तो उसमें उसके अलावा और कुछ था ही नहीं? अरे, नहीं; आपको ऐसा नहीं सोचना चाहिए! न बुरी हालत में, न अच्छी हालत में   आदमी का असली रूप कभी पूरी तरह खुलकर सामने नहीं आता!"

"क्या मतलब?" लड़की ने कहा।

"मेरा मतलब है कि अगर आदमी बुरा भी हो तो उसमें कुछ न कुछ अच्छाई ज़रूर होगी; और अगर वह अच्छा है तो उसमें कोई न कोई बुराई भी होगी। हमारी सबकी आत्माएँ चितकबरी हैं   हम सबकी!"

"आप जो कह रहे हैं वह सच है!" लड़की ने अनुमोदन करते हुए अपना सिर हिलाया। "लेकिन अगर आप बुरा न मानें तो मेरा हाथ तो छोड़ दीजिए। मेरा हाथ दुखने लगा है।"

इल्या माफ़ी माँगने लगा, लेकिन उसे न सुनते हुए वह पावेल को हिदायतें देने के लिए मुड़ चुकी थी :

"शर्मनाक बात है। आपको कोई क़दम उठाना चाहिए   उसकी तरफ़ से पैरवी करने के लिए कोई वकील ढूँढ़ना होगा। अगर आप चाहें तो मैं ढूँढ़ दूँ। ढूँढ़ दूँ? और

उसका बाल भी बाँका न होगा, वे लोग उसे साफ़ छोड़ देंगे; यक़ीनन छोड़ देंगे!"

सोन्या का चेहरा तमतमाया हुआ था, उसकी लटें कनपटियों पर बिखरी हुई थीं, और उसकी आँखें चमक रही थीं।

माशा, जो उसकी बग़ल में ही खड़ी हुई थी, बच्चों जैसे विश्वास-भरे कौतूहल से उसे देख रही थी। इल्या विजय के भाव से कभी पावेल की ओर देख रहा था और कभी माशा की ओर; उसे इस बात पर कुछ गर्व हो रहा था कि यह लड़की उसके कमरे में थी।

"अगर आप मदद करने के लिए सचमुच कुछ कर सकती हैं, तो ज़रूर कीजियेगा!" पावेल ने काँपते हुए स्वर में कहा।

"शाम को सात बजे मेरे घर आ जायेंगे? गावरिक वहाँ का रास्ता बता देगा..."

"आ जाऊँगा... समझ में नहीं आता कि किस तरह आपका शुक्रिया अदा करूँ।"

"बेकार की बातें न कीजिये। लोगों को एक-दूसरे की मदद करनी ही चाहिए!"

"वे मदद करेंगे!" इल्या ने व्यंग्य से कहा।

लड़की ने जल्दी से उसकी ओर मुड़कर देखा, लेकिन गावरिक ने, जो स्पष्टतः यह महसूस कर रहा था कि इन तमाम उद्विग्न लोगों के बीच वही अकेला समझदार आदमी है, अपनी बहन का हाथ खींचते हुए कहा :

"अब तुम्हारे जाने का वक़्त हो गया है न?"

"हाँ! कपड़े पहन लो, माशा।"

"मेरे पास कपड़े हैं ही नहीं।" माशा ने शरमाते हुए कहा।

"अरे! अच्छा, कोई बात नहीं है। ऐसे ही चलो। और आप आना न भूलियेगा, ग्राचोव? अच्छा, मैं चलती हूँ, इल्या याकोव्लेविच।"

दोनों दोस्तों ने कुछ कहे बिना बड़े आदर के भाव से उससे हाथ मिलाया, और वह माशा की बाँह पकड़े हुए बाहर निकल गयी। दरवाज़े पर पहुँचकर वह पीछे मुड़ी और अपना सिर झटके के साथ ऊँचा उठाकर इल्या से बोली :

"मैं तो भूल ही गयी थी... यहाँ आने पर मैंने आपको सलाम नहीं किया था। वह मेरी बहुत बड़ी बदतमीजी थी और उसके लिए मैं माफ़ी माँगती हूँ।"

सोन्या के चेहरे पर लाली दौड़ गयी और उसने अपनी आँखें झुका लीं। उसके मुँह से यह बात सुनकर इल्या का मन नाच उठा।

"मुझे बहुत अफ़सोस है। पहले मैं समझी थी कि आप... मेरा मतलब है... पी रहे थे।"

वह रुक गयी और आगे अपनी बात कहने से पहले उसने घूँट निगला।

"और जब आपने मुझे झिड़का तो मैंने सोचा कि आप... कि आप मेरे भाई के मालिक की हैसियत से बात कर रहे हैं, लेकिन वह मेरी भूल थी। मैं अब बेहद ख़ुश हूँ। आप अपनी कद्र पहचानते थे।"

अचानक उसका चेहरा बहुत लुभावनी मुस्कराहट से खिल उठा और वह बहुत ख़ुश होकर बोली, मानो इन शब्दों को कहकर उसे अपार हर्ष हो रहा हो :

"मुझे बेहद ख़ुशी है कि सारी बात इतनी अच्छी तरह निबट गयी बहुत, बहुत ख़ुशी है!"

और इतना कहकर वह मुस्कराती हुई बाहर चली गयी; उसकी यह मुद्रा देखकर इल्या को सूर्योदय की लालिमा की गोट लगे हुए सुरमई बादल की याद हो आयी। दोनों लड़के अपनी नज़रों से उसका पीछा कर रहे थे। उन दोनों के चेहरे गम्भीर थे, भले ही वे कुछ हास्यास्पद भी लग रहे हों। थोड़ी देर बाद इल्या ने कमरे में चारों ओर नज़र डाली।

"जगह साफ़ है न?" उसने पावेल की कुहनी मारते हुए कहा। पावेल धीरे से हँस दिया।

"कमाल है वह, है न?" इल्या ने आह भरकर कहा। "क्यों, क्या खयाल है तुम्हारा उसके बारे में?"

"एक झोंके में सबका सफाया कर दिया!"

"तुमने भी देखा न?" इल्या ने अपने घुँघराले बालों में उँगलियाँ फेरते हुए गर्वोल्लास से कहा। "तुमने सुना, कैसे माफ़ी माँगी थी उसने? यह होता है सचमुच पढ़ा-लिखा आदमी होने का मतलब : वह किसी भी आदमी की इज़्ज़त करता है, लेकिन सलाम करते समय पहले अपना सिर कभी नहीं झुकाता है। समझे?"

"बहुत अच्छी औरत है," पावेल ने मुस्कराकर कहा।

"तेज़ और चमकती हुई, सितारे की तरह!"

"वाह-वाह। उसे यह फ़ैसला करने में ज़रा भी वक़्त नहीं लगा कि किसे क्या करना है..."

इल्या पुलकित होकर हँस दिया। यह जानकर वह बहुत ख़ुश हो रहा था कि उस अभिमानी औरत में दरअसल सादगी कूट-कूटकर भरी हुई थी, और इस बात पर वह मन ही मन ख़ुश हो रहा था कि उसके सामने उसने अपनी आन-बान बनाये रखी थी।

गावरिक उनके आस-पास मंडरा रहा था। उसे उकताहट हो रही थी।

"गावरिक," इल्या ने उसका कन्धा पकड़ते हुए कहा। "तुम्हारी बहन बहुत अच्छी है!"

"हाँ, वह नेकदिल है," लड़के ने मानो उस पर एहसान करते हुए कहा। "आज

दुकान खुलेगी कि नहीं? या आज छुट्टी मनायी जाये? तब मैं बाहर खेतों में घूमने निकल जाता...”

“बिल्कुल ठीक आज कोई काम नहीं होगा! पावेल, हम भी घूमने-फिरने चलें, भाई!”

“मैं तो पुलिस के दफ़्तर जा रहा हूँ,” पावेल ने कहा; उसका दिल फिर डूबने लगा था। “शायद वे लोग मुझे उससे मिलने की इजाज़त दे ही दें।”

“ख़ैर, मैं तो घूमने जा रहा हूँ!” इल्या ने कहा।

मन में उमंग भरे वह टहलता हुआ सड़क पर निकल गया; उसके दिमाग़ में लगातार उस लड़की का ध्यान आ रहा था, जिसकी तुलना वह अपनी जान-पहचान के सभी लोगों से कर रहा था। वह उसकी सूरत भूल नहीं सकता था, जिसकी हर मुद्रा से किसी श्रेष्ठ लक्ष्य की ओर अग्रसर होने की अडिग आकाँक्षा व्यक्त होती थी, और उसे उसके वे शब्द याद आये जो उसने माफ़ी माँगते हुए कहे थे।

“लेकिन शुरू में उसने मुझे कैसा काट दिया था!” इल्या ने मुस्कराकर सोचा, और वह इसकी वजह मालूम करने के लिए अपने दिमाग़ पर ज़ोर देने लगा कि उसके साथ संजीदगी से एक भी बात होने से पहले वह उसके साथ इतने अभिमान और द्वेष के साथ क्यों पेश आयी थी।

उसके चारों ओर ज़िन्दगी गुनगुना रही थी। कुछ हँसते हुए छात्र सामने से सड़क पर चले आ रहे थे, लदी हुई गाड़ियाँ खड़खड़ाती हुई पास से होकर गुजर रही थीं, घोड़ागाड़ियों के टायर वाले पहिये तेज़ी से घूमते हुए उन्हें सरपट भगाये ले जा रहे थे, एक भिखारी अपनी लकड़ी की टाँग पर खट-खट करता सड़क की पटरी पर लंगड़ाता हुआ जा रहा था, दो क़ैदी एक हथियारबन्द सिपाही की निगरानी में अपने कन्धों पर एक बल्ली रखे उस पर बड़ा-सा भरा हुआ टब लटकाये ले जा रहे थे, एक छोटा-सा कुत्ता जीभ बाहर लटकाये भागा चला जा रहा था... खड़खड़ाहट, हुल्लड़, शोर, चीख़-पुकार और क़दमों की आहट सबने मिलकर जानदार और स्फूर्ति पैदा करने वाली गूँजती-गरजती आवाज़ का रूप धारण कर लिया था। हवा में सिंकी हुई धूल के कण तैर रहे थे और नथुनों को गुदगुदा रहे थे। गहरे स्वच्छ आकश पर सूरज चमक रहा था और धरती पर हर चीज़ को तपती हुई चमक प्रदान कर रहा था। इल्या अपने चारों ओर नज़र दौड़ाकर हर चीज़ को ऐसे उल्लास से देख रहा था जो उसने बहुत समय से अनुभव नहीं किया था। हर चीज़ उसे नयी-नयी और बेहद दिलचस्प लग रही थी। सड़क पर गुलाबी गालों वाली एक सुन्दर चुलबुली लड़की तेज़ी से उसकी ओर आती दिखायी दी और उसने इल्या को इस तरह ख़ुश होकर चमकती हुई नज़रों से देखा मानो कह रही हो :

"कितने अच्छे आदमी हो तुम!"

इल्या उसे देखकर मुस्करा दिया।

किसी दुकान में काम करने वाला लड़का ताम्बे की केतली हाथ में लिये, जिसका ढक्कन मस्त होकर टनटन की आवाज़ पैदा कर रहा था, भागा-भागा सड़क पर आया और उसका ठण्डा पानी बाहर उड़ेलते हुए राहगीरों की टाँगों पर छींटें उड़ाने लगा। सड़क पर गर्मी और घुटन और शोर था; शहर के कब्रिस्तान में उगे हुए कुछ पुराने लाइम के पेड़ों को देखकर इल्या का जी ललचाया कि उनकी ठण्डी और शान्त छाया में टहले। इस प्राचीन क़ब्रिस्तान की सफ़ेद पत्थर की दीवार के पीछे हरियाली की प्रबल लहरें आसमान की ओर उठ रही थीं जिनके शिखर झाग की तरह पत्तियों की नाज़ुक झालर से सजे हुए थे। हवा में बहुत ऊपर अलग-अलग हर पत्ती की आकृतियाँ आसमान के गहरे नीले रंग की पृष्ठभूमि पर उभरी हुई थीं और काँपती हुई वे मानो व्योम में विलीन होती जा रही थीं।

इल्या फाटक में घुसा और लाइम के पेड़ों के बीच में से होकर गहरी-गहरी साँसों के साथ उन वृक्षों की सुगन्ध को पीता हुआ एक चौड़े रास्ते पर आगे बढ़ा। पेड़ों के बीच उनकी डालों की छाया में कब्रों के सिरहाने लगे हुए संगमरमर और ग्रेनाइट के पत्थर उभरे हुए थे   अटपटे, भारी और काई से ढके हुए। इन रहस्यमयी छायाओं के बीच जहाँ-तहाँ सुनहरी सलीबें और पत्थरों पर अंकित शब्दों के अधमिटे अक्षर झिलमिला रहे थे। कब्रों के घेरों के अन्दर हनीसकल, अकाशिया, हाथार्न और एल्डर की झाड़ियाँ उगी हुई थीं जिन्होंने कब्रों के टीलों को अपनी हरियाली में छिपा लिया था। बीच-बीच में लकड़ी की कोई सलीब हरी लहरों के ऊपर उभरी हुई दिखायी दे जाती थी, जिस पर चारों ओर कोमल टहनियाँ लिपटी होती थीं। पत्तियों के घने जाल के बीच से अल्पव्यस्क बर्च-वृक्षों के सफ़ेद मख़मली तने चमकते थे; हमेशा शरमाते और सकुचाते हुए ये वृक्ष ऐसे लगते थे मानो जान-बूझकर पीछे छाया में खिसक गये हों, ताकि वहाँ अच्छी तरह देखे जा सकें। कब्रों के हरे-हरे टीलों पर रंग-बिरंगे फूल खिले थे, सन्नाटे में भिड़ें भनभना रही थीं, हवा में दो सफ़ेद तितलियाँ एक-दूसरे का पीछा कर रही थीं, धूप में भुनगे मूक छलाँगें लगा रहे थे... हर तरफ़ घास और झाड़ियाँ हुमककर धरती से प्रकाश की ओर बढ़ रही थीं, और कब्रों के उदास टीलों को ढके ले रही थीं। कब्रिस्तान की सारी हरियाली में बढ़ने और फैलने की उतावली समायी हुई थी, रोशनी और हवा को पी जाने की, इस सम्पन्न धरती के रसों को रंग और सुगन्ध और सौन्दर्य में बदल देने की उतावली, जिससे आँखों को और मन को सुख मिलता है। हर जगह जीवन विजयी दिखायी दे रहा था! जीवन सदा विजयी रहेगा!

इल्या को इस निस्तब्धता में घूमने में, अपने फेफड़ों में फूलों की और लाइम के

वृक्षों की सुगन्ध भर लेने में बहुत मज़ा आ रहा था। वह खुद भी शान्त और चिन्तामुक्त अनुभव कर रहा था; उसको राहत मिल गयी थी; वह एकान्त का आनन्द ले रहा था, जो उसे बहुत समय से नहीं मिला था।

वह चौड़े रास्ते से बायीं ओर एक पतली-सी पगडण्डी पर मुड़ गया और उस पर चलते हुए वह सलीबों और कब्रों के पत्थरों पर अंकित शब्दों को पढ़ने लगा। उसके चारों ओर ढले हुए लोहे के बने कब्रों के जंगले थे, बेलबूटों से सजे हुए, महंगे।

'इस सलीब के नीचे ईश्वर के सेवक वोनिफांती के पार्थिव अवशेष सुरक्षित हैं', उसने मुस्कराकर पढ़ा। यह नाम उसे दिलचस्प लगा। वोनिफांती के अवशेषों पर स्लेटी रंग के ग्रेनाइट पत्थर का एक विशाल स्मारक बना था। उसकी बग़ल में एक दूसरे घेरे के अन्दर अट्ठाईस वर्षीय प्योत्र बाबुश्किन की कब्र थी।

"बहुत कम उम्र में चल बसा," इल्या ने सोचा।

सफ़ेद संगमरमर के एक साधारण स्तम्भ पर लिखा था :

धरती ने जो खोया सुन्दर फूल हमारा,
दूर गगन में चमका बनकर एक सितारा!

इल्या इन पंक्तियों के बारे में सोचने लगा और वे उसे बहुत हृदयस्पर्शी लगीं। अचानक उसे ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके दिल में छुरा भोंक दिया हो। वह लड़खड़ा गया और उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। लेकिन बन्द आँखों से भी उसे वे अंकित शब्द दिखायी दे रहे थे जिनसे उसके दिल पर चोट-सी पड़ी थी। भूरे पत्थर पर खुदे हुए सुनहरे अक्षर उसके दिमाग़ पर अंकित हो गये थे :

'यहाँ चिरनिद्रा में सो रहा है वासीली गव्रीलोविच पोलुएक्तोव, द्वितीय गिल्ड का व्यापारी।'

अगले ही क्षण वह अपने भय से भयभीत हो उठा; उसने जल्दी से अपनी आँखें खोल दीं और नज़रें बचाकर चारों ओर देखने लगा। कहीं कोई दिखायी नहीं दे रहा था, लेकिन दूर से उसे किसी के अन्तिम संस्कार के समय की प्रार्थना सुनायी दी। सन्नाटे को चीरती हुई किसी पादरी की आवाज़ आयी :

"प्रार्थना करें..." और किसी ने मानो असन्तोष-भरी भारी आवाज़ में कहा :

"दया करो!"

झूलती हुई धूपदानी की टिक-टिक की आवाज़ बहुत ही धीमी थी, इतनी धीमी कि लगभग सुनायी नहीं दे रही थी।

इल्या मैपिल के पेड़ के तने के सहारे टिककर खड़ा उस आदमी की कब्र को देखता रहा जिसकी उसने हत्या की थी। उसकी टोपी, जिसका पिछला हिस्सा पेड़ के

तने से लगा हुआ था, उसके माथे से ऊपर सरक आयी थी। उसकी भवें तनी हुई थीं और उसका ऊपरी होंठ काँप रहा था जिसकी वजह से उसके दाँत दिखाई दे रहे थे। उसने अपने हाथ पतलून की जेब में डाल दिये और पाँव मज़बूती से ज़मीन पर गड़ा लिये।

पोलुएक्तोव की कब्र ताबूत की शक्ल की थी, जिसके ढक्कन पर एक खुली किताब और कंकाल की खोपड़ी और एक-दूसरे को काटती हुई दो हड्डियों की आकृतियाँ ख़ुदी हुई थीं। उस कब्र के पास उसी घेरे में उससे छोटा एक और ताबूत था जिस पर ये शब्द अंकित थे कि वहाँ बाइस वर्षीया येवप्राक्सिया पोलुएक्तोवा के पार्थिव अवशेष सुरक्षित थे।

"उसकी पहली बीवी," इल्या ने सोचा।

यह विचार बिजली की तरह उसके मस्तिष्क के उस एकमात्र छोटे-से क्षेत्र में कौंध गया जो पिछली बातों को याद करने से मुक्त रह गया था। उसका सारा अस्तित्व पोलुएक्तोव से सम्बन्धित यादों में डूबा हुआ था उसके साथ उसकी पहली मुठभेड़, उसका गला घोंटने की घटना, जब उसके हाथ पर बूढ़े की राल टपक रही थी। लेकिन इन सब स्मृतियों को अपने दिमाग़ में जागृत करके वह न भय अनुभव कर रहा था न खेद; उस कब्र को देखकर उसके मन में घृणा और पीड़ा और क्षोभ की भावनाएँ जागृत हो रही थीं। उसके दिल में अपार क्रोध उमड़ पड़ा जब उसने मन ही मन उस सूदख़ोर महाजन से ये शब्द कहे जिनकी सच्चाई पर उसे पूरा विश्वास था :

"मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी तेरी वजह से तबाह कर ली, कमबख़्त! तेरी वजह से, सुनता है? कुत्ता कहीं का! अब मैं ज़िन्दगी कैसे बसर करूँ? मरते वक़्त तक मेरे दामन पर तेरा दाग़ रहेगा!"

वह भरपूर आवाज़ से चिल्लाना चाहता था; सच तो यह है कि उसे अपनी इस प्रचण्ड आकाँक्षा का दमन करने में कठिनाई हो रही थी। अपनी कल्पना में उसे पोलुएक्तोव का द्वेष-भरा सूखा हुआ चेहरा, गंजी चाँद और लाल भवों वाली स्त्रोगानी की कठोर आकृति, पेत्रूख़ा की आत्म-तुष्ट सूरत, कीरिक की बेवकू फ़ों जैसी शक्ल, सफ़ेद बालों वाले ख़्रेनोव की ऊपर को उठी हुई नाक और सुअरों जैसी आँखों वाली सूरत दिखाई दे रही थी जिन लोगों को वह जानता था उनकी तस्वीरों की एक पूरी नुमाइश। उसके कानों में एक शोर गूँज रहा था और उसे ऐसा लग रहा था कि इन लोगों ने उसे चारों ओर से घेर लिया था और वे लगातार उसकी ओर बढ़ते आ रहे थे।

वह पेड़ के तने का सहारा छोड़कर अलग हट गया। उसकी टोपी नीचे गिर पड़ी। जब वह टोपी उठाने के लिए नीचे झुका तो अपनी नज़रें उस स्मारक की ओर से न हटा सका, जो सूदख़ोर और चोरी का माल ख़रीदने वाले के सम्मानार्थ बनाया गया।

उसे मतली हो रही थी और वह हाँफ रहा था; उसके भेजे की ओर ख़ून तेज़ी से दौड़ रहा था और उसकी आँखें तनाव की वजह से दर्द करने लगी थीं। बहुत कोशिश करके उसने अपनी नज़रें कब्र पर से हटायीं, जंगले के पास जाकर उसे दोनों हाथों से पकड़ लिया और घृणा से काँपते हुए कब्र पर थूक दिया... और वहाँ से चलते हुए उसने अपना पाँव ज़ोर से ज़मीन पर पटका, मानो उसे चोट पहुँचाना चाहता हो!

वह घर नहीं जाना चाहता था। उसका मन भारी था और वह व्यथा के बोझ से दबा जा रहा था। वह धीरे-धीरे चल रहा था, न किसी को देख रहा था, न उसे किसी चीज़ में दिलचस्पी थी और न वह कुछ सोच रहा था। यन्त्रवत् सड़क के छोर पर आकर वह नुक्कड़ पर मुड़ गया, और अचानक उसे आभास हुआ कि वह पेत्रूख़ा के शराबख़ाने के पास पहुँच गया है। इस बात से उसे याकोव की याद आयी। फाटक पर पहुँचकर उसने महसूस किया कि उसे अन्दर जाना चाहिए, हालाँकि ऐसा करने की उसकी कोई इच्छा नहीं हो रही थी। वह पिछले दरवाज़े की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।

“भले लोगो!” पेर्फ़ीश्का की आवाज़ सुनायी दी, “अपने हाथों पर रहम खाओ और मेरी पसलियों का पीछा छोड़ दो!”

इल्या दरवाज़े पर ही ठिठक गया। धूल और तम्बाकू के धुएँ की झीनी चादर के पीछे उसे याकोव काउण्टर पर खड़ा दिखायी दिया। उसके बाल चिपके हुए थे और उसने आधी आस्तीनों की एक कसी हुई जैकेट पहन रखी थी। वह जल्दी-जल्दी चायदानियाँ भर रहा था, शकर के डले गिन-गिनकर दे रहा था, गिलासों में वोद्का उँडेल रहा था और गल्ले की दराज ज़ोर की आवाज़ के साथ बार-बार खोल रहा था और बन्द कर रहा था। वेटर भाग-भागकर उसके पास आ रहे थे और अपनी पर्चियाँ काउण्टर पर फेंककर चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे :

“एक पौआ! दो बियर! दस कोपेक का स्टू!”

अपने दोस्त के लाल हाथों को बड़ी तेज़ी से हवा में चलते हुए देखकर इल्या ने द्वेषपूर्ण सन्तोष के साथ सोचा, “सारे हथकण्डे सीख गया है!”

“अरे, तुम!” इल्या के काउण्टर के पास पहुँचने पर याकोव ख़ुशी से बोला, लेकिन फ़ौरन ही अपने पीछे के दरवाज़े पर बेचैन होकर नज़र डाली। उसके माथे पर पसीने की बूँदें छलक आयी थीं, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, उसके गालों की हड्डियों पर लाल धब्बे उभर आये थे। उसे सूखी खाँसी आ गयी। खाँसते-खाँसते वह इल्या का हाथ पकड़कर ज़ोर से हिला रहा था।

“क्या हालचाल है तुम्हारा?” इल्या ने जबर्दस्ती मुस्कराते हुए पूछा। “तो तुम्हें जोत दिया गया?”

"क्या किया जाये?"

याकोव के कन्धे ढीले पड़ गये और ऐसा लगा कि उसका क़द ज़रा छोटा हो गया।

"तुमसे मिले बहुत दिन हो गये," उसने इल्या को अपनी उदास, नेक-भरी आँखों से घूरते हुए कहा। "मैं तुमसे बातें करना चाहता हूँ... अरे, हाँ, मेरा बाप बाहर गया हुआ है। ज़रा ठहरो : यहाँ अन्दर आ जाओ, मैं अपनी सौतेली माँ से कहता हूँ कि कुछ देर तक मेरी जगह सँभाल लें..."

उसने अपने बाप के कमरे का दरवाज़ा खोला और बड़े आदर के भाव से पुकारकर कहा :

"माँ! एक मिनट के लिए आप ज़रा यहाँ आयेंगी?"

इल्या उस कमरे में चला गया जिसमें कभी वह अपने चाचा के साथ रहा करता था और उसे बड़े ध्यान से देखने लगा। उसमें उसे बस इतना परिवर्तन दिखायी दिया कि दीवार पर चिपका हुआ काग़ज़ गन्दा हो गया था, कमरे में दो के बजाय अब एक ही चारपाई थी, और उसके ऊपर किताबों की एक शेल्फ टंगी हुई थी। पहले जहाँ इल्या की चारपाई बिछी रहती थी वहाँ अब एक बड़ा-सा, भोंडी शक्ल का सन्दूक़-सा रखा हुआ था।

"अच्छा, मुझे एक घण्टे की फ़ुर्सत है!" याकोव ने कमरे में आकर दरवाज़ा बन्द करते हुए ख़ुश होकर कहा। "चाय पिओगे? इ-वान! चाय!" उसने चिल्लाकर कहा। उसे खाँसी आ गयी और वह बड़ी देर तक सिर झुकाकर, दीवार पर अपना हाथ टिकाये खाँसता रहा और अपने फेफड़ों में से मानो कुछ निकाल देने की कोशिश में दोहरा हो गया।

"कितनी खाँसी आती है तुम्हें!" इल्या ने कहा।

"तपेदिक़ है। मेरी तोबा, लेकिन तुमसे मिलकर बहुत ख़ुशी हुई! तुम सचमुच लगते हो बहुत... बहुत बड़े आदमी! तो, ज़िन्दगी कैसी कट रही है?"

"बस, चलता है," इल्या ने कुछ रुककर कहा। "मैं तो तुम्हारा हालचाल जानना चाहता हूँ।"

इल्या का अपने बारे में कुछ कहने को, या कुछ भी कहने को जी नहीं चाह रहा था। याकोव का मुरझाया हुआ चेहरा देखकर उसे तरस आ रहा था। लेकिन वह भावशून्य करुणा थी एक तरह की बंजर भावना।

"किसी तरह अपनी ज़िन्दगी का बोझ ढो रहा हूँ, भाई," याकोव ने धीरे से कहा।

"तुम्हारे बाप ने सारा ख़ून चूस लिया है तुम्हारा..."

दीवार के उस पार पेर्फ़ीश्का अकार्डियन बजा रहा था और गा रहा था :

रूबल तो है एक छलावा,
उसकी माया आनी-जानी,
गीतों में मैं प्यार लुटाता,
आ जा, बन जा मेरी रानी!

"वह सन्दूक़ जैसा क्या है?" इल्या ने पूछा।

"वह? हार्मोनियम है। मेरे बाप ने पच्चीस रूबल का मेरे लिए ख़रीदा है। कहता है कि मैं बजाना सीख लूँ तो मुझे बढ़िया हार्मोनियम ख़रीद देगा और उसे शराबख़ाने में रख देगा ताकि मैं उसे बजाकर गाहकों का मन बहलाऊँ। वह कहता है कि मैं और तो किसी काम का हूँ नहीं। उसने सारा हिसाब अच्छी तरह लगा लिया है : बाक़ी सब शराबख़ानों में आर्गन बाजे हैं बस हमारे शराबख़ाने में ही नहीं है। इसके अलावा मुझे भी बजाना अच्छा लगता है..."

"बदमाश है वह," इल्या ने कटुता से मुस्कराकर कहा।

"ऐसा क्यों कहते हो? मैं सचमुच उसके किसी काम का नहीं हूँ।"

इल्या ने उस पर एक कठोर दृष्टि डाली और ग़ुस्से से बिफरकर बोला :

"तुम्हें उससे कहना चाहिए, 'मेरे प्यारे पापा, जब मैं मर जाऊँ तो मेरी लाश शराबख़ाने में घसीटकर पहुँचा देना और जो भी भकुआ मुझे देखना चाहे उससे पाँच-पाँच कोपेक वसूल कर लेना।' इस तरह तुम उसके किसी काम आ सकते हो।"

याकोव खिसियायी हुई हँसी हँस दिया; उसे फिर खाँसी का दौरा पड़ गया और वह कभी अपना गला और कभी सीना पकड़कर खाँसने लगा।

"तुम्हारी अपने सौतेले भाई से कैसी बनती है?" उसकी खाँसी का दौरा ख़त्म होने पर इल्या ने उससे पूछा।

"वह हम लोगों के साथ नहीं रहता," याकोव ने कहा; उसका चेहरा खाँसते-खाँसते नीला पड़ गया था। "उसका चीफ़ उसे यहाँ रहने नहीं देता। यह ठहरा शराबख़ाना... और वह शरीफ बनना चाहता है।"

याकोव अपनी आवाज़ धीमी करके उदास भाव से कहता रहा :

"किताब याद है? वह किताब? वह उसे मुझसे छीन ले गया। कहने लगा कि बहुत दुर्लभ किताब है और उसके बहुत पैसे मिल जायेंगे। बस, यह कहकर ले गया। मैं गिड़गिड़ाकर मना करता रहा, लेकिन उसने मेरी एक न सुनी।"

इल्या हँस दिया। फिर दोनों दोस्तों ने साथ चाय पी। दीवार का काग़ज़ जगह-जगह से फट गया था और दीवार की दरारों में से शराबख़ाने की आवाज़ें और ख़ुशबुएँ अन्दर आ रही थीं। एक बार तो किसी के जोश में आकर चिल्लाने की आवाज़ में बाक़ी सारी आवाज़ें डूब गयीं :

"मित्री निकोलायेविच! जो कुछ मैंने ईमानदारी से कहा है उसका ग़लत मतलब न निकालो!"

"मैं आजकल एक किताब पढ़ रहा हूँ, भाई," याकोव बोला। "उसका नाम है 'जूलिया, या मैज़िनी के महल का तहख़ाना'... बहुत दिलचस्प किताब है! और तुम?"

"भाड़ में जायें तुम्हारे महल और उनके तहख़ाने! मैं ख़ुद ज़मीन से बहुत ऊपर नहीं रहता हूँ," इल्या ने मुँह लटकाकर कहा।

याकोव ने उसे हमदर्दी से देखा।

"कुछ गड़बड़ी है?" उसने पूछा।

इल्या सोच रहा था कि वह उसे माशा के बारे में बताये या नहीं, लेकिन उसके फ़ैसला कर पाने से पहले ही याकोव अपनी बात का सिलसिला जारी रखते हुए बोला :

"तुम्हारा तो हमेशा यही हाल रहता है हमेशा बिफरे हुए हमेशा कोई न कोई दुखड़ा पाले रहते हो; मैं नहीं समझता कि यह कोई अच्छी बात है। बहरहाल, जो भी हालत है उसके लिए किसी को दोष तो नहीं दिया जा सकता।"

इल्या कोई जवाब दिये बिना ही अपनी चाय पीता रहा।

"कहा गया है : 'हर आदमी को अपने किये का फल मिलता है', और यह है भी सच। मेरे बाप को ही ले लो वह बहुत बेरहम है, इससे तो इनकार नहीं किया जा सकता। और फिर अचानक उसकी वह नयी बीवी आ गयी, फ़्योक्ला तिमोफ़ेयेव्ना, और उसने उसे अपने शिकंजे में कस लिया। कैसा नाच नचाती है वह उसे! वह शराब भी पीने लगा है। अभी उनकी शादी हुए दिन ही कितने हुए हैं। और कोई न कोई फ़्योक्ला तिमोफ़ेयेव्ना सभी का इन्तज़ार करती रहती है, उसे अपने गुनाहों की सज़ा देने के लिए..."

इल्या को इन बातों से उकताहट हो रही थी। उसने अधीर होकर अपना प्याला परे कर दिया और उसे ख़ुद इस बात पर इतना आश्चर्य हुआ कि वह अचानक बोला :

"तुम इन्तज़ार किस बात का कर रहे हो?"

"क्या मतलब तुम्हारा?" याकोव ने अपनी आँखें फाड़कर धीरे से पूछा।

"तुम किस बात का... मेरा मतलब है... आगे चलकर; तुम किस बात का इन्तज़ार कर रहे हो?" कठोर स्वर में इल्या ने अपना सवाल दोहराया।

याकोव ने सिर झुका लिया और विचारों में खो गया।

"तो?" इल्या ने धीमी आवाज़ में कहा। वह बेहद बेचैन हो रहा था और जल्दी से जल्दी वहाँ से चला जाना चाहता था।

"इन्तज़ार करने के लिए मेरे पास है ही क्या?" याकोव ने इल्या की ओर नज़र उठाये बिना धीरे से कहा। "कुछ भी नहीं। कुछ दिन में मैं मर जाऊँगा और बस।"

फिर उसने झटके के साथ अपना सिर पीछे की ओर झुका लिया और उसके थके हुए चेहरे पर ख़ुशी की मुस्कराहट दौड़ गयी।

"मुझे नीले-नीले सपने दिखायी देते हैं। हर चीज़ नीली आसमान ही नहीं, बल्कि धरती और पेड़ और फूल और घास भी हर चीज़! और हर चीज़ बेहद शान्त। इतनी शान्त जैसे कहीं कुछ हो ही नहीं। और हर चीज़ नीली। और मैं उन सब चीज़ों के बीच से होकर चलता रहता हूँ, चलता ही चला जाता हूँ, यह सिलसिला कभी ख़त्म ही नहीं होता, और मैं ज़रा भी नहीं थकता। और यह समझ में ही नहीं आता कि मैं हूँ या नहीं। कितना सुगम होता है... नीले सपने हमेशा मौत से पहले दिखायी देते हैं..."

"अच्छा, मैं चलता हूँ," इल्या ने उठते हुए कहा।

"लेकिन क्यों? थोड़ी देर और ठहरो!"

"नहीं, मैं चलूँगा। फिर मिलेंगे।"

याकोव भी उठ खड़ा हुआ।

"अच्छा... तो फिर मिलेंगे।"

इल्या ने उसका तपता हुआ हाथ दबा दिया और एक क्षण के लिए उसकी आँखों में आँखें डालकर घूरता रहा; विदा होते समय कहने के लिए उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। और वह कुछ कहना ज़रूर चाहता था, बहुत बुरी तरह उसका कुछ कहने को जी चाह रहा था, इतनी बुरी तरह कि उसे पीड़ा हो रही थी।

"और माशा, वह बड़ी मुसीबत झेल रही है, सुना?" याकोव ने उदास होकरं कहा।

"सो तो वह झेल रही है..."

"ऐसा लगता है कि हमारा सबका एक जैसा ही अंजाम होगा। तुम भी ज़िन्दगी का कोई ख़ास सुख उठाते नहीं मालूम होते, क्यों, है न?"

यह बात कहते हुए याकोव के होंठों पर फीकी-सी मुस्कराहट दौड़ गयी, और उसकी आवाज़ और उसके शब्द, वग़ैरह न जाने क्यों बेजान और विवर्ण लग रहे थे... इल्या ने अपनी पकड़ ढीली कर दी और याकोव का हाथ उसकी बग़ल में झूल गया।

"अच्छा, मैं चलता हूँ, याकोव। माफ़ करना..."

"माफ़ करने वाला तो बस भगवान है। फिर आओगे न?"

इल्या जवाब दिये बिना बाहर चला गया।

बाहर सड़क पर निकलकर उसकी तबीयत कुछ सँभली। यह बात उसकी समझ में बिल्कुल आ गयी थी कि याकोव जल्दी ही मर जायेगा, और इसकी वजह से उसके मन में किसी के ख़िलाफ़ झुँझलाहट की भावना पैदा हुई। उसे इस बात का अफ़सोस नहीं था कि याकोव मर जायेगा, क्योंकि वह इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता

था कि इतना दब्बू आदमी इस दुनिया में ज़िन्दा कैसे रह सकता है। बहुत पहले ही से उसने याकोव के बारे में यह समझ लिया था कि वह तो मिट जायेगा ही। लेकिन जिस बात पर उसका ग़ुस्सा भड़क उठता था वह यह थी : जो आदमी इतना सीधा हो उसे क्यों इस तरह सताया जाये, और उसे वक़्त से पहले ही इस दुनिया को छोड़कर चले जाने पर मजबूर क्यों कर दिया जाये? और इस विचार से जीवन के प्रति उसकी वह झुँझलाहट, जो उसके अस्तित्व का आधार बन चुकी थी, और भी मज़बूत हो गयी और पहले से भी ज़्यादा बढ़ गयी।

उस रात वह सो नहीं सका। खिड़की खुली होने के बावजूद कमरे में उसका दम घुटा जा रहा था। वह बाहर आँगन में निकल आया और चहारदीवारी के पास उगे हुए एल्म के पेड़ के नीचे ज़मीन पर लेट गया। वह पीठ के बल लेटा रात के आसमान को ताक़ता रहा; वह जितनी ही देर तक घूरता रहा, उसे लगातार नये सितारे दिखाई देते रहे। आकाश-गंगा आसमान के आर-पार एक रूपहले दुपट्टे की तरह फैली हुई थी। पेड़ों की डालों के बीच से उसका दृश्य एक ऐसी भावना उत्पन्न करता था जो सुखद भी थी और उदास भी। आकाश पर तो, जहाँ कोई भी नहीं रहता था, जगह-जगह तारे टंके हुए थे, लेकिन धरती को सजाने के लिए क्या था? इल्या ने अपनी आँखें सिकोड़ लीं और उसे यह भ्रम होने लगा कि पेड़ की डालें ऊँची उठती जा रही हैं। तारों-भरे आकाश के नीले मख़मल की पृष्ठभूमि पर डालों के काले बेल-बूटे ऐसे लग रहे थे जैसे किसी ने आकाश तक पहुँचने की लालसा में उसकी ओर हाथ फैला रखे हों। इल्या को याकोव के नीले सपनों की याद आ गयी, और ख़ुद याकोव की आकृति उसकी आँखों के सामने फिरने लगी, नीला-नीला याकोव, नाज़ुक और पारदर्शी, जिसकी नेकी-भरी आँखें सितारों जैसी चमकदार थीं... एक वह था, जिसे कब्र में सिर्फ़ इसलिए ढकेला जा रहा था कि वह बहुत भीरु और विनम्र था, और दूसरी ओर वे लोग, जो उसे ढकेल रहे थे, मनमानी कर रहे थे...

गावरिक की बहन अब दुकान में लगभग रोज़ ही आने लगी थी। उसे हमेशा कोई न कोई चिन्ता लगी रहती थी, और इल्या से बड़े तपाक से हाथ मिलाकर उससे दो-चार बातें करने के बाद वह चल देती थी और उसके सोचने के लिए कोई नयी चीज़ छोड़ जाती थी। एक दिन उसने इल्या से कहा :

"आपको दुकानदारी का काम अच्छा लगता है?"

"नहीं, मैं यह तो नहीं कह सकता कि मुझे यह काम कुछ ख़ास अच्छा लगता है," इल्या ने कन्धे बिचकाकर कहा, "लेकिन किसी न किसी तरह पेट तो पालना ही है।"

उसकी गम्भीर नज़रें इल्या को बड़ी जिज्ञासा से देख रही थीं और उसका चेहरा

ऐसा लगता था कि इल्या की ओर बढ़ आने की कोशिश कर रहा है।

“आपने कभी अपनी मेहनत से रोजी कमाने की कोशिश नहीं की है?” उसने पूछा।

उसका सवाल इल्या की समझ में नहीं आया।

“क्या कहा आपने?”

“आपने कभी काम किया है?”

“हमेशा करता रहा हूँ। ज़िन्दगी भर। व्यापार का काम करता हूँ...” उसने कुछ उलझन में पड़कर कहा।

वह मुस्करा दी, और उसके मुस्कराने के ढंग में कुछ दिल दुखाने वाला अन्दाज़ था।

“क्या आप समझते हैं कि चीज़ें बेचना मेहनत है? क्या आप दोनों को एक ही चीज़ समझते हैं?”

“क्यों? क्या कोई फ़र्क है?”

उसके चेहरे को एक नज़र देखते ही इल्या समझ गया कि यह बात वह संजीदगी से कह रही थी।

“फ़र्क ज़रूर है,” वह नरमी से मुस्कराकर बोली। “मेहनत वह होती है जब आदमी अपनी ताक़त खर्च करके कोई चीज़ बनाता है; जैसे जब वह फ़ीता, रिबन, कुर्सी, अलमारी जैसी कोई चीज़ बनाता है समझ रहे हैं आप?”

इल्या ने सिर हिला दिया और शरमा गया : उसे यह मानते हुए शर्म आ रही थी कि वह समझ नहीं पा रहा था।

“जहाँ तक व्यापार का सवाल है उसे मेहनत कैसे कहा जा सकता है? वह लोगों को कुछ नहीं देता!” वह दृढ़ विश्वास के साथ बोली और अपनी बात कहते हुए इल्या के चेहरे को बड़े ध्यान से देखती रही।

“यह बात तो ठीक है,” इल्या ने धीरे-धीरे सतर्कता से बोलते हुए स्वीकार किया। “व्यापार करना कोई मुश्किल काम नहीं है... आदत पड़ जाये तो... लेकिन इससे लोगों को कुछ मिलता तो ज़रूर है। अगर उन्हें मुनाफ़ा न मिलता तो वे व्यापार कभी न करते।”

वह इस चर्चा को छोड़कर अपने भाई की ओर मुड़कर उससे बातें करने लगी और थोड़ी ही देर बाद सिर के हल्के-से झटके के साथ इल्या से विदा लेकर वह चली गयी; उसका चेहरा वैसा ही गर्वीला और भावशून्य था जैसा कि माशा की घटना से पहले रहा करता था। इल्या सोच में पड़ गया कि कहीं उसने कोई ऐसी बात तो नहीं कह दी जो उसे बुरी लग गयी हो। उसने मन ही मन अपनी कही हुई बातों को दोहराया, लेकिन

उनमें उसे कोई भी बुरी लगने वाली बात दिखायी नहीं दी। फिर उसे याद आया कि वह क्या कह रही थी, और वह उसकी बातों के बारे में सोचने लगा। मेहनत और व्यापार के बीच वह क्या फ़र्क   निकाल सकती है?

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह इतनी ग़ुस्सैल और इतनी हठीली क्यों दिखायी देती थी जबकि वह सचमुच न नेकदिल थी और न सिर्फ़ उसके दिल में दूसरों के प्रति दया थी, बल्कि वह उनकी मदद करने की भी भरसक कोशिश करती थी। पावेल उसके घर हो आया था और वह उसके बारे में और जिस तरह वह रहती थी उसके बारे में तारीफ़ के पुल बाँधते नहीं थकता था।

"जब भी उसके घर जाओ यहीं सुनने को मिलता है : 'आपसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई!' अगर वे लोग खाना खा रहे होते हैं, तो आइये, साथ खाना खाइये, और अगर चाय पी रहे हों, तो चाय पीजिए। बस यों ही, कोई तकल्लुफ़ नहीं। और बहुत-से लोग होते हैं। सब गाते रहते हैं और शोर मचाते रहते हैं और किताबों के बारे में बहस करते रहते हैं। बहुत मस्त और जानदार। और किताबें तो इतनी जितनी किताबों की दुकान में होती हैं। घर तो बहुत बड़ा नहीं है   चलते-फिरते हर आदमी दूसरे से टकरा जाता है, लेकिन वे हँसकर टाल जाते हैं। सभी पढ़े-लिखे लोग हैं। कोई वकील है, कोई जल्दी ही डॉक्टर हो जायेगा, और कुछ विद्यार्थी और इसी तरह के दूसरे लोग होते हैं, लेकिन थोड़ी ही देर में तुम्हें याद ही नहीं रहता कि तुम उनके बराबर नहीं हो और तुम उनके साथ घुल-मिलकर सिगरेट पीने लगते हो, हँसने लगते हो। बहुत अच्छे लोग हैं! जोशीले और ईमानदार।"

"मुझे तो वह कभी नहीं बुलायेगी," इल्या ने उदास होकर कहा। "वह बड़ी अभिमानी है..."

"कौन, वह?" पावेल ने आश्चर्य से कहा। "मैं तुम्हें बताता हूँ, वह तो इतनी सीधी-सादी है कि कुछ पूछो नहीं! बुलाये जाने का इन्तज़ार न करो   ख़ुद चले जाओ। पहुँच गये   बस। उन लोगों का घर शराबख़ाने की तरह है, सच कहता हूँ! कहीं कोई रोक-टोक नहीं, किसी तरह का कोई तकल्लुफ नहीं। मुझ को ही देखो   उनके मुकाबले मैं कौन हूँ? लेकिन दो बार वहाँ जाने के बाद ही मुझे वहाँ बिल्कुल अपने घर जैसा लगने लगा है। बहुत दिलचस्प लोग हैं! ज़िन्दगी का भरपूर मज़ा उठाते हैं..."

"माशा कैसी है?" इल्या ने पूछा।

"लगता तो है कि कुछ-कुछ ठीक होती जा रही है... चेहरे पर मुस्कराहट लिए बैठी रहती है। वे लोग उसे दूध पिलाते हैं और दवा देते हैं... ख़्रेनोव को तो अच्छी तरह मज़ा चखाया जायेगा! वकील कहता है कि उस खूसट सुअर को अपने किये का पाई-पाई हिसाब चुकाना होगा। वे लोग माशा को छानबीन करने वाले सरकारी अफ़सर

के पास ले जाते हैं... और वे लोग वेरा के बारे में भी कुछ कर रहे हैं   मुक़दमे का फ़ैसला जल्दी करवाने की कोशिश कर रहे हैं... अरे, सच कहता हूँ, उसका घर बहुत अच्छा है। छोटा-सा घर है   चूल्हे में लकड़ियों की तरह लोग वहाँ ठसाठस भरे रहते हैं, और हर तरफ़ रोशनी और गर्मी भी वैसी ही फैली रहती है।"

"और वह? उसके बारे में क्या खयाल है तुम्हारा?"

पावेल उसके बारे में वैसी ही श्रद्धा के साथ बताता रहा जिस श्रद्धा के साथ वह बचपन में उन कैदियों के बारे में बातें करता था जिन्होंने उसे पढ़ना-लिखना सिखाया था। वह बहुत जोश में आ गया था और उसके वाक्यों में भावावेश पैदा हो गया था।

"वह? वह तो अपनी तरह की एक ही है, सच कहता हूँ तुमसे! सब पर अपना रोब रखती है, और अगर किसी ने कोई बेजा बात कही तो बस   गर्र! बिल्कुल शेरनी है!"

"क्या मैं जानता नहीं!" इल्या ने हल्की हँसी के साथ कहा। उसे पावेल से इर्ष्या हो रही थी। वह इस कठोर लड़की के यहाँ जाने के लिए तड़प रहा था, लेकिन उसका स्वाभिमान उसे निमन्त्रण के बिना जाने से रोकता था।

काउण्टर के पीछे खड़े-खड़े वह मन ही मन सोचता रहता था :

"इस दुनिया में बहुत से लोग हैं, और उनमें से हर एक अपने पड़ोसी से कोई न कोई फ़ायदा उठाने की कोशिश करता है लेकिन माशा और वेरा की मदद करके उसे क्या फ़ायदा मिल जाता है? वह ग़रीब है। उस घर में एक-एक दाने की बड़ी कीमत है। मतलब यह कि उसका दिल बहुत बड़ा है। फिर भी, देखो, वह मुझसे किस तरह बात करती है। क्या मैं पावेल से किसी बात में कम हूँ?"

वह इन विचारों में इतना डूबा रहता था कि किसी दूसरी चीज़ का उसके लिए कोई ख़ास महत्त्व ही नहीं रह गया था। ऐसा लगता था कि उसके जीवन के अन्धकार में एक पतली-सी दरार खुल गयी है, और इस दरार में से वह बहुत दूर से आती हुई किसी ऐसी चीज़ की चमक को देखने से ज़्यादा महसूस करता था, जिसका अभी तक उससे सम्पर्क नहीं हुआ था।

"तुम्हें यह पतला ऊनी फ़ीता थोड़ा-सा और मँगाना होगा," एक दिन दुकान आकर तात्याना व्लास्येव्ना ने कड़े स्वर में कहा। "और वह लैस भी ख़त्म हो गयी है। और काला सूती धागा   पचास नम्बर का। एक कम्पनी हमारे हाथ सीप के बटन बेचना चाहती है। उनका एजेण्ट मुझसे मिलने आया था। मैंने उसे तुम्हारे पास भेज दिया था। आया था यहाँ?"

"नहीं तो," इल्या ने रुखाई से जवाब दिया। वह इस औरत से दिल से नफ़रत करने लगा था। उसे शक था कि वह कोर्साकोव के साथ रहती थी, जिसे अभी हाल

ही में तरक्की देकर थानेदार बना दिया गया था। अब वह इल्या से मिलने का वक़्त कभी-कभार ही तय करती थी, हालाँकि उसकी तरफ़ उसका प्यार और हँसी-मज़ाक़ का बर्ताव अब भी पहले जैसा ही था, और जब भी वह उससे मिलने की कोशिश करती वह टाल जाने का कोई रास्ता निकाल लेता। इस बात पर तात्याना को कोई ग़ुस्सा न आने की वजह से वह उससे और भी नफ़रत करने लगा था।

"छिनाल! रण्डी कहीं की!" वह मन ही मन कहता।

जब वह दुकान में माल का हिसाब-किताब करने आती तब वह उसे ख़ास तौर पर बुरी लगती थी। वह फिरकी की तरह चारों ओर नाचती रहती थी, कूदकर काउण्टर पर चढ़ जाती थी, अलमारियों के सबसे ऊपर वाले पटरों पर से डिब्बे उतार लाती थी, गर्द की वजह से छींकने लगती थी और अपने बालों को पीछे की ओर झिटक देती थी। वह लगातार गावरिक के बारे में बड़बड़ाती रहती थी :

"दुकान में काम करने वाले लड़के को फुर्तीला और दौड़-दौड़कर काम करने वाला होना चाहिए। उसे पैसा इस बात का नहीं दिया जाता कि दरवाज़े पर बैठा नाक खूँटता रहे। और जब उसकी मालकिन उससे बात करे तो उसे ध्यान से सुनना चाहिए, न कि उसे ग़ुस्से से घूरता रहे।"

लेकिन गावरिक भी अपनी आन का पक्का था। उसकी डाँट-फटकार चुपचाप सुन लेता और उससे ढिठाई के साथ बात करता और मालकिन की हैसियत से उसके प्रति तनिक भी सम्मान प्रकट न करता। जब वह चली जाती तो वह इल्या से कहता :

"नकचढ़ी चली गयी।"

"अपनी मालकिन के बारे में तुम्हें ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए," इल्या अपनी मुस्कराहट को रोकते हुए उपदेश देता।

"मालकिन, मेरे ठेंगे पर!" गावरिक कहता। "बस आकर फुदकती रहती है, चाँव-चाँव करती है, और फुदककर बाहर चली जाती है। मालिक तो आप हैं।"

"वह भी है," इल्या क्षीण स्वर में आपत्ति करता; मुँहफट तरीक़े से बात कह देने और स्वतन्त्र स्वभाव की वजह से इस लड़के पर उसे बहुत प्यार आता था।

"मगर, वह है नकचढ़ी, मैं तो बस इतना जानता हूँ," गावरिक कहता।

एक बार तात्याना व्लास्येव्ना ने इल्या से कहा :

"तुम लड़के को ठीक से काम सिखाते नहीं। और कुल मिलाकर, मैं यह कह देना अपना फर्ज समझती हूँ कि इधर कुछ दिनों से हमारा कारोबार जिस तरह चलाया जा रहा है वह... मेरा मतलब है... उसमें कोई जोश नहीं है कारोबार से तुम्हें कोई लगाव नहीं है।"

इल्या ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन उसका दिल उसके लिए नफ़रत से भर

उठा और उसने मन ही मन सोचा : "मैं तो यही मनाता हूँ कि यहाँ उचकते-फाँदते तेरे टख़ने में मोच आ जाये, चुड़ैल कहीं की!"

उसके पास चाचा तेरेन्ती का खत आया था, जिसमें उसने लिखा था कि वह न सिर्फ़ कियेव गया था, बल्कि त्रोइत्से-सेर्गियेव्स्की मठ भी गया था और श्वेत सागर में सोलोव्की द्वीप पर बने हुए मशहूर मठ तक की यात्रा भी उसने लगभग पूरी कर ली थी, लेकिन वह लादोगा झील में वलआम द्वीप के मठ तक ही पहुँच पाया था और जल्दी ही घर आने वाला था।

"यह लो एक और ख़ुशख़बरी," इल्या ने चिढ़कर सोचा। "शायद वह मेरे साथ रहना भी चाहेगा..."

इतने में कुछ गाहक आ गये और अभी वह उन्हें निबटा ही रहा था कि गावरिक की बहन दुकान में आयी। वह बहुत थकी हुई थी, हाँफते हुए उससे दुआ-सलाम करने के बाद उसने इल्या के कमरे की तरफ़ सिर के झटके से इशारा करके पूछा :

"अन्दर पानी है?"

"अभी एक सेकण्ड में लाया!" इल्या ने कहा।

"नहीं, मैं ख़ुद ले आऊँगी..."

वह कमरे में चली गयी और तब तक वहीं रही जब तक कि इल्या अपना काम ख़त्म करके वहाँ आ नहीं गया। इल्या ने देखा कि वह 'मनुष्य के जीवन की अवस्थाएं' के सामने खड़ी थी। उसके अन्दर आते ही वह मुड़ी और अपनी आँखों से तस्वीर की तरफ़ इशारा करके बोली :

"कितनी भद्दी है!"

उसकी यह बात सुनकर इल्या कुछ खिसिया गया और विनीत भाव से मुस्करा दिया। लेकिन इससे पहले कि वह उससे अपनी बात ठीक से समझाने को कहता, वह जा चुकी थी।

कुछ दिन बाद वह अपने भाई के लिए उसके धुले हुए कपड़े लेकर आयी और इतनी लापरवाही से अपने कपड़े फाड़ने और गन्दे करने पर उसे डाँटने लगी।

"लो, बस शुरू हो गयीं!" गावरिक ने ढिठाई से कहा। "मालकिन तो हर वक़्त जान खाती ही रहती हैं, और अब तुम भी..."

"क्या यह बहुत शरारत करता है?" लड़की ने इल्या से पूछा।

"बस, जितनी शरारत जानता है उतनी करता है," इल्या ने शिष्टता से कहा।

"मैं बिल्कुल सीधा हूँ," गावरिक ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"इसमें बस इतनी खराबी है कि ज़बान बहुत चलाता है," इल्या ने कहा।

"सुना तुमने?" लड़की ने आँखें तरेरकर अपने भाई से कहा।

"सुन रहा हूँ, अच्छी तरह..." गावरिक लड़ाका स्वर में बोला।

"अरे, कोई बात नहीं है," इल्या बीच में बोला। "जो आदमी जवाब देना जानता है वह उससे तो अच्छी ही हालत में होता है जो जवाब नहीं दे सकता। जो आदमी जवाब नहीं दे सकता उसकी जब पिटाई होती है तो वह अपना मुँह बन्द रखता है, और लोग पीट-पीटकर उस बेचारे को कब्र में पहुँचा देते हैं..."

उसकी बात सुनते समय लड़की के चेहरे पर ऐसा भाव आया जिससे मानो सन्तोष झलकता था। इल्या ने इस बात को देखा।

"मैं आपसे कुछ पूछना चाहता था," इल्या ने कुछ खिसियाते हुए कहा।

"क्या बात है?"

वह उसके पास आकर आँखों में आँखें डालकर देखने लगी। इल्या उसकी नज़रों की ताब न ला सका और उसने अपनी नज़रें झुका लीं।

"क्या मैं आपकी बात ठीक समझा हूँ कि जो लोग व्यापार करते हैं उन्हें आप पसन्द नहीं करतीं?"

"जी हाँ!"

"क्यों नहीं करतीं?"

"इसलिए कि वे दूसरों की मेहनत के बल पर जीते हैं..." लड़की ने बिना किसी लाग-लपेट के कहा।

इल्या ने झटके के साथ सिर पीछे की ओर झुकाकर अपनी भवें तान लीं; उसे उसकी बात पर आश्चर्य उतना नहीं हुआ था जितना कि उसने उसका बुरा माना था। और उसने अपनी बात कितनी सादगी से और कितना ज़ोर देकर कही थी।

"यह बात सच नहीं है," इल्या ने कुछ देर रुककर ऊँची आवाज़ में कहा।

लड़की की मुद्रा बदल गयी और उसका चेहरा तमतमा उठा।

"वह रिबन आपने कितने में ख़रीदे थे?" उसने उपेक्षा के भाव से पूछा।

"वह?.. सत्रह कोपेक अर्शिन* के भाव से..."

"और बेचते कितने में हैं?"

"बीस में..."

"देखा आपने? वे तीन कोपेक जो आप कमाते हैं उन लोगों के होते हैं जिन्होंने रिबन बनाया है, आपके नहीं। समझ में आया आपकी?"

"जी नहीं!" इल्या ने साफ़-साफ़ स्वीकार किया।

यह सुनकर उस लड़की की आँखें शत्रुता के भाव से चमकने लगीं। इल्या ने यह बात अच्छी तरह देखी और वह उसके सामने गिड़गिड़ाने लगा, लेकिन उसके सामने इस तरह गिड़गिड़ाने पर उसे अपने आपसे फ़ौरन नफ़रत होने लगी।

"मेरा ख़्याल है कि आपके लिए इतनी सीधी-सी बात को समझना मुश्किल है," उसने कहा और दरवाज़े की ओर चल दी। "लेकिन मान लीजिये कि आप मज़दूर होते और ये सब चीज़ें आपने बनायीं होतीं।"

उसने अपना हाथ चारों ओर घुमाकर दुकान की सारी चीज़ों की ओर इशारा किया और बताने लगी कि किस तरह मेहनत से सभी लोगों की ज़िन्दगी मालामाल हो जाती है, अलावा उन लोगों की ज़िन्दगी के जो मेहनत करते हैं। पहले तो वह हमेशा की तरह बोलती रही बड़ी रुखाई से नपे-तुले शब्दों में और उसका असुन्दर चेहरा बिल्कुल भावशून्य रहा; लेकिन थोड़ी ही देर में उसकी भवें काँपने लगीं और सिकुड़कर एक-दूसरे के पास आ गयीं, उसके नथुने फूल गये, उसने अपना सिर पीछे तान लिया और अपने सत्य के प्रति नौजवानों जैसी जोशीली और अडिग आस्था से भरपूर शब्दों की बौछार इल्या पर करने लगी।

"व्यापारी मज़दूरों और गाहकों के बीच खड़ा रहता है। वह चीज़ों के मूल्य में रत्ती-भर भी कुछ जोड़े बिना उनकी कीमत बढ़ाता रहता है। व्यापार क़ानूनी चोरी के अलावा और कुछ नहीं होता।"

इल्या अपमानित अनुभव कर रहा था लेकिन उसके पास इस ढीठ लड़की की बात का खण्डन करने को कोई तर्क नहीं थे जो उसे उसके मुँह पर चोर और निकम्मा कह रही थी। उसकी बात सुनते हुए वह दाँत भींचकर रह गया लेकिन उसने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया; वह उस बात पर विश्वास कर ही नहीं सकता था। जब वह अपने दिमाग़ में कोई ऐसा जवाब खोज रहा था जो उसकी दलीलों को फ़ौरन चकनाचूर कर दे और उसे चुप कर दे, उसी वक़्त अनायास ही उसने महसूस किया कि वह उसके साहस के लिए उसे मन ही मन सराह रहा था। और उसके दिल दुखाने वाले शब्दों को सुनकर वह दंग रह गया; वे उसके मन में यह परेशान करने वाला सवाल पैदा कर रहे थे : मैंने ऐसा क्या क़सूर किया है कि मेरे साथ ऐसा बर्ताव किया जाये?

"बात वैसी बिल्कुल नहीं है!" जब उससे और ज़्यादा चुप न रहा गया तो उसने उसकी बात काटते हुए ऊँची आवाज़ में कहा। "मैं आपकी बात नहीं मानता।"

उसके सीने में विरोध का तूफ़ान उठ रहा था और उसके चेहरे पर लाल-लाल धब्बे उभर आये थे।

"फिर मेरा जवाब दीजिये!" उसने स्टूल पर बैठते हुए शान्त भाव से कहा और अपनी लम्बी चोटी कन्धे के ऊपर से सामने लाकर उससे खेलने लगी।

इल्या उसकी बैर-भरी घूरती हुई आँखों से नज़रें बचाने के लिए अपना सिर इधर-उधर घुमा रहा था।

"मैं जवाब दूँगा!" वह ग़ुस्से से बेक़ाबू होकर चिल्लाया। "मेरी ज़िन्दगी... मेरा

जवाब है! मैं... आपको क्या मालूम कि जहाँ मैं आज हूँ वहाँ तक पहुँचने के लिए मैंने कोई बहुत बड़ा अपराध किया हो...”

“यह और भी बुरी बात है... फिर भी यह तो कोई जवाब न हुआ,” उसने ऐसे स्वर में कहा जैसे इल्या के चेहरे पर ठण्डे पानी का छींटा मार दिया हो। वह काउण्टर पर अपने हाथ टिकाकर इस तरह आगे झुका जैसे अभी उसे फाँद जायेगा। अपने घुँघराले बालों को पीछे की ओर झिटककर वह उसके शब्दों से आहत होकर, उसकी शान्त मुद्रा से आश्चर्यचकित होकर कुछ क्षणों तक चुपचाप उसे एकटक देखता रहा। उसकी नज़र और उसका निश्चल विश्वासपूर्ण चेहरा उसकी समझ में बिल्कुल न आता था और उसके ग़ुस्से को भड़कने नहीं देता था। उसके हाव-भाव में उसे एक तरह की निडरता और निर्ममता का आभास मिलता था, और उसे जिन शब्दों की ज़रूरत थी वे उसके होंठों तक नहीं आ पाते थे।

“बोलिये, आप कुछ कहते क्यों नहीं?” उसने चुनौती देते हुए दो-टूक सवाल किया; फिर तिरस्कार के साथ थोड़ा-सा मुस्कराकर उसने विजयोल्लास से कहा, “आप कुछ कह ही नहीं सकते, क्योंकि जो कुछ मैंने कहा है वही सच्चाई है।”

“कुछ भी नहीं?” इल्या खोखले स्वर में बोला।

“कुछ भी नहीं। आप कह ही क्या सकते हैं?”

एक बार फिर उसने इल्या को तिरस्कार से देखा और मुस्करा दी।

“अच्छा, मैं चलती हूँ,” वह बोली और अपना सिर हमेशा से और ऊँचा उठाये हुए बाहर चली गयी।

“यह सच नहीं है! ये सब बेवकूफ़ी की बातें हैं!” इल्या ने पीछे से पुकारकर कहा, लेकिन उसने पीछे मुड़कर देखा तक नहीं।

इल्या धम से स्टूल पर बैठ गया। गावरिक, जो दरवाज़े पर खड़ा था, अपनी बहन के आचरण से बहुत ख़ुश हुआ होगा, क्योंकि उसने जिस दृष्टि से अपने मालिक को देखा उसमें गर्व भी था और विजयोल्लास भी।

“घूर क्या रहे हो?” इल्या ने लड़के के इस तरह घूरने से तिलमिलाकर डपटकर पूछा।

“कुछ नहीं,” गावरिक बोला।

“ख़बरदार!” इल्या ने डाँटते हुए कहा, और फिर थोड़ी देर बाद बोला, “जाओ, थोड़ा घूम आओ।”

लेकिन अकेले रह जाने पर भी वह अपने बिखरे हुए विचारों को समेट नहीं पाया। वह लड़की के शब्दों का अर्थ समझ पाने की कोशिश तक नहीं कर रहा था; सबसे बढ़कर वे दिल दुखाने वाले थे।

"मैंने उसका क्या बिगाड़ा है? वह आती है, मुझे दोष देती है और चली जाती है बस ऐसे ही। अच्छा, अबकी आना, तुम्हें तुम्हारा जवाब मिल जायेगा..."

इल्या ने उसे धमकाया, और साथ ही यह भी पता लगाने की कोशिश की कि वह उसका इस तरह अपमान क्यों करती है। उसे याद आया कि पावेल ने किस तरह उसकी समझदारी और सादगी की तारीफ़ की थी।

"पावेल की भावनाओं को शायद वह ठेस नहीं पहुँचाती," उसने सोचा।

उसने सिर ऊपर उठाया तो आईने में उसे अपनी सूरत दिखायी दी। उसकी काली मूँछें फड़क रही थीं, उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में थकन थी, उसके गालों पर दो लाल धब्बे दहक रहे थे। इस वक़्त भी, इतना उत्तेजित और उदास होने पर भी, उसमें एक तरह की अनगढ़ सुन्दरता थी और उसके चेहरे की तुलना पावेल ग्राचोव के पीले, बीमार, हड़ियल चेहरे से किसी भी तरह नहीं की जा सकती थी।

"क्या वह सचमुच पावेल को मुझसे ज़्यादा पसन्द करती है?" उसने सोचा, लेकिन फ़ौरन अपने आपको टोक दिया, "पर उसे इसकी क्या परवाह कि मेरी सूरत कैसी है? मैं कोई उसका चाहने वाला तो हूँ नहीं।"

अपने कमरे में जाकर उसने एक गिलास पानी पिया और चारों ओर नज़र डालकर देखा। 'मनुष्य के जीवन की अवस्थाएं' के चटकीले रंगों पर उसकी नज़र पड़ी और वहीं जमकर रह गयी।

"यह सब धोखा है, फ़रेब है। क्या लोग सचमुच इस तरह रहते हैं?" उसने मन ही मन कहा। "और अगर वे रहते हैं, तो उनकी ज़िन्दगी नीरस उकताहट होती होगी!"

दीवार के पास जाकर उसने तस्वीर नोच ली, और उसे लेकर दुकान में चला गया। वहाँ उसे काउण्टर पर फैलाकर वह और ज़्यादा ध्यान से मनुष्य के जीवन की अवस्थाओं को देखने लगा; वह तस्वीर को व्यंग्य से देखता रहा और तब तक उस पर नज़रें जमाये रहा जब तक कि सारे रंग एक में नहीं मिल गये। तभी उसने उसे मरोड़कर उसका गोला बनाकर काउण्टर के नीचे फेंक दिया। लेकिन वह लुढ़ककर फिर बाहर निकल आयी और उसके पाँवों के नीचे आ गयी। झुँझलाकर उसने फिर उसे उठा लिया, पहले से ज़्यादा कसकर मरोड़ा और दरवाज़े के बाहर सड़क पर फेंक दिया...

सड़क पर बहुत शोर था। हाथ में छड़ी लिये हुए एक आदमी सड़क के उस पार वाली पटरी पर चला आ रहा था; छड़ी की खट-खट उसके क़दमों की चाप से मेल नहीं खा रही थी, और इसकी वजह से ऐसा लग रहा था कि उस आदमी के तीन टाँगें हैं। कबूतर गुटर-गूँ बोल रहे थे। धातु पर किसी के क़दमों की धप-धप की आवाज़ सुनायी दे रही थी शायद कोई चिमनी साफ़ करने वाला छत पर चल रहा था। एक गाड़ी वाला दुकान के सामने से गुजरा; वह अपनी सीट पर बैठा ऊँघ रहा था, और गाड़ी के

हचकोलों के साथ उसका सिर इधर-उधर झोंके खा रहा था। ऐसा लग रहा था कि इल्या के चारों ओर हर चीज़ झूम रही है। इल्या ने अपना गिनतारा उठाया और उस पर बीस कोपेक की गोलियाँ सरकायीं। उसमें से उसने सत्रह घटाये। बाक़ी बचे तीन। वह अपने नाख़ून से गोलियाँ सरका रहा था; गोलियाँ हल्की-सी गूँज पैदा करते हुए तार पर नाचने लगीं और अलग होकर ठहर गयीं।

इल्या ने आह भरकर गिनतारा रख दिया। फिर वह काउण्टर पर अपना सीना टिकाकर झुक गया और वहाँ इसी तरह पड़ा अपने दिल की धड़कनें सुनता रहा।

अगले दिन गावरिक की बहन फिर आयी। वह हमेशा की तरह ही थी; वही फटी-पुरानी पोशाक पहने थी और उसके चेहरे पर वही भाव था।

"तो तुम आ गयीं!" इल्या ने अपने कमरे से ही उसे शत्रुता के भाव से देखते हुए सोचा।

जब उसने सिर झुकाकर इल्या को सलाम किया तो इल्या ने अपना सिर बहुत अकड़कर बस थोड़ा-सा हिला दिया। अचानक उस लड़की के चेहरे पर बहुत ही सहृदय मुस्कराहट खिल उठी और उसने बड़ी नरमी से इल्या से कहा :

"इतनी पीले क्यों दिखायी दे रहे हैं? तबीयत तो ठीक है न?"

"बिल्कुल ठीक हूँ," इल्या ने रुखाई से जवाब दिया; लड़की के उसके स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता प्रकट करने से उसके मन में जो भावना उत्पन्न हुई थी उसे वह छिपाने की कोशिश कर रहा था। वह बहुत ही अच्छी, बहुत ही सुखद भावना थी; उसकी मुस्कराहट और उसके शब्दों ने उसके दिल को बड़े प्यार से सहला दिया था, लेकिन उसने फ़ैसला किया कि वह अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करेगा क्योंकि वह मन ही मन यह उम्मीद कर रहा था कि इस पर वह फिर मुस्करायेगी और उससे वैसे ही प्यार-भरे शब्द कहेगी। यह उसका दृढ़-निश्चय था, और इसीलिए वह आँखें चुराये रूठा हुआ इन्तज़ार करता रहा।

"आप शायद मेरी बात का बुरा मान गये," वह दृढ़ स्वर में बोली। उसका लहजा अभी थोड़ी ही देर पहले के लहजे से इतना भिन्न था कि इल्या ने सहमकर नज़रें ऊपर उठाकर देखा। वह फिर अपने सामान्य रूप में आ गयी थी, उसकी काली-काली आँखों में फिर वही गर्व और अभिमान का भाव था।

"मैं इस बात का आदी हो चुका हूँ कि लोग मेरा दिल दुखायें," इल्या ने मानो चुनौती देते हुए मुस्कराकर कहा, लेकिन निराशा के कारण उसके दिल पर बर्फ़-सी जम गयी थी।

"तो तुम मुझसे खेलने की कोशिश कर रही हो?" उसने सोचा। "पहले पीठ पर थपका और फिर मुँह पर तमाचा मार दिया? नहीं, मैं तुम्हें यह नहीं करने दूँगा।"

"मैं आपका दिल दुखाना नहीं चाहती थी..." वह बोली।

"आपको ऐसा करने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा होगा!" उसने बहुत ज़ोर से ढिठाई के साथ कहा। "मैं आपकी बिसात जानता हूँ! आप जैसी चिड़ियाँ बहुत ऊँचा नहीं उड़ पातीं!"

वह तनकर सीधी हो गयी और आश्चर्य से फटी-फटी आँखों से उसे देखने लगी। लेकिन इल्या किसी बात की ओर ध्यान देने की स्थिति में ही नहीं रह गया था; उसके सिर पर उसका मुँहतोड़ जवाब देने का भूत सवार था; वह जान-बूझकर नपे-तुले शब्दों में उस पर जली-कटी बातों की बौछार करता रहा।

"आपके इस अहंकार में और आपके इस तरह इतराने में आपका कुछ लगता नहीं है। जिस स्कूल में आप पढ़ती हैं वहाँ ये चीज़ें कोई भी हासिल कर सकता है। अगर आपको स्कूल जाने का मौक़ा न मिला होता तो आप भी कोई मामूली दर्ज़िन या किसी के यहाँ ऊपर का काम करने वाली नौकरानी होतीं। आप इतनी ग़रीब हैं कि इसके अलावा कुछ और हो ही नहीं सकती थीं, क्यों है न?"

"आप कह क्या रहे हैं?" वह धीरे से बोली।

इल्या ने उसकी आँखों में आँखें डालकर देखा और उसे यह देखकर बहुत ख़ुशी हुई कि उसके नथुने फूल रहे थे और उसके गाल तमतमा उठे थे।

"मैं वही कह रहा हूँ जो मैं सोचता हूँ, और मैं यह समझता हूँ कि आपका यह इतराना बहुत ही घटिया सस्ते क़िस्म का है   उसका मोल तिनके के बराबर भी नहीं है।"

"मैं इतराती नहीं हूँ!" लड़की ने गूँजती हुई आवाज़ में चिल्लाकर कहा। उसके भाई ने लपककर उसका हाथ पकड़ लिया और मालिक की ओर ग़ुस्से से देखकर चिल्लाया भी :

"चलो, यहाँ से चलें, सोन्या!"

इल्या ने तेज़ी से उन पर एक नज़र डाली और ज़हर में बुझी हुई नफ़रत से बोला :

"ठीक है   निकल जाओ यहाँ से। न मेरी तुम लोगों को ज़रूरत है न तुम लोगों की मुझे..."

वे दोनों एक क्षण के लिए उसकी नज़रों में विचित्र ढंग से झिलमिलाये और बाहर चले गये। उनके चले जाने पर इल्या ज़ोर से हँसा।

जब वह अकेला रह गया तो कुछ मिनट तक निश्चल खड़ा रहा और प्रतिशोध के मीठे रस का आनन्द लेता रहा। उसके मस्तिष्क की गहराई में कहीं उस लड़की की सूरत अंकित थी   ग़ुस्से से भरी हुई, बौखलायी हुई और कुछ डरी हुई।

"लेकिन वह लड़का!..." यह विचार इल्या के दिमाग़ में गूँजता रहा। गावरिक के आचरण से वह परेशान हो उठा था और उसका सारा मज़ा किरकिरा हो गया था।

"इसे कहते हैं हत्थे से उखड़ जाना!" उसने मन ही मन हँसकर सोचा। "तात्याना इस वक़्त आ जाती तो उसे भी मैं खरी-खरी सुना देता   जी भरकर।"

उसके मन में यह अदम्य इच्छा उमड़ रही थी कि सबको अपने से दूर हटा दे   झिड़ककर, उनका दिल दुखाकर, बेरहमी से...

लेकिन तात्याना नहीं आयी। इल्या ने सारा दिन अकेले बिताया, और ऐसा लग रहा था कि दिन कभी ख़त्म ही नहीं होगा। जब सोने का वक़्त आया तो वह बहुत अकेलापन महसूस करने लगा; उसे लड़की के शब्दों से उतनी चोट नहीं पहुँची थी जितनी इस अकेलेपन से पहुँच रही थी। वह आँखें बन्द करके रात के सन्नाटे में कान लगाकर सुनने लगा। ज़रा-सी भी आवाज़ से वह चौंककर डर जाता, अपना सिर तकिये पर से उठाता और आँखें फाड़-फाड़कर अँधेरे में घूरने लगता। वह इसी तरह किसी चीज़ का इन्तज़ार करते हुए सुबह तक पड़ा जागता रहा; उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे उसे किसी तहख़ाने में बन्द कर दिया गया हो; गर्मी के मारे और अपने बिखरे हुए भटकते विचारों की वजह से उसका दम घुटा जा रहा था। वह उठा तो उसके सिर में धमक हो रही थी। वह समोवार गरम करना चाहता था लेकिन उसने किया नहीं; हाथ-मुँह धोकर उसने बस कटोरा-भर पानी पी लिया और फिर दुकान खोलने चला गया।

लगभग दोपहर के वक़्त पावेल त्योरियाँ चढ़ाये झल्लाया हुआ आया; इल्या को सलाम किये बिना ही वह बोला :

"आख़िर तुम इतना अकड़ते क्यों हो?"

इल्या उसका मतलब समझ गया और कोई जवाब दिये बिना उसने निराशा के भाव से सिर झटका।

"यह भी मेरे ख़िलाफ़ है," उसने सोचा।

"तुम सोफ़िया निकोनोव्ना के साथ ऐसी बदतमीजी के साथ क्यों पेश आये?" पावेल अपने दोस्त के सामने डरा हुआ सख़्ती से पूछता रहा। पावेल के लटके हुए मुँह और उसकी धिक्कारती हुई नज़रों में इल्या को साफ़ दिखायी दे रहा था कि पावेल उसके ख़िलाफ़ अपना फ़ैसला सुना रहा था, लेकिन उसे अब उसकी कोई परवाह नहीं थी।

"बात करने से पहले कुछ साहब-सलामत कर लिया करो। और अपनी टोपी उतार लो   वहाँ कोने में देव-प्रतिमा टंगी हुई है।"

पावेल ने अपनी टोपी का छज्जा पकड़कर उसे और मज़बूती से अपने सिर पर मढ़ लिया, और बड़ी कटुता से अपने होंठ टेढ़े करके जल्दी-जल्दी, गुस्से से काँपते हुए

स्वर में बोलने लगा :

"ठीक है, ख़ूब इतराओ! अब पैसे वाले हो गये हो न! पेट जो भर गया है! याद है, एक बार तुमने कहा था, 'हमारे पास है ही क्या जिससे हम उम्मीद बाँधें'? और जैसे ही ऐसा कुछ सामने आता है तुम उसे दूर भगा देते हो। छिः! बड़ा आया महाजन कहीं का!"

इल्या के मन में ऐसी शिथिल उदासीनता छा गयी कि वह कोई जवाब न दे सका। निरीह भाव से वह पावेल के उत्तेजित तिरस्कार-भरे चेहरे को देखता रहा; उसे इस बात का आभास था कि पावेल के तानों से उसे तनिक भी आघात नहीं पहुँच रहा था। पावेल की ठोड़ी और उसके ऊपर वाले होंठ पर भूरे-भूरे बाल ऐसे लग रहे थे जैसे उसके दुबले-पतले चेहरे पर फफून्दी लग रही हो, और एकटक उसे देखते हुए इल्या उदासीन भाव से सोचता रहा :

"क्या अपनी बातों से मैंने सचमुच उसका दिल इतना दुखाया है? मैं तो इससे भी बुरी-बुरी बातें कह सकता था।"

"वह सब कुछ समझती है, सब कुछ समझा सकती है, और तुम उसके साथ ऐसे. .. छिः!" पावेल ने हमेशा की तरह अपनी बात के बीच-बीच में ज़हर में बुझे शब्दों का प्रयोग करते हुए कहा।

"मुझे सिखाना बन्द करो," इल्या ने कहा। "मेरा जो जी चाहेगा करूँगा... और जैसे मेरा जी चाहेगा रहूँगा... मैं तुम सब लोगों से तंग आ चुका हूँ... बस, हर वक़्त उपदेश देते रहते हो..."

वह एक अल्मारी के सहारे अपने पूरे बोझ से टिककर खड़ा हो गया और बोला, मानो अपने आप से बातें कर रहा हो :

"तुम्हारे पास कहने को है ही क्या जो कहने लायक़ हो?"

"उसके पास तो है!" पावेल ने दृढ़ आस्था के साथ कहा, यहाँ तक कि उसने एक हाथ भी ऊपर उठाया मानो शपथ ले रहा हो। "वे लोग सब कुछ जानते हैं!"

"तो उनके यहाँ जाओ," इल्या ने उदास भाव से कहा। पावेल जो कुछ कह रहा था और जिस तरह उद्विग्न होकर कह रहा था, वे दोनों ही उसके लिए अरुचिकर थे, लेकिन उससे बहस करने को उसका जी नहीं चाह रहा था। वह बोझिल और गहरी उदासीनता में डूबा हुआ था, जो उसे कुछ भी बोलने या सोचने नहीं दे रही थी।

"मैं जाऊँगा!" पावेल ने धमकी-भरे स्वर में कहा। "क्योंकि मैं समझता हूँ कि मेरे लिए उन्हीं के साथ रहना मुमकिन है। मुझे उनसे अपनी ज़रूरत की हर चीज़ मिल सकती है   हर चीज़!"

"चिल्लाओ नहीं," इल्या ने क्षीण स्वर में कहा।

एक लड़की दुकान में आयी और उसने मर्दों की क़मीज़ में लगाने के दर्जन-भर बटन माँगे। इल्या ने बड़े इतमीनान से उसे बटन दिये, उसका दिया हुआ बीस कोपेक का सिक्का अपनी उँगलियों के बीच मसलता रहा, फिर उसे वह सिक्का यह कहकर वापस कर दिया :

"मेरे पास रेज़गारी नहीं है। अगली बार दे देना।"

गल्ले में रेज़गारी थी, लेकिन चाभी उसके कमरे में रखी थी, और उसे जाकर लाने को उसका जी नहीं चाह रहा था। उस लड़की के चले जाने के बाद पावेल ने अपनी बातचीत का सिलसिला दुबारा शुरू नहीं किया। वह काउण्टर के पास खड़ा अपने घुटने को टोपी से पीटता रहा, जिसे आख़िरकार उसने उतार लिया था; और इल्या को इस तरह देखता रहा जैसे उससे किसी चीज़ की उम्मीद कर रहा हो। लेकिन इल्या ने मुँह फेर लिया और दाँतों के बीच से धीरे-धीरे सीटी बजाने लगा।

"तो?" पावेल ने चुनौती देते हुए कहा।

"तो क्या?" इल्या ने कुछ देर रुककर पूछा।

"तुम्हें कुछ भी नहीं कहना है?"

"भगवान के लिए, मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो!" इल्या ने अधीर होकर कहा।

पावेल ने टोपी उछालकर सिर पर पहन ली और बाहर निकल गया। इल्या की नज़रें उसे जाते हुए देखती रहीं और वह फिर सीटी बजाने लगा।

एक बड़े-से बादामी रंग के कुत्ते ने दरवाज़े में से झाँककर देखा और दुम हिलाता हुआ अपने रास्ते चला गया। उसके बाद बड़ी-सी नाक वाली एक भिखारिन आयी।

"दया करो, सेठ, भगवान के नाम पर..." वह बहुत नीचे झुककर बुदबुदायी।

इल्या ने इनकार करते हुए सिर्फ़ सिर हिलाया एक भी शब्द नहीं कहा। तपती हुई सड़क पर काम-काज के दिन का कोलाहल था। ऐसा लग रहा था कि सड़क नहीं कोई बड़ी-सी भट्ठी है जिसमें लकड़ी के कुन्दे चटख़कर सुलग रहे हैं और हवा में बहुत गर्मी पैदा कर रहे हैं। धातु के टकराने की खटर-खटर से पता चल रहा था कि सड़क पर कोई गाड़ी वाला आ रहा है; उसकी गाड़ी से बाहर लटकी हुई लम्बी-लम्बी लोहे की छड़ें सड़क के पत्थरों से रगड़ खाकर ऐसी कर्कश आवाज़ में चीत्कार कर रही थीं, जैसे उन्हें बहुत पीड़ा हो रही हो। कोई चाकू पर धार रखने वाला हवा में कर्णकटु खसखसाहट की आवाज़ भरता हुआ अपना काम कर रहा था।

हर क्षण कोई नयी और अप्रत्याशित चीज़ सामने आ जाती थी। जीवन अपनी चीख़-पुकार की विविधता से, अपनी अनथक गतिशीलता से, और अपनी अनवरत सृजनात्मक उमंग के वेग से कल्पना को निरन्तर आश्चर्यचकित कर रहा था। लेकिन इल्या की आत्मा के अन्दर हर चीज़ निस्तब्ध थी और मर चुकी थी : ऐसा लगता था

कि हर चीज़ ठहर गयी है न कोई विचार, न कोई लालसाएं, बस एक अथाह थकन के अलावा कुछ भी नहीं। ऐसी हालत में उसने सारा दिन और उसके बाद आने वाली रात बितायी, जिसके दौरान वह डरावने स्वप्न देखता रहा। और ऐसे ही कितने ही और दिन और रातें। गाहक आते, अपनी ज़रूरत की चीज़ें लेते और चले जाते, और उन्हें देखते हुए वह कटुता से सोचता रहता :

"इन्हें मेरी कोई ज़रूरत नहीं है, और न मुझे इनकी... मैं अपनी ज़िन्दगी अकेले काट दूँगा..."

गावरिक का समोवार गरम करने का काम अब मकान-मालिक की खाना पकाने वाली कर देती थी, जो एक दुबली-पतली, तेज़ मिज़ाज की औरत थी, जिसका चेहरा लाल और आँखें निस्तेज तथा निश्चल थीं। कभी-कभी उसे देखकर इल्या झुँझलाकर सोचता :

"क्या मुझे कभी ज़िन्दगी की अच्छी चीज़ों का सुख नहीं मिलेगा?"

उसे नये-नये तरह-तरह के अनुभवों की आदत पड़ चुकी थी, जिनसे उसे चाहे चिड़चिड़ाहट ही क्यों न होती हो और जो भले ही उसे उद्विग्न कर देते हों, लेकिन वे ज़िन्दगी को कुछ दिलचस्प भी बना देते थे। ये नये अनुभव उसे लोगों से मिलते थे। और अब उसकी ज़िन्दगी में कोई लोग नहीं रह गये थे; सब एक-एक करके गायब हो चुके थे, बस गाहक रह गये थे। लेकिन बहुधा अकेलेपन का उसका यह आभास और बेहतर जीवन बिताने की उसकी लालसा हर चीज़ के प्रति अपार उदासीनता में, दम घोंट देने वाली नीरसता के वातावरण में डूब जाती थी।

एक दिन सवेरे इल्या अभी सोकर उठा ही था और पलंग के कगर पर बैठा सोच ही रहा था कि वह आज का नया दिन किस तरह काटेगा, कि इतने में किसी ने पीछे का दरवाज़ा बार-बार खटखटाया।

यह सोचकर कि खाना पकाने वाली समोवार गरम करने आयी होगी, उसने उठकर दरवाज़ा खोल दिया और अपने सामने कुबड़े को खड़ा हुआ पाया।

"चिः, चिः," तेरेन्ती मुस्कराकर सिर हिलाते हुए बोला। "नौ बज गये हैं और अभी तक सेठजी ने दुकान भी नहीं खोली है।"

इल्या कमरे में जाने का रास्ता रोके उसके सामने खड़ा मुस्कराता रहा। तेरेन्ती का चेहरा धूप से संवला गया था, उसकी आँखों में हर्षमय, चुस्ती-भरी चमक थी, और कुल मिलाकर ऐसा लगता था कि उसमें नयी जान पड़ गयी है। उसके पाँव के पास बोरे और गठरियाँ पड़ी थीं, और उनके बीच खड़ा वह ख़ुद गठरी जैसा लग रहा था।

"मुझे अन्दर नहीं आने दोगे?" वह बोला।

कुछ भी कहे बिना इल्या गठरियाँ उठा-उठाकर अन्दर रखने लगा, और तेरेन्ती

देव-प्रतिमा पर अपनी नज़रें गड़ाकर झुका और उसने उँगलियों से अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया।

"भगवान की कृपा से मैं फिर घर आ गया!" वह बोला। "अच्छा, तुमसे दुआ-सलाम तो कर लूँ, इल्या।"

जब इल्या ने अपने चाचा को गले लगाया तो उसे ऐसा महसूस हुआ कि कुबड़े का शरीर पहले से ज़्यादा गठा हुआ और मज़बूत हो गया है।

"मैं मुँह-हाथ धोना चाहता हूँ," तेरेन्ती ने कमरे में चारों ओर नज़र डालते हुए कहा। ऐसा लगता था कि पीठ पर बोरा लादकर घूमते-फिरते रहने की वजह से उसका कूबड़ कुछ ढल गया था।

"तुम्हारी ज़िन्दगी कैसी गुजर रही है?" मुँह पर पानी का छपाका मारते हुए उसने अपने भतीजे से पूछा।

इल्या अपने चाचा को ताज़ादम देखकर बहुत ख़ुश था, लेकिन मेज़ पर नाश्ता लगाते हुए वह अपने चाचा के सवालों का जवाब बड़ी सतर्कता से और सँभल-सँभलकर दे रहा था।

"तुम्हारी कैसी कट रही है?"

"मेरी? बहुत अच्छी!" तेरेन्ती ने आँखें मूद लीं और परम सुख अनुभव करते हुए मुस्कराया। "तुम यक़ीन नहीं करोगे कि मेरी यात्रा कैसी शानदार रही! ऐसा लगता था जैसे मैं अमृत पी रहा हूँ। यों समझ लो..."

वह मेज़ पर आकर बैठ गया, अपने दाढ़ी उंगली पर लपेट ली और सिर एक ओर को झुकाकर बोला :

"मैं इस देश की धरती पर न जाने कितने कोस पैदल घूमा हूँ, और न जाने कितने पवित्र लोगों के सामने मैंने प्रार्थना की है... मैं अभी मूरोम में सेण्ट पीटर और फ़ाव्रोनिया के पार्थिव अवशेषों के दर्शन करके चला आ रहा हूँ..."

ऐसा लग रहा था कि सन्तों और शहरों के नाम गिनाकर उसे बहुत सन्तोष मिल रहा था क्योंकि उसके होंठों पर बड़ी सौम्य मुस्कराहट और उसकी आँखों में गर्व की चमक थी। वह लयदार स्वर में बोल रहा था, जिस तरह अनुभवी कहानी सुनाने वाले परियों के क़िस्से और सन्तों के जीवन-चरित्र सुनाते हैं।

"पवित्र गिरजाघर के कब्रों के तहख़ाने में मौत का सा सन्नाटा और कब्र का सा अँधेरा है, और उस अँधेरे में देव-प्रतिमाओं के नीचे रखे दीप छोटे-छोटे बच्चों की आँखों की तरह चमकते हैं, और सारे वातावरण में दिव्य अनुकम्पा की भावना व्याप्त रहती है..."

अचानक मूसलाधार पानी बरसने लगा। खिड़की के बाहर पानी की छपछप और

गूँज-गरज सुनायी दे रही थी, टीन की छतों पर पानी की बूँदें टप-टप गिर रही थीं। ऐसा लग रहा था कि हवा में फ़ौलाद के कसे हुए और झनझनाते हुए तार पिरो दिये गये थे।

"हूँ," इल्या ने लम्बी साँस भरकर कहा। "तो अब तुम्हारे दिल का बोझ हल्का हो गया?"

तेरेन्ती एक क्षण तक चुप रहा, फिर उसने उसकी ओर आगे झुककर आवाज़ धीमी करके कहा :

"मिसाल देकर मैं अपनी भावना समझाऊँ : मेरा वह पाप मेरे दिल को वैसे ही कचोटता रहता था जैसे कसा जूता पाँव की उँगलियों को काटता है... लेकिन वह पाप मैंने अपनी मर्ज़ी से नहीं किया था बिल्कुल अपनी मर्ज़ी से नहीं, क्योंकि अगर मैं पेत्रूख़ा की बात न सुनता तो वह मुझे निकाल बाहर करता। कर देता कि नहीं?"

"सो तो कर देता," इल्या ने हामी भरी।

"यही बात है! लेकिन जैसे ही मैं तीर्थ-यात्रा पर निकला मेरे दिल पर से बोझ हट गया। चलते-चलते मैं मन ही मन कहता था, देखो, भगवान, मैं पवित्रात्माओं के पास जा रहा हूँ, तेरे पवित्रात्माओं के पास।"

"तो तुमने हिसाब चुका दिया?" इल्या ने मुस्कराकर कहा।

"मैं यह तो नहीं कह सकता कि भगवान मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ही लेगा," कुबड़े ने अपनी आँखें आसमान की ओर उठाकर कहा।

"लेकिन तुम्हारा अन्तःकरण अब तो वह शान्त है न?"

तेरेन्ती एक क्षण कुछ सोचता रहा; उसकी सूरत देखने से ऐसा लगता था जैसे वह कुछ सुनने की कोशिश कर रहा हो।

"शान्त है..." वह बोला।

इल्या उठकर खिड़की के पास चला गया। गन्दले पानी की चौड़ी-चौड़ी धाराएँ पटरियों के साथ बह रही थीं; सड़क के पत्थरों के बीच छोटे-छोटे गड्ढों में पानी भर गया था, बारिश पड़ने से गड्ढों में पानी थरथरा रहा था और सड़क ख़ुद काँपती हुई लग रही थी। इल्या की दुकान के सामने वाला घर भीगा और झल्लाया हुआ खड़ा था और खिड़कियों के काँच बारिश के पानी से इतने धुँधले पड़ गये थे कि उनके पीछे कोई पौधे दिखायी नहीं दे रहे थे। सड़क खाली और ख़ामोश थी, बस बारिश हो रही थी और बहते हुए पानी की कलकल ध्वनि सुनायी दे रही थी। एक अकेला कबूतर कार्निस के नीचे दबा-सिकुड़ा बैठा था। हर चीज़ गीली और उदास लग रही थी।

"पतझड़ आ गया," इल्या ने मन ही मन कहा।

"क्षमा के लिए प्रार्थना किये बिना हमें क्षमा कैसे मिल सकती है?" तेरेन्ती ने

अपना बोरा खोलते हुए कहा।

"यह बिल्कुल सीधी-सी बात लगती है : पाप किया, फिर प्रार्थना कर ली और निर्दोष हो गये," इल्या ने अपने चाचा की ओर देखे बिना उदास भाव से कहा। "चलो, फिर पाप करना शुरू कर दो!"

"लेकिन ऐसा करने की क्या ज़रूरत है? शुद्ध जीवन बिताओ।"

"किसलिए?"

"ताकि अन्तःकरण शुद्ध रहे।"

"उससे क्या फ़ायदा?"

"छिः," तेरेन्ती ने अस्वीकृति के भाव से कहा, "तुम ऐसी बातें कैसे कह सकते हो!"

"मैं कहता हूँ, बस!" इल्या ने अपने चाचा की ओर पीठ करके खड़े रहकर हठधर्मी से कहा।

"ऐसी बात कहना पाप है!"

"मुझे परवाह नहीं।"

"तुम्हें दण्ड मिलेगा!"

"नहीं!"

उसने खिड़की की ओर से मुड़कर तेरेन्ती को देखा। कुछ देर तक कुबड़ा उसका जवाब देने के लिए शब्द खोजने की कोशिश में होंठ चलाता रहा, और जब उसे उपयुक्त शब्द मिल गये तो उसने बड़े प्रभावशाली ढंग से कहा :

"ज़रूर मिलेगा! मुझे देखो मैंने पाप किया और मुझे दण्ड मिला..."

"कैसे?" इल्या ने गम्भीर होकर पूछा।

"मेरे डर के रूप में। हर वक़्त मैं यही सोचता रहता था : अगर किसी को पता चल गया तो?"

"ख़ैर, मैंने तो पाप किया है और मुझे डर नहीं लगता," इल्या ने तिरस्कार-भरी हँसी के साथ एलान किया।

"यह कोई खिलवाड़ नहीं है," तेरेन्ती ने सख़्ती से कहा।

"मैं डरता नहीं हूँ। पर मेरे लिए जीना दूभर हो गया है।"

"अहा!" कुबड़े ने विजयोल्लास से कहा। "वही तो तुम्हारा दण्ड है!"

"किस बात का दण्ड?" इल्या आपे से बाहर होकर चिल्लाया। उसके जबड़े काँप रहे थे। तेरेन्ती ने हवा में रस्सी घुमाते हुए सहमकर उसकी ओर देखा।

"चिल्लाओ नहीं, मत चिल्लाओ!" वह उद्विग्न होकर कानाफूसी के स्वर में बोला।

लेकिन इल्या चिल्लाता रहा। बहुत दिन से वह किसी से बोला नहीं था, और अब वह अपनी आत्मा में से वह सब कुछ उँडेले दे रहा था जो वहाँ उसके अकेलेपन के दिनों में जमा हो गया था।

"चोरी तो क्या, अगर तुम किसी की हत्या भी कर दो तो भी तुम्हारा कुछ नहीं होगा! तुम्हें सज़ा देने वाला कोई नहीं होगा! सज़ा उन्हीं को मिलती है जो ठीक से काम करना नहीं जानते, जो लोग चालाक होते हैं वे कुछ भी कर सकते हैं! कुछ भी!"

अचानक बाहर ज़ोर का धमाका हुआ और कोई चीज़ बहुत शोर करती हुई ज़मीन पर लुढ़ककर दरवाज़े के सामने आ लगी। दोनों चौंक पड़े और उन्होंने बातें करना बन्द कर दिया।

"क्या था?" कुबड़े ने सहमकर धीरे से पूछा।

इल्या ने जाकर दरवाज़ा खोला और बाहर आँगन में झाँका। तेज़ हवा झपटकर कमरे में घुस आयी चीख़ती हुई, सीटी बजाती हुई और सरसराती हुई।

"कुछ बक्से गिर पड़े थे," इल्या ने दरवाज़ा बन्द करके फिर खिड़की के पास जाते हुए कहा।

तेरेन्ती अपनी गठरियाँ खोलने के लिए फिर ज़मीन पर बैठ गया।

"सोचो तो तुम क्या कह रहे हो," वह इल्या से बोला। "ऐसी बात भी कोई कहता है भला छिः, छिः, छिः! तुम्हारी नास्तिकता भगवान का कुछ नहीं बिगाड़ सकती, लेकिन वह तुम्हें ज़रूर तबाह कर सकती है। बड़े ज्ञान की बात है यह! यात्रा में मुझे एक आदमी मिला था, उससे मैंने सुनी थी। कैसी-कैसी ज्ञान की बातें सुनने को मिलीं मुझे!"

फिर वह अनुभवों का बखान करने लगा; बोलते-बोलते वह कनखियों से अपने भतीजे की ओर देखता जाता था। लेकिन जो कुछ वह कह रहा था वह इल्या को बारिश के शोर जैसा ही लग रहा था; इल्या इन विचारों में खोया हुआ था कि वह अपने चाचा के साथ किस तरह रहेगा।

सच तो यह है कि दोनों एक-दूसरे के साथ काफ़ी अच्छी तरह रहते थे। तेरेन्ती ने चूल्हे और दरवाज़े के बीच बक्से जोड़कर अपने लिए एक पलंग बना लिया था, उस कोने में जहाँ रात के वक़्त परछाइयाँ सबसे ज़्यादा घनी होती थीं। इल्या की ज़िन्दगी का ढर्रा अच्छी तरह समझ लेने के बाद उसने वे सारे काम सँभाल लिये थे जो किसी जमाने में गावरिक किया करता था : वह समोवार गरम करता, दुकान की और कमरे की सफाई करता, और जाकर शराबख़ाने से खाना लाता और ये सब काम करते हुए वह मुँह ही मुँह में किसी प्रार्थना के शब्द बुदबुदाता रहता। रात को वह अपने भतीजे को बताता कि किस तरह हैलेलूजा की बीवी ने अपने बच्चे को भट्ठी में फेंककर और

उसकी जगह ईसा को अपनी गोद में लेकर उन्हें उनके दुश्मनों से बचाया था; किस तरह एक साधु लगातार तीन सौ साल तक चिड़ियों की आवाज़ें सुनता रहा था, सन्त शहीदों कीरिक और उलीता के बारे में और इसी तरह की बहुत-सी दूसरी बातें। उसकी बातें सुनकर इल्या का दिमाग़ अपने ही विचारों से भर जाता... कभी-कभी शाम को वह टहलने निकल जाता, और हमेशा शहर के बाहर खेतों की ओर खिंचा चला जाता, जहाँ हर चीज़ उसकी अपनी आत्मा की तरह ही शान्त और अँधेरी और खाली होती थी।

आने के हफ़्ते-भर बाद तेरेन्ती पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव से मिलने गया। वहाँ से वह लौटा तो बिल्कुल पस्त और निराश था, लेकिन जब इल्या ने इसकी वजह पूछी तो उसने झट से कहा :

"अरे, कुछ नहीं, कुछ नहीं। मैं वहाँ गया और सबसे मिला, और... और... बातें कीं।"

"याकोव कैसा है?" इल्या ने पूछा।

"याकोव का बुरा हाल है। याकोव इस दुनिया में बहुत दिन रहने वाला नहीं है बिल्कुल प्रेतों की तरह सफ़ेद पड़ गया है, और खाँसता रहता है।"

तेरेन्ती चुप हो गया और बैठा कोने में घूरता रहा; वह बेहद उदास और दयनीय लग रहा था।

ज़िन्दगी समतल, नीरस ढंग से चलती रही। हर दिन बिल्कुल उसी तरह किसी भी दूसरे दिन-सा होता था, जैसे एक ही टकसाल के ढले हुए सिक्के होते हैं। इल्या की आत्मा की गहराइयों में उदासी-भरी झुँझलाहट बहुत बड़े साँप की तरह कुण्डली मारे बसी हुई थी और उसके जीवन के सारे अनुभव को निगल गयी थी। उसके पुराने दोस्तों में से अब कोई भी उससे मिलने नहीं आता था : पावेल और माशा तो दूसरे ही रास्तों पर लग गये थे; मुटल्ली घोड़े से कुचलकर अस्पताल में मर गयी थी; पेर्फ़ीश्का न जाने कहाँ गायब हो गया था। इल्या का इरादा याकोव से मिलने जाने का था लेकिन वह इसे टालता रहा; वह जानता था कि अपने मरते हुए दोस्त से कहने के लिए उसके पास कुछ नहीं था। सुबह वह अख़बार पढ़ता रहता, तीसरे पहर वह अपनी दुकान में बैठा पतझड़ की तेज़ हवा को पीली पत्तियाँ सड़क पर उड़ाकर ले जाते हुए देखता रहता। कभी-कभी कुछ पत्तियाँ उड़कर दुकान में भी आ जातीं...

"पुण्य परमपिता तीख़ोन, हमा-आ-रे लिए भगवान से प्रार्थना करना," तेरेन्ती कमरा साफ़ करते हुए सूखी पत्तियों की खड़खड़ाहट जैसी आवाज़ में गुनगुनाता रहता।

एक दिन इतवार को इल्या ने अख़बार खोलकर देखा तो उसकी नज़र एक कविता पर पड़ी जिसका शीर्षक था 'कल और आज। सो.नि.म. को समर्पित।' और

उसके नीचे कवि का नाम लिखा था 'पावेल ग्राचोव।'

जहालत के अन्धे कुएँ में पड़ा
बहारें जवानी की खोता रहा,
कभी यह न पूछा कि मंज़िल कहाँ?
हक़ीक़त की राहों को रोता रहा!
अँधेरा ही दिल में समेटे रहा,
ख़यालों पे परदा, नज़र लापता,
मगर रात-दिन मैं तरसता रहा,
किरन रोशनी की, कहाँ है बता।
अचानक निगाहों में सूरत तेरी
फिरी इस तरह, ज्यों सवेरा हुआ,
अँधेरा सिमटकर कहीं घुल गया
जो डर रात का था वह जाता रहा।
अँधेरे पे लानत, अँधेरा कहाँ!
अँधेरे का जब वह ज़माना गया
तो देखा, मुझे एक हमदम मिला
औ' दुश्मन भी साफ़ पहचाना गया...

कविता पढ़कर इल्या ने ग़ुस्से से अख़बार फेंक दिया।

"कविताएँ लिखो। अच्छे-अच्छे भाषण दो! दोस्त, दुश्मन! जिसका दिमाग़ नहीं चलता होगा, उसके तो सभी दुश्मन होंगे!" मुँह टेढ़ा करके उसने मुस्कराकर मन ही मन कहा। लेकिन अचानक, जैसे उसके अन्दर बैठी हुई कोई दूसरी ही हस्ती हावी होती जा रही हो, उसने सोचा :

"अगर मैं ख़ुद ही जाकर उनसे मिल लूँ बस जाकर कहूँ, लीजिये, मैं आ गया हूँ, माफ़ कीजियेगा..."

फ़ौरन उसने अपने आपसे पूछा : "लेकिन किसलिए?"

इस बहस का नतीजा यह निकला कि उसे पक्का यक़ीन हो गया कि और कुछ तो नहीं होगा बस उसे वहाँ से निकाल दिया जायेगा।

उसने कविता एक बार फिर पढ़ी और उसका मन पीड़ा और ईर्ष्या से भर उठा। और एक बार फिर वह उस लड़की के बारे में सोचने लगा : "वह बड़ी स्वाभिमानी है। वह मुझे उसी तरह देखेगी, और... और... मैं खाली हाथ लौट आऊँगा।"

उसी अख़बार में छपी हुई बहुत-सी नोटिसों में उसे एक नोटिस वह भी दिखायी दी जिसमें कहा गया था कि तेईस सितम्बर को सर्किट अदालत में वेरा कपितानोवा

के मुक़दमे की सुनवाई होगी जिस पर चोरी का इल्जाम है। यह पढ़कर उसका हृदय द्वेषपूर्ण आह्लाद से भर उठा।

“तुम बैठे कविता लिखते रहोगे, है न? और वह जेल में सड़ती रहेगी!”

“हे भगवान! मुझ पापी पर दया करना,” तेरेन्ती आह भरकर और उदास भाव से सिर हिलाकर बुदबुदाया। उसने अपने भतीजे की ओर देखा जो अख़बार के पन्ने उलट रहा था।

“इल्या,” उसने कहा।

“क्या है?”

“पेत्रूख़ा...” कुबड़ा दयनीय ढंग से मुस्कराया और चुप हो गया।

“क्या हुआ उसे?” इल्या ने पूछा।

“उसने मुझे लूट लिया,” तेरेन्ती ने दबे स्वर में अपराधियों की तरह कहा और धीरे से मुस्करा दिया।

इल्या ने निरीह भाव से उसकी ओर देखा और पूछा :

“तुम दोनों ने मिलकर कितना चुराया था?”

तेरेन्ती ने अपनी कुर्सी मेज़ से दूर खिसकायी, सिर नीचे झुका लिया और दोनों हाथ घुटनों पर रखकर हिसाब लगाने में अपनी मदद के लिए उँगलियों पर गिनने लगा।

“कितना?” इल्या ने अपना सवाल दोहराया। “कोई दस हज़ार, है न?”

कुबड़े ने झटके के साथ अपना सिर ऊपर उठाया।

“दस?” वह आश्चर्य से बोला। “क्या कह रहे हो तुम? कुल मिलाकर तीन हज़ार छह सौ और कुछ थे। दस! अच्छी कही तुमने भी!”

“दादा येरेमेई के पास दस हज़ार से ज़्यादा थे,” इल्या ने तिरस्कार-भरी हँसी के साथ कहा।

“यह झूठ है!”

“तुम ऐसा समझते हो? उसने मुझे ख़ुद बताया था।”

“उसे गिनना भी आता था?”

“जितना तुम्हें और पेत्रूख़ा को आता है उससे कम तो नहीं आता था।”

तेरेन्ती ने अपना सिर फिर झुका लिया और विचारों में डूब गया।

“पेत्रूख़ा ने तुम्हारा कितना हिस्सा मारा है?” इल्या ने पूछा।

“कोई सात सौ...” तेरेन्ती ने आह भरकर कहा। “तो तुम्हारा कहना है कि उसके पास दस हज़ार से ज़्यादा थे? उसने इतना पैसा छिपाया कहाँ होगा? मैं तो समझा था कि हम लोग सारा निकाल ले गये थे... हो सकता है कि पेत्रूख़ा ने उसी वक़्त मुझे

झाँसा दिया हो, क्यों?"

"अपना मुँह बन्द ही रखो," इल्या ने कठोरता से कहा।

"सच है, अब इसकी चर्चा करने से फ़ायदा भी क्या," तेरेन्ती ने गहरी आह भरकर सहमति प्रकट की।

इल्या इन्सान के लालची स्वभाव के बारे में सोचने लगा, उन बुराइयों के बारे में जो आदमी पैसे के लोभ में करता है। अचानक वह कल्पना करने लगा कि उसके पास हज़ारों-लाखों रूबल हो गये हैं। अरे, कैसा मज़ा चखायेगा वह लोगों को! वह अपने सामने उनसे नाक रगड़वायेगा। सचमुच... बदला लेने की लालसा के प्रवाह में बहकर उसने मेज़ पर ज़ोर से मुक्का मारा। आवाज़ सुनकर वह ख़ुद चौंक पड़ा और उसने अपने चाचा की ओर एक नज़र देखा, जो अपना मुँह खोले और आँखों में भय छिपाये उसे देख रहा था।

"मैं बस कुछ सोच रहा था," इल्या ने उठते हुए खिसियाकर कहा।

"ऐसा भी होता है," कुबड़े ने अविश्वास से कहा। तेरेन्ती ने उसे दुकान में जाते देखा, उसके होंठ निःशब्द हिल रहे थे... और हालाँकि इल्या उसे देख नहीं रहा था, फिर भी वह अपनी पीठ पर उसकी सन्देह-भरी दृष्टि का स्पर्श अनुभव कर रहा था। कुछ समय से वह महसूस कर रहा था कि उसका चाचा उसे ग़ौर से देखता था, उससे कुछ पूछना चाहता था, कोई बात समझना चाहता था। इसी वजह से इल्या उससे बातें करने से कतराने लगा था। जैसे-जैसे दिन बीतते गये उसे अपने चाचा की मौजूदगी से ज़्यादा झुँझलाहट होने लगी और वह अपने आपसे बार-बार पूछने लगा :

"इस तरह कितने दिन चलेगा?"

ऐसा लगता था कि उसके अन्दर कोई फोड़ा पककर फूटने वाला है; जीवन अधिकाधिक असह्य होता जा रहा था। सबसे बुरी बात तो यह थी कि उसका जी न कुछ करने को चाहता था और न कहीं जाने को। कभी-कभी उसे बिल्कुल साफ़ ऐसा महसूस होता था कि वह धीरे-धीरे एक अथाह अन्धे कुएँ में डूबता चला जा रहा है।

तेरेन्ती के वापस आने के थोड़े ही दिन बाद तात्याना व्लास्येव्ना, जो कुछ दिन के लिए कहीं बाहर गयी हुई थी, दुकान में आयी। ख़ाकी रंग की गाढ़े की क़मीज़ पहने उस गँवार कुबड़े को देखकर वह घृणा से अपने होंठ भींचकर बोली :

"यही है आपका चाचा?"

"हाँ," इल्या ने रूखेपन से जवाब दिया।

"आपके साथ रहेगा?"

"ज़रूर..."

साझेदार की आवाज़ में ढिठाई का भाव देखकर उसने कुबड़े की ओर ध्यान देना

बन्द कर दिया। तेरेन्ती, जो गावरिक की जगह पर दरवाज़े के पास खड़ा था, अपनी दाढ़ी बटते हुए सुरमई रंग का लिबास पहने हुए छरहरे बदन की इस छोटी-सी औरत को बड़ी दिलचस्पी से देखता रहा। इल्या भी उसे दुकान में गौरैया की तरह फुदकते देखता रहा और उम्मीद करता रहा कि वह सवाल पूछे तो वह कोई सख़्त जवाब देकर उसका दिल दुखाये। लेकिन कनखियों से उसने इल्या के ग़ुस्सैल चेहरे की जो झलक देखी उसकी वजह से उसने कोई और सवाल नहीं पूछा। वह बस काउण्टर पर खड़ी बही-खाते के पन्ने उलटती रही और बताती रही कि गाँव में ज़िन्दगी कितनी सुखद होती है, वहाँ पैसा कितना कम खर्च होता है, और स्वास्थ्य के लिए कितना फायदेमन्द होता है।

"वहाँ एक छोटी-सी नदी थी   ऐसे मीठे पानी की, ऐसी शान्त छोटी-सी नदी मैंने कभी देखी नहीं! और ऐसे मस्त साथी थे वहाँ, कि बस पूछो नहीं! उनमें से एक   जो तारघर में काम करता था   वायलिन बहुत अच्छा बजाता था... मैंने वहाँ नाव खेना सीखा... लेकिन किसानों के बच्चे! तुम सोच नहीं सकते कि वे किस तरह जान के पीछे पड़ जाते हैं। मच्छरों की तरह   भीख माँगते हुए चारों तरफ़ भिनभिनाते रहते हैं   यह दे दो, वह दे दो! उन्हें यह सब उनके माँ-बाप सिखाते हैं..."

"वे नहीं सिखाते," इल्या ने रूखेपन से कहा। "उनके माँ-बाप दिन-भर काम करते हैं और बच्चों को देखने वाला कोई नहीं होता... आपका यह सोचना बिल्कुल ग़लत है।"

तात्याना व्लास्येव्ना ने आश्चर्य से उसे देखा और अपना मुँह इस तरह खोला जैसे कुछ कहने जा रही हो, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाती तेरेन्ती बड़े आदर के भाव से मुस्कराया और बोला :

"अब गाँव में भले लोग रह नहीं गये हैं। एक ज़माना था कि हर गाँव में वहाँ का ज़मींदार होता था जो बराबर वहीं रहता था। अब तो बस कभी-कभार ही वे वहाँ जा पाते हैं।"

तात्याना ने नज़रें घुमाकर उसकी ओर देखा, फिर इल्या की ओर, और कुछ कहे बिना फिर बही-खाता देखने लगी। तेरेन्ती परेशान होकर अपनी क़मीज़ मरोड़ने लगा। कई मिनट तक किसी ने भी कुछ नहीं कहा। बस जब कोई पन्ना पलटा जाता था तो उसकी सरसराहट से या जब तेरेन्ती अपना कूबड़ दरवाज़े के चौखट से रगड़ता था तो लकड़ी पर कपड़े के घिसने की आवाज़ से यह ख़ामोशी टूटती थी।

"तुम्हें," इल्या अचानक शान्त रूखे स्वर में बोला, "अपने से ऊँची हैसियत के लोगों से बात करने से पहले उनकी इजाज़त लेनी चाहिए। 'माफ़ कीजियेगा, अगर आप मुझे कहने की इजाज़त दें...' यह कहना चाहिए। और घुटने टेककर यह बात

कहनी चाहिए।"

बही-खाता तात्याना व्लास्येव्ना के हाथ से छूटकर काउण्टर के नीचे गिरने लगा लेकिन उसने बीच में ही उसे पकड़ लिया और उस पर ज़ोर से हाथ मारा और फिर ठहाका मारकर हँस पड़ी। तेरेन्ती सिर झुकाये सड़क पर खिसक गया... यह देखकर तात्याना ने चुपके से एक नज़र इल्या के बिफरे हुए चेहरे पर डाली और धीरे से बोली :

"गुस्सा हो? किस बात पर?"

उसकी नज़र में कुटिलता और कोमलता थी और उसकी आँखों में शरारत की चमक थी... इल्या ने हाथ बढ़ाकर उसका कन्धा पकड़ लिया... सहसा उसका हृदय उसके प्रति घृणा और उसका आलिंगन करने की पाशविक लालसा से भर उठा, उसे कसकर अपने सीने से भींच लेने और उसकी नाज़ुक हड्डियों को चरमराता हुआ सुनने की लालसा से। दाँत निकालकर इल्या उसे अपनी ओर खींच रहा था, लेकिन उसने उसकी बाँह पकड़ ली और अपने आपको छुड़ाने की कोशिश की।

"रहने दो!... मुझे छोड़ दो!... दर्द होता है!... क्या पागल हो गये हो?" वह दबी आवाज़ में बोली। "यह भी कोई प्यार-मुहब्बत करने की जगह है। और सुनो... तुम अपने चाचा को भी अपने साथ नहीं रख सकते... वह कुबड़ा है... लोग उससे डर जायेंगे... मुझे छोड़ दो! तुम्हें उसके लिए कोई दूसरी जगह ढूँढ़नी होगी... सुन लिया?"

लेकिन इल्या ने उसे अपनी बाँहों में दबोच लिया था और वह धीरे-धीरे अपना सिर उसकी फटी-फटी आँखों वाले चेहरे पर झुका रहा था।

"क्या कर रहे हो? यहाँ नहीं... छोड़ दो मुझे!"

अचानक मछली की तरह फिसलकर उसने अपने आपको इल्या की बाँहों से छुड़ा लिया। उसकी आँखों के सामने जो धुँधलका छा गया था उसके पार इल्या ने उसे सड़क पर खुलने वाले दरवाज़े के पास खड़ा देखा।

"तुम भी कैसे उजड्ड हो!" काँपते हाथों से अपने ब्लाउज़ को ठीक करते हुए उसने कहा। "थोड़ा-सा सब्र नहीं कर सकते?"

इल्या के दिमाग़ में दर्जनों प्रबल धाराओं का गर्जन गूँज रहा था। वह अपनी मुट्ठियाँ कसकर भींचें हुए काउण्टर के पीछे निश्चल खड़ा था, और उसे इस तरह घूर रहा था जैसे केवल उसी में वह अपने जीवन की सारी बुराई और सारी व्यथा केन्द्रित देख रहा हो।

"मुहब्बत का जुनून अच्छी चीज़ है, लेकिन अपने आप पर क़ाबू रखना भी आना चाहिए।"

"चली जाओ यहाँ से!" इल्या ने कहा।

"जा रही हूँ... आज तो मैं तुमसे नहीं मिल सकती... लेकिन परसों तेईस तारीख

को   मेरा जन्मदिन है। आओगे?"

यह कहते हुए वह अपना जड़ाऊ पिन टटोलती रही और उसने इल्या की ओर देखा नहीं।

"चली जाओ यहाँ से!" इल्या ने फिर कहा; उसे पकड़कर यातना देने की प्रबल इच्छा से वह काँप रहा था।

वह चली गयी। उसके जाते ही तेरेन्ती आ गया।

"यह तुम्हारी साझेदार थीं?" उसने आदर के भाव से पूछा।

इल्या ने सिर हिला दिया और राहत की साँस ली।

"देखो तो उसे! इतनी छोटी-सी है, फिर भी..."

"इतनी घिनौनी," इल्या ने भारी स्वर में कहा।

"हुँ," तेरेन्ती शंका के भाव से बुदबुदाया। इल्या को ऐसा लगा कि उसके चाचा की नज़रें उसकी थाह लेने की कोशिश कर रही थीं।

"घूर क्या रहे हो?" इल्या ने गुस्से से पूछा।

"मैं? दयालु भगवन्! क्यों, कुछ भी तो नहीं..."

"मैं जानता हूँ कि मैं क्या कह रहा हूँ। घिनौनी, यही है वह। मैं इससे भी बुरी बात कह सकता था और वह भी इतनी ही सच होती।"

"तो यह मामला है," कुबड़े ने सहानुभूति-भरे स्वर में शब्दों को खींच-खींचकर कहा।

"मामला क्या?" इल्या ने झिड़ककर कहा।

"मतलब यह..."

"मतलब क्या?"

इल्या के चिल्लाने से भयभीत और आहत होकर तेरेन्ती अपना बोझ एक टाँग से दूसरी टाँग पर बदलता रहा। उसका चेहरा दयनीय लग रहा था और उसकी आँखें झपक रही थीं।

"मतलब यह कि... तुम्हें मालूम है," उसने कुछ देर रुककर कहा।

मौसम पर उदासी छायी थी। कई दिन से लगातार पानी बरस रहा था। धुले हुए साफ़-सुथरे सड़क के स्लेटी रंग के पत्थर उदास भाव से आकाश को तक रहे थे, और लोगों के चेहरे भी उतने ही बुझे हुए और उदास थे। पत्थरों के बीच की दरारों में कीचड़ भर गया था जिसकी बदौलत उनका शीतल सुथरापन ज़्यादा अच्छा दिखायी दे रहा था; पेड़ों की पीली पत्तियों को मौत से पहले जैसी थरथरी ने आ दबोचा था। कोई फ़र के कपड़ों या क़ालीनों की गर्द झाड़ रहा था, और उसकी धप-धप की आवाज़ हवा को चीरती हुई सुनायी दे रही थी। सड़क के छोर पर घरों की छतों के ऊपर गहरे सुरमई

और सफ़ेद बादल आसमान पर चढ़ रहे थे। बड़ी-बड़ी उमड़ती हुई लहरों की शक्ल में वे एक-दूसरे के ऊपर चढ़ते हुए निरन्तर ऊँचे होते जा रहे थे, लगातार अपनी शक्ल बदलते जा रहे थे, कभी आग के धुएँ जैसे लगने लगते थे, कभी पहाड़ों जैसे, कभी किसी नदी की मटमैली लहरों जैसे, और ऐसा लगता था कि वे इन सुरमई ऊँचाइयों पर केवल इस उद्देश्य से चढ़ रहे थे कि घरों पर, पेड़ों पर और नीचे की धरती पर और भी ज़्यादा ज़ोर से टूट पड़ें। अपने ऊपर की बादलों की इस चलती-फिरती दीवार को ध्यान से देखते हुए लुन्योव सर्दी और घोर निराशा से काँप उठा, और मन ही मन कहने लगा :

"मुझे सब कुछ छोड़ देना होगा... यह दुकान और हर चीज़... मेरा चाचा तात्याना के साथ मिलकर यह कारोबार चला सकता है... और मैं कहीं चला जाऊँगा..."

उसकी कल्पना की दृष्टि में एक तस्वीर थी दूर तक फैले हुए भीगे-भीगे खेतों की, सुरमई बादलों से ढके हुए विस्तृत आकाश की, एक चौड़ी-सी सड़क की जिसके दोनों ओर बर्च के पेड़ लगे हुए थे, और उस सड़क पर वह ख़ुद चला जा रहा था, उसके पाँव कीचड़ में धँसे जा रहे थे, उसके चेहरे पर बारिश का ठण्डा पानी थपेड़े मार रहा था। और खेतों में या सड़क पर कोई दूसरा जीव नहीं था... पेड़ों पर कौए तक नहीं थे। सिर के ऊपर मूक भाव से चलते हुए घने बादलों के अलावा कुछ भी नहीं...

"मैं अपने आपको मार डालूँगा," उसने उदासीन भाव से सोचा।

दो दिन बाद सवेरे उठने पर उसकी नज़र खुले कैलेण्डर में काले अक्षरों में लिखी हुई '23' की गिनती पर पड़ी, और उसे याद आया कि यही तो वेरा के मुक़दमे की सुनवाई की तारीख़ थी। दुकान से भाग निकलने का बहाना पाकर वह बहुत ख़ुश था, और उसे उस लड़की के अंजाम से गहरी दिलचस्पी भी थी। जल्दी-जल्दी एक गिलास चाय गले से उतारकर वह तेज़ क़दमों से अदालत की ओर चल पड़ा। अभी अदालत लगने में बहुत देर थी इसलिए किसी को अन्दर नहीं जाने दिया जा रहा था; उसने देखा कि फाटक के पास कुछ लोग एक गिरोह में खड़े दरवाज़ा खुलने का इन्तज़ार कर रहे थे। लुन्योव भी उनमें जा मिला और दीवार से पीठ लगाकर खड़ा हो गया। अदालत के सामने एक बड़ा-सा चौक था जिसके बीच में एक गिरजाघर था। पीला थका हुआ सूरज बादलों के बीच से झाँककर आँख-मिचौली खेल रहा था। मुश्किल से एक मिनट भी नहीं बीतने पाता था कि चौक के छोर पर एक छाया गिरती थी और पेड़ों और सड़क के पत्थरों पर सरकती हुई आगे बढ़ती आती थी, इतनी गहरी और घनी छाया कि उसके बोझ से डालें नीचे झुक जाती थीं; वह रेंगती हुई गिरजाघर पर चढ़ जाती थी और धीरे-धीरे सीढ़ियों से लेकर सलीब तक उसे ढक लेती थी, फिर वहाँ से लुढ़कती हुई नीचे आ गिरती थी, और चुपके-चुपके दबे पाँव आगे अदालत की इमारत

की ओर और उसके फाटक पर इन्तज़ार में खड़े हुए लोगों की ओर बढ़ती थी...

ये उड़े हुए रंग के, भूखे चेहरे वाले लोग थे। वे थकी-थकी आँखों से एक-दूसरे को देखते थे और बोलते बहुत धीरे-धीरे थे। उनमें से एक आदमी, जिसके बाल लम्बे-लम्बे थे और जो एक पिचकी हुई हैट लगाये था और ठोड़ी तक के बटन लगाये हुए पतला-सा ओवरकोट पहने था, ठिठुरी हुई लाल उँगलियों से अपनी नुकीली लाल दाढ़ी बट रहा था और जगह-जगह से फटे हुए जूतों में अपने पाँव बेसब्री से पटक रहा था। एक और आदमी, जो पैबन्द लगा हुआ लम्बा टखने तक का कोट पहने था और जिसने अपनी टोपी आँखों पर नीची झुका रखी थी, अपना सिर सीने पर लटकाये, एक हाथ कोट में घुसेड़े और दूसरा जेब में डाले खड़ा था। ऐसा लग रहा था कि वह ऊँघ रहा है। जैकेट और घुटनों तक के जूते पहने काले बालों वाला एक आदमी बिल्कुल भँवरे जैसा लग रहा था। वह कुछ बेचैन क़िस्म का था; वह रह-रहकर अपना पीला तीखे नाक-नक्श वाला चेहरा आसमान की ओर उठाता था, अपने आप सीटी बजाता रहता था, अपनी भवें सिकोड़ लेता था और जीभ से अपनी मूँछ पकड़ने की कोशिश करता रहता था। वह दूसरे सब लोगों से ज़्यादा बातूनी था।

"दरवाज़ा खुल रहा है न?" वह अपना सिर टेढ़ा करके कान लगाकर सुनते हुए चिल्लाया। "अभी नहीं... हुँ!... वक़्त तो हो गया होगा... लाइब्रेरी गये थे, मेरे यार?"

"नहीं, अभी जल्दी है," घड़ियाल पर मुगरी की चार चोटों जैसी आवाज़ में जवाब मिला। यह जवाब लम्बे बालों वाले आदमी ने दिया था।

"लानत है, यहाँ तो बड़ी सर्दी है!"

लम्बे बालों वाले ने बड़ी हमदर्दी से ख़र्राटा लिया, फिर विचारमग्न होकर बोला :

"अगर ये लाइब्रेरियाँ और अदालतें न होतीं तो हम लोग गरमाने के लिए कहाँ जाते?"

काले बालों वाले ने कुछ कहे बिना अपने कन्धे बिचका दिये। इल्या उन्हें ध्यान से देखता रहा और उनकी बातें सुनता रहा। उसने देखा कि ये वे लोग थे जो अपना पेट पालने के लिए तरह-तरह की तिकड़में करते थे, जैसे किसानों के लिए बिल्कुल बेकार दस्तावेज तैयार करके उन्हें धोखा देना।

फाटक के पास सड़क की पटरी पर कबूतरों का एक जोड़ा आकर उतरा। नर, जो मोटा था और जिसका ढीला-ढाला पोटा लटक आया था, अपनी मादा के चारों ओर इठला-इठलाकर चक्कर काट रहा था और ज़ोर-ज़ोर से गुटर-गूँ की आवाज़ कर रहा था।

"शिः!" काले बालों वाले ने चिल्लाकर कहा। लम्बे कोट वाला चौंक पड़ा और उसने अपना सिर उठाकर देखा। उसका चेहरा सूजा हुआ था और काला पड़ने लगा

था और उसकी आँखें पथरायी हुई सी लग रही थीं।

"मैं कबूतरों को बर्दाश्त नहीं कर सकता!" चिड़ियों को उड़ते देखकर काले बालों वाले ने कहा। "इतने मोटे होते हैं... जैसे पैसे वाले दुकानदार। और उनकी गुटर-गूँ की आवाज़ से तो नफ़रत होती है। क्या आपके ऊपर कोई मुक़दमा चल रहा है?" उसने अचानक इल्या से पूछा।

"नहीं..."

काले बालों वाले ने सिर से पाँव तक उस पर नज़र डाली।

"अजीब बात है," वह नाक के सुर में धीरे-धीरे बोला।

"इसमें अजीब क्या बात है?" इल्या ने विकृत मुस्कराहट के साथ पूछा।

"आपकी सूरत मुल्ज़िमों जैसी है!" उस आदमी ने जल्दी से कहा। "लो दरवाज़ा खुल रहा है..."

दरवाज़ा खुलते ही सबसे पहले वही अन्दर घुस गया। उसकी बात से चिढ़कर इल्या उसके पीछे-पीछे अन्दर घुसा और उसने लम्बे बालों वाले को अपने कन्धे से धक्का दिया।

"इतनी जल्दी न कर, उजड्ड," उस आदमी ने शान्त भाव से कहा। लेकिन इस बार उसने इल्या को धक्का मारा और उससे आगे निकल गया।

इल्या ने उसकी इस हरकत का बुरा उतना नहीं माना जितना कि उस पर उसे आश्चर्य हुआ।

"अजीब बात है; धक्का देकर आगे ऐसा निकला जा रहा है जैसे बड़ा रईसज़ादा है कहीं का, और सूरत तो देखो इसकी," इल्या ने सोचा।

अदालत के कमरे में सन्नाटा और उदासी थी। हर चीज़ बोझिल और रोबीली थी : हरी बनात से ढकी हुई लम्बी-सी मेज़, ऊँची पीठ वाली कुर्सियाँ, तस्वीरों के सुनहरे फ़्रेम, ज़ार की आदमक़द तस्वीर, जूरी की उन्नाबी रंग की कुर्सियाँ, कटहरे के पीछे बड़ी-सी लकड़ी की बेंच। खिड़कियाँ मोटी-मोटी स्लेटी दीवारों में गहरी धँसी हुई थीं; उन पर भारी-भारी सिलवटों वाले परदे पड़े हुए थे और उनके काँच धुँधले पड़ गये थे। भारी-भरकम दरवाज़े बिना आवाज़ किये हुए खुलते थे और वर्दी पहने हुए लोगों के क़दम भी उसी तरह बे-आवाज़ पड़ते थे। इल्या ने आँखें फाड़कर अपने चारों ओर देखा; उसे बहुत डर लगा और जब पेशकार ने ऐलान किया कि "हुज़ूर अदालत तशरीफ़ लाते हैं!" तो वह चौंक पड़ा और सबसे पहले उछलकर खड़ा हो गया, हालाँकि उसे पता भी नहीं था कि अदालत का दस्तूर है कि सबको खड़ा होना चाहिए। अदालत में जो चार आदमी दाख़िल हुए उनमें ग्रोमोव भी था, वही आदमी जो इल्या की दुकान के सामने वाले घर में रहता था। वह बीच वाली कुर्सी पर बैठ गया, बालों पर अपने दोनों

हाथ फेरे, उन्हें बिखेर लिया, और अपना कारचोबी कालर सीधा किया। उसकी सूरत देखकर इल्या को कुछ ढाढ़स बँधा; उसका चेहरा हमेशा की तरह लाल और खिला हुआ था लेकिन उसकी मूँछें ऊपर की ओर ऐंठी हुई थीं। उसके दाहिनी ओर चश्मा लगाये हुए एक देखने में बहुत भला-सा बूढ़ा आदमी बैठा था, जिसके छोटी-सी सफ़ेद दाढ़ी थी और जिसकी नाक ऊपर को उठी हुई थी; उसके बायें हाथ पर एक गंजा आदमी बैठा था, जिसकी लाल दाढ़ी दो फाँकों में बँटी हुई थी और जिसका चेहरा लकड़ी जैसा निर्जीव और फीका था। एक नौजवान-सा जज, जिसका सिर गोल था और जिसके बाल बहुत छोटे कटे हुए थे और आँखें बाहर को उभरी हुई थीं, ऊँची डेस्क के पास खड़ा हुआ था। कुछ देर तक वे सब चुप रहे और उन्होंने मेज़ पर रखे हुए काग़ज़ उलट-पुलटकर देखे। इल्या रोब खाकर उन्हें देखता रहा; वह इन्तज़ार कर रहा था कि उनमें से कोई अभी उठ खड़ा होगा और ऊँची आवाज़ में कोई बहुत महत्त्वपूर्ण बात कहेगा।

अचानक बायीं ओर अपना सिर घुमाने पर इल्या को पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव का जाना-पहचाना, चर्बीला, वार्निश की तरह चमकता हुआ चेहरा दिखायी दिया। वह उन्नाबी रंग की कुर्सियों की पहली क़तार में पीछे सिर टिकाये बैठा था और गम्भीर मुद्रा से पब्लिक को घूर रहा था। दो बार उसकी नज़रें इल्या के चेहरे पर से छिछलती हुई गुजर गयीं और दोनों बार इल्या का जी चाहा कि वह उछलकर पेत्रूख़ा से या ग्रोमोव से या आम तौर पर पूरी अदालत से कुछ कहे।

"अरे, चोर... अपने बेटे को कितनी बुरी तरह पीटा था..." ये थे वे शब्द जो इल्या के दिमाग़ में बिजली की तरह कौंध गये, और इसके साथ ही उसे अपने गले में जलन-सी महसूस हुई।

"तुम्हारे ख़िलाफ़ इल्ज़ाम है कि..." ग्रोमोव बड़ी नरमी से कह रहा था, लेकिन इल्या को वह आदमी दिखायी नहीं दे रहा था जिसे सम्बोधित किया जा रहा था; उसकी नज़रें पेत्रूख़ा के चेहरे पर जमी हुई थीं और पेत्रूख़ा को यहाँ दूसरों का फ़ैसला सुनाने के लिए मौजूद पाने की भयानक असंगति को वह किसी तरह बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था।

"क्या मुल्ज़िम हमें यह बतायेगा," सरकारी वकील हाथ से अपना माथा रगड़ते हुए मुर्दा आवाज़ में कह रहा था, "कि उसने सचमुच दुकानदार अनीसिमोव से यह बात कही थी, 'ठहर जाओ! मैं तुम्हें मज़ा चखाऊँगा!'?"

एक छोटे-से रोशनदान का पल्ला बेधती हुई चीख़ की आवाज़ पैदा करता हुआ अपने क़ब्ज़े पर घूमा :

"चीं-ईं-ईं!"

इल्या को जूरी में जान-पहचान के दो और आदमी दिखायी दिये। पेत्रूख़ा के पीछे उससे ज़्यादा ऊँचाई पर सिलाचोव नामक एक ठेकेदार बैठा था। वह तगड़ा-सा आदमी था जिसके हाथ बहुत लम्बे और जिसका छोटा-सा चेहरा बहुत कठोर था; वह पेत्रूख़ा का दोस्त था और अक्सर आकर उसके साथ ड्राफ़्ट खेला करता था। लोग कहते थे कि एक बार अपने किसी मज़दूर से कहा-सुनी हो जाने पर उसने उसे पाड़ से नीचे ढकेल दिया था और वह आदमी बुरी तरह घायल होकर बाद में मर गया था। सामने वाली कतार में पेत्रूख़ा से एक कुर्सी छोड़कर बिसातख़ाने की एक बहुत बड़ी दुकान का मालिक दोदोनोव बैठा था। इल्या अक्सर उसके यहाँ से सामान ख़रीदा करता था और जानता था कि वह बेरहम और लालची था।

"गवाह! जब आपने अनीसिमोव का घर जलते हुए देखा..."

"चीं-ईं-ईं!" खिड़की से चीख़ की आवाज़ निकली और इल्या के अन्दर भी जैसे कोई चीज़ चीख़ पड़ी।

"बेवकू फ़!" इल्या के पास बैठे हुए आदमी ने दबी ज़बान से कहा। इल्या ने मुड़कर देखा वही काले बालों वाला आदमी था। उसने तिरस्कार से अपने होंठ टेढ़े किये।

"कौन?" इल्या ने उसे निस्तेज आँखों से घूरते हुए धीरे से पूछा।

"वही मुल्जिम। उसे गवाह की धज्जियाँ उड़ा देने का इतना बढ़िया मौक़ा मिला था, लेकिन उसने वह मौक़ा हाथ से निकल जाने दिया। अगर उसकी जगह मैं होता, तो..."

इल्या ने मुल्ज़िम की तरफ़ देखा। वह लम्बे क़द का नुकीले सिर वाला एक देहाती-सा आदमी था। उसकी सूरत से डर और जिहालत टपक रही थी, और उसके दाँत उस थके और सताये हुए कुत्ते की तरह खुले हुए थे जो भागते-भागते ऐसे कोने में पहुँच गया हो जहाँ से निकलने का कोई रास्ता न हो और जिसे ऐसे दुश्मनों ने घेर रखा हो जिनसे लड़ने की उसमें ताक़त न रह गयी हो। पेत्रूख़ा, सिलाचोव, दोदोनोव और दूसरों ने पेट-भरे लोगों जैसी अपनी गम्भीर दृष्टि उसकी ओर फेरी। इल्या को ऐसा लगा कि वे मन ही मन कह रहे थे :

"अगर पकड़ा गया तो ज़रूर अपराधी है।"

"कोई मज़ा नहीं आया," पास बैठे हुए आदमी ने कहा। "ज़रा भी दिलचस्प मुक़दमा नहीं है। मुल्ज़िम बुद्धू है, सरकारी वकील ढुलमुल है, गवाह सब बेवकू फ़ हैं, जैसा कि हमेशा होता है। अग़र मैं सरकारी वकील होता, तो मैं दस मिनट में उसका काम तमाम कर देता..."

"क्या वह सचमुच अपराधी है?" इल्या ने दबी ज़बान से पूछा, वह ऐसे काँप रहा

था जैसे उसे सर्दी लग रही हो।

"लगता तो नहीं है। लेकिन उसे सज़ा ज़रूर मिलेगी। उसे अपनी सफ़ाई पेश करना नहीं आता... देहातियों को आम तौर पर अपनी सफाई पेश करना नहीं आता। सब बिल्कुल निकम्मे होते हैं! हाड़-माँस तो ढेरों होता है, लेकिन समझ-बूझ में बिल्कुल कोरे होते हैं।"

"सच बात है..."

"तुम्हारे पास बीस कोपेक हैं?" उस आदमी ने अचानक पूछा।

"हाँ..."

"मुझे दे दो..."

इल्या ने अपना बटुआ निकालकर उसे पैसे दे दिये; उसे यह सोचने का भी वक़्त नहीं मिला कि पैसे देने चाहिए या नहीं। फिर उसने कनखियों से उस आदमी को देखकर अनायास ही प्रशंसा के भाव से सोचा :

"आदमी बड़ा चलता पुरज़ा है।"

"मेम्बराने-जूरी," सरकारी वकील ने बड़ी नरमी से, रोबदार लहजे में कहा, "इस आदमी की सूरत देखिये। इसकी सूरत तमाम गवाहों की उन गवाहियों से बढ़कर है, जिनसे इसका जुर्म पूरी तरह साबित हो चुका है। इसकी सूरत देखकर नामुमकिन है कि आपको यह यक़ीन न आ जाये कि आपके सामने एक छंटा हुआ मुजरिम खड़ा है, क़ानून का दुश्मन, समाज का दुश्मन..."

इस बात से कि "समाज के दुश्मन" के बारे में कहा गया था कि वह खड़ा है जबकि दरअसल वह बैठा हुआ था, ऐसा लगा कि वह कुछ सिटपिटा गया, क्योंकि वह धीरे-धीरे उठकर खड़ा हो गया। उसका सिर झुका हुआ था, उसके दोनों हाथ बग़ल में झूल रहे थे, और उसका पूरा लम्बा और मुरझाया हुआ शरीर झुका हुआ था, मानो वह भाड़ की तरह खुले हुए इन्साफ़ के जबड़ों में छलाँग लगाने को तैयार हो...

जब ग्रोमोव ने थोड़ी देर के लिए अदालत बर्ख़ास्त होने का एलान किया तो इल्या और वह काले बालों वाला आदमी दोनों बाहर बरामदे में चले गये। उस आदमी ने अपने कोट की जेब में से एक दबी हुई सिगरेट निकालकर उसे सीधा करते हुए कहा :

"क़सम खाकर कहता है कि वह बेगुनाह है, बेवकू फ़ कहीं का। कहता है कि आग उसने नहीं लगायी। यहाँ क़सम खाने से कुछ नहीं होता; बस; अपराध चुपचाप मान लेना होता है। यह मामला बहुत संगीन है... दुकानदार को नुक़सान पहुँचा है।"

"क्या आप समझते हैं कि वह सचमुच अपराधी है?" इल्या ने विचारमग्न होकर पूछा।

"शायद है, क्योंकि वह बेवकू फ़ है। चालाक लोग कभी अपराधी नहीं ठहराये

जाते,” उस आदमी ने अकड़कर सिगरेट का कश लिया और जल्दी-जल्दी बोलते हुए विरक्त भाव से कहा।

“जूरी में ऐसे-ऐसे लोग बैठे हैं...” इल्या ने धीमे और तनाव-भरे स्वर में कहना शुरू किया।

“लोग नहीं दुकानदार, उनमें से ज़्यादातर,” काले बालों वाले आदमी ने शान्त भाव से उसकी बात को ठीक किया।

इल्या ने जल्दी से एक नज़र उस पर डाली। “उनमें से कुछ को मैं जानता हूँ...” वह बोला।

“अच्छा!”

“अगर सच पूछो तो बड़े बेहूदा लोग हैं!”

“सब डाकू हैं,” उस आदमी ने ऊँचे स्वर में समर्थन करते हुए कहा।

उसने सिगरेट फेंक दी और होंठ गोल सिकोड़कर सीटी बजाने लगा और ढिठाई से सबको घूरकर देखने लगा। उसका सारा शरीर, उसकी एक-एक हड्डी झटके खाने लगी और भूख से तड़पने लगी।

“कोई नयी बात नहीं है। कुल मिलाकर देखा जाये तो जिसे हमारा इंसाफ़ कहा जाता है वह ज़्यादातर एक स्वाँग होता है बिल्कुल ढोंग,” उसने अपने कन्धे चलाते हुए कहा। “भूखे लोगों की कुकर्म की प्रवृत्तियों को सुधारने की कोशिश करके पेट-भरे लोगों के दिमाग़ की कुछ कसरत हो जाती है। मैं अपना काफ़ी वक़्त अदालतों में बिताता हूँ, लेकिन मैंने आज तक कभी नहीं देखा कि भूखा आदमी किसी पेट-भरे आदमी पर मुक़दमा चलाये। अगर कभी ऐसा होता है कि कोई पेट-भरा आदमी अपनी ही बिरादरी के किसी आदमी पर मुक़दमा चलाये, तो वह लालच की वजह से ही ऐसा करता है, उसे सबक़ सिखाने के लिए ताकि वह सब कुछ न हड़प ले, कुछ उसके लिए भी छोड़ दे।”

“जैसी कि मसल मशहूर है ‘जाके फटी न पैर बेवाई, सो का जानै पीर पराई’,” इल्या ने कहा।

“यह सब बकवास है! वे बहुत अच्छी तरह समझते हैं इसलिए तो वे इतनी सख़्ती बरतते हैं...”

“अगर वे पेट-भरे हों और ईमानदार हों तब तो कोई हर्ज नहीं है,” इल्या ने धीमी आवाज़ में कहा, “लेकिन जब वे पेट-भरे होने के साथ ही बदमाश भी हों तब वे दूसरों का इंसाफ़ कैसे कर सकते हैं?”

“बदमाश तो सबसे ज़्यादा सख़्ती से इंसाफ़ करते हैं,” काले बालों वाले आदमी ने गम्भीर होकर अपनी राय दी। “ख़ैर, अब एक चोरी के मामले की सुनवाई है।”

"उसमें जो मुल्जिम है वह मेरी जान-पहचान की है..." इल्या ने धीरे से कहा।

"अच्छा," उस आदमी ने जल्दी से इल्या पर एक नज़र डालते हुए कहा। "ज़रा देखें तो तुम्हारी इस जान-पहचान वाली को..."

इल्या का दिमाग़ उलझा हुआ था। वह इस चलते-पुरजे आदमी से, जो अपने शब्द वैसे ही उंडेलता रहता था जैसे कोई टोकरी में से मटर के दाने उंडेल रहा हो, बहुत-सी बातें पूछना चाहता था, लेकिन उसमें कोई ऐसी अरुचिकर और डरावनी बात थी जिसकी वजह से वह उससे पूछ नहीं पा रहा था। फिर भी यह आभास कि पेत्रूख़ा यहाँ इंसाफ़ करने के लिए बैठा हुआ था इतना बड़ा बोझ था कि वह उसके नीचे दबा जा रहा था और यह आभास बाक़ी हर चीज़ पर छा गया था। वह लोहे के एक ऐसे शिकंजे की तरह था जो बाक़ी तमाम चीज़ों को उसके दिल से निचोड़कर बाहर निकाले दे रहा था।

अदालत के कमरे में घुसते वक़्त उसकी नज़र पावेल ग्राचोव की गुद्दी और उसके छोटे-छोटे कानों पर पड़ी। ख़ुश होकर उसने पावेल के कोट की आस्तीन पकड़कर खींची और उसकी ओर देखकर खिलकर मुस्करा दिया। जवाब में पावेल भी मुस्करा दिया, लेकिन कुछ अनमनेपन से और बहुत कोशिश करके।

कई क्षण तक दोनों कुछ कहे बिना एक-दूसरे के सामने खड़े रहे; दोनों ही ने कोई ऐसी बात महसूस की होगी कि दोनों एक साथ बोल पड़े।

"तमाशा देखने आये हो?" पावेल ने टेढ़ी मुस्कराहट के साथ पूछा।

"वह आयी है?" इल्या ने झेंपते हुए पूछा।

"कौन?"

"वही, तुम्हारी सोफ़िया..."

"वह मेरी नहीं है," पावेल ने उसकी बात काटते हुए रुखाई से जवाब दिया।

वे अदालत के कमरे में पहुँच चुके थे।

"साथ-साथ बैठेंगे," इल्या ने सुझाव रखा।

पावेल संकोच करने लगा।

"बात यह है... मेरे साथ कुछ दोस्त हैं..."

"अच्छा, कोई बात नहीं।"

"अच्छा, मैं चलता हूँ।"

पावेल जल्दी से चला गया। उसे जाता देखकर इल्या को ऐसा लगा कि जैसे पावेल ने उसके शरीर के किसी घाव को बड़ी बेरहमी से छेड़ दिया हो। उसके सारे शरीर में टीस-सी दौड़ गयी। यह देखकर उसे बड़ी तकलीफ़ हो रही थी कि पावेल ने बहुत बढ़िया नया कोट पहन रखा था, और यह देखकर कि पिछले कुछ महीनों में उसका

चेहरा साफ़-सुथरा और तनदुरुस्त दिखायी देने लगा था। जिस बेंच की ओर पावेल गया था उस पर गावरिक की बहन बैठी हुई थी। पावेल ने उससे कुछ कहा और उसने झट से मुड़कर इल्या की ओर देखा। उसका आगे को तना हुआ झुका चेहरा देखकर इल्या ने मुँह फेर लिया, और उसने जो दर्द और जो ग़ुस्सा महसूस किया उसने उसके दिल को और भी मज़बूती से अपनी लपेट में ले लिया।

वेरा अन्दर लायी गयी। वह अपना स्लेटी रंग का जेल का लिबास पहने और अपने सिर पर रूमाल बाँधे कटहरे के पीछे खड़ी थी। सुनहरे बालों की एक लट उसकी बायीं कनपटी पर पड़ी थी, उसके गाल पीले पड़ गये थे, उसके होंठ भिंचे हुए थे, और वह अपनी बायीं आँख फाड़े घूर रही थी।

"जी हाँ... जी हाँ... नहीं..." उसके शब्दों की अस्पष्ट ध्वनि उसके कानों में पड़ रही थी।

ग्रोमोव उसे बड़ी दया की दृष्टि से देख रहा था और उससे इतनी नरमी से बोल रहा था जैसे बिल्ली घुरघुराती है।

"कपितानोवा, क्या तुम इक़रार करती हो कि उस दिन रात के वक़्त..." उसकी भरपूर, लचीली आवाज़ वेरा के कानों तक पहुँच रही थी।

इल्या ने एक नज़र पावेल पर डाली, जो दोहरा-सा होकर मुँह लटकाये बैठा हाथों में अपनी टोपी मसल रहा था। उसकी बग़ल में बैठी हुई लड़की सीधी तनकर बैठी थी और उसके चेहरे का भाव साफ़ कह रहा था कि वह वहाँ पर मौजूद सभी लोगों के बारे में फ़ैसला सुना रही थी : वेरा के बारे में, जजों के बारे में, जूरी के बारे में और पब्लिक के लोगों के बारे में। वह बराबर अपना सिर एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ घुमा रही थी, उसके होंठों पर तिरस्कार का भाव था, और चढ़ी हुई भवों के नीचे से झाँकती हुई उसकी गर्वीली आँखों में एक कठोर, क्रूर चमक थी...

"मैं इक़रार करती हूँ," वेरा ने कहा। उसकी आवाज़ में बेहद गूँज थी; वह आवाज़ बिल्कुल वैसी ही लग रही थी जैसी चीनी के चिटके हुए प्याले पर चोट मारने से पैदा होती है।

जूरी के दो आदमी दोदोनोव और उसके पास बैठा हुआ लाल बालों और चिकने चेहरे वाला आदमी आवाज़ किये बिना अपने होंठ हिला रहे थे और उस लड़की को देखकर उनकी आँखें मुस्करा रही थीं। पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव ने अपना पूरा शरीर आगे की ओर बढ़ा लिया, उसका चेहरा पहले से भी ज़्यादा लाल हो गया और उसके गलमुच्छे फड़कने लगे। जूरी के कुछ दूसरे लोग भी अपना सारा ध्यान केन्द्रित करके वेरा को घूर रहे थे; इल्या इसकी वजह जानता था और इस बात से उसे घिन आने लगी।

"ये लोग उसका फ़ैसला करेंगे, और वे ख़ुद अपनी नज़रों से उसके जिस्म को

टटोल रहे हैं," उसने दाँत भींचकर सोचा। उसका जी चाह रहा था कि चिल्लाकर पेत्रूख़ा से कहे, "अरे, हरामी! तेरे दिमाग़ में इस वक़्त क्या बात उठ रही है?"

उसके गले में कुछ अटक गया, जिसकी वजह से उसकी साँस रुकने लगी।

"अच्छा, यह बताओ... क्या नाम है तुम्हारा... कपितानोवा," सरकारी वकील ने धीरे-धीरे अपनी ज़बान चलाते हुए और गर्मी से परेशान दुम्बे की तरह अपनी आँखें नचाते हुए कहा, "क्या तुम बहुत दिनों से पेशा कर रही हो?"

वेरा ने अपने मुँह पर हाथ फेरा, मानो यह सवाल उसके तमतमाये हुए गाल पर चिपककर रह गया हो।

"जी हाँ।"

उसके उत्तर में दृढ़ता थी। सुनने वालों में साँप के रेंगने की सरसराहट जैसी खुसर-पुसर की लहर दौड़ गयी। पावेल ने अपना सिर और नीचे झुका लिया, मानो उसे छिपाने की कोशिश कर रहा हो, और अपनी टोपी को मसलता रहा।

"ठीक-ठीक बताओ, कितने अरसे से?"

वेरा ने कोई जवाब नहीं दिया; वह बस अपनी गम्भीर कठोर नज़रें ग्रोमोव पर जमाये खड़ी रही।

"एक साल से? दो साल से? पाँच साल से?" सरकारी वकील अपने सवाल पर अड़ा रहा।

उसने फिर भी कोई जवाब नहीं दिया। वह ऐसे निश्चल खड़ी थी और उसका रंग इतना फीका पड़ गया था कि लगता था उसे पत्थर से काटकर बनाया गया है; बस उसके सीने पर पड़े हुए रूमाल के छोर हिलडुल रहे थे।

"अगर तुम जवाब न देना चाहो तो तुम्हें इनकार कर देने का हक़ है," ग्रोमोव ने अपनी मूँछों पर हाथ फेरते हुए कहा।

यह सुनकर वेरा का वकील उछलकर खड़ा हो गया। वह एक दुबला-पतला, नुकीली दाढ़ी और बादाम की शक्ल की आँखों वाला आदमी था। उसकी नाक लम्बी और पतली थी और उसके सिर का पिछला हिस्सा चौड़ा था जिसकी वजह से उसकी शक्ल कुछ फरसे जैसी लगती थी।

"जूरी को बताओ कि तुम यह धन्धा अपनाने के लिए किन बातों की वजह से मजबूर हुईं, कपितानोवा," उसने ऊँचे और तीखे स्वर में कहा।

"मुझे किसी बात ने मजबूर नहीं किया," वेरा ने सीधे अपने जजों की आँखों में आँखें डालकर कहा।

"हुँ। ऐसी बात नहीं है। मैं दरअसल, जानता हूँ... मेरा मतलब है कि तुमने ख़ुद मुझे बताया था..."

"आप कुछ नहीं जानते हैं," वेरा ने कहा। उसने मुड़कर कठोर दृष्टि से अपने वकील की ओर देखा; उसकी आवाज़ में ग़ुस्सा था, "मैंने आपको कुछ नहीं बताया था..."

मुक़दमे की कार्रवाई सुनने के लिए आये हुए लोगों पर जल्दी से एक नज़र डालकर वह अपने जजों की ओर मुँह करके अपने वकील की तरफ़ सिर से हल्का-सा इशारा करके बोली, "क्या मुझे इजाज़त है कि मैं इनसे बात न करूँ?"

एक बार फिर साँप सरसराया, लेकिन इस बार ज़्यादा ज़ोर से और खुले तौर पर।

इल्या तनाव महसूस करके काँप उठा और उसने पावेल की ओर देखा।

वह उससे कुछ उम्मीद कर रहा था, बहुत पक्के तौर पर उम्मीद कर रहा था। लेकिन पावेल अपने सामने वाले आदमी के पीछे से देखता रहा और उसने एक शब्द भी नहीं कहा, वह अपनी जगह से हिला तक नहीं। ग्रोमोव ने मुस्कराते हुए कुछ चिकने-चुपड़े शब्द कहे, जिसके बाद वेरा धीमे दृढ़ स्वर में बोलने लगी :

"मैं बस अमीर बन जाना चाहती थी... मैंने पैसा लिया, बात बस इतनी ही है... और मैं हमेशा से ऐसी ही हूँ।"

जूरी के लोग आपस में खुसर-पुसर करने लगे और उनकी त्योरियों पर बल आ गये। जजों के चेहरों से भी नाराज़गी ज़ाहिर हो रही थी। अदालत के कमरे में बहुत ख़ामोशी थी। बाहर से सड़क के पत्थरों पर सधे हुए क़दम पड़ने की चाप सुनायी दे रही थी : सिपाही क़दम मिलाकर गुजर रहे थे।

"इस बात को देखते हुए कि मुल्जिम ने अपना क़सूर मान लिया है, मेरा सुझाव है..." सरकारी वकील ने कहा।

इल्या ने महसूस किया कि वह अब वहाँ एक क्षण भी नहीं बैठ सकता था, और वह उठकर बाहर की ओर चल पड़ा।

"शिः!" पुलिसवाले ने उसे ज़ोर से चेतावनी दी।

वह फिर बैठ गया और पावेल की तरह उसने भी अपना सिर झुका लिया। वह पेत्रूख़ा का लाल चेहरा देखना बर्दाश्त नहीं कर सकता था, जो इस वक़्त इस तरह फूला हुआ था जैसे उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँची हो। और उस ख़ुशमिज़ाज जज ग्रोमोव के रूप में उसे एक ऐसा निश्चिन्त आदमी दिखायी दिया जिसे इन्सानों के बारे में फ़ैसला सुनाने की वैसे ही आदत पड़ गयी थी जैसे बढ़ई को लकड़ी के तख़्तों पर रन्दा करने की पड़ जाती है। उसके दिमाग़ में एक भयानक विचार उठा :

"अगर मैं अपना अपराध मान लूँ तो ये लोग मेरे साथ भी यही करेंगे... पेत्रूख़ा मुझे सज़ा सुना देगा। मुझे कालेपानी भेज देगा। और ख़ुद पहले की तरह ही चैन से रहेगा।"

उसका दिमाग़ इस विचार पर केन्द्रित होकर रह गया और वह किसी की ओर देखे बिना या कुछ भी सुने बिना बैठा रहा।

"मैं... मैं नहीं चाहती कि आप उसकी चर्चा करें!" वेरा काँपते हुए आहत स्वर में चिल्लायी, और फिर अपना गला पकड़कर और झटके के साथ अपने सिर पर से रूमाल उतारकर रोने लगी।

कमरे में गूँज भर गयी; लड़की की चीख़ों से वहाँ हलचल-सी पैदा हो गयी। कटहरे के पीछे वह फफक-फफककर रो रही थी; उसका सिसकना देखकर कलेजा फटा जाता था।

इल्या उछलकर खड़ा हो गया और उसने आगे बढ़ने की कोशिश की, लेकिन सभी लोग दूसरी दिशा में जा रहे थे और उसे पता भी नहीं चला कि कब वह बाहर बरामदे में आ निकला।

"उन्होंने उसकी आत्मा को नंगा कर दिया," काले बालों वाले आदमी की आवाज़ सुनायी दी।

पावेल ग्राचोव दीवार से टिका खड़ा था; उसका रंग पीला पड़ गया था, बाल बिखरे हुए थे और जबड़े काँप रहे थे। इल्या ने उसके पास जाकर उसे बड़े द्वेष से घूरा।

"तो, कैसा लगा?" वह बोला।

पावेल ने उसकी ओर देखा, अपना मुँह खोला, लेकिन कोई आवाज़ न निकली।

"तबाह कर दिया न उसे?" इल्या कहता रहा। पावेल इस तरह चौंक पड़ा जैसे किसी ने उसे चाबुक मार दी हो। एक हाथ इल्या के कन्धे पर रखकर उसने उत्तेजित स्वर में कहा :

"मैंने? मैंने क्यों? हम लोग तो उनके ख़िलाफ़ अर्ज़ी देने वाले हैं..."

इल्या ने उसका हाथ अपने कन्धे पर से झिटक दिया; वह उससे कहना चाहता था : "अरे! मैंने तुम्हें जजों से यह कहते नहीं सुना कि उसने पैसा तुम्हारी ख़ातिर चुराया था!" लेकिन इसके बजाय उसने कहा :

"पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव सज़ा देता है... यह कैसा इंसाफ़ है?" उसने ताना देते हुए कहा।

पावेल तनकर सीधा खड़ा हो गया। उसका चेहरा तमतमा उठा और वह जल्दी-जल्दी कुछ कहने लगा, लेकिन इल्या उसकी बात सुने बिना ही वहाँ से चल दिया। चेहरे पर व्यंग्य का भाव लिये वह बाहर निकल गया और दिन-भर लावारिस कुत्ते की तरह धीरे-धीरे सड़कों पर टहलता रहा, यहाँ तक कि अँधेरा हो गया और उसे भूख के मारे मतली होने लगी।

घरों की खिड़कियों में बत्तियाँ जलने लगीं, और रोशनी की पीली-पीली लम्बी

पट्टियाँ बाहर निकलने लगीं, जिनकी वजह से खिड़कियों में रखे पौधों की परछाइयों से तरह-तरह की आकृतियाँ बन गयी थीं। इल्या इन आकृतियों को ध्यान से देखने के लिए ठहर गया, जिन्हें देखकर उसे ग्रोमोव के घर की खिड़कियों में रखे हुए पौधों की और ग्रोमोव की बीवी की याद आयी, जो परियों की कहानियों की रानी की तरह थी, और ग्रोमोव के घर के उन मेहमानों की जो उदासी भरे गीत गाते थे, लेकिन उनके साथ जी खोलकर हँसते भी थे।

एक बिल्ली अपने पंजे झिटकती हुई दबे पाँव सड़क पार कर गयी।

"देख के!" कोई चेतावनी देते हुए चिल्लाया। एक घोड़े का काला सिर तेजी से उसके पास से गुजरा और उसने अपने गाल पर उसकी साँस का गरम-गरम स्पर्श महसूस किया। वह उछलकर एक तरफ़ को हट गया और चलते-चलते शराबख़ाने से दूर होता गया। गाड़ी वाले की गाली उसके कानों में गूँज रही थी।

"बोझ ढोने वाला घोड़ा नहीं था मेरी जान तो न जाती," उसने शान्त भाव से सोचा। "लेकिन मुझे कुछ खाना चाहिए... वेरा तो अब पूरी तरह तबाह हो जायेगी... वह भी अपनी आन की पक्की है... पावेल का नाम नहीं लेना चाहती थी... वह साफ़ देख रही थी कि वहाँ कोई भी ऐसा नहीं था जिसे वह अपना दुखड़ा सुनाती... वह सबसे अच्छी है... उसकी जगह अगर ओलिम्पियादा होती तो... नहीं, ओलिम्पियादा भी अच्छी है... अगर तात्याना होती..."

इस पर उसे याद आया कि आज तात्याना का जन्मदिन था। पहले तो वह उसकी पार्टी में जाने के विचार से झिझका लेकिन अगले ही क्षण एक तीखी तपती हुई भावना उसके दिल में उठी।

गाड़ी करके वह चल पड़ा। कुछ ही देर बाद वह अव्तोनोमोव-दम्पति के खाने के कमरे के दरवाज़े पर खड़ा था; तेज़ रोशनी से चकाचौंध होकर उसने अपनी आँखें सिकोड़ ली थीं और उस बड़े-से कमरे में मेज़ के चारों ओर सटकर बैठे हुए लोगों की ओर देखकर अस्पष्ट भाव से मुस्करा रहा था।

"अरे, तुम आ गये!" कीरिक ख़ुश होकर चिल्लाया। "चाकलेट लाये? क्या? जन्मदिन मनाने वाली लड़की के लिए कोई तोहफा नहीं लाये? यह कैसी बात है, यार?"

"कहाँ थे अभी तक?" तात्याना ने पूछा।

कीरिक ने उसकी बाँह पकड़ ली और उसे मेज़ के चारों ओर ले जाकर मेहमानों से उसका परिचय कराने लगा। इल्या ने उनसे हाथ मिलाये; उसके दिमाग़ में उन सबके चेहरे आपस में मिलकर बड़े-बड़े दाँतों वाले एक लम्बे-से हँसते हुए चेहरे में बदल गये। भुने हुए गोश्त की महक से उसके नथुनों में गुदगुदी-सी हो रही थी, उसके

कान औरतों की बत्तखों जैसी आवाज़ों से गूँज रहे थे, उसकी आँखें जल रही थीं और उसे रंगों के धुँधले-धुँधले धब्बों के अलावा कुछ दिखायी नहीं दे रहा था। बैठ जाने के बाद उसे आभास हुआ कि उसकी टाँगों में थकान के मारे दर्द हो रहा था और भूख के मारे उसकी आँतें सूखी जा रही थीं। कुछ भी कहे बिना वह रोटी का एक टुकड़ा खाने लगा। एक मेहमान बड़े तिरस्कार से हँसा और तात्याना व्लास्येव्ना इल्या से बोली :

"मुझे बधाई क्यों नहीं दी आपने? अच्छे मेहमान हैं आप भी! आये और न दुआ न सलाम, बस खाने लगे!"

तात्याना ने मेज़ के नीचे से उसके पाँव को ज़ोर से ठोकर मारी और अपना चेहरा झुकाकर चायदानी में पानी उँडेलने लगी।

इल्या ने रोटी का टुकड़ा मेज़ पर रख दिया, अपने हाथ रगड़े, और ऊँचे स्वर में बोला :

"आज दिन-भर मैं अदालत में था..."

उसकी आवाज़ बातचीत की गूँज के ऊपर साफ़ सुनायी दी। मेहमानों ने बातें करना बन्द कर दिया। अपने चेहरे पर उनकी नज़रें जमी हुई महसूस करके इल्या कुछ सकपका गया, और भवें झुकाकर उनके नीचे से उन्हें घूरने लगा। उन लोगों की नज़रों में अविश्वास था, जैसे उन्हें इस बात में सन्देह हो कि चौड़े कन्धों और घुँघराले बालों वाला यह नौजवान उन्हें कोई भी दिलचस्प बात सुना सकता है।

कमरे में तनाव-भरी ख़ामोशी छा गयी। इल्या के दिमाग़ में विचारों के टुकड़े चक्कर काटते रहे, और खुद वे विचार   अस्पष्ट, बिखरे हुए   अचानक ग़ायब हो गये, मानो उसकी आत्मा के अन्धकार में विलीन हो गये हों।

"अदालत में कभी-कभी बहुत अजीब क़िस्से सुनने को मिलते हैं," फ़ेलित्साता ग्रिज़्लोवा ने मीठी गोलियों का एक डिब्बा उठाकर चिमटे से मिठाई को छेड़ते हुए सपाट स्वर में कहा।

तात्याना व्लास्येव्ना के गालों पर दो लाल धब्बे उभर आये और कीरिक ने ज़ोर से अपनी नाक साफ़ की।

"अगर चर्चा छेड़ी ही है तो बात पूरी कहो," वह बोला। "तो तुमने आज सारा दिन अदालत में बिताया?.."

"इन लोगों को मुझसे उलझन हो रही है," इल्या ने सोचा, और उसके खुले हुए होंठों पर मुस्कराहट आ गयी। मेहमान फिर अलग-अलग सुरों में बातें करने लगे।

"एक बार मैंने एक क़त्ल का मुक़दमा सुना था," तारघर में काम करने वाले नौजवान ने कहा; वह पीले रंग का काली-काली आँखों वाला आदमी था और उसने

छोटी-सी मूँछ रख छोड़ी थी।

"क़त्ल के क़िस्से पढ़ने और सुनने का मुझे बेहद शौक़ है!" त्रावकिन की बीवी चहककर बोली।

उसके पति ने मेहमानों पर गहरी नज़र डालकर कहा :

"मुक़दमों की खुली सुनवाई बहुत बड़ा वरदान है।"

"जिस आदमी पर क़त्ल का इल्जाम लगाया गया था वह मेरा दोस्त था, जिसका नाम था येवगेन्येव," तारघर में काम करने वाले ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा। "एक बार तिज़ोरी की रखवाली करते हुए वह एक छोटे-से बच्चे से खेलने लगा और अचानक उसने उस बच्चे को गोली मार दी।"

"कितनी भयानक बात है!" तात्याना व्लास्येव्ना ने व्यथित होकर कहा।

"उसे जान से मार दिया!" तारघर में काम करने वाले ने चटखारा लेकर कहा।

"एक बार मुझे किसी मुक़दमे में गवाह की हैसियत से तलब किया गया था," त्रावकिन ने अपनी सूखी खड़खड़ाती हुई आवाज़ में कहा, "और जब मैं वहाँ गया तो मैंने एक ऐसे आदमी के मुक़दमे की कार्रवाई सुनी जिसने तेईस डाके डाले थे। कमाल का आदमी था न?"

कीरिक ज़ोर से ठहाका मारकर हँसा। मेहमान दो टोलियों में बँट गये : एक टोली तारघर में काम करने वाले से उस लड़के के क़त्ल का क़िस्सा सुन रही थी, और दूसरी टोली के लोग त्रावकिन से उस आदमी का क़िस्सा सुन रहे थे जिसने तेईस डाके डाले थे। इल्या अपनी नज़रें तात्याना पर इस आभास के साथ जमाये रहा कि उसके अन्दर कोई लौ धीरे-धीरे जल रही थी; अभी तक उसने चमक पैदा नहीं की थी लेकिन धीरे-धीरे सुलगकर उसका दिल जलाना शुरू कर दिया था! जैसे ही इल्या को यह आभास हुआ कि अव्तोनोमोव-दम्पति कितना डरे हुए थे कि वह कहीं उन्हें किसी उलझन में न डाल दे, उसका दिमाग़ ज़्यादा साफ़ होता गया।

तात्याना व्लास्येव्ना दूसरे कमरे में बोतलों से लदी हुई मेज़ के पास व्यस्त थी। उसका लाल रंग का रेशमी ब्लाउज़ दीवार के सफ़ेद काग़ज़ की पृष्ठभूमि पर एक चटकीले रंग के धब्बे की तरह चमक रहा था, और वह तितली की तरह कमरे में उड़ती फिर रही थी; उसके चेहरे पर एक ऐसी सुयोग्य गृहिणी के स्वाभिमान की दमक थी, जिसका हर काम बहुत अच्छे ढंग से व्यवस्थित था। दो बार इल्या ने उसे चुपके से अपने पास बुलाने का इशारा करते देखा, लेकिन वह गया नहीं, और यह देखकर उसे कुछ सन्तोष मिला कि इस बात पर वह बेचैन हो गयी थी।

"तुम वहाँ बुत बने क्यों बैठे हो?" कीरिक ने उससे कहा। "डरो नहीं, जो भी तुम्हारा जी चाहे कहो। ये सभी पढ़े-लिखे लोग हैं तुम्हारी किसी बात का बुरा नहीं

मानेंगे।”

इल्या ने फ़ौरन ऊँची आवाज़ में कहना शुरू किया :

“आज मेरी जान-पहचान की एक लड़की पर मुक़दमा चल रहा था। वह बदचलन औरत है, लेकिन इसके बावजूद बहुत अच्छी है।”

एक बार फिर सबका ध्यान उस पर केन्द्रित हो गया; एक बार फिर सबकी नज़रें उस पर जम गयीं। फ़ेलित्साता येगोरोव्ना खीसें निकालकर ताने से मुस्कराने लगी; तारघर में काम करने वाले ने मूँछों पर हाथ फेरते हुए अपना मुँह ढक लिया; हर आदमी गम्भीर और एकाग्रचित्त दिखायी देने की कोशिश करने लगा। तात्याना व्लास्येव्ना ने अचानक मेज़ पर बहुत-से छुरी-काँटों का जो ढेर उलट दिया था उनकी खनखनाहट इल्या के दिल में युद्ध-संगीत की तरह गूँज उठी। अपनी बात जारी रखने से पहले शान्त भाव से उसने वहाँ पर मौजूद मेहमानों पर नज़र दौड़ायी :

“आप लोग हँस किस बात पर रहे हैं? उनमें भी कुछ बहुत अच्छी लड़कियाँ होती हैं।”

“होती हैं, ज़रूर होती हैं,” कीरिक ने जल्दी से कहा, “लेकिन... लेकिन... खुलकर यही बात न कहो तो अच्छा है...”

“ये सभी पढ़े-लिखे लोग हैं,” इल्या ने कहा। “अगर मैंने कोई ऐसी-वैसी बात कह भी दी तो ये बुरा नहीं मानेंगे!”

अचानक उसे ऐसा लगा कि उसके अन्दर कोई बम फट गया है। वह बड़ी कटुता से मुस्कराया और उसके दिल की धड़कन क्षण-भर के लिए रुक गयी; उसके दिमाग़ में अचानक ढीठ शब्द पैदा हुए और उसके सीने से बाहर निकल पड़ने के लिए मचलने लगे।

“तो, उस लड़की ने किसी व्यापारी का कुछ पैसा चुरा लिया था...”

“बस यही कसर रह गयी थी,” कीरिक मसख़रों जैसी सूरत बनाकर और निराशा भाव से सिर हिलाकर बोला।

“आप लोग ख़ुद अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि कब और कहाँ उसने यह पैसा चुराया होगा। और कौन जाने उसने चुराया भी न हो; मुमकिन है पैसा उसे दिया गया हो...”

“तात्याना!” कीरिक ने पुकारकर कहा। “यहाँ आओ! इल्या क़िस्सा सुना रहा है! बड़ा मज़ेदार क़िस्सा है!”

लेकिन तात्याना पहले ही इल्या की बग़ल में पहुँच चुकी थी।

“मुझे तो इसमें कोई मज़ेदार बात दिखायी नहीं देती,” वह जबर्दस्ती मुस्कराकर और अपने कन्धों को थोड़ा-सा बिचकाकर बोली। “बिल्कुल मामूली क़िस्सा है। सैकड़ों

ऐसे क़िस्से सुन चुके हो। और यहाँ कोई भोली-मासूम लड़कियाँ तो हैं नहीं। लेकिन यह सब बाद में होता रहेगा। अब खाने की मेज़ पर चलें।"

"मेहरबानी करके," कीरिक ने चिल्लाकर कहा। "जाऊँगा भी मैं, और कुछ खाऊँगा भी मैं   हो, हो! तुक कैसा रहा? अच्छा न भी हो, लेकिन है मज़ेदार।"

"भूख बढ़ाता है," त्रावकिन ने अपना गला सहलाते हुए कहा।

वे सब लोग इल्या की ओर से मुँह फेरकर चले गये। इल्या को साफ़ दिखायी दे रहा था कि उन्हें उसकी बात सुनने में इसलिए कोई दिलचस्पी नहीं थी कि उनके मेजबान नहीं चाहते थे कि वे कोई दिलचस्पी लें, और इस बात से वह और भी उत्तेजित हो उठा। वह उठ खड़ा हुआ और सबको सम्बोधित करके बोला :

"और जो लोग इस लड़की के मुक़दमे की कार्रवाई कर रहे थे वे ख़ुद कई बार उसे इस्तेमाल कर चुके थे। उनमें से कुछ को तो मैं जानता भी हूँ। वे धोखेबाजों से भी बदतर हैं।"

"बस, बस!" त्रावकिन ने उंगली उठाकर सख़्ती से कहा। "यह बात क़तई नहीं कही जा सकती। वे लोग जूरी के मेम्बर हैं, और मैं ख़ुद..."

"यही तो बात है, जूरी के मेम्बर," इल्या ने चिल्लाकर कहा। "वे किसी के साथ सच्चा इंसाफ़ कैसे कर सकते हैं जब वे ख़ुद..."

"माफ़ कीजियेगा, जूरी के जरिये मुक़दमों की सुनवाई का तरीक़ा, एक तरह से ऐसा सुधार है जिसे ज़ार अलेक्सान्द्र द्वितीय ने जनता के उद्धार के लिए लागू किया था! राज्यसत्ता की ऐसी महान संस्था की आप कैसे निन्दा कर सकते हैं?"

वह इल्या के चेहरे पर फुफकारा, उसके मोटे-मोटे सफाचट गाल काँपने लगे, और उसकी आँखें दाहिनी ओर से बायीं ओर और फिर वापस दूसरी दिशा में फिरने लगीं। सब मेहमान उन्हें घेरकर खड़े हो गये, सभी ख़ुश होते हुए जिज्ञासा से हंगामे का इन्तज़ार कर रहे थे। तात्याना का रंग पीला पड़ गया था; उद्विग्न होकर वह मेहमानों की आस्तीनें खींच रही थी :

"अरे, छोड़िये भी!" वह चिल्लाकर बोली। "कोई मज़ा नहीं है इसमें! कीरिक, लोगों से चलने को कहो!"

कीरिक भौंचक्का होकर पलकें झपकाने लगा और अनुरोध करने लगा :

"बस, रहने दो! भाड़ में जायें ये सुधार और उद्धार और यह सारा फ़लसफ़ा..."

"फ़लसफ़ा नहीं, राजनीति," त्रावकिन भर्रायी हुई आवाज़ में बोला। "और जो लोग ऐसी बातें करते हैं उन्हें भरोसे लायक़ नहीं समझा जाता।"

इल्या के तन-बदन में आग लगी हुई थी। गीले-गीले होंठों और सफाचट चेहरे वाले इस छोटे-से आदमी के सामने खड़े होकर उसका गुस्सा भड़कते हुए देखने में बड़ा

मज़ा आयेगा। और वह अव्तोनोमोव-दम्पति को अपने मेहमानों के आगे हक्का-बक्का कर देने के विचार से बेहद ख़ुश हो उठा। वह पहले से ज़्यादा शान्त हो गया, और इन लोगों से टक्कर लेने, उनका अपमान करने और उनका ग़ुस्सा भड़का देने की उत्कट इच्छा उसके अन्दर फ़ौलाद की स्प्रिंग की तरह थी जिसने उसे ऊपर उठाकर ऐसी ऊँचाई पर पहुँचा दिया था जो सहमाने के साथ ही उसे सुखद भी लग रही थी। उसका स्वर अधिक शान्त और दृढ़ हो गया :

"आप मुझे जो भी चाहें कहें आप पढ़े-लिखे आदमी हैं लेकिन मैं अपने शब्द वापस नहीं लूँगा! क्या पेट-भरे लोग भूखे आदमी का हाल समझ सकते हैं! भूखे लोग चोर हो सकते हैं, लेकिन सो तो पेट-भरे लोग भी होते हैं।"

"कीरिक निकोदीमोविच!" त्रावकिन ने भर्राये हुए स्वर में कहा। "क्या हो रहा है? यह तो... यह तो..."

लेकिन तात्याना व्लास्येव्ना उसकी बाँह पकड़कर उसे अपने पीछे खींचकर ले जाते हुए ऊँचे स्वर में बोली :

"आओ, तुम्हारी मनपसन्द सैण्डविचें हैं : हेरिंग मछली, उबले हुए अण्डे और हरी प्याज के साथ मक्खन..."

"हुँह... मैं ऐसे लोगों को अच्छी तरह जानता हूँ!" त्रावकिन आहत स्वर में बुड़बुड़ाया, और ज़ोर की आवाज़ करता हुआ होंठों से चटखारा मारने लगा। उसकी बीवी ने अपने शौहर की दूसरी बाँह पकड़ते हुए झुलस देने वाली नज़र से इल्या को देखा।

"बकवास पर इतना परेशान न हो, अन्तोन..." वह बोली।

"मसालेदार स्टर्लेट और टमाटर," तात्याना व्लास्येव्ना अपने सबसे सम्मानित मेहमान का ग़ुस्सा शान्त करने के लिए कहती रही।

अचानक त्रावकिन फर्श पर पाँव जमाकर खड़ा हो गया और उसने मुड़कर इल्या की ओर देखा। "बहुत बेजा बात है तुम्हारी, नौजवान!" उसने उदारता-भरे और साथ ही फटकार के स्वर में कहा। "तुम्हें उसकी खूबियों को देखना चाहिए, चीज़ों को समझना चाहिए..."

"पर मैं नहीं समझता!" इल्या ने चिढ़कर कहा। "इसीलिए तो मैं कहता हूँ : पेत्रूख़ा फ़िलिमोनोव क्यों दूसरों के सिर पर सवार रहे?"

मेहमान उसके पास से होकर गुजरते रहे; वे स्पष्ट रूप से यह कोशिश कर रहे थे कि कहीं उसे छू न जायें। लेकिन कीरिक उसके पास आया और बड़ी सख़्ती से ऐसे स्वर में बोला जिससे लगता था कि वह नाराज़ है :

"लानत है, तुम भी बिल्कुल बौड़म हो, बस और कुछ नहीं।"

इल्या चौंक पड़ा; उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया, जैसे किसी ने उसके

सिर पर चोट की हो। मुट्ठियाँ भींचकर वह कीरिक की ओर लपका। लेकिन कीरिक, जो उसकी इस हरकत को नहीं देख पाया था, तेज़ क़दम बढ़ाता हुआ दूसरे कमरे में चला गया, जहाँ मेज़ पर तरह-तरह के पकवान सजे हुए थे। इल्या ने गहरी आह भरी...

दरवाज़े पर से जहाँ वह खड़ा था उसे मेज़ के चारों ओर एक-दूसरे से सटकर भीड़ लगाये हुए लोगों की पीठें दिखायी दे रही थीं और उनके होंठ चाटकर चटख़ारा लेने की आवाज़ सुनायी दे रही थी। तात्याना के लाल ब्लाउज़ का अक्स उसकी आँखों पर एक झिल्ली बनकर छा गया, जिसकी वजह से हर चीज़ धुँधली-सी दिखायी देने लगी।

"हुँह," त्रावकिन बिल्ली जैसी आवाज़ में बोला। "क्या लाजवाब खाना है! बहुत ही बढ़िया।"

"थोड़ी-सी काली मिर्च लेंगे?" तात्याना ने बहुत मीठे स्वर में पूछा।

"मैं अभी तुम्हें काली मिर्च चखाता हूँ!" इल्या ने क्रूर द्वेष से फ़ैसला किया और अपना सिर पीछे की ओर झिटककर लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ मेज़ के पास जा पहुँचा। उसने मेज़ पर से किसी का शराब का गिलास लेकर तात्याना व्लास्येव्ना की ओर बढ़ाया और शब्दों का साफ़-साफ़ उच्चारण करते हुए बोला, मानो शब्दों से उसे आघात पहुँचाना चाहता हो :

"तुम्हारे नाम का, मेरी जान!"

यह सुनकर सबको साँप सूँघ गया ऐसा लगा जैसे कोई चीज़ कान के परदे फाड़ देने वाला शोर करती हुई नीचे आ गिरी हो, या जैसे अचानक बत्तियाँ बुझ गयी हों और कमरे में अँधेरा छा गया हो और उस अँधेरे में हर आदमी अपनी जगह जमकर रह गया हो। चबाया हुआ खाना भरे लोगों के खुले मुँह उनके भयभीत, स्तंभित चेहरों पर सड़ते हुए घावों जैसे लग रहे थे।

"आओ, मेरे साथ पियो! कीरिक निकोदीमोविच, मेरी रखैल से कहो कि मेरे साथ पिये। क्या बात है? हम लोग अपना गन्दा काम चोरी-छिपे क्यों करें? आओ, खुलकर सामने आ जायें। मैंने यही फ़ैसला किया है खुलकर सामने आ जाने का।"

"बदमाश कहीं का!" तात्याना की तेज़ चीख़ती हुई आवाज़ सुनायी दी।

इल्या ने उसे अपना हाथ घुमाते देखा, और जो प्लेट उसने उसके सिर का निशाना लगाकर फेंकी थी उसे उसने अपने मुक्के से रोककर एक तरफ़ गिरा दिया। प्लेट छन्न से टूटने की आवाज़ सुनकर मेहमान और भी दंग रह गये। धीरे-धीरे और चुपचाप वे मेज़ के पास से खिसकने लगे, और उन्होंने अव्तोनोमोव-दम्पति को अकेले ही इल्या से मुँह-दर-मुँह निबट लेने के लिए छोड़ दिया। कीरिक एक मछली की दुम पकड़े खड़ा आँखें झपका रहा था उसका रंग पीला पड़ गया था और वह बहुत बेवकू फ़ और

दयनीय लग रहा था। तात्याना व्लास्येव्ना सिर से पाँव तक काँप रही थी और इल्या की ओर अपना मुक्का हिला रही थी। उसके चेहरे का रंग उसके ब्लाउज़ जैसा ही लाल हो गया था और उसकी जीभ को उसके शब्दों का उच्चारण करने में कठिनाई हो रही थी।

"यह झूठ... है... झूठ है!" उसने अपनी गर्दन आगे बढ़ाकर फुफकारते हुए कहा।

"बता दूँ मैं इन लोगों को कि तुम नंगी कैसी लगती हो?" इल्या ने निश्चिन्त भाव से जवाबी वार किया। "तुमने ख़ुद अपने बदन के सारे ख़ूबसूरत तिल और मस्से मुझे दिखाये हैं   तुम्हारे पति को पता चल जायेगा कि मैं झूठ बोल रहा हूँ या नहीं..."

किसी की दबी हुई हँसी सुनायी दी। तात्याना व्लास्येव्ना ने झटके के साथ दोनों हाथ ऊपर उठाकर अपना गला पकड़ लिया और चुपचाप कुर्सी पर ढेर हो गयी।

"पुलिस को बुलवाओ!" तारघर में काम करने वाला चिल्लाया।

कीरिक ने उसकी ओर मुड़कर देखा और अचानक सिर नीचे झुकाकर साँड की तरह इल्या की ओर झपटा।

इल्या ने उसे माथे पर धक्का दिया।

"कहाँ जा रहे हो?" वह डपटकर बोला। "तुम्हारी चूल-चूल तो ढीली है   एक हाथ मार दूँगा तो अंजर-पंजर सब अलग हो जायेंगे... लेकिन सुनो   और आप सब लोग भी, आप भी सुनिये। आपको ऐसा मौक़ा कभी नहीं मिलेगा कि कोई सच्चाई आपको बताये।"

लेकिन कीरिक, जो अब तक धक्के के असर से सँभल चुका था, दुबारा सिर झुकाकर इल्या की ओर झपटा। मेहमान चुपचाप देखते रहे। हर आदमी अपनी जगह पर खड़ा रहा, अलावा त्रावकिन के जो पंजों के बल चलते हुए कोने में जाकर सोफ़े पर बैठ गया, और दोनों हथेलियाँ जोड़कर उसने अपने हाथ घुटनों के बीच दबा लिये।

"बचना, नहीं तो मैं मार बैठूँगा!" इल्या ने चेतावनी दी। "मेरे पास तुम्हें चोट पहुँचाने की कोई वजह नहीं है। तुम बेवकू   फ़, तुम किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। तुमने मेरा कभी कुछ नहीं बिगाड़ा है... दूर हट जाओ!"

उसने कीरिक को एक और धक्का दिया, इस बार ज़्यादा ज़ोर से, और पीछे हटकर दीवार के पास चला गया, जहाँ से वह मेहमानों को देखता रहा।

"तुम्हारी बीवी ख़ुद आकर मेरी बाँहों में गिर पड़ी," वह बोला। "वह बड़ी तेज़ औरत है, और कमीनों में कमीनी है! लेकिन आप भी   आप सब   आप सभी बदमाश हैं... आज मैं दिन-भर अदालत में रहा हूँ और वहाँ मैंने फ़ैसला करना सीखा है..."

वह इतनी बहुत-सी बातें कहना चाहता था कि अपने विचारों को व्यवस्थित नहीं कर पा रहा था और उन्हें पत्थरों की तरह उल्टा-सीधा फेंक रहा था।

"मैं तात्याना को दोष देना नहीं चाहता... वह बात तो न जाने कैसे निकल आयी... मेरे साथ हमेशा सब कुछ अपने आप ही हो जाता है। मैंने इसी तरह अचानक एक आदमी का ख़ून तक कर डाला... ऐसा करने का मेरा कोई इरादा नहीं था, लेकिन बस हो गया... तात्याना! तुम और मैं जो दुकान चला रहे हैं वह उसी पैसे से जो मैंने उस आदमी से लिया था जिसका मैंने ख़ून किया था!"

"यह पागल है!" कीरिक ने खुश होकर कहा और वह भाग-भागकर एक से दूसरे मेहमान के पास जाकर उत्कंठित स्वर में कहने लगा :

"देखा? बिल्कुल पागल है! हाय, इल्या बेचारा! बेचारा!"

इल्या ठहाका मारकर हँस पड़ा। ख़ून करने की बात मान लेने के बाद अब वह पहले से भी ज़्यादा शान्त और बेझिझक महसूस कर रहा था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसके पाँवों के नीचे फर्श हो ही नहीं, जैसे वह हवा में लटका हो; उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह लगातार ऊँचा उठता जा रहा है। तगड़ा और हट्टा-कट्टा तो वह था ही, उसने अपना सिर झटके के साथ पीछे किया और सीना तान लिया। उसके घुँघराले बाल उसके चौड़े पीले माथे पर बिखर गये और उसकी आँखों में व्यंग्य और द्वेष की चमक आ गयी।

तात्याना उठी और लड़खड़ाती हुई फ़ेलित्साता येगोरोव्ना के पास चली गयी।

"मैं बहुत दिन से देख रही थी..." उसने थरथराते हुए स्वर में कहा। "बहुत दिन से... उसकी आँखों में वह दीवानापन... ओह, कितना भयानक है!"

"अगर वह पागल हो गया है तो हमें पुलिस को बुलाना चाहिए," फ़ेलित्साता ने इल्या को एकटक देखते हुए बड़े रोब से कहा।

"वह पागल है! बिल्कुल पागल!" कीरिक चिल्लाया।

"वह हम सब लोगों को मार डालेगा..." ग्रिज़्लोव ने चोरी से चारों ओर नज़र डालकर दबे स्वर में कहा। किसी की कमरे से चले जाने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी।

इल्या दरवाज़े के पास खड़ा था और उसके सामने से होकर गुजरे बिना कोई बाहर नहीं जा सकता था। इल्या हँसता रहा। वह इस बात पर खुश था कि ये ेाग उससे डर रहे थे; उसने देखा कि मेहमानों में से किसी को भी अव्तोनोमोव-दम्पति के साथ हमदर्दी नहीं थी; अगर उन्हें उनका डर न होता तो वे रात-भर उसे उनका अपमान करते हुए सुनते रहते।

"मैं पागल नहीं हूँ," उसने धमकी-भरे अन्दाज़ से अपनी भवें सिकोड़कर कहा। "लेकिन जो जहाँ है वहीं रहे। मैं किसी को बाहर नहीं जाने दूँगा। और अगर कोई

मेरे ऊपर झपटा तो मैं उस पर वार करूँगा। मैं उसे मार डालूँगा। मैं बहुत ताक़तवर हूँ..."

उसने अपनी लम्बी बाँह के सिरे पर कसी हुई मुट्ठी सामने तानी और उसे हवा में घुमाया। फिर उसने हाथ नीचे गिरा लिया।

"मुझे यह बताइये : आख़िर आप लोग किस तरह के लोग हैं? आप लोग किसलिए ज़िन्दा रहते हैं? टुच्चे, भंगी, हरामी, आप लोग इसके अलावा और कुछ नहीं हैं।"

"मुँह बन्द करो अपना!" कीरिक चिल्लाया।

"तुम ख़ुद अपना मुँह बन्द रखो! मैं तो अपनी बात कहकर ही मानूँगा। जब मैं आप लोगों को देखता हूँ तो मुझे बड़ी हैरत होती है आप लोग इसके अलावा करते ही क्या हैं कि पी लेते हैं और ठूँस-ठूँसकर पेट भर लेते हैं और एक-दूसरे की आँखों में धूल झोंकते रहते हैं; आप लोगों को किसी से भी हमदर्दी नहीं है... आप लोग चाहते क्या हैं? मैंने साफ़-सुथरी, ईमानदारी की ज़िन्दगी खोजने की कोशिश की, लेकिन वह कभी नहीं मिली! उसे खोजने के चक्कर में मैं ख़ुद बर्बाद हो गया... कोई भला आदमी आप लोगों के बीच रह नहीं सकता भले लोगों को तो आप तबाह कर देते हैं... मुझे देखिये मैं अच्छा-ख़ासा तगड़ा हूँ और लड़ सकता हूँ, लेकिन आप लोगों के बीच मेरी हालत उस लाचार बिल्ली जैसी हो जाती है जिसे किसी अँधेरे तहख़ाने में चूहों ने घेर लिया हो... आप लोग हर जगह हैं क़ानून आप लोग बनाते हैं और हुक्म आप चलाते हैं... लेकिन दरअसल आप लोग बदमाश हैं।"

उसी वक़्त तारघर में काम करने वाला दीवार के पास से उछला और इल्या को चकमा देकर झपटकर कमरे से बाहर निकल गया।

"अरे! एक मेरे चंगुल से निकल भागा!" इल्या ने हँसकर कहा।

"मैं पुलिस को बुलाने जा रहा हूँ!" तारघर में काम करने वाले ने दूर से पुकारकर कहा।

"जाओ, मेरी बला से," इल्या बोला।

तात्याना व्लास्येव्ना उसकी ओर देखे बिना लड़खड़ाती हुई उसके सामने से इस तरह निकल गयी जैसे नींद में चल रही हो।

"मैंने इसे तो ठिकाने लगा दिया!" इल्या ने उसकी तरफ़ सिर हिलाकर इशारा करते हुए कहा। "यह थी ही इस लायक़, नागिन कहीं की।"

"मुँह बन्द करो अपना!" कीरिक ने चिल्लाकर कहा; वह एक कोने में घुटने के बल बैठा अल्मारी की दराज में कुछ टटोल रहा था।

"चिल्लाओ नहीं, बुद्धू कहीं के," इल्या ने अपने सीने पर हाथ बाँधकर बैठते हुए

कहा। “चिल्ला किसलिए रहे हो? मैं उसे जानता हूँ मैं उसके साथ रह चुका हूँ... और मैंने एक आदमी का ख़ून किया है पोलुएक्तोव महाजन का... याद है, मैंने कितनी बार तुमसे पोलुएक्तोव के बारे में पूछा था? इसलिए कि मैंने उसका ख़ून किया था। और मैं भगवान की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि उसी के पैसे से मैंने अपनी दुकान खोली थी...”

इल्या नज़रें गड़ाकर कमरे में चारों ओर देखता रहा। डरे हुए, दयनीय लोग दम साधे दीवार के सहारे खड़े थे। इल्या अपने मन में उनके प्रति गहरा तिरस्कार अनुभव कर रहा था और उसे अपने आप पर ग़ुस्सा आ रहा था कि उसने उन्हें उस हत्या के बारे में क्यों बताया।

“आप समझते हैं कि मैं आप लोगों को यह सब कुछ इसलिए बता रहा हूँ कि मुझे पछतावा हो रहा है?” उसने चिल्लाकर कहा। “जी नहीं, इस तरह की कोई बात नहीं है। मैं आप लोगों की खिल्ली उड़ा रहा हूँ, बस यही कर रहा हूँ मैं।”

कीरिक कोने में से निकल आया; उसका चेहरा लाल था, बाल बिखरे हुए थे, आँखों में दीवानगी थी और हाथ में वह एक रिवाल्वर लिये हुए था।

“अब तुम बचकर नहीं जा सकते!” वह चिल्लाकर बोला। “तो उसका ख़ून तुमने किया था? अच्छा!”

औरतों के मुँह खुले के खुले रह गये। त्रावकिन, जो अभी तक सोफे पर बैठा हुआ था, अपनी टाँगें झुलाते हुए भर्रायी हुई आवाज़ में बोला :

“सज्जनो! मैं अब यह सब कुछ और ज़्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकता। मुझे जाने दीजिये। इससे मेरा कोई वास्ता नहीं है, यह आप लोगों का परिवार का मामला है।”

लेकिन कीरिक ने उसकी बात सुनी नहीं। वह इल्या के सामने उछलता-कूदता रहा और उसे रिवाल्वर दिखा-दिखाकर चिल्लाता रहा :

“तुम्हें पता चलेगा! कालापानी भेजे जाओगे!”

“मैं नहीं समझता कि तुम्हारे उस तमंचे में कोई गोली भी है,” इल्या ने थकी-थकी आँखों से उसे घूरते हुए लापरवाही से कहा। “इतने बौखलाये हुए क्यों हो? मैं भागने की कोशिश तो कर नहीं रहा हूँ... जाने के लिए मेरे पास कोई जगह ही नहीं है... कालापानी? तो कालापानी ही सही। फ़र्क भी क्या पड़ता है?”

“अन्तोन, अन्तोन!” त्रावकिन की बीवी की ज़ोर से फुसफुसाने की आवाज़ सुनायी दी। “चलो, चलें!”

“मैं नहीं जा सकता, माई डियर।”

उसने अपने पति को बाँह पकड़कर उठाया और नज़रें झुकाये दोनों इल्या के सामने से गुजर गये। बग़ल वाले कमरे में तात्याना व्लास्येव्ना चीख़ती हुई सिसक-सिसककर

रो रही थी।

अचानक इल्या ने अपने अन्दर एक विशाल शून्य अनुभव किया, एक अन्धकारमय, ठिठुरता हुआ शून्य जिसमें शरद ऋतु के आकाश पर फीके चाँद जैसा एक निराशाजनक प्रश्न बीच में लटका हुआ था : "अब क्या होगा?"

"और यहीं पहुँचकर मेरी सारी ज़िन्दगी ख़त्म हो जाती है," उसने विचारमग्न होकर धीमे स्वर में कहा।

"इस बात की कोशिश न करो कि हम लोग तुम्हारे ऊपर तरस खायें," कीरिक ने उसके सामने खड़े होकर चिल्लाकर कहा।

"मैं यह कोशिश कर भी नहीं रहा हूँ... भाड़ में जाओ तुम लोग! मैं ख़ुद कुत्ते पर तरस खा सकता हूँ लेकिन तुम्हारे ऊपर नहीं। अगर मेरा बस चलता तो मैं तुम सब लोगों का सफाया कर देता तुममें से एक-एक का! मेरे सामने से हट जाओ, कीरिक; मैं तुम्हारी सूरत देखना बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

एक-एक करके जाते वक़्त मेहमान इल्या को भयभीत नज़रों से देखते हुए कमरे से खिसकते गये। उसके लिए वे सभी केवल छोटे-छोटे सुरमई धब्बों जैसे थे जिन्हें देखकर उसके मन में न कोई विचार जागृत होते थे न भावनाएं। उसकी आत्मा का सूनापन फैलता गया और उस पर पूरी तरह छा गया। वह एक-दो मिनट तक चुपचाप बैठा कीरिक के चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ सुनता रहा, फिर उसने धीरे से हँसकर कहा :

"आओ, कुश्ती लड़ें, कीरिक, लड़ोगे?"

"मैं तुम्हारे भेजे के पार गोली उतार दूँगा," कीरिक ने चीख़कर कहा।

"तुम्हारे पिस्तौल में गोली नहीं है!" इल्या हँसा और फिर बोला, "कुश्ती में मैं तुम्हें ज़रूर पछाड़ दूँगा! कितना मज़ा आयेगा मुझे!"

फिर उसने एक नज़र बाक़ी मेहमानों पर डाली और अपनी आवाज़ ऊँची किये बिना बहुत सादगी से कहा :

"काश मुझे मालूम होता कि कौन-सी ताक़त तुम सब लोगों का सफाया कर सकती है! लेकिन मुझे नहीं मालूम है!..."

इसके बाद उसने कुछ नहीं कहा बस, निश्चल बैठा रहा।

थोड़ी ही देर में पुलिस का एक अफ़सर दो पुलिसवालों के साथ अन्दर आया।

उनके पीछे-पीछे तात्याना व्लास्येव्ना आयी, जिसने इल्या की ओर इशारा करके हाँफते हुए कहा :

"इसने अभी ख़ुद माना है... कि पोलुएक्तोव का ख़ून... इसी ने किया है, उस महाजन का... याद है?"

"क्या इस बात का पक्का सबूत कोई दे सकता है?" अफ़सर ने जल्दी से कहा।

"क्यों नहीं? मैं दे सकता हूँ," इल्या ने शान्त भाव से थके हुए स्वर में कहा।

अफ़सर मेज़ के पास बैठकर लिखने लगा और दोनों पुलिसवाले इल्या के दोनों ओर खड़े हो गये। इल्या ने उनकी ओर देखा और गहरी आह भरकर सिर झुका लिया। सिर्फ़ काग़ज़ पर कलम चलने की खरखर की आवाज़ से कमरे की निस्तब्धता भंग हो रही थी, और बाहर अँधेरा एक ठोस काली दीवार की तरह खिड़कियों से सटा खड़ा था। एक खिड़की के पास कीरिक खड़ा बाहर रात के अँधेरे में घूर रहा था। अचानक उसने अपना रिवाल्वर एक कोने में फेंक दिया और अफ़सर से बोला :

"सवेल्येव! इसे ज़ोर का एक मुक्का मारकर छोड़ दो। यह पागल है।"

अफ़सर ने कीरिक की तरफ़ देखा, एक क्षण कुछ सोचा, फिर बोला :

"ऐसा नहीं कर सकता... उसने तो कुसूर मान लिया है..."

कीरिक जवाब में सिर्फ़ आह भरकर रह गया।

"तुम बहुत नरमदिल हो, कीरिक निकोदीमोविच," इल्या ने व्यंग्य-भरे स्वर में कहा। "कुछ कुत्ते होते हैं ऐसे उन्हें चाहे जितना पीटो, वे फिर भी प्यार से दुम हिलाते रहते हैं... या शायद इसकी वजह यह न हो कि तुम्हें मुझ पर तरस आ रहा हो शायद महज इसलिए ऐसा कर रहे हो कि तुम डरते हो कि मैं मुक़दमे के वक़्त तुम्हारी बीवी के बारे में सब कुछ बता दूँगा? डरो नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगा! मुझे तो उसके बारे में सोचकर भी शर्म आती है, उसके बारे में बात करना तो दूर रहा।"

कीरिक जल्दी से बग़ल वाले कमरे में जाकर कुर्सी पर धड़ से बैठ गया।

"अच्छा, तो," अफ़सर ने इल्या की ओर मुड़कर कहा, "इस काग़ज़ पर दस्तखत कर दोगे?"

"कर दूँगा..."

उसे पढ़े बिना ही इल्या ने उस पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिख दिया : इल्या लुन्योव। सिर उठाने पर उसने देखा कि अफ़सर उसे आश्चर्य से घूर रहा था। कुछ सेकण्ड तक वे दोनों एक-दूसरे की आँखों में आँखें डाले घूरते रहे; एक की आँखों में ललचायी हुई दिलचस्पी और कुछ ख़ुशी थी, दूसरे की आँखों में शान्त उदासीनता।

"क्या तुम्हारा अन्तःकरण तुम्हें कचोट रहा था?" अफ़सर ने पूछा।

"इस दुनिया में कोई अन्तःकरण नहीं है," इल्या ने निश्चय के साथ कहा।

वे फिर चुप हो गये। थोड़ी ही देर बाद कमरे से कीरिक की आवाज़ सुनायी दी।

"इसका दिमाग़ खराब हो गया है..."

"आओ, चलो," अफ़सर ने अपने कन्धे उचकाते हुए कहा। "मैं तुम्हारे हाथ नहीं बाँधूँगा, लेकिन... लेकिन... भागने की कोशिश न करना!"

"भागकर जाऊँगा कहाँ?" इल्या ने थोड़े-से शब्दों में पूछा।

"अच्छा, बहरहाल, क़सम खाओ। भगवान की क़सम खाओ!"

"मैं भगवान पर विश्वास नहीं करता..."

अफ़सर ने लाचारी से अपना हाथ हिलाया। "आओ, चलो," वह बोला।

अपने आपको चारों ओर से रात के अँधेरे और नमी में घिरा हुआ महसूस करते ही इल्या ने एक लम्बी साँस ली, रुका और ऊपर आसमान को तकने लगा; आसमान इतना काला और नीचा था कि छोटी-सी घुटी हुई कोठरी की कलौंस-भरी छत जैसा लग रहा था।

"आओ, चलो," पुलिसवाले ने कहा।

वह चल दिया। सड़क के दोनों ओर मकान ऊँची-ऊँची चट्टानों की तरह खड़े थे। उसके पाँवों के नीचे कीचड़ छप-छप कर रहा था, सड़क कहीं नीचे और भी गहरे अँधेरे में जा रही थी। इल्या एक पत्थर से टकराया और गिरते-गिरते बचा। उसकी आत्मा के सूनेपन में एक सवाल लगातार धड़कता रहा : "अब क्या होगा? क्या पेत्रूख़ा मेरे मुक़दमे का फ़ैसला करेगा?"

इस प्रश्न ने उसकी आँखों के सामने उस मुक़दमे की तस्वीर ला खड़ी की जो उसने अभी कुछ देर पहले देखा था   ग्रोमोव की प्यार-भरी आवाज़, पेत्रूख़ा का लाल चेहरा...

जिस पाँव से ठोकर लगी थी उसकी उँगलियों में उसने दर्द महसूस किया और उसने अपने क़दम धीमे कर दिये। उसके कानों में "पेट-भरे लोगों" से सम्बन्धित कहावत के जवाब में काले बालों वाले आदमी की खरी बात गूँज रही थी : "वे बहुत अच्छी तरह समझते हैं   इसीलिए तो वे इतनी सख़्ती बरतते हैं।"

फिर उसे ग्रोमोव की चिकनी-चुपड़ी आवाज़ सुनायी दी :

"क्या तुम इक़रार करती हो?.."

और फिर सरकारी वकील की ऊँघती हुई आवाज़ आयी :

"अच्छा, यह बताओ, मुल्ज़िम..."

उसे पेत्रूख़ा की चढ़ी हुई त्योरियाँ और उसके चलते हुए मोटे-मोटे होंठ दिखायी दिये।

उस्तरे की धार जैसी तेज़ अकथनीय पीड़ा ने उसे आ दबोचा।

उसने आगे छलाँग मारी और सड़क के पत्थरों को कसकर ढकेलता हुआ अपना पूरा ज़ोर लगाकर दौड़ने लगा। उसने कानों में हवा सीटी बजा रही थी, उसकी साँस हाँफती हुई चल रही थी, अँधेरे में अपने शरीर को निरन्तर आगे बढ़ाते जाने के लिए वह बाँहें ज़ोर-ज़ोर से झुला रहा था। उसके पीछे पुलिसवालों के थप-थप करते हुए भारी

क़दमों की आवाज़ सुनायी दे रही थी। सीटी की आवाज़ हवा को काटती हुई गूँज उठी और किसी ने भारी आवाज़ में चिल्लाकर कहा :

"पकड़ो! पकड़ो!"

इल्या के चारों ओर की सभी चीज़ें मकान, सड़क, आसमान चक्कर काट रही थीं और हिल रही थीं और एक बड़े-से ठोस काले पिण्ड की शक्ल में उसे कुचले दे रही थीं। अपनी थकन से बेख़बर और पेत्रूख़ा को देखने के भय से व्याकुल होकर वह आगे की ओर झपटता चला जा रहा था। परछाइंयों के बीच से कोई धुँधली-सी सपाट चीज़ उसकी आँखों के सामने उभरी और उस पर निराशा की भावना छा गयी। उसे याद आया कि आगे चलकर सड़क ठीक दाहिनी ओर मुड़कर बड़ी सड़क से जा मिलती है। वहाँ लोग होंगे और वह पकड़ा जायेगा।

"आओ, पकड़ो मुझे!" वह आवाज़ का पूरा ज़ोर लगाकर चिल्लाया और सिर झुकाकर उसने अपनी रफ़्तार और तेज़ कर दी... उसके सामने पत्थर की एक सुरमई दीवार खड़ी थी। रात के अँधेरे में लहर के टकराकर टूट जाने जैसा धमाका सुनायी दिया। एक छोटा-सा, दबा-दबा धमाका, और फिर उसके बाद सन्नाटा छा गया।

दो और काली परछाइयाँ भागती हुई दीवार के पास पहुँचीं। एक क्षण के लिए वे दोनों ज़मीन पर पड़ी हुई तीसरी परछाई पर झुकीं... कुछ और लोग पहाड़ी की ढलान पर भागते हुए आये... चीख़ने की आवाज़ें। भागते क़दमों की आहट, सीटी की तीखी आवाज़...

"मर गया, क्या?" एक पुलिसवाले ने हाँफते हुए कहा।

दूसरे ने माचिस जलायी और उकड़ूँ बैठ गया। उसके पाँवों के पास कसकर भिंची हुई एक मुट्ठी ज़मीन पर टिकी हुई थी जो धीरे-धीरे ढीली पड़ रही थी।

"बिल्कुल... अरे, इसकी खोपड़ी तो आर-पार खुल गयी है।"

"यह देखो। उसका भेजा।"

अँधेरे में से काली आकृतियाँ उभरती रहीं।

"बदनसीब शैतान," खड़ा हुआ पुलिसवाला बुदबुदाया। दूसरा भी उठकर खड़ा हो गया, उसने उँगलियों से अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया, और थके हुए हाँफते स्वर में बोला :

"ख़ैर, बहरहाल भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे!"

(1900-1901)

• • •

बेहतर ज़िन्दगी का रास्ता
बेहतर किताबों से होकर जाता है!

जनचेतना

सम्पूर्ण सूचीपत्र
2018

हम हैं सपनों के हरकारे
हम हैं विचारों के डाकिये

आम लोगों के लिए
ज़रूरी हैं वे किताबें
जो उनकी ज़िन्दगी की घुटन
और मुक्ति के स्वप्नों तक
पहुँचाती हैं विचार
जैसे कि बारूद की ढेरी तक
आग की चिनगारी।
घर–घर तक चिनगारी छिटकाने वाला
तेज़ हवा का झोंका बन जाना होगा
ज़िन्दगी और आने वाले दिनों का सच
बतलाने वाली किताबों को
जन–जन तक पहुँचाना होगा।

दो दशक पहले प्रगतिशील, जनपक्षधर साहित्य को जन–जन तक पहुँचाने की मुहिम की एक छोटी–सी शुरुआत हुई, बड़े मंसूबे के साथ। एक छोटी–सी दुकान और फ़ुटपाथों पर, मुहल्लों में और दफ़्तरों के सामने छोटी–छोटी प्रदर्शनियाँ लगाने वाले तथा साइकिलों पर, ठेलों पर, झोलों में भरकर घर–घर किताबें पहुँचाने वाले समर्पित अवैतनिक वालण्टियरों की टीम – शुरुआत बस यहीं से हुई। आज यह वैचारिक अभियान उत्तर भारत के दर्जनों शहरों और गाँवों तक फैल चुका है। एक बड़े और एक छोटे प्रदर्शनी वाहन के माध्यम से जनचेतना हिन्दी और पंजाबी क्षेत्र के सुदूर कोनों तक हिन्दी, पंजाबी और अंग्रेज़ी साहित्य एवं कला–सामग्री के साथ सपने और विचार लेकर जा रही है, जीवन–संघर्ष–सृजन–प्रगति का नारा लेकर जा रही है।

हिन्दी क्षेत्र में यह अपने ढंग का एक अनूठा प्रयास है। एक भी वैतनिक स्टाफ़ के बिना, समर्पित वालण्टियरों और विभिन्न सहयोगी जनसंगठनों के कार्यकर्ताओं के बूते पर यह प्रोजेक्ट आगे बढ़ रहा है।

आइये, आप सभी इस मुहिम में हमारे सहयात्री बनिये।

सम्पूर्ण सूचीपत्र

परिकल्पना प्रकाशन

उपन्यास

1.	**तरुणाई का तराना**/याङ मो		...
2.	**तीन टके का उपन्यास**/बेर्टोल्ट ब्रेष्ट		...
3.	**माँ**/मक्सिम गोर्की		...
4.	**वे तीन**/मक्सिम गोर्की		75.00
5.	**मेरा बचपन**/मक्सिम गोर्की		...
6.	**जीवन की राहों पर**/मक्सिम गोर्की		...
7.	**मेरे विश्वविद्यालय**/मक्सिम गोर्की		...
8.	**फ़ोमा गोर्देयेव**/मक्सिम गोर्की		55.00
9.	**अभागा**/मक्सिम गोर्की		40.00
10.	**बेकरी का मालिक**/मक्सिम गोर्की		25.00
11.	**असली इन्सान**/बोरिस पोलेवोई		...
12.	**तरुण गार्ड**/अलेक्सान्द्र फ़देयेव	(दो खण्डों में)	160.00
13.	**गोदान**/प्रेमचन्द		...
14.	**निर्मला**/प्रेमचन्द		...
15.	**पथ के दावेदार**/शरत्चन्द्र		...
16.	**चरित्रहीन**/शरत्चन्द्र		...
17.	**गृहदाह**/शरत्चन्द्र		70.00
18.	**शेषप्रश्न**/शरत्चन्द्र		...
19.	**इन्द्रधनुष**/वान्दा वैसील्युस्का		65.00
20.	**इकतालीसवाँ**/बोरीस लव्रेन्योव		20.00
21.	**दास्तान चलती है** (एक नौजवान की डायरी से)/अनातोली कुज़्नेत्सोव		70.00

22. **वे सदा युवा रहेंगे**/ग्रीगोरी बकलानोव 60.00
23. **मुर्दों को क्या लाज-शर्म**/ग्रीगोरी बकलानोव 40.00
24. **बख़्तरबन्द रेल 14-69**/व्सेवोलोद इवानोव 30.00
25. **अश्वसेना**/इसाक बाबेल 40.00
26. **लाल झण्डे के नीचे**/लाओ श 50.00
27. **रिक्शावाला**/लाओ श 65.00
28. **चिरस्मरणीय** (प्रसिद्ध कन्नड़ उपन्यास)/निरंजन 55.00
29. **एक तयशुदा मौत** (एनजीओ की पृष्ठभूमि पर)/मोहित राय 30.00
30. **Mother/***Maxim Gorky* 250.00
31. **The Song of Youth**/*Yang Mo* ...

कहानियाँ

1. **श्रेष्ठ सोवियत कहानियाँ** (3 खण्डों का सेट) 450.00
2. **वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया**
(मार्क ट्वेन की दो कहानियाँ) 60.00

मक्सिम गोर्की

3. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) ...
4. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) ...
5. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 3) ...
6. **हिम्मत न हारना मेरे बच्चो** 10.00
7. **कामो : एक जाँबाज़ इन्क़लाबी मज़दूर की कहानी** ...

अन्तोन चेख़व

8. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) ...
9. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) ...
10. **दो अमर कहानियाँ**/लू शुन ...
11. **श्रेष्ठ कहानियाँ**/प्रेमचन्द 80.00
12. **पाँच कहानियाँ**/पुश्किन ...
13. **तीन कहानियाँ**/गोगोल 30.00
14. **तूफ़ान**/अलेक्सान्द्र सेराफ़ीमोविच 60.00
15. **वसन्त**/सेर्गेई अन्तोनोव 60.00
16. **वसन्तागम**/रओ शि 50.00

17. **सूरज का ख़ज़ाना**/मिख़ाईल प्रीश्विन 40.00
18. **स्नेगोवेत्स का होटल**/मत्वेई तेवेल्योव 35.00
19. **वसन्त के रेशम के कीड़े**/माओ तुन 50.00
20. **क्रान्ति झंझा की अनुगूँजें** (अक्टूबर क्रान्ति की कहानियाँ) 75.00
21. **चुनी हुई कहानियाँ**/श्याओ हुङ 50.00
22. **समय के पंख**/कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्सकी ...
23. **श्रेष्ठ रूसी कहानियाँ** (संकलन) ...
24. **अनजान फूल**/आन्द्रेई प्लातोनोव 40.00
25. **कुत्ते का दिल**/मिख़ाईल बुल्गाकोव 70.00
26. **दोन की कहानियाँ**/मिख़ाईल शोलोख़ोव 35.00
27. **अब इन्साफ़ होने वाला है** ...
(भारत और पाकिस्तान की प्रगतिशील उर्दू कहानियों का प्रतिनिधि संकलन)
(ग्यारह नयी कहानियों सहित परिवर्द्धित संस्करण)/स. **शकील सिद्दीक़ी**
28. **लाल कुरता**/हरिशंकर श्रीवास्तव ...
29. **चम्पा और अन्य कहानियाँ**/मदन मोहन 35.00

कविताएँ

1. **जब मैं जड़ों के बीच रहता हूँ**/पाब्लो नेरूदा 60.00
2. **आँखें दुनिया की तरफ़ देखती हैं**/लैंग्स्टन ह्यूज 60.00
3. **उम्मीद-ए-सहर की बात सुनो** (फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ के संस्मरण और चुनिन्दा शायरी, सम्पादक: शकील सिद्दीक़ी) 160.00
4. **माओ त्से-तुङ की कविताएँ** (राजनीतिक पृष्ठभूमि सहित विस्तृत टिप्पणियाँ एवं अनुवाद : सत्यव्रत) 20.00
5. **इकहत्तर कविताएँ और तीस छोटी कहानियाँ - बेर्टोल्ट ब्रेष्ट**
(मूल जर्मन से अनुवाद : मोहन थपलियाल)
(ब्रेष्ट के दुर्लभ चित्रों और स्केचों से सज्जित) 150.00
6. **समर तो शेष है...** (इप्टा के दौर से आज तक के प्रतिनिधि क्रान्तिकारी समूहगीतों का संकलन) 65.00
7. **मध्यवर्ग का शोकगीत**/हान्स माग्नुस एन्त्सेन्सबर्गर 30.00
8. **जेल डायरी**/हो ची मिन्ह 40.00
9. **ओस की बूँदें और लाल ग़ुलाब**/होसे मारिया सिसों 25.00

10.	**इन्तिफ़ादा :** फ़लस्तीनी कविताएँ/स. रामकृष्ण पाण्डेय	...
11.	**लहू है कि तब भी गाता है**/पाश	...
12.	**लोहू और इस्पात से फूटता गुलाब :** फ़लस्तीनी कविताएँ (द्विभाषी संकलन) **A Rose Breaking Out of Steel and Blood** (Palestinian Poems)	60.00
13.	**पाठान्तर**/विष्णु खरे	50.00
14.	**लालटेन जलाना** (चुनी हुई कविताएँ)/विष्णु खरे	60.00
15.	**ईश्वर को मोक्ष**/नीलाभ	60.00
16.	**बहनें और अन्य कविताएँ**/असद ज़ैदी	50.00
17.	**सामान की तलाश**/असद ज़ैदी	50.00
18.	**कोहेकाफ़ पर संगीत-साधना**/शशिप्रकाश	50.00
19.	**पतझड़ का स्थापत्य**/शशिप्रकाश	75.00
20.	**सात भाइयों के बीच चम्पा**/कात्यायनी (पेपरबैक)	...
	(हार्डबाउंड)	125.00
21.	**इस पौरुषपूर्ण समय में**/कात्यायनी	60.00
22.	**जादू नहीं कविता**/कात्यायनी (पेपरबैक)	...
	(हार्डबाउंड)	200.00
23.	**फ़ुटपाथ पर कुर्सी**/कात्यायनी	80.00
24.	**राख-अँधेरे की बारिश में**/कात्यायनी	15.00
25.	**यह मुखौटा किसका है**/विमल कुमार	50.00
26.	**यह जो वक्त है**/कपिलेश भोज	60.00
27.	**देश एक राग है**/भगवत रावत	...
28.	**बहुत नर्म चादर थी जल से बुनी**/नरेश चन्द्रकर	60.00
29.	**दिन भौंहें चढ़ाता है**/मलय	120.00
30.	**देखते न देखते**/मलय	65.00
31.	**असम्भव की आँच**/मलय	100.00
32.	**इच्छा की दूब**/मलय	90.00
33.	**इस ढलान पर**/प्रमोद कुमार	90.00
34.	**तो**/शैलेय	75.00

नाटक

1.	**करवट**/मक्सिम गोर्की	40.00
2.	**दुश्मन**/मक्सिम गोर्की	35.00

3. **तलछट**/मक्सिम गोर्की ...
4. **तीन बहनें** (दो नाटक)/अन्तोन चेख़व 45.00
5. **चेरी की बग़िया** (दो नाटक)/अ. चेख़व 45.00
6. **बलिदान जो व्यर्थ न गया**/व्सेवोलोद विश्नेव्स्की 30.00
7. **क्रेमलिन की घण्टियाँ**/निकोलाई पोगोदिन 30.00

संस्मरण

1. **लेव तोल्स्तोय : शब्द-चित्र**/मक्सिम गोर्की 20.00

स्त्री-विमर्श

1. **दुर्ग द्वार पर दस्तक** (स्त्री प्रश्न पर लेख)/कात्यायनी (पेपरबैक) 130.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **कुछ जीवन्त कुछ ज्वलन्त**/कात्यायनी 90.00
2. **षड्यन्त्ररत मृतात्माओं के बीच**
   (साम्प्रदायिकता पर लेख)/कात्यायनी 25.00
3. **इस रात्रि श्यामला बेला में** (लेख और टिप्पणियाँ)/सत्यव्रत 30.00

व्यंग्य

1. **कहें मनबहकी खरी-खरी**/मनबहकी लाल 25.00

नौजवानों के लिए विशेष

1. **जय जीवन!** (लेख, भाषण और पत्र)/निकोलाई ओस्त्रोव्स्की 50.00

वैचारिकी

1. **माओवादी अर्थशास्त्र और समाजवाद का भविष्य**/रेमण्ड लोट्टा 25.00

साहित्य-विमर्श

1. **उपन्यास और जनसमुदाय**/रैल्फ़ फ़ॉक्स 75.00
2. **लेखनकला और रचनाकौशल**/
   गोर्की, फ़ेदिन, मयाकोव्स्की, अ. तोल्सतोय ...
3. **दर्शन, साहित्य और आलोचना**/
   बेलिंस्की, हर्ज़ेन, चेर्नीशेव्स्की, दोब्रोल्युबोव 65.00
4. **सृजन-प्रक्रिया और शिल्प के बारे में**/मक्सिम गोर्की 40.00

5. **मार्क्सवाद और भाषाविज्ञान की समस्याएँ**/स्तालिन 20.00

नयी पीढ़ी के निर्माण के लिए

1. **एक पुस्तक माता-पिता के लिए**/अन्तोन मकारेंको ...
2. **मेरा हृदय बच्चों के लिए**/वसीली सुखोम्लीन्स्की ...

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **प्रेम, परम्परा और विद्रोह**/कात्यायनी 50.00

सृजन परिप्रेक्ष्य पुस्तिका शृंखला

1. **एक नये सर्वहारा पुनर्जागरण और प्रबोधन के वैचारिक-सांस्कृतिक कार्यभार**/कात्यायनी, सत्यम 25.00

दो महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ

दिशासन्धान

मार्क्सवादी सैद्धान्तिक शोध और विमर्श का मंच

सम्पादकः कात्यायनी / सत्यम

एक प्रति : 100 रुपये, आजीवनः 5000 रुपये
वार्षिक (4 अंक) : 400 रुपये (100 रु. रजि. बुकपोस्ट व्यय अतिरिक्त)

मीडिया, संस्कृति और समाज पर केन्द्रित

सम्पादकः कात्यायनी / सत्यम

एक प्रति : 40 रुपये आजीवनः 3000 रुपये
वार्षिक (4 अंक) : 160 रुपये (100 रु. रजि. बुक पोस्ट व्यय अतिरिक्त)

सम्पादकीय कार्यालय :

69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226006
फोनः 9936650658, 8853093555
वेबसाइट : http://dishasandhaan.in ईमेलः dishasandhaan@gmail.com
वेबसाइट : http://naandipath.in ईमेलः naandipath@gmail.com

राहुल फाउण्डेशन

नौजवानों के लिए विशेष

1.	**नौजवानों से दो बातें**/पीटर क्रोपोटकिन	15.00
2.	**क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा**/भगतसिंह	15.00
3.	**मैं नास्तिक क्यों हूँ और 'ड्रीमलैण्ड' की भूमिका**/भगतसिंह	15.00
4.	**बम का दर्शन और अदालत में बयान**/भगतसिंह	15.00
5.	**जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो, सही लड़ाई से नाता जोड़ो**/भगतसिंह	15.00
6.	**भगतसिंह ने कहा...**(चुने हुए उद्धरण)/भगतसिंह	15.00

क्रान्तिकारियों के दस्तावेज़

1.	**भगतसिंह और उनके साथियों के सम्पूर्ण उपलब्ध दस्तावेज़**/स. सत्यम	350.00
2.	**शहीदेआज़म की जेल नोटबुक**/भगतसिंह	100.00
3.	**विचारों की सान पर**/भगतसिंह	50.00

क्रान्तिकारियों के विचारों और जीवन पर

1.	**बहरों को सुनाने के लिए**/एस. इरफ़ान हबीब (भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और कार्यक्रम)	...
2.	**क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक विकास**/शिव वर्मा	15.00
3.	**भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और राजनीति**/बिपन चन्द्र	20.00
4.	**यश की धरोहर**/ भगवानदास माहौर, शिव वर्मा, सदाशिवराव मलकापुरकर	50.00
5.	**संस्मृतियाँ**/शिव वर्मा	80.00
6.	**शहीद सुखदेव : नौघरा से फाँसी तक**/स. डॉ. हरदीप सिंह	40.00

महत्त्वपूर्ण और विचारोत्तेजक संकलन

1. **उम्मीद एक ज़िन्दा शब्द है**
   ('दायित्वबोध' के महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय लेखों का संकलन) 75.00
2. **एनजीओ : एक ख़तरनाक साम्राज्यवादी कुचक्र** 60.00
3. **डब्ल्यूएसएफ़ : साम्राज्यवाद का नया ट्रोजन हॉर्स** 50.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **'जाति' प्रश्न के समाधान के लिए बुद्ध काफ़ी नहीं, अम्बेडकर भी काफ़ी नहीं, मार्क्स ज़रूरी हैं** / रंगनायकम्मा ...
2. **जाति और वर्ग : एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण** / रंगनायकम्मा 60.00

दायित्वबोध पुस्तिका शृंखला

1. **अनश्वर हैं सर्वहारा संघर्षों की अग्निशिखाएँ**/दीपायन बोस 10.00
2. **समाजवाद की समस्याएँ, पूँजीवादी पुनर्स्थापना और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति**/शशिप्रकाश 30.00
3. **क्यों माओवाद?**/शशिप्रकाश 20.00
4. **बुर्जुआ वर्ग के ऊपर सर्वतोमुखी अधिनायकत्व लागू करने के बारे में**/चाङ चुन-चियाओ 5.00
5. **भारतीय कृषि में पूँजीवादी विकास**/सुखविन्दर 35.00

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **छात्र-नौजवान नयी शुरुआत कहाँ से करें?** 15.00
2. **आरक्षण : पक्ष, विपक्ष और तीसरा पक्ष** 15.00
3. **आतंकवाद के बारे में : विभ्रम और यथार्थ** 15.00
4. **क्रान्तिकारी छात्र-युवा आन्दोलन** 15.00
5. **भ्रष्टाचार और उसके समाधान का सवाल सोचने के लिए कुछ मुद्दे** 50.00

बिगुल पुस्तिका शृंखला

1. **कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढाँचा**/लेनिन 10.00
2. **मकड़ा और मक्खी**/विल्हेल्म लीब्नेख़्त 5.00

3. **ट्रेडयूनियन काम के जनवादी तरीक़े**/सेर्गेई रोस्तोवस्की 5.00
4. **मई दिवस का इतिहास**/अलेक्ज़ैण्डर ट्रैक्टनबर्ग 10.00
5. **पेरिस कम्यून की अमर कहानी** 20.00
6. **अक्टूबर क्रान्ति की मशाल** 15.00
7. **जंगलनामा : एक राजनीतिक समीक्षा**/डॉ. दर्शन खेड़ी 5.00
8. **लाभकारी मूल्य, लागत मूल्य, मध्यम किसान और छोटे पैमाने के माल उत्पादन के बारे में मार्क्सवादी दृष्टिकोण : एक बहस** 30.00
9. **संशोधनवाद के बारे में** 10.00
10. **शिकागो के शहीद मज़दूर नेताओं की कहानी**/हावर्ड फ़ास्ट 10.00
11. **मज़दूर आन्दोलन में नयी शुरुआत के लिए** 20.00
12. **मज़दूर नायक, क्रान्तिकारी योद्धा** 15.00
13. **चोर, भ्रष्ट और विलासी नेताशाही** ...
14. **बोलते आँकड़े, चीख़ती सच्चाइयाँ** ...
15. **राजधानी के मेहनतकश : एक अध्ययन**/अभिनव 30.00
16. **फ़ासीवाद क्या है और इससे कैसे लड़ें?**/अभिनव 75.00
17. **नेपाली क्रान्ति : इतिहास, वर्तमान परिस्थिति और आगे के रास्ते से जुड़ी कुछ बातें, कुछ विचार**/आलोक रंजन 55.00
18. **कैसा है यह लोकतंत्र और यह संविधान किनकी सेवा करता है** आलोक रंजन/आनन्द सिंह 100.00

मार्क्सवाद

1. **धर्म के बारे में**/मार्क्स, एंगेल्स 100.00
2. **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र**/मार्क्स-एंगेल्स 25.00
3. **साहित्य और कला**/मार्क्स-एंगेल्स 150.00
4. **फ़्रांस में वर्ग-संघर्ष**/कार्ल मार्क्स 40.00
5. **फ़्रांस में गृहयुद्ध**/कार्ल मार्क्स 20.00
6. **लूई बोनापार्त की अठारहवीं ब्रूमेर**/कार्ल मार्क्स 35.00
7. **उज़रती श्रम और पूँजी**/कार्ल मार्क्स 15.00
8. **मज़दूरी, दाम और मुनाफ़ा**/कार्ल मार्क्स 20.00
9. **गोथा कार्यक्रम की आलोचना**/कार्ल मार्क्स 40.00
10. **लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अन्त**/ फ़्रेडरिक एंगेल्स 20.00

11.	**जर्मनी में क्रान्ति तथा प्रतिक्रान्ति**/फ़्रेडरिक एंगेल्स	30.00
12.	**समाजवाद : काल्पनिक तथा वैज्ञानिक**/फ़्रेडरिक एंगेल्स	...
13.	**पार्टी कार्य के बारे में**/लेनिन	15.00
14.	**एक क़दम आगे, दो क़दम पीछे**/लेनिन	60.00
15.	**जनवादी क्रान्ति में सामाजिक-जनवाद के दो रणकौशल**/लेनिन	25.00
16.	**समाजवाद और युद्ध**/लेनिन	20.00
17.	**साम्राज्यवाद : पूँजीवाद की चरम अवस्था**/लेनिन	30.00
18.	**राज्य और क्रान्ति**/लेनिन	40.00
19.	**सर्वहारा क्रान्ति और ग़द्दार काउत्स्की**/लेनिन	15.00
20.	**दूसरे इण्टरनेशनल का पतन**/लेनिन	15.00
21.	**गाँव के ग़रीबों से**/लेनिन	...
22.	**मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा साम्राज्यवादी अर्थवाद**/लेनिन	20.00
23.	**कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा**/लेनिन	20.00
24.	**क्या करें?**/लेनिन	...
25.	**"वामपन्थी" कम्युनिज़्म – एक बचकाना मर्ज़**/लेनिन	...
26.	**पार्टी साहित्य और पार्टी संगठन**/लेनिन	15.00
27.	**जनता के बीच पार्टी का काम**/लेनिन	70.00
28.	**धर्म के बारे में**/लेनिन	20.00
29.	**तोल्स्तोय के बारे में**/लेनिन	10.00
30.	**मार्क्सवाद की मूल समस्याएँ**/जी. प्लेख़ानोव	30.00
31.	**जुझारू भौतिकवाद**/प्लेख़ानोव	35.00
32.	**लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त**/स्तालिन	50.00
33.	**सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास**	90.00
34.	**माओ त्से-तुङ की रचनाएँ : प्रतिनिधि चयन** (एक खण्ड में)	...
35.	**कम्युनिस्ट जीवनशैली और कार्यशैली के बारे में**/माओ त्से-तुङ	...
36.	**सोवियत अर्थशास्त्र की आलोचना**/माओ त्से-तुङ	35.00
37.	**दर्शन विषयक पाँच निबन्ध**/माओ त्से-तुङ	70.00
38.	**कला-साहित्य विषयक एक भाषण और पाँच दस्तावेज़** / माओ त्से-तुङ	15.00
39.	**माओ त्से-तुङ की रचनाओं के उद्धरण**	50.00

अन्य मार्क्सवादी साहित्य

1.	**राजनीतिक अर्थशास्त्र, मार्क्सवादी अध्ययन पाठ्यक्रम** नयी	300.00
2.	**ख्रुश्चेव झूठा था**/ग्रोवर फ़र	300.00
3.	**राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त** (दो खण्डों में) (दि शंघाई टेक्स्टबुक ऑफ़ पोलिटिकल इकोनॉमी)	160.00
4.	**पेरिस कम्यून की शिक्षाएँ** (सचित्र) एलेक्ज़ेण्डर ट्रैक्टनबर्ग	10.00
5.	**कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र**/डी. रियाज़ानोव (विस्तृत व्याख्यात्मक टिप्पणियों सहित)	100.00
6.	**द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/डेविड गेस्ट	...
7.	**महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति : चुने हुए दस्तावेज़ और लेख** (खण्ड 1)	35.00
8.	**इतिहास ने जब करवट बदली**/विलियम हिण्टन	25.00
9.	**द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/वी. अदोरात्स्की	50.00
10.	**अक्टूबर क्रान्ति और लेनिन**/अल्बर्ट रीस विलियम्स (महत्त्वपूर्ण नयी सामग्री और अनेक नये दुर्लभ चित्रों से सज्जित परिवर्द्धित संस्करण)	90.00
11.	**सोवियत संघ में पूँजीवाद की पुनर्स्थापना**/मार्टिन निकोलस	50.00

राहुल साहित्य

1.	**तुम्हारी क्षय**/राहुल सांकृत्यायन	40.00
2.	**दिमागी़ गु़लामी**/राहुल सांकृत्यायन	...
3.	**वैज्ञानिक भौतिकवाद**/राहुल सांकृत्यायन	65.00
4.	**राहुल निबन्धावली**/राहुल सांकृत्यायन	50.00
5.	**स्तालिन : एक जीवनी**/राहुल सांकृत्यायन	150.00

परम्परा का स्मरण

1.	**चुनी हुई रचनाएँ**/गणेशशंकर विद्यार्थी	100.00
2.	**सलाखों के पीछे से**/गणेशशंकर विद्यार्थी	30.00
3.	**ईश्वर का बहिष्कार**/राधामोहन गोकुलजी	30.00
4.	**लौकिक मार्ग**/राधामोहन गोकुलजी	20.00
5.	**धर्म का ढकोसला**/राधामोहन गोकुलजी	30.00
6.	**स्त्रियों की स्वाधीनता**/राधामोहन गोकुलजी	30.00

जीवनी और संस्मरण

1.	**कार्ल मार्क्स जीवन और शिक्षाएँ**/ज़ेल्डा कोट्स	25.00
2.	**फ़्रेडरिक एंगेल्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ज़ेल्डा कोट्स	...
3.	**कार्ल मार्क्स : संस्मरण और लेख**	...
4.	**अदम्य बोल्शेविक नताशा** (एक स्त्री मज़दूर संगठनकर्ता की संक्षिप्त जीवनी)/एल. काताशेवा	30.00
5.	**लेनिन कथा**/मरीया प्रिलेज़ायेवा	70.00
6.	**लेनिन विषयक कहानियाँ**	75.00
7.	**लेनिन के जीवन के चन्द पन्ने**/लीदिया फ़ोतियेवा	...
8.	**स्तालिन : एक जीवनी**/राहुल सांकृत्यायन	150.00

विविध

1.	**फाँसी के तख़्ते से**/जूलियस फ़्यूचिक	30.00
2.	**पाप और विज्ञान**/डायसन कार्टर	100.00
3.	**सापेक्षिकता सिद्धान्त क्या है?**/लेव लन्दाऊ, यूरी रूमेर	....

Rahul Foundation

MARXIST CLASSICS

KARL MARX

1.	**A Contribution to the Critique of Political Economy**	100.00
2.	**The Civil War in France**	80.00
3.	**The Eighteenth Brumaire of Louis Bonaparte**	40.00
4.	**Critique of the Gotha Programme**	25.00
5.	**Preface and Introduction to A Contribution to the Critique of Political Economy**	25.00
6.	**The Poverty of Philosophy**	80.00
7.	**Wages, Price and Profit**	35.00
8.	**Class Struggles in France**	50.00

FREDERICK ENGELS

9.	**The Peasant War in Germany**	70.00
10.	**Ludwig Feuerbach and the End of Classical German Philosophy**	65.00
11.	**On Capital**	55.00
12.	**The Origin of the Family, Private Property and the State**	100.00
13.	**Socialism: Utopian and Scientific**	60.00
14.	**On Marx**	20.00
15.	**Principles of Communism**	5.00

MARX and ENGELS

16.	**Historical Writings** (Set of 2 Vols.)	700.00
17.	**Manifesto of the Communist Party**	50.00
18.	**Selected Letters**	40.00

V. I. LENIN

19.	**Theory of Agrarian Question**	160.00
20.	**The Collapse of the Second International**	25.00
21.	**Imperialism, the Highest Stage of Capitalism**	80.00
22.	**Materialism and Empirio-Criticism**	150.00

23. **Two Tactics of Social-Democracy in the Democratic Revolution** 55.00
24. **Capitalism and Agriculture** 30.00
25. **A Characterisation of Economic Romanticism** 50.00
26. **On Marx and Engels** 35.00
27. **"Left-Wing" Communism, An Infantile Disorder** 40.00
28. **Party Work in the Masses** 55.00
29. **The Proletarian Revolution and the Renegade Kautsky** 40.00
30. **One Step Forward, Two Steps Back** …
31. **The State and Revolution** …

MARX, ENGELS and LENIN

32. **On the Dictatorship of Proletariat, *Questions and Answers*** 50.00
33. **On the Dictatorship of the Proletariat: *Selected Expositions*** 10.00

PLEKHANOV

34. **Fundamental Problems of Marxism** 35.00

J. STALIN

35. **Marxism and Problems of Linguistics** 25.00
36. **Anarchism or Socialism?** 25.00
37. **Economic Problems of Socialism in the USSR** 30.00
38. **On Organisation** 15.00
39. **The Foundations of Leninism** 40.00
40. **The Essential Stalin** *Major Theoretical Writings 1905–52* 175.00
(Edited and with an Introduction by Bruce Franklin)

LENIN and STALIN

41. **On the Party** …

MAO TSE-TUNG

42. **Five Essays on Philosophy** 50.00
43. **A Critique of Soviet Economics** 70.00
44. **On Literature and Art** 80.00

45. **Selected Readings from the Works of Mao Tse-tung** ...
46. **Quotations from the Writings of Mao Tse-tung** ...

OTHER MARXISM

1. **Political Economy, *Marxist Study Courses*** (Prepared by the British Communist Party in the 1930s) 275.00
2. **Fundamentals of Political Economy** (The Shanghai Textbook) 160.00
3. **Reader in Marxist Philosophy**/ *Howard Selsam & Harry Martel* ...
4. **Socialism and Ethics**/*Howard Selsam* ...
5. **What Is Philosophy?** (A Marxist Introduction)**/** *Howard Selsam* 75.00
6. **Reader's Guide to Marxist Classics/***Maurice Cornforth* 70.00
7. **From Marx to Mao Tse-tung /**George Thomson ...
8. **Capitalism and After/**George Thomson ...
9. **The Human Essence/**George Thomson 65.00
10. **Mao Tse-tung's Immortal Contributions/***Bob Avakian* 125.00
11. **A Basic Understanding of the Communist Party** (Written during the GPCR in China) 150.00
12. **The Lessons of the Paris Commune/** *Alexander Trachtenberg (Illustrated)* 15.00

BIOGRAPHIES & REMINISCENCES

1. **Reminiscences of Marx and Engels** (Collection) ...
2. **Karl Marx And Frederick Engels:** An Introduction to their Lives and Work/David Riazanov ...
3. **Joseph Stalin: A Political Biography** *by The Marx-Engels-Lenin Institute* ...

PROBLEMS OF SOCIALISM

1. **How Capitalism was Restored in the Soviet Union, And What This Means for the World Struggle (Red Papers 7)** 175.00

2. **Preface of Class Struggles in the USSR** / *Charles Bettelheim* 30.00
3. **Nepalese Revolution: History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** / Alok Ranjan 75.00
4. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** / *Shashi Prakash* 40.00

ON THE CULTURAL REVOLUTION

1. **Hundred Day War:** The Cultural Revolution At Tsinghua University / *William Hinton* ...
2. **The Cultural Revolution at Peking University** / *Victor Nee* with *Don Layman* 30.00
3. **Mao Tse-tung's Last Great Battle** / *Raymond Lotta* 25.00
4. **Turning Point in China** / *William Hinton* ...
5. **Cultural Revolution and Industrial Organization in China** / *Charles Bettelheim* 55.00
6. **They Made Revolution Within the Revolution /** *Iris Hunter* ...

ON SOCIALIST CONSTRUCTION

1. **Away With All Pests:** An English Surgeon in People's China: 1954–1969 */ Joshua S. Horn* ...
2. **Serve The People:** Observations on Medicine in the People's Republic of China /*Victor W. Sidel* and *Ruth Sidel* ...
3. **Philosophy is No Mystery** (Peasants Put Their Study to Work) 35.00

CONTEMPORARY ISSUES

1. **Caste and Class: A Marxist Viewpoint /** Ranganayakamma 60.00

DAYITVABODH REPRINT SERIES

1. **Immortal are the Flames of Proletarian Struggles /** *Deepayan Bose* 15.00

2. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** / *Shashi Prakash* 40.00
3. **Why Maoism?** / *Shashi Prakash* 25.00

AHWAN REPRINT SERIES

1. **Where Should Students and Youth Make a New Beginning?**
2. **Reservation: Support, Opposition and Our Position** 20.00
3. **On Terrorism : Illusion and Reality** / *Alok Ranjan* 15.00

BIGUL REPRINT SERIES

1. **Still Ablaze is the Torch of October Revolution** 20.00
2. **Nepalese Revolution History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** / Alok Ranjan 75.00

WOMEN QUESTION

1. **The Emancipation of Women** / *V. I. Lenin* ...
2. **Breaking All Tradition's Chains: Revolutionary Communism and Women's Liberation** /*Mary Lou Greenberg*...

MISCELLANEOUS

1. **Probabilities of the Quantum World** / *Daniel Danin* ...
2. **An Appeal to the Young** / *Peter Kropotkin* 15.00

अरविन्द स्मृति न्यास के प्रकाशन

1. **इक्कीसवीं सदी में भारत का मज़दूर आन्दोलनः निरन्तरता और परिवर्तन, दिशा और सम्भावनाएँ, समस्याएँ और चुनौतियाँ**
   (द्वितीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 40.00
2. **भारत में जनवादी अधिकार आन्दोलनः दिशा, समस्याएँ और चुनौतियाँ**
   (तृतीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 80.00
3. **जाति प्रश्न और मार्क्सवाद**
   (चतुर्थ अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 150.00

PUBLICATIONS FROM ARVIND MEMORIAL TRUST

1. **Working Class Movement in the Twenty-First Century: Continuity and Change, Orientation and Possibilities, Problems and Challenges** (Papers presented in the Second Arvind Memorial Seminar) 40.00
2. **Democratic Rights Movement in India: Orientation, Problems and Challenges** (Papers presented in the Third Arvind Memorial Seminar) 80.00
3. **Caste Question and Marxism** (Papers presented in the Fourth Arvind Memorial Seminar) 200.00

जनचेतना

एक वैचारिक मुहिम है
भविष्य-निर्माण का एक प्रोजेक्ट है
वैकल्पिक मीडिया की एक सशक्त धारा है।

परिकल्पना प्रकाशन, राहुल फ़ाउण्डेशन, अनुराग ट्रस्ट, अरविन्द स्मृति न्यास, शहीद भगतसिंह यादगारी प्रकाशन, दस्तक प्रकाशन और प्रांजल आर्ट पब्लिशर्स की पुस्तकों की 'जनचेतना' मुख्य वितरक है। ये प्रकाशन पाँच स्त्रोतों - सरकार, राजनीतिक पार्टियों, कॉरपोरेट घरानों, बहुराष्ट्रीय निगमों और विदेशी फ़ण्डिंग एजेंसियों से किसी भी प्रकार का अनुदान या वित्तीय सहायता लिये बिना जनता से जुटाये गये संसाधनों के आधार पर आज के दौर के लिए ज़रूरी व महत्त्वपूर्ण साहित्य बेहद सस्ती दरों पर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

अनुराग ट्रस्ट

1.	**बच्चों के लेनिन**	35.00
2	**Stories About Lenin**	35.00
3.	**सच से बड़ा सच**/रवीन्द्रनाथ ठाकुर	25.00
4.	**औज़ारों की कहानियाँ**	20.00
5.	**गुड़ की डली**/कात्यायनी	20.00
6.	**फूल कुंडलाकार क्यों होते हैं**/सनी	20.00
7.	**धरती और आकाश**/अ. वोल्कोव	120.00
8.	**कजाकी**/प्रेमचन्द	35.00
9.	**नीला प्याला**/अरकादी गैदार	40.00
10.	**गड़रिये की कहानियाँ**/क़यूम तंगरीकुलीयेव	35.00
11.	**चींटी और अन्तरिक्ष यात्री**/अ. मित्यायेव	35.00
12.	**अन्धविश्वासी शेकी टेल**/सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
13.	**चलता-फिरता हैट**/एन. नोसोव, होल्कर पुक्क	20.00
14.	**चालाक लोमड़ी** (लोककथा)	20.00
15.	**दियांका-टॉमचिक**	20.00
16.	**गधा और ऊदबिलाव**/मक्सिम गोर्की, सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
17.	**गुफा मानवों की कहानियाँ**/मैरी मार्स	...
18.	**हम सूरज को देख सकते हैं**/मिकोला गिल, दायर स्लावकोविच	20.00
19.	**मुसीबत का साथी**/सेर्गेई मिखाल्कोव	20.00
20.	**नन्हे आर्थर का सूरज**/हद्याक ग्युलनज़रयान, गेलीना लेबेदेवा	20.00
22.	**आकाश में मौज-मस्ती**/चिनुआ अचेबे	20.00
23.	**ज़िन्दगी से प्यार** (दो रोमांचक कहानियाँ)/जैक लण्डन	40.00
24.	**एक छोटे लड़के और एक छोटी लड़की की कहानी**/मक्सिम गोर्की	20.00
25.	**बहादुर**/अमरकान्त	15.00
26.	**बुन्नू की परीक्षा** (सचित्र रंगीन)/शस्या हर्ष	...

27. **दान्को का जलता हुआ हृदय**/मक्सिम गोर्की 15.00
28. **नन्हा राजकुमार**/आतुआन द सैंतेक्ज़ूपेरी 40.00
29. **दादा आर्खिप और ल्योंका**/मक्सिम गोर्की 30.00
30. **सेमागा कैसे पकड़ा गया**/मक्सिम गोर्की 15.00
31. **बाज़ का गीत**/मक्सिम गोर्की 15.00
32. **वांका**/अन्तोन चेख़व 15.00
33. **तोता**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 15.00
34. **पोस्टमास्टर**/रवीन्द्रनाथ टैगोर ...
35. **काबुलीवाला**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 20.00
36. **अपना-अपना भाग्य**/जैनेन्द्र 15.00
37. **दिमाग़ कैसे काम करता है**/किशोर 25.00
38. **रामलीला**/प्रेमचन्द 15.00
39. **दो बैलों की कथा**/प्रेमचन्द 25.00
40. **ईदगाह**/प्रेमचन्द ...
41. **लॉटरी**/प्रेमचन्द 20.00
42. **गुल्ली-डण्डा**/प्रेमचन्द ...
43. **बड़े भाई साहब**/प्रेमचन्द 20.00
44. **मोटेराम शास्त्री**/प्रेमचन्द ...
45. **हार की जीत**/सुदर्शन ...
46. **इवान**/व्लादीमिर बोगोमोलोव 40.00
47. **चमकता लाल सितारा**/ली शिन-थ्येन 55.00
48. **उल्टा दरख़्त**/कृश्नचन्दर 35.00
49. **हरामी**/मिखाईल शोलोख़ोव 25.00
50. **दोन किहोते** /सर्वान्तेस (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) ...
51. **आश्चर्यलोक में एलिस** /लुइस कैरोल
(नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) 30.00
52. **झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई**/वृन्दावनलाल वर्मा
(नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) 35.00
53. **नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे**/सुन यओच्युन ...
54. **लाखी**/अन्तोन चेख़व 25.00
55. **बेझिन चरागाह**/इवान तुर्गनेव 12.00

56.	**हिरनौटा**/द्मीत्री मामिन सिबिर्याक	25.00
57.	**घर की ललक**/निकोलाई तेलेशोव	10.00
58.	**बस एक याद**/लेओनीद अन्द्रेयेव	20.00
59.	**मदारी**/अलेक्सान्द्र कुप्रिन	35.00
60.	**पराये घोंसले में**/फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की	20.00
61.	**कोहकाफ़ का बन्दी**/तोल्सतोय	30.00
62.	**मनमानी के मज़े**/सेर्गेई मिखाल्कोव	30.00
63.	**सदानन्द की छोटी दुनिया**/सत्यजीत राय	15.00
64.	**छत पर फँस गया बिल्ला**/विताउते जिलिन्सकाइते	35.00
65.	**गोलू के कारनामे**/रामबाबू	25.00
66.	**दो साहसिक कहानियाँ**/होल्गर पुक्क	15.00
67.	**आम ज़िन्दगी की मज़ेदार कहानियाँ**/होल्गर पुक्क	20.00
68.	**कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला**/होल्गर पुक्क	20.00
69.	**रोज़मर्रे की कहानियाँ**/होल्गर पुक्क	20.00
70.	**अजीबोग़रीब क़िस्से**/होल्गर पुक्क	...
71.	**नये ज़माने की परीकथाएँ**/होल्गर पुक्क	25.00
72.	**किस्सा यह कि एक देहाती ने दो अफ़सरों का कैसे पेट भरा**/मिखाइल सल्तिकोव-श्चेद्रिन	15.00
73.	**पश्चदृष्टि-भविष्यदृष्टि** (लेख संकलन)/ कमला पाण्डेय	30.00
74.	**यादों के घेरे में अतीत** (संस्मरण)/ कमला पाण्डेय	100.00
75.	**हमारे आसपास का अँधेरा** (कहानियाँ)/ कमला पाण्डेय	60.00
76.	**कालमन्थन** (उपन्यास)/ कमला पाण्डेय	60.00

ਪੰਜਾਬੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ

ਦਸਤਕ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ

ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ ਦਾ ਸਵੈ-ਜੀਵਨੀ ਨਾਵਲ (ਤਿੰਨ ਭਾਗਾਂ ਵਿੱਚ)

1. ਮੇਰਾ ਬਚਪਨ	130.00
2. ਮੇਰੇ ਵਿਸ਼ਵ-ਵਿਦਿਆਲੇ	100.00
3. ਮੇਰੇ ਸ਼ਗਿਰਦੀ ਦੇ ਦਿਨ	200.00

4. ਪ੍ਰੇਮ, ਪ੍ਰੰਪਰਾ ਅਤੇ ਵਿਦਰੋਹ / ਕਾਤਿਆਈਨੀ	20.00
5. ਥੀਏਟਰ ਦਾ ਸੰਖੇਪ ਤਰਕਸ਼ਾਸਤਰ / ਬ੍ਰੈਖ਼ਤ	15.00
6. ਆਈਜੇਂਸਤਾਈਨ ਦਾ ਫਿਲਮ ਸਿਧਾਂਤ	15.00
7. ਮਜ਼ਦੂਰ ਜਮਾਤੀ ਸੰਗੀਤ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ	10.00
8. ਪਹਿਲਾ ਅਧਿਆਪਕ / ਚੰਗੇਜ਼ ਆਇਤਮਾਤੋਵ (ਨਾਵਲ)	25.00
9. ਸ਼ਾਂਤ ਸਰਘੀ ਵੇਲਾ / ਬੋਰਿਸ ਵਾਸੀਲਿਯੇਵ (ਨਾਵਲ)	30.00
10. ਭਾਂਜ / ਅਲੈਗਜ਼ਾਂਦਰ ਫ਼ਦੇਯੇਵ (ਨਾਵਲ)	100.00
11. ਫੌਲਾਦੀ ਹੜ / ਅਲੈਗਜ਼ਾਂਦਰ ਸਰਾਫ਼ੀਮੋਵਿਚ (ਨਾਵਲ)	100.00
12. ਇਕਤਾਲ਼ੀਵਾਂ / ਬੋਰਿਸ ਲਵਰੇਨਿਓਵ (ਨਾਵਲ)	30.00
13. ਮਾਂ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ (ਨਾਵਲ)	180.00
14. ਪੀਲ਼ੇ ਦੈਂਤ ਦਾ ਸ਼ਹਿਰ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ	80.00
15. ਸਾਹਿਤ ਬਾਰੇ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ	200.00
16. ਅਸਲੀ ਇਨਸਾਨ ਦੀ ਕਹਾਣੀ / ਬੋਰਿਸ ਪੋਲੇਵਾਈ (ਨਾਵਲ)	200.00
17. ਅੱਠੇ ਪਹਿਰ (ਕਹਾਣੀਆਂ)	125.00
18. ਬਘਿਆੜਾਂ ਦੇ ਵੱਸ / ਬਰੂਨੋ ਅਪਿਤਜ (ਨਾਵਲ)	100.00
19. ਮੀਤ੍ਰਿਆ ਕੋਕੋਰ / ਮੀਹਾਇਲ ਸਾਦੋਵਿਆਨੋ (ਨਾਵਲ)	100.00
20. ਇਨਕਲਾਬ ਲਈ ਜੂਝੀ ਜਵਾਨੀ	150.00
21. ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਦਿਆਂ ਦਿਲ ਆਪਣਾ ਮੈਂ / ਵ. ਸੁਖੋਮਲਿੰਸਕੀ	150.00
22. ਫਾਸੀ ਦੇ ਤਖ਼ਤੇ ਤੋਂ / ਜੂਲੀਅਸ ਫੂਚਿਕ (ਨਾਵਲ)	50.00
23. ਭੁੱਬਲ / ਫ਼ਰੰਜ਼ਦ ਅਲੀ (ਪਾਕਿਸਤਾਨੀ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਨਾਵਲ)	200.00
24. ਸਭ ਤੋਂ ਖਤਰਨਾਕ... (ਪਾਸ਼ ਦੀ ਸਮੁੱਚੀ ਉਪਲੱਬਧ ਸ਼ਾਇਰੀ)	200.00
25. ਧਰਤੀ ਧਨ ਨਾ ਆਪਣਾ / ਜਗਦੀਸ਼ ਚੰਦਰ	250.00

ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਯਾਦਗਾਰੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ

1. ਉਜਰਤ, ਕੀਮਤ ਅਤੇ ਮੁਨਾਫਾ / ਮਾਰਕਸ	30.00
2. ਉਜਰਤੀ ਕਿਰਤ ਅਤੇ ਸਰਮਾਇਆ / ਮਾਰਕਸ	20.00
3. ਸਿਆਸੀ ਆਰਥਿਕਤਾ ਦੀ ਅਲੋਚਨਾ ਵਿੱਚ ਯੋਗਦਾਨ / ਮਾਰਕਸ	125.00
4. ਲੂਈ ਬੋਨਾਪਾਰਟ ਦੀ ਅਠਾਰਵੀਂ ਬਰੂਮੇਰ / ਮਾਰਕਸ	50.00
5. ਪੂੰਜੀ ਦੀ ਉਤਪਤੀ / ਮਾਰਕਸ	45.00
6. ਰਿਹਾਇਸ਼ੀ ਘਰਾਂ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਏਂਗਲਜ਼	35.00
7. ਫਿਊਰਬਾਖ : ਪਾਦਰਥਵਾਦੀ ਅਤੇ ਆਦਰਸ਼ਵਾਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣਾਂ ਦਾ ਵਿਰੋਧ / ਮਾਰਕਸ-ਏਂਗਲਜ਼	60.00
8. ਜਰਮਨੀ ਵਿੱਚ ਇਨਕਲਾਬ ਅਤੇ ਉਲਟ ਇਨਕਲਾਬ / ਏਂਗਲਜ਼	50.00
9. ਮਾਰਕਸ ਦੇ "ਸਰਮਾਇਆ" ਬਾਰੇ / ਏਂਗਲਜ਼	60.00
10. ਫਰਾਂਸ ਅਤੇ ਜਰਮਨੀ 'ਚ ਕਿਸਾਨੀ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਏਂਗਲਜ਼	20.00
11. ਸੋਸ਼ਲਿਜ਼ਮ : ਵਿਗਿਆਨਕ ਅਤੇ ਯੂਟੋਪੀਆਈ / ਏਂਗਲਜ਼	35.00
12. ਕਾਰਲ ਮਾਰਕਸ ਬਾਰੇ / ਏਂਗਲਜ਼	10.00
13. ਲੁਡਵਿਗ ਫਿਉਰਬਾਖ ਅਤੇ ਕਲਾਸੀਕੀ ਜਰਮਨ ਦਰਸ਼ਨ ਦਾ ਅੰਤ / ਏਂਗਲਜ਼	30.00
14. ਟੱਬਰ, ਨਿੱਜੀ ਜਾਇਦਾਦ ਅਤੇ ਰਾਜ ਦੀ ਉੱਤਪਤੀ / ਏਂਗਲਜ਼	65.00
15. ਕਾਰਲ ਮਾਰਕਸ ਅਤੇ ਉਨਾਂ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ / ਲੈਨਿਨ	35.00
16. ਰਾਜ ਅਤੇ ਇਨਕਲਾਬ / ਲੈਨਿਨ	50.00
17. ਦੂਜੀ ਇੰਟਰਨੈਸ਼ਨਲ ਦਾ ਪਤਣ / ਲੈਨਿਨ	45.00
18. ਖੇਤੀ ਵਿੱਚ ਪੂੰਜੀਵਾਦ / ਲੈਨਿਨ	15.00
19. ਰਾਜ / ਲੈਨਿਨ	10.00
20. ਸਾਮਰਾਜਵਾਦ, ਸਰਮਾਏਦਾਰੀ ਦਾ ਸਰਵਉੱਚ ਪੜਾਅ / ਲੈਨਿਨ	70.00
21. ਇੱਕ ਕਦਮ ਅੱਗੇ ਦੋ ਕਦਮ ਪਿੱਛੇ / ਲੈਨਿਨ	125.00
22. ਲੋਕਾਂ ਵਿੱਚ ਕੰਮ ਕਿਵੇਂ ਕਰੀਏ / ਲੈਨਿਨ	65.00
23. ਸਾਹਿਤ ਅਤੇ ਕਲਾ ਬਾਰੇ / ਲੈਨਿਨ	150.00
24. ਸਮਾਜਵਾਦ ਅਤੇ ਜੰਗ / ਲੈਨਿਨ	45.00
25. ਖੱਬੇ ਪੱਖੀ ਕਮਿਊਨਿਜ਼ਮ ਇੱਕ ਬਚਗਾਨਾ ਰੋਗ / ਲੈਨਿਨ	65.00
26. ਅਸੀਂ ਜਿਹੜਾ ਵਿਰਸਾ ਤਿਆਗਦੇ ਹਾਂ / ਲੈਨਿਨ	25.00
27. ਪ੍ਰੋਲੇਤਾਰੀ ਇਨਕਲਾਬ ਅਤੇ ਭਗੌੜਾ ਕਾਊਤਸਕੀ / ਲੈਨਿਨ	70.00
28. ਆਰਥਕ ਰੋਮਾਂਚਵਾਦ ਦਾ ਚਰਿੱਤਰ ਚਿੱਤਰਣ / ਲੈਨਿਨ	50.00

29.	ਸੁਤੰਤਰ ਵਪਾਰ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਮਾਰਕਸ, ਏਂਗਲਜ਼, ਲੈਨਿਨ	10.00
30.	ਲੈਨਿਨਵਾਦ ਦੀਆਂ ਨੀਹਾਂ / ਸਟਾਲਿਨ	20.00
31.	ਫ਼ਲਸਫਾਨਾ ਲਿਖਤਾਂ / ਮਾਓ–ਜ਼ੇ–ਤੁੰਗ	25.00
32.	ਸੋਵੀਅਤ ਅਰਥਸ਼ਾਸਤਰ ਦੀ ਅਲੋਚਨਾ / ਮਾਓ–ਜ਼ੇ–ਤੁੰਗ	60.00
33.	ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਦੇ ਬੁਨਿਆਦੀ ਮਸਲੇ / ਪਲੈਖਾਨੋਵ	40.00
34.	ਰਾਜਨੀਤਕ ਅਰਥਸ਼ਾਸਤਰ ਦੇ ਮੂਲ ਸਿਧਾਂਤ	60.00
35.	ਫਿਲਾਸਫੀ ਕੋਈ ਗੋਰਖਧੰਦਾ ਨਹੀਂ	10.00
36.	ਦਵੰਦਵਾਦ ਜ਼ਰੀਏ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸੇਵਾ	10.00
37.	ਇਤਿਹਾਸ ਨੇ ਜਦ ਕਰਵਟ ਬਦਲੀ	40.00
38.	ਇਨਕਲਾਬ ਅੰਦਰ ਇਨਕਲਾਬ	20.00
39.	ਮਾਓ–ਜ਼ੇ–ਤੁੰਗ ਦੀ ਅਮਿੱਟ ਦੇਣ	125.00
40.	ਚੀਨ ਵਿੱਚ ਉਲਟ ਇਨਕਲਾਬ ਅਤੇ ਮਾਓ ਦਾ ਇਨਕਲਾਬੀ ਵਿਰਸਾ	60.00
41.	ਮਾਓਵਾਦੀ ਅਰਥਸ਼ਾਸਤਰ ਅਤੇ ਸਮਾਜਵਾਦ ਦਾ ਭਵਿੱਖ	60.00
42.	ਲੈਨਿਨ ਦੀ ਜੀਵਨ ਕਹਾਣੀ	100.00
43.	ਅਡੋਲ ਬਾਲਸ਼ਵਿਕ ਨਤਾਸ਼ਾ	30.00
44.	ਮਾਰਕਸ ਅਤੇ ਏਂਗਲਜ਼ ਆਪਣੇ ਸਮਕਾਲੀਆਂ ਦੀਆਂ ਨਜ਼ਰਾਂ ਵਿੱਚ	75.00
45.	ਪੈਰਿਸ ਕਮਿਊਨ ਦੀ ਅਮਰ ਕਹਾਣੀ	10.00
46.	ਬੁਝ ਨਹੀਂ ਸਕਦੀ ਅਕਤੂਬਰ ਇਨਕਲਾਬ ਦੀ ਮਸ਼ਾਲ	10.00
47.	ਦਹਿਸ਼ਤਗਰਦੀ ਬਾਰੇ ਭਰਮ ਅਤੇ ਯਥਾਰਥ	10.00
48.	ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਕਿਸਾਨ ਅੰਦੋਲਨ ਅਤੇ ਕਮਿਊਨਿਸਟ ਲਹਿਰ	10.00
49.	ਜੰਗਲਨਾਮਾ : ਇੱਕ ਰਾਜਨੀਤਕ ਪੜਚੋਲ	10.00
50.	ਭਾਰਤੀ ਖੇਤੀ ਵਿੱਚ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਵਿਕਾਸ	20.00
51.	ਅਮਿੱਟ ਹਨ ਮਜ਼ਦੂਰ ਸੰਗਰਾਮਾਂ ਦੀਆਂ ਚਿਣਗਾਂ	10.00
52.	ਸਮਾਜਵਾਦ ਦੀਆਂ ਸਮੱਸਿਆਵਾਂ, ਪੂੰਜੀਵਾਦ ਦੀ ਮੁੜ ਬਹਾਲੀ ਅਤੇ ਮਹਾਨ ਪ੍ਰੋਲੇਤਾਰੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਇਨਕਲਾਬ	20.00
53.	ਕਿਉਂ ਮਾਓਵਾਦ ?	10.00
54.	ਸੋਵੀਅਤ ਯੂਨੀਅਨ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਬਾਰੇ ਪ੍ਰਚਾਰੇ ਜਾਂਦੇ ਝੂਠ	10.00
55.	ਰਿਜ਼ਰਵੇਸ਼ਨ : ਪੱਖ, ਵਿਪੱਖ ਅਤੇ ਤੀਸਰਾ ਪੱਖ	5.00
56.	ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਅਤੇ ਜਾਤ ਦਾ ਸਵਾਲ / ਸੁਖਵਿੰਦਰ	20.00

57. ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਬਾਰੇ ਅੰਬੇਡਕਰ ਦੇ ਵਿਚਾਰ / ਰੰਗਾਨਾਇਕੰਮਾ 15.00
58. ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਅਤੇ ਭਾਰਤ ਦਾ ਸੰਵਿਧਾਨ / ਰੰਗਾਨਾਇਕੰਮਾ 15.00
59. ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ : ਜੀਵਨ ਅਤੇ ਵਿਚਾਰ / ਰੰਗਾਨਾਇਕੰਮਾ 10.00
60. ਭਾਰਤ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਜਾਤ-ਪਾਤ / ਪ੍ਰੋ. ਇਰਫ਼ਾਨ ਹਬੀਬ 10.00
61. ਉਦਾਰਵਾਦੀ ਨੀਤੀਆਂ ਦੇ 18 ਸਾਲ 5.00
62. ਚੋਰ, ਭ੍ਰਿਸ਼ਟ ਅਤੇ ਅਯਾਸ਼ ਨੇਤਾਸ਼ਾਹੀ 5.00
63. ਪਾਪ ਅਤੇ ਵਿਗਿਆਨ / ਡਾਈਸਨ ਕਾਰਟਰ 60.00
64. ਫਾਸੀਵਾਦ ਕੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਨਾਲ਼ ਕਿਵੇਂ ਲੜੀਏ ? 15.00
65. ਆਈਨਸਟੀਨ ਦੇ ਸਮਾਜਿਕ ਸਰੋਕਾਰ 10.00
66. ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨਾਲ਼ ਦੋ ਗੱਲਾਂ / ਪੀਟਰ ਕ੍ਰੋਪੋਟਕਿਨ 10.00
67. ਇਨਕਲਾਬ ਦਾ ਸੁਨੇਹਾ
(ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਸਾਥੀਆਂ ਦੀਆਂ ਲਿਖਤਾਂ) 30.00
68. ਅਜਿਹਾ ਸੀ ਸਾਡਾ ਭਗਤ ਸਿੰਘ / ਸ਼ਿਵ ਵਰਮਾ 10.00
69. ਮੈਂ ਨਾਸਤਿਕ ਕਿਉਂ ਹਾਂ ? / ਭਗਤ ਸਿੰਘ 10.00
70. ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਨੇ ਕਿਹਾ... / ਭਗਤ ਸਿੰਘ 5.00
71. ਭਗਤ ਸਿੰਘ ਤੇ ਉਸਦੇ ਸਾਥੀਆਂ
ਦਾ ਵਿਚਾਰਧਾਰਕ ਵਿਕਾਸ / ਪ੍ਰੋ. ਬਿਪਨ ਚੰਦਰਾ 10.00
72. ਇਨਕਲਾਬੀ ਲਹਿਰ ਦਾ ਸਿਧਾਂਤਕ ਵਿਕਾਸ / ਸ਼ਿਵ ਵਰਮਾ 10.00
73. ਸ਼ਹੀਦ ਚੰਦਰ ਸ਼ੇਖਰ ਆਜ਼ਾਦ / ਭਗਵਾਨ ਦਾਸ ਮਹੌਰ 10.00
74. ਗਦਰੀ ਸੂਰਬੀਰ / ਪ੍ਰੋ. ਰਣਧੀਰ ਸਿੰਘ 10.00
75. ਸ਼ਹੀਦ ਸੁਖਦੇਵ 20.00
76. ਸ਼ਹੀਦ ਕਰਤਾਰ ਸਿੰਘ ਸਰਾਭਾ 5.00
77. ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਨੌਜਵਾਨ ਨਵੀਂ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਕਿੱਥੋਂ ਕਰਨ ? 10.00
78. ਸੋਧਵਾਦ ਬਾਰੇ 5.00
79. ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਸਾਰ ਦੀ ਲੋੜ ਕਿਉਂ ? / ਸੁਖਵਿੰਦਰ 15.00
80. ਵਧਦੀ ਅਬਾਦੀ 15.00
81. ਯੁੱਗ ਕਿਵੇਂ ਬਦਲਦੇ ਹਨ ? / ਡਾ. ਅੰਮ੍ਰਿਤ 10.00
82. ਧਰਮ ਬਾਰੇ / ਲੈਨਿਨ 30.00
83. ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਵਿੱਚ ਮਾਤ-ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਮਹੱਤਵ 20.00
84. ਇੱਕ ਪ੍ਰਤਿਭਾ ਦਾ ਜਨਮ / ਗੈਨਰਿਖ ਵੋਲਕੋਵ 100.00
85. ਭਾਰਤ ਵਿੱਚ ਨਵਉਦਾਰਵਾਦ ਦੇ ਦੋ ਦਹਾਕੇ / ਸੁਖਵਿੰਦਰ 20.00

86. ਕਾਰਲ ਮਾਰਕਸ ਦਾ ਕਲਾ ਦਰਸ਼ਨ 200.00
87. ਸਤਾਲਿਨ - ਇੱਕ ਜੀਵਨੀ / ਰਾਹੁਲ ਸਾਂਕਰਤਾਇਨ 150.00
88. ਪੋਰਨੋਗ੍ਰਾਫੀ : ਇਕ ਸਰਮਾਏਦਾਰਾ ਕੋਹੜ / ਅਜੇ ਪਾਲ 10.00
89. ਔਰਤਾਂ ਦੀ ਗੁਲਾਮੀ ਦਾ ਆਰਥਿਕ ਅਧਾਰ / ਸੀਤਾ 10.00

ਅਨੁਰਾਗ ਟਰੱਸਟ (ਬੱਚਿਆਂ ਲਈ)

1. ਇਵਾਨ / ਵਲਾਦੀਮੀ ਬਗਾਮਲੋਵ 35.00
2. ਵਾਂਕਾ / ਅਨਤੋਨ ਚੈਖੋਵ 10.00
3. ਕਿਸਮਤ ਆਪੋ-ਆਪਣੀ / ਜੈਨੇਂਦਰ 20.00
4. ਕੋਹੇਕਾਫ਼ ਦਾ ਕੈਦੀ / ਤਾਲਸਤਾਏ 30.00
5. ਛੱਤ 'ਤੇ ਫਸ ਗਿਆ ਬਿੱਲਾ ਅਤੇ ਹੋਰ ਕਹਾਣੀਆਂ 20.00
6. ਅਜੀਬੋ-ਗਰੀਬ ਕਿੱਸੇ / ਹੋਲਗਰ ਪੁੱਕ 20.00
7. ਦੋ ਹਿੰਮਤੀ ਕਹਾਣੀਆਂ / ਹੋਲਗਰ ਪੁੱਕ 15.00
8. ਨਵੇਂ ਜ਼ਮਾਨੇ ਦੀਆਂ ਪਰੀ-ਕਥਾਵਾਂ / ਹੋਲਗਰ ਪੁੱਕ 20.00
9. ਅਸੀਂ ਸੂਰਜ ਨੂੰ ਵੇਖ ਸਕਦੇ ਹਾਂ / ਮਿਕੋਲ ਗਿੱਲ 10.00
10. ਗੁਫਾ ਮਾਨਵਾਂ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ / ਮੈਰੀ ਮਾਰਸ 20.00
11. ਕਿੱਸਾ ਇਹ ਕਿ ਇੱਕ ਪੇਂਡੂ ਨੇ ਦੋ ਅਫ਼ਸਰ ਸ਼ਹਿਰੀ
    ਅਫਸਰਾਂ ਦਾ ਢਿੱਡ ਕਿਵੇਂ ਭਰਿਆ / ਮਿਖਾਈਲ ਸ਼ਚੇਦ੍ਰਿਨ 15.00
12. ਸਦਾਨੰਦ ਦੀ ਛੋਟੀ ਦੁਨੀਆਂ / ਸੱਤਿਆਜੀਤ ਰਾਏ 10.00
13. ਬਾਜ਼ ਦਾ ਗੀਤ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ 10.00
14. ਬੱਸ ਇੱਕ ਯਾਦ / ਲਿਓਨਿਦ ਆਂਦਰੇਯੇਵ 10.00
15. ਦਾਦਾ ਅਰਖ਼ੀਪ ਅਤੇ ਲਿਓਨਕਾ / ਗੋਰਕੀ 20.00
16. ਦਾਨਕੋ ਦਾ ਬਲ਼ਦਾ ਹੋਇਆ ਦਿਲ / ਗੋਰਕੀ 10.00
17. ਘਰ ਦੀ ਲਲਕ / ਨਿਕੋਲਾਈ ਤੇਲੇਸ਼ੋਵ 20.00
18. ਗੁੱਲੀ-ਡੰਡਾ / ਪ੍ਰੇਮਚੰਦ 10.00
19. ਹਾਰ ਦੀ ਜਿੱਤ / ਸ਼ੁਦਰਸ਼ਨ 10.00
20. ਹਰਾਮੀ / ਮਿਖ਼ਾਇਲ ਸ਼ੋਲੋਖ਼ੋਵ 20.00
21. ਕਾਬੁਲੀਵਾਲ਼ਾ / ਰਵਿੰਦਰਨਾਥ ਟੈਗੋਰ 10.00
22. ਮੁਸੀਬਤ ਦਾ ਸਾਥੀ / ਸੇਰੇਗਈ ਮਿਖਾਲਕੋਵ 10.00
23. ਪੋਸਟਮਾਸਟਰ / ਰਵਿੰਦਰਨਾਥ ਟੈਗੋਰ 10.00

24. ਰਾਮਲੀਲਾ / ਪ੍ਰੇਮਚੰਦ 10.00

25. ਸੇਮਾਗਾ ਕਿਵੇਂ ਫੜਿਆ ਗਿਆ / ਗੋਰਕੀ 10.00

26. ਤੁਰਦਾ-ਫਿਰਦਾ ਟੋਪ / ਐੱਨ. ਨੋਸੋਵ 10.00

27. ਬੇਜਿਨ ਚਰਾਗਾਹ / ਇਵਾਨ ਤੁਰਗੇਨੇਵ 20.00

28. ਉਲਟਾ ਰੁੱਖ / ਕ੍ਰਿਸ਼ਨਚੰਦਰ 35.00

29. ਵੱਡੇ ਭਾਈ ਸਾਹਬ / ਪ੍ਰੇਮਚੰਦ 10.00

30. ਇੱਕ ਛੋਟੇ ਮੁੰਡੇ ਅਤੇ ਕੁੜੀ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਜਿਹੜੇ ਬਰਫ਼ੀਲੀ ਠੰਡ 'ਚ ਕਾਂਬੇ ਨਾਲ਼ ਮਰੇ ਨਹੀਂ / ਮੈਕਸਿਮ ਗੋਰਕੀ 10.00

31. ਬਹਾਦਰ / ਅਮਰਕਾਂਤ 10.00

32. ਹਿਰਨੋਟਾ / ਦਮਿਤਰੀ ਮਾਮਿਨ ਸਿਬਿਰੇਆਕ 10.00

——::——

हमारे पास आपको मिलेंगे

- विश्व क्लासिक्स
- स्तरीय प्रगतिशील साहित्य
- भगतसिंह और उनके साथियों का सम्पूर्ण उपलब्ध साहित्य
- मक्सिम गोर्की की पुस्तकों का सबसे बड़ा संग्रह
- भारतीय इतिहास के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी दस्तावेज़
- मार्क्सवादी साहित्य
- जीवन और समाज की समझ तथा विचारोत्तेजना देने वाला साहित्य
- प्रगतिशील क्रान्तिकारी पत्र-पत्रिकाएँ
- दिमाग़ की खिड़कियाँ खोलने और कल्पना की उड़ानों को पंख देने वाला बाल-साहित्य
- सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, प्रेरक पोस्टर और कार्ड
- क्रान्तिकारी गीतों के कैसेट
- साहित्यिक व क्रान्तिकारी उद्धरणों-चित्रों वाली टीशर्ट, कैलेण्डर, बुकमार्क, डायरी आदि ...

ऐसा साहित्य जो सपने देखने और भविष्य-निर्माण के लिए प्रेरित करता है!

(हिन्दी, अंग्रेज़ी, पंजाबी और मराठी में)

किताबें नहीं,
हम आने वाले कल के सपने लेकर आये हैं
किताबें नहीं,
हम असली इन्सान की तरह

जनचेतना

मुख्य केन्द्र : **डी-68, निरालानगर, लखनऊ-226020**

फ़ोन : 0522-4108495

अन्य केन्द्र :

- 114, जनता मार्केट, रेलवे बस स्टेशन रोड,
  गोरखपुर-273001, फ़ोन : 7398783835
- दिल्ली : 9999750940
- नियमित स्टॉल : कॉफ़ी हाउस के पास, हज़रतगंज, लखनऊ
  शाम 5 से 8 बजे तक

सहयोगी केन्द्र

- जनचेतना पुस्तक विक्रय केन्द्र, दुकान नं. 8, पंजाबी भवन,
  लुधियाना (पंजाब) फ़ोन : 09815587807

ईमेल : info@janchetnabooks.org

वेबसाइट : www.janchetnabooks.org

हमारी बुकशॉप और प्रदर्शनियों से पुस्तकें लेने के अलावा आप हमसे डाक से भी किताबें मँगा सकते हैं। हमारी वेबसाइट पर जाकर पुस्तक सूची से पुस्तकें चुनें और ईमेल या फोन से हमें ऑर्डर भेज दें। आप मनीऑर्डर या चेक से या सीधे हमारे बैंक खाते में भुगतान कर सकते हैं। आप वेबसाइट पर दिये Instamojo के लिंक से भी भुगतान कर सकते हैं। हमारी किताबें आप Amazon और Flipkart से भी ऑनलाइन मँगा सकते हैं।

बैंक खाते का विवरण:

ACC. NAME: JANCHETNA PUSTAK PRATISHTHAN SAMITI

Acc. No. 0762002109003796

Bank: Punjab National Bank

यदि आपको महज़ मनोरंजन चाहिए,
महज़ नशे की एक ख़ुराक,
दिल को बहलाने के लिए एक ख़याल
तो नहीं हैं ऐसी किताबें हमारे पास।
हम ऐसी किताबें लेकर आये हैं
जो आपकी मोहनिद्रा झकझोरकर तोड़ दें,
जो आज के हालात पर
आपको सोचने के लिए मजबूर कर दें।
हम किताबें नहीं
लड़ने की ज़िद
और हालात की बेहतरी की उम्मीदें
लेकर आये हैं,
हम आने वाले कल के सपने लेकर आये हैं।
हम लेकर आये हैं
एक सार्थक, स्वाभिमानी, मुक्त जीवन की तड़प।
किताबें नहीं
हम असली इंसान की तरह
जीने का संकल्प लेकर आये हैं।